कोंस्तांतिन फ़ेदिन

आग्नेय वर्ष

भाग १

(दो भागों में)

प्रगति प्रकाशन
मास्को

अनुवादक : वृद्धि प्रसाद भट्ट

Константин Федин

НЕОБЫКНОВЕННОЕ ЛЕТО

Книга I

На языке хинди

Konstantin Fedin

NO ORDINARI SUMMER

Part I

सोवियत संघ में मुद्रित

हिन्दी अनुवाद • प्रगति प्रकाशन • १९८१

Ф $\frac{70302\text{-}971}{014(01)\text{-}81}$ 672-81

74702010200

भाग १

१

युगांतरकारी घटनाएं जनमानस में उथल-पुथल, उल्लास या उदासी तो पैदा करती ही हैं, पर अपने साथ कुछ ऐसे असाधारण कष्ट और अभाव भी ले आती हैं, जिन्हें रोक पाना आदमी के बस की बात नहीं। जो जानता है कि ये घटनाएं इतिहास के प्रवाह का अंग हैं, या जो सचेत रूप से इतिहास के प्रेरक का काम करता है, उसके लिए कष्टों का अस्तित्व वैसे ही ख़त्म नहीं हो जाता, जैसे रोग का कारण मालूम हो जाने मात्र से शारीरिक पीड़ा की अनुभूति ख़त्म नहीं होती। मगर वह उन्हें उस आदमी से कुछ भिन्न ढंग से झेलता है, जो घटनाओं के ऐतिहासिक महत्त्व को समझने में असमर्थ रहकर इतने ही ज्ञान से संतोष कर लेता है कि आज का जीवन बीते हुए या आनेवाले कल के जीवन से कठिन है या आसान, बदतर है या बेहतर। पहले के लिए इतिहास का तर्क उसके कष्टों को अर्थमय बना देता है, जबकि दूसरे को लगता है कि जैसे जीवन सिर्फ़ जीने के लिए है, वैसे कष्ट भी सिर्फ़ भुगतने के लिए हैं।

ज़ारशाही सेना का लेफ़्टिनेंट वसीली दनीलोविच दीविच जर्मनों का युद्धबंदी रहने के बाद

वतन लौट रहा था। उसका घर वोल्गा के तट पर बसे छोटे से क़सबे ख़्वालीन्स्क में था। जर्मनी और सोवियत रूस के बीच युद्धवंदियों की अदला-वदली वहुत पहले शुरू हो गयी थी, मगर दीविच की सभी कोशिशों के वावजूद उसका नाम घर भेजे जानेवालों की सूची में अरसे तक शामिल न किया जा सका। युद्धवंदी कैंप से भागने की दूसरी कोशिश के वाद उसे केनिगस्टीन के पुराने सेक्सनी क़िले में वंद कर दिया गया था, जहां मित्र-राष्ट्रों की सेनाओं के भगोड़े वंदी अफ़सरों के लिए एक ख़ास जेल थी। वहुत पहले, १८४६ में ड्रेस्डन विद्रोह का नेतृत्व करने के अपराध में प्रसिद्ध रूसी अराजकतावादी मिख़ाईल वाकूनिन को भी इसी किले में कैद रखा गया था। वंदी फ़्रांसीसी अफ़सरों के साथ वातचीत में जव भी चर्चा छिड़ती थी कि रूसी किसी से दवते नहीं, तो रूसी अफ़सर हमेशा वाकूनिन का हवाला दिया करते थे। वाकूनिन की मिसाल उन्हें जर्मनों द्वारा आविष्कृत यंत्रणाएं झेलने की शक्ति प्रदान करती थी। १९१९ के वसंत में दीविच की भी छूटने की वारी आ गयी, मगर उसी समय उसे पेचिश हो गयी। इसकी वजह से उसे पूरे एक महीने अस्पताल में रहना पड़ा और वह मौत के मुंह में जाते-जाते वचा। आख़िरकार उसे पोलैंड होकर जानेवाली रेडक्रास की गाड़ी में अन्य वीमार युद्धवंदियों के साथ घर रवाना किया गया। सारे रास्ते वह छत से लटकती एक वर्थ पर लेटा रहा। वरानोविची में क्वारेंटाइन पार करके अंत में जव वह स्मोलेन्स्क पहुंचा, तो वदन में इतनी भी ताकत शेष न थी कि विना सहारे के खड़ा हो सके। फलस्वरूप एक हफ़्ता अस्पताल में फिर रहना पड़ा।

अस्पताल से छूटकर वापस जव वह रेलवे स्टेशन वापस पहुंचा, तो तरह-तरह के वक्सों, थैलों और गठरियों से घिरे-लदे लोगों की वेइंतहा हड़वड़ाती भीड़ के वीच अपने को पाकर वह एकाएक मुस्करा उठा। उसे याद आया कि कैसे चार साल पहले उसके विश्वविद्यालय के साथी उसे, वीसवर्षीय जूनियर लेफ़्टिनेंट को छोड़ने स्टेशन आये थे और हर किसी ने उसे गले लगाते हुए कहा था, "जल्दी ही फिर मुलाकात होगी! विजय के दिन तक!" पुनर्मिलन की घड़ी आ गयी थी और वह फिर से एक रूसी स्टेशन पर खड़ा था, जो काफ़ी कुछ

उसी स्टेशन जैसा था, जहां से वह लाम पर गया था। पर उसकी मुस्कान में संकोच था, पीड़ा थी। उसे लगा कि वह रूस के रूबरू खड़ा है, लेकिन इस भीड़ में उसकी – मैला-कुचैला, बदरंग, पदसूचक पट्टियों से रहित फ़ौजी ओवरकोट पहने, पीठ पर बारिश से सिकुड़ा हुआ हरा जर्मन थैला लटकाये, मरियल चेहरे, नुकीली नाक और पूरी तरह ठीक न हुई गुहेरियों से लाल पलकोंवाले बामुश्किल ज़िन्दा दीबिच की – किसी को जरूरत नहीं।

पास से गुज़रते किसी सिपाही के संदूक का नुकीला कोना उसके कंधे से टकराया। पर इसकी पीड़ा के साथ-साथ उसने पेट में एक मीठी सी कमज़ोरी भी महसूस की, जो और कुछ नहीं, बल्कि तने हुए तार जैसी कराह लिये हुई भूख की स्थायी, चिर-परिचित सी अनुभूति थी। उसके घुटनों में कंपकंपी दौड़ गयी। दीवार का सहारा लेकर उसने पीठ से थैला उतारा और उसमें से काली रोटी का एक चिपचिपा सा टुकड़ा निकाला, जो उसे अस्पताल से मिला था। पपड़ी तोड़कर वह जल्दी-जल्दी चबाने लगा। उसे जबड़ा पूरा खोलना पड़ रहा था, ताकि रोटी दांतों पर चिपकी न रह जाये।

उस दिन से दीबिच दक्षिण-पूर्व में मध्यवर्ती रूस के उस काली मिट्टीवाले इलाक़े की ओर बढ़ने लगा, जिससे वह भली भांति परिचित था। विद्यार्थी काल में वह मास्को जाते हुए यहीं से गुज़रा करता था। पर इस बार बहुत समय लग रहा था। बड़ी मुश्किल से वह एक जंक्शन से दूसरे जंक्शन तक पहुंच पाता। सफ़र कभी लोगों से खचाखच भरे माल के डब्बों में करना पड़ता, तो कभी खुले प्लेटफ़ार्मनुमा डब्बों में। कभी गाड़ी एकाएक रुक जाती और रात-रातभर किसी साइडिंग में खड़ी रहती। फिर अचानक न जाने कैसे खेतों और जंगलों के बीच से रेंगते हुए अपनी राह पर आगे बढ़ने लगती, जब तक कि ड्राइवर एलान न कर देता कि ईंधन खत्म हो गया है। ऐसे मौकों पर मुसाफ़िर झींखते-झल्लाते हुए नीचे उतरते और पास के जंगल में भोज के पेड़ काटकर इंजन के लिए ईंधन जुटाते।

अपने डब्बे के खुले दरवाज़े पर नीली आस्ट्रियन पट्टियों में लिपटी दुबली टांगें नीचे लटकाये दीबिच सामने से गुज़रते जोते हुए खेत, काले-काले गांव और खड़ी ढालवाले रेललाइन के पुश्तों को देखता जा

रहा था। लाइन के किनारे टेकों पर टेलीग्राफ़ के बदरंग खंभे खड़े थे। कहीं-कहीं कोई चिड़िया तार पर अकेले बैठी चहचहा रही थी। जीवन के इस अठाईसवें वसन्त ने दीबिच के मन में ख़ुशी का संचार कर दिया। एक टीले की बगल से गुज़रने के बाद एकाएक जब उसे सामने धूप में लहलहाती घनी और ऊंची शीतकाल से पहले की बोयी हुई फ़सल की बहुत ही चटकीली हरी पट्टी दिखायी दी, तो वह इतना भावाकुल हो उठा कि उसका गला रुंध आया। प्यासे की तरह इस सुखद, नवजात रंगत का आनन्द लेते हुए वह अनजाने ही कोई बचकानी सी धुन गुनगुनाने लगा, जैसे "चिड़ियां थीं वे नन्ही सी, फुदक रही थीं टिड्डों सी"। वह टकटकी लगाये, बिना थके देखे जा रहा था। पेड़ों और कटे हुए ठूंठों पर नयी शाखें फूट आयी थीं, हालांकि पत्तियां अभी खुली नहीं थीं। चरागाहों में, जहां अभी एक भी फूल न उगा था, किसानों की छोटे कद तथा मामूली नस्ल की मोटी-मोटी गायें घास में मुंह मार रही थीं। उनके चरवाहे लड़के अपने पिताओं के मोर्चे से लाये हुए ओवरकोट पहने धूप में बैठे चाबुक बुन रहे थे और झबरैली टोपियोंवाले अपने सिर धीरे-धीरे घुमाकर गुज़रती गाड़ी को देख रहे थे। कभी-कभी दीबिच को नाटी सी घोड़ी की, जो मानो अभी गिर पड़ेगी, डोर कसकर थामे और छड़ी से उसे धमकाती, झटके दे-देकर हैंगे को लीक पर लाने की कोशिश करती औरत भी दीख जाती। यह सब उसका जाना-पहचाना था, पर फिर भी वह यों अचंभे से देख रहा था, मानो कोई असाधारण, नयी खोजी हुई या पहली बार देखी हुई चीज़ हो। उसे हर चीज़ लड़ाई से पहले की यादों की तुलना में छोटी, निस्तेज और जर्जर, पर पहले से कहीं अधिक प्रिय और मर्मस्पर्शी लग रही थी।

लेकिन स्टेशनों पर उसके इस सम्मोहन का स्थान एक प्रकार की उलझन ले लेती थी। लोगों में ऐसे अजीबो-गरीब परिवर्तन आ गये थे कि परिचित लगने के बावजूद उन्हें पहचान पाना कठिन था। स्टेशन पर ज्यों ही गाड़ी रुकती, वे तुरंत उतरकर किसान औरतों के गिर्द भीड़ लगा लेते, जो खाने-पीने की मामूली चीज़ें सिपाहियों और शहरियों की और भी मामूली चीज़ों – दियासलाइयों, नमक, देसी तंबाकू के फटे पैकटों और सफ़र के दौरान जेब में पड़े रहने से गंदे

शक्कर के टुकड़ों – से बदला करती थीं। इस व्यापार में मूल्य और दाम के बीच असाधारण असंगति देखकर दीबिच दंग रह जाता। चीज़ों को युद्ध से पहले के कोपेकों में आंकने की उसकी आदत अभी गयी नहीं थी। लाख कोशिश करने पर भी उसकी समझ में नहीं आता था कि तली हुई पूरी मुर्गी और मुट्ठीभर नमक, दोनों एक बराबर कैसे हो सकते हैं। पर भाड़ में जाये ऐसा मूर्खतापूर्ण अर्थशास्त्र! अरुचिकर यह नयी और दोनों पक्षों को पसंद धोखाधड़ी नहीं थी। अरुचिकर था इन बाज़ारों से आती महक का नथुनों में समाना और यह देखना कि कैसे कड़कड़ की आवाज़ के साथ मुर्गी का पंख नोचा जा रहा है, दांत सफ़ेद गोश्त में गड़ाये जा रहे हैं, जबड़े कर्च-कर्च करके उसे चबा रहे हैं और टेंटुआ ऊपर-नीचे आ-जा रहा है।

भीड़ में सबसे पिछड़ते हुए दीबिच भी फ़ौजी स्टोर की ओर लपका, जिसपर भूरी वर्दियों ने मानो धावा ही बोल दिया था। उस भीड़-भड़क्के में उसने ज़ैसे-तैसे एक छोटी सी खिड़की तक पहुंचने की कोशिश की, जहां तराज़ू के पीतल के पलड़ों पर बाट खड़खड़ा रहे थे। दूसरों के सिर के ऊपर से अपने दस्तावेज़ बढ़ाते हुए वह चिल्लाया,

"भैय्या, बीमार को रास्ता देना! बीमार हूं, भाई!"

पर उसे धक्का देकर किनारे कर दिया गया।

"बीमार हम भी हैं।"

उस धींगामुश्ती में वह फिर हिम्मत करके खिड़की की ओर बढ़ा और ज़बर्दस्ती अपने दस्तावेज़ तराज़ू के पीछे खड़े आदमी के सामने ठेलते हुए निवेदन जैसे स्वर में जल्दी-जल्दी बोला,

"तीन दिन से राशन नहीं पाया है। कुछ तो हमदर्दी रखो, साथियो!"

एक साथ कुछ लोगों ने उसके दस्तावेज़ों को अविश्वास और नाराज़गी से देखा।

"झूठ क्यों बोलते हो? कल तुमने रोटी पायी तो थी!"

उन्होंने उसके दस्तावेज़ वापस फेंक दिये। पर दीबिच ने हार न मानी और कागज़ गौर से देखने की ज़िद्द करते हुए और कमज़ोरी से बाहर निकली थकी आंखों से, भूख से ऐंठे चेहरे से, जिसपर काली दाढ़ी उग आयी थी, रोटी का टुकड़ा पाने का अपना अधि-

कार जताते हुए निराशाजनित अक्खड़पन के साथ चिल्लाया,
"ऐसी जल्दी मत करो! पहले इन्हें देख तो लो! मैं युद्धबंदी हूं। सीधे जर्मनी से आ रहा हूं। पढ़ो, क्या लिखा है!"

एक क्षण के लिए आसपास शांति छा गयी। फिर नुक्स सा निकालने-वाली निगाहों से उसके कागज़ात की जांच की गयी। तभी किसी के चुभते शब्द उसके कानों में पड़े,

"अहा, लेफ़्टिनेंट हैं! तव तो, हुज़ूर, आपको इंतज़ार करना पड़ेगा! आप जैसे अफ़सरों को हम अच्छी तरह जानते हैं।"

एक वार फिर उसे धकिया दिया गया। उसकी कोहनियों में इतना ज़ोर तो था नहीं कि ताकत से अपने अधिकार को मनवा पाता।

ऐसे मौकों पर दीबिच की इच्छा होती कि वह सफ़र बीच ही में छोड़ दे और कहीं किसी फ़ार्म में मज़दूरी कर ले, जहां कम से कम क्वास* और आलू तो मिलेगा ही। वह सोचता कि वेहतर दिन आने तक और सबसे खास वात, पूरी तरह भला-चंगा होने तक वहां गांव में रहना ही ठीक होगा। पर घर, मां और वहन को देखने की लालसा कैद के दिनों से ही इतनी प्रबल, इतनी अदम्य वन गयी थी कि रुकना विल्कुल असंभव था। उसे लगता था कि दूर स्थित अपने प्यारे ख़्वालीन्स्क तक पहुंचने के लिए उसे अगर घुटनों के वल भी चलना पड़े, तो हिचके-गा नहीं।

शामों को जव ठंडी हवा से बचने के लिए गाड़ी के डव्वे का दरवाज़ा वंद कर दिया जाता, तो मुसाफ़िर आपस में वतियाने लगते। घुप्प अंधेरे में दीबिच अंदाज़ लगाता कि कौन सी आवाज़ किसकी है। इन वातचीतों से उसे धीरे-धीरे देश के नये भूगोल की जानकारी मिलने लगी। आये रोज़ खुलने या वदलनेवाले लड़ाई के मोर्चों ने देश का भूगोल भी वदल डाला था।

केनिगस्टीन में ही दीबिच ने अफ़वाह सुन ली थी कि अव एक के वजाय दो रूस हैं, जिनमें आपस में घोर दुश्मनी है। भ्रातृघाती युद्ध और गृहयुद्ध जैसे शब्द सुनकर तो क़ैदी इतने सकते में आ गये थे कि १९१७ में क्रांति शब्द सुनकर वैसा नहीं हुआ था। रास्ते में दीबिच

---

* रई से वनाया हुआ एक प्रकार का रूसी पेय। —अनु०

को मालूम हुआ कि दक्षिण में सभी सफ़ेद गार्ड सैनिकों ने जनरल देनीकिन को अपना कमांडर मान लिया है और साइवेरिया पर एडमिरल कोल्चाक का क़ब्ज़ा है, जिसने अपने को रूस का सर्वोच्च शासक घोषित किया है। उसने यह भी सुना कि दक्षिण और पूर्व की ये विशाल फ़ौजें (जिनमें सभी कज़्ज़ाक और भूतपूर्व रूसी सेना के लगभग सभी अफ़सर शामिल थे) वोल्गा इलाके में मिलकर मास्को को घेरने की योजनाएं बना रही हैं और मास्को सोवियत सत्ता की रक्षा के लिए लोगों को लाल सेना में लामबंद करता जा रहा है। दीविच ने देनीकिन या कोल्चाक का नाम पहले कभी नहीं सुना था। पर क्रांति से पहले तक उसने उनमें से भी तो कोई नाम नहीं सुना था, जिन्हें अब क्रान्ति ने सर्वविख्यात बना डाला है। वह अपने अज्ञान पर शर्मिंदा था, उसे किसी से प्रकट नहीं करता था। पूछने पर वह कहता था कि इसका कारण उसका पिछड़ापन और लंबे समय तक कैद में रहना है। उसे यह जानकर आश्चर्य हुआ कि गृहयुद्ध दक्षिण और पूर्व की तरह रूस के उत्तर और पश्चिम में भी चल रहा है और वहां भी सफ़ेद फ़ौजें ऐसे जनरलों के नेतृत्व में लड़ रही हैं, जिनके नाम उसने कभी नहीं सुने थे, और हर कहीं सफ़ेद फ़ौजों का मुकाबला लाल सेना से था, जो मज़दूरों, जहाज़ियों और भूतपूर्व सैनिकों से बनी थी। वह समझ गया कि केनिगस्टीन में फ़्रांसीसी युद्धबंदियों ने रूसियों पर विश्वासघात का आरोप क्यों लगाया था: रूस के मित्रराष्ट्र अरसे से उसके मित्रराष्ट्र नहीं रह गये थे। उसे मालूम हुआ कि फ़्रांसीसी, अंग्रेज़, अमरीकी और जापानी रूस के उत्तर, दक्षिण, पूर्व और पश्चिम, हर कहीं, जहां भी लड़ाई चल रही थी, उसके मामलों में दखल दे रहे थे। घटनाओं का सिर-पैर, कुछ न समझ पाने के कारण उसे स्वयं पर लज्जा आ रही थी, पर वह देख रहा था कि जिन लोगों की बातें उसने स्टेशनों पर या गाड़ी में सुनी हैं, उनमें से भी बहुत से इन घटनाओं को नहीं समझ पाये हैं, हालांकि स्वयं ये लोग इन घटनाओं के साक्षी और जाने-अनजाने उनमें भाग लेनेवाले रह चुके थे, जबकि वह कैद में बैठा था। उसे लगा कि ये घटनाएं उससे किसी एक का पक्ष लेने का तकाज़ा कर रही हैं, पर वह इसके लिए बिल्कुल भी तैयार न था। वह इतना ही जानता था कि अगर वह सफ़ेद गार्डों को सही कहेगा, तो इसका

मतलब होगा कि जो फ़ांसीसी उनकी मदद कर रहे हैं, वे भी सही हैं, और यह मानने के लिए वह सहमत नहीं था, क्योंकि तब इसका मतलब होता कि केनिगस्टीन में जिन फ़ांसीसियों ने उसपर हमला किया था, वे भी सही थे, मगर वह रूस के बारे में अपमानजनक बातें कहने के लिए उनसे नफ़रत करता था। बाकी और सब कुछ दीविच को गड़बड़झाला सा लगा। बंद डब्बे के अंधेरे में लोगों की बातें सुनते हुए उसने सोचा कि जिस दुनिया से वह आया है, वह कहीं स्पष्ट और सरल थी, बजाय इस उथल-पुथलभरी दुनिया के, जिसमें वह अब पहुंचा है। पहले सभी एक ही और हर किसी को मालूम शत्रु के विरुद्ध लड़ा करते थे। लेकिन अब सब अलग-अलग लड़ रहे हैं। भाई भाई को मारने पर उतारू है और तुम्हें एक भाई में दोस्त देखना है और दूसरे में दुश्मन। नहीं, घटनाओं के इस अभूतपूर्व भंवर-जाल में कुछ भी समझ पाना मुश्किल है! उलझन में डालनेवाले इन सब विचारों से परेशान दीविच गाड़ी के हिचकोलों और पहियों की नपी-बंधी खट-खट झन-झन के बीच सो जाता।

एक बार सुबह आंख खुलने पर दीविच ने देखा कि गाड़ी र्‌तीश्चेवो के बड़े जंक्शन पर खड़ी है। सहसा भूख के मारे उसे चक्कर आ गया। लड़ाई से पहले यहां से गुज़रते हुए वह हमेशा स्टेशन के रेस्तरां में जाता था, जहां आनेवाली गाड़ियों के मुसाफ़िरों के लिए लंबी मेज़ों पर गरमागरम बोर्श्च सूप से भरी प्लेटें तैयार रखी रहती थीं। रेस्तरां में एक ट्रेनिंग स्कूल भी था, जिसमें आसपास के गांवों के तातार लड़कों को बैरागिरी सिखायी जाती थी। हर चीज बहुत ही लुभानेवाली और क्षुधावर्धक होती थी। स्टेशन का नाम ही दीविच के मन में बोर्श्च सूप की प्लेटों की लंबी कतार, उनमें तैरते सुनहरे पदक जैसे चरबी के टुकड़ों और उनपर धीरे-धीरे उठती भाप की याद जगाने के लिए काफ़ी था। हर प्लेट के सामने हल्की ललाई लिये समोसों का ढेर लगा होता था। फूलदानों के पीछे बर्फ़ सी सफ़ेद, महीन-महीन टुकड़ों में कटी हुई मुलायम रोटी रखी होती थी। हाथों में नैपकिन लिये तातार लड़के निमंत्रित सा करते हुए घुटने की टेक लगाकर भारी कुर्सियां पीछे खिसकाते थे, और हड़बड़ाते हुए मेहमान जल्दी-जल्दी उनपर जा बैठते थे।

भूख की असह्य अनुभूति ने दीविच के सारे शरीर को जकड़ लिया। उसने डब्बे से बाहर झांककर देखा। कुछ ही दूर लोगों की भीड़ दिखायी दी, जो सामान बेचनेवालों को घेरे हुई थी। अपनी कमज़ोरी पर काबू पाकर वह भी प्लेटफ़ार्म पर कूदा और भीड़ की दिशा में दौड़ा। अरसे से एक विचार उसके मन में चक्कर काट रहा था कि जर्मन थैला देकर खाने की चीज़ क्यों न ले ली जाये। अब उसने फ़ैसला कर ही लिया। कंधे से थैला उतारकर उसने तौलिया, स्वीटर और पानी की बोतल जेब और कोट के अंदर ठूंसी, फिर थैले को झाड़कर हथेली से उसकी सलवटें ठीक कीं और सबसे नज़दीक की भीड़ की ओर लपका।

टाट के टुकड़े से ढकी टोकरी के सामने बहती, रोहों से पीड़ित आंखोंवाली एक सांवली तातार बुढ़िया बैठी हुई थी। टोकरी के खुले किनारे से छाछ का घड़ा और कुछ तली हुई मुर्गियां दिखायी दे रही थीं।

"दो मुर्गियों के बदले में यह थैला दे सकता हूं," आसपास के शोर-शराबे जैसे जोश की नकल करते हुए दीविच जोर से चिल्लाया।

तातार औरत ने सिर के रूमाल के कोने से अपनी आंखें पोंछीं और कोई जवाब नहीं दिया।

"बोलो, तैयार हो न? देखो कितना बढ़िया थैला है!" दीविच कुछ झिझकते फिर बोला।

बुढ़िया ने थैला लिया, अपनी झुर्रीदार उंगलियों से उसे उलट-पलट कर देखा और बिना कुछ कहे वापस कर दिया।

"क्या बात है? तुम क्या रूसी नहीं समझतीं?"

"क्यों नहीं समझती! थैला हमारे यहां का नहीं है," बुढ़िया एकाएक बोल पड़ी।

"हां, हां, हमारे यहां का नहीं है, विदेश का है और हमारे थैलों से बेहतर है। देखती हो, अस्तर मोमजामे का है। पानी अंदर नहीं जाता। दो मुर्गियां देकर थैला तुम्हारा हो जायेगा।"

"पट्टा फटा हुआ है," बुढ़िया ने शांतभाव से एतराज़ किया।

"फटा हुआ नहीं, बस एक जगह पर थोड़ा सा घिस गया है। इसे तुम ठीक कर सकती हो।"

बुढ़िया ने थैला एक बार फिर लिया।

"और यहां पर छेद भी है," सिर हिलाते हुए उसने कहा।

"इसे तुम सी सकती हो," दीबिच ने थैला ज़बरदस्ती उसके घुटनों पर फेंकते हुए जवाब दिया।

बुढ़िया ने बिना कोई जल्दी दिखाये थैले को उलटा किया, अस्तर और कोनों को गौर से देखा और फिर लौटा दिया।

"तो क्या दोगी, बताओ भी न?" थैले को सीधा करते हुए दीविच चिल्लाया।

"ये लो एक मुर्गी। अच्छी है, मुलायम है," तातार औरत ने टांग पकड़कर मुर्गी को लटकाकर दिखाते हुए कहा।

"ये मुर्गी नहीं, चूज़ा है! ओह, कितनी कंजूस हो!"

"कंजूस मैं नहीं, तुम हो," वुढ़िया ने ज़रा भी तैश में न आते हुए मुंहतोड़ जवाव दिया और चर्बीली, पीली मुर्गी को दूसरी मुर्गियों के ऊपर रख दिया।

"ठीक है," दीविच ने वेसव्री से कहा और थैले को तह करने लगा, मानो अभी चला जायेगा, हालांकि उसमें एक कदम भी चलने की ताकत नहीं थी और निगाह वरावर मुर्गी पर ही टिकाये हुए था। "लाओ वह मुर्गी। पर रूंगे के तौर पर एक लोटा छाछ भी देना होगा। हो गया न सौदा?"

"एक लोटा क्यों? लोटा वहुत बड़ा है," बुढ़िया ने जवाव दिया। "हां, एक गिलास ज़रूर पी लो।"

"चलो गिलास ही दो और फिर जाओ भाड़ में," दीविच ने मुर्गी की ओर हाथ वढ़ाते हुए कमज़ोर आवाज़ में कहा।

"भाड़ में क्यों? भाड़ में क्यों?" बुढ़िया एकाएक चिल्लायी। नाराज़गी के मारे भट से उसने टाट से टोकरी ढक दी और अपनी भाषा में, जिसे दीविच नहीं समभता था, बड़वड़ाते हुए आंखें पोंछने लगी।

"ठीक है, ठीक है, भाड़ की वात छोड़ देते हैं," दीविच ने अपना अफ़सोस और वेसव्री छिपाते हुए लगभग भयभीत स्वर में कहा और टाट हटा दिया।

वुढ़िया की नाराज़गी अभी गयी नहीं थी। फिर भी उसने थैला लेकर अपनी टांगों के नीचे रख लिया और छाछ उंडेलने लगी।

दीविच अधैर्य से लाल-लाल छाछ और उसमें तैरते गहरे कत्थई

मक्खन के कतरों को गिलास में गिरते देख रहा था। उसे अच्छा नहीं लग रहा था कि उसकी सौदेबाज़ी को देखनेवाले सिपाहियों की लालची निगाहें भी छाछ पर टिकी हुई थीं। मुंह फेरकर उसने वह ठंडा, चिकना पेय गटागट पी डाला।

छाछ के नाजुक ज़ायके ने उसे बचपन की याद दिला दी। जीभ से मूंछों को चाटते और माथे पर उभरी पसीने की बूंदें पोंछते हुए वह चौक को पार करके स्टेशन की ओर चल पड़ा। रास्ते में उसने उसी मुद्रा से, जिसे उसने इतनी बार ईर्ष्या के साथ देखा था, मुर्गी की एक टांग तोड़ी और उसे मुंह में डालने ही वाला था कि कहीं से एक खुशी-भरी, चौंकानेवाली पुकार सुनायी दी:

"ऐ लोगो! पेंज़ा जानेवाली गाड़ी तैयार खड़ी है!"

वह भी तुरंत कहीं दूर किसी लाइन की ओर दौड़ रही भीड़ में जा मिला।

सवारी गाड़ी साफ़-सुथरी और खाली थी। लगता था कि उसे अभी-अभी वहां लाकर खड़ा किया गया है। शोर-शराबे और खुशीभरी चिल्लाहट के बीच सारी गाड़ी जल्दी ही मुसाफ़िरों से भर गयी।

दीविच ने अपने लिए एक ऊपर की बर्थ चुनी। ओवरकोट कोहनी के नीचे रखकर वह पसर गया और मुर्गी का काम तमाम करने लगा। उसने सपने में भी नहीं सोचा था कि उसे सीधे पेंज़ा जानेवाली सवारी गाड़ी में और वह भी आराम से पैर पसारकर सफ़र करने का सुअवसर मिलेगा। पेंज़ा पहुंचने का मतलब था कि वह आसानी से कुज़्नेत्स्क और सिज़रान भी पहुंच जायेगा, जहां से उसका अपना कसबा कोई खास दूर नहीं है। वह मुर्गी का टुकड़ा तोड़ता, नमक लगाता और मुलायम, कुरमुरी हड्डियों समेत चबा डालता। कल्पना में उसने देखा कि वोल्गा के चमकते पानी में अपने चप्पूदार चक्के से पानी काटते हुए एक बड़ा सफ़ेद स्टीमर चला जा रहा है। उसके दोनों ओर हरियाली से ढके किनारे खिंचे हुए धागे या बल खाते फंदों की तरह फैले हुए हैं और हर्षोन्मत्त यात्री चुपचाप खड़े धूप का आनन्द ले रहे हैं। जहाज़ के अंदर कहीं से इंजनों की लयबद्ध घरघराहट आ रही है। मुर्गी की टांग चूसते हुए दीविच ने आंखें मूंद लीं और उसे लगा कि दूर किसी मोड़ के पीछे उसे वसन्तकालीन परिधान ओढ़े पहाड़ियों तथा टीलों

से घिरे, चमकते हुए, शांत और सुखमय ख्वालीन्स्क की झलक दिखायी दी है।

सहसा सब ओर हड़बड़ी सी मच गयी। वैगन में गालियां, चिल्लाहट और औरतों की चीखें गूंज गयीं। कोई बहुत ही क्रुद्ध स्वर में आदेश दे रहा था,

"डब्बा खाली कर दो! सुनते हो? सब के सब वैगन से निकल जायें!"

उल्टी राइफ़ल उठाये, बांह पर लाल पट्टी बांधे एक स्थूलकाय संतरी के साथ कंडक्टर गलियारे में भीड़ के बीच से रास्ता बनाते हुए गुस्से से चिल्लाता जा रहा था,

"किसने कहा तुमसे कि गाड़ी पेंज़ा जा रही है? यह स्पेशल गाड़ी है। सबके सब डब्बा खाली कर दें!"

मुसाफ़िर झींखते, बड़बड़ाते, हड़बड़ाते, एक दूसरे की राह में आते हुए अपना-अपना सामान समेटने लगे।

दीविच ने मुर्गे की बची हुई हड्डियों को सावधानी से तौलिये में लपेटा और बर्थ से नीचे उतर आया। फिर वैगन से बाहर कूदकर लाइनों के बीच की रेतीली पगडंडी से होते हुए भीड़ के पीछे-पीछे धीरे-धीरे स्टेशन की ढलवां छतवाली इमारत की ओर चल पड़ा।

२

लोगों की बेइंतहा भीड़ के बीच से जैसे-तैसे रास्ता बनाते हुए दीविच ने एक अधखुले दरवाज़े से वेटिंग रूम में प्रवेश किया। एकाएक उसका सिर चकराने लगा। जहां-तहां फ़र्श पर लोग बैठे या लेटे हुए थे। देसी तंबाकू का इतना घना धूआं छाया हुआ था कि हर चीज़ मकड़जाले से ढकी हुई लग रही थी। दूर दीवार के पास एक बड़ा जलपानगृह था। अरसे से न खुलने के कारण वहां धूल ही धूल जमा हो गयी थी। वह एक ऐसे सोये हुए जीव की तरह लग रहा था, जो मानो अपने दिन पूरे कर चुका है और अब किसी काम का नहीं रह गया है। जलपानगृह के पास एक बेंच पर बच्चे लेटे हुए थे या खेल रहे थे।

गठरियों, टोकरियों, बूट या पेड़ की छाल के जूते पहने पसरे

हुए पैरों को लांघता हुआ दीबिच जलपानगृह के पास पहुंचकर बेंच के एक सिरे के सहारे उकड़ूं बैठ गया।

अपने ठीक सामने एक खिड़की के पास उसे एक परिवार दिखायी दिया, जिसके सदस्य आसपास के दूसरे लोगों से इतने भिन्न थे कि वह उनसे निगाहें न हटा सका।

परिवार में पति-पत्नी, सात-एक साल का एक बच्चा, जो अपनी मां की तरह ही बेहद खूबसूरत था, और सफ़ेद बालों, कनपटियों पर करीने से सजी छोटी-छोटी लटोंवाली और हास्यजनक, पुराने ढंग के, मगर रौब सा गांठनेवाले कपड़े पहने एक बुढ़िया थी। वह देखने में रूसी नहीं लगती थी और शायद बच्चे की गवर्नेस थी। वह पूरी तरह से बच्चे की देखभाल में जुटी हुई थी, यानी यह कि वह नीले, तामचीनी के प्याले से ठीक से पिये और रोटी, जिसपर कुछ लगाया हुआ था, ठीक से खाये। बच्चा एक टुकड़ा निगलता कि वह उसे दूसरा टुकड़ा थमा देती और आग्रह करती कि वह खाने के साथ-साथ पीता भी जाये। फिर वह बच्चे के घुटनों पर पड़े चूरे को झाड़ देती और हाथों में प्याला ठीक से पकड़ा देती।

पति-पत्नी का अच्छा जोड़ा था। पति अभी चालीस तक नहीं पहुंच पाया था और पत्नी तो बिल्कुल जवान, अपने पूरे उभार पर थी। कहना मुश्किल था कि उसकी नाज़ुक अदाएं कितनी जन्मजात और कितनी सीखी हुई थीं। कुछ भी हो, इन अदाओं ने ही सबसे पहले दीबिच का ध्यान आकृष्ट किया। अपनी पृष्ठभूमि से बिल्कुल और स्पष्टतः भिन्न परिस्थितियों में भी उस नारी में एक अद्भुत, लुभावनी सादगी बनी हुई थी। दूसरी ओर, उसके चाल-ढाल में थोड़ी सी कृत्रिमता भी थी, जैसे टीन का फूहड़ सा प्याला पकड़ते हुए वह अपनी कनिष्ठा को ऊपर उठा लेती, हालांकि वैसे भी अपने मुलायम, गुदाज़ हाथों का थोड़ा सा प्रदर्शन करने से बाज़ नहीं आती थी। शायद वह यह दिखाने के लिए जानबूझकर अपनी हरकतों को और नाज़ुक बना रही थी कि उसे चाहे कैसे भी दुर्दिन क्यों न देखने पड़ रहे हों, वह अपनी कुलीन आदतें कभी नहीं छोड़ेगी, या यह कि वह ऐसे वातावरण में अपनी इन अदाओं के बेतुकेपन से अपना और अपने पति का मनोरंजन करना चाहती है।

ज़ाहिर था कि पति-पत्नी, दोनों ही अपनी विनोदपूर्ण हरकतों से अपनी स्थिति की कटुता को कम करना चाहते हैं, जिसने उन्हें टीन के प्याले में बेस्वादा उबला पानी पीने और स्पष्टतः उन्हें नापसंद इस बहुत बड़ी भीड़ के बीच संदूकों पर बैठने को मजबूर किया है। कभी-कभी मेज़ का काम देनेवाले संदूक पर से, जिसपर उन्होंने नेपकिन बिछा लिया था, एक दूसरे को कुछ पकड़ाते हुए वे हंस पड़ते। मगर जिस ढंग से वे अपने बच्चे को देख रहे थे, उससे स्पष्ट था कि वे चिंतित ही नहीं, कुछ डरे हुए भी हैं। इस छिपी हुई बेचैनी के बावजूद वे दिखावा यही कर रहे थे कि मानो वे बड़े मज़े में हैं और अपनी स्थिति का भरपूर लुत्फ़ उठा रहे हैं।

दीविच अनचाहे ही उनकी बातें सुनने लगा और आसपास के शोरशराबे के बावजूद धीरे-धीरे समझ गया कि वे क्या बातें कर रहे हैं। अरसे से उसने ऐसा सुखी, सौहार्दपूर्ण परिवार नहीं देखा था। उसे यह कुछ अजीब, दुखद, मगर साथ ही न जाने क्यों अच्छा भी लगा कि ऐसा परिवार भी उस तूफ़ान की चपेट में आ गया है, जिसे झेल पाना उसके जैसे तपे हुए सिपाही के लिए भी कठिन है।

"आस्या," पति एकाएक आवाज़ ऊंची करके कह रहा था, "तुम्हें नहीं लगता कि ओल्गा आदमोव्ना को अपना जड़ाऊ पिन उतार लेना चाहिये?"

"पिन?" पत्नी ने आश्चर्य और उत्सुकता दिखाते हुए यों पूछा, मानो अभी आगे कुछ बहुत मज़ाकिया बात होनेवाली है।

"हां, हां, पिन," पति ने दोहराया और गंभीर होकर गवर्नेस की ओर आंखों से इशारा किया। गवर्नेस का हाथ तुरंत अपनी लंबी ठोड़ी के ठीक नीचे टंगे सस्ते प्लास्टिक के फूल और सोनपंखी पर चला गया।

"ओल्गा आदमोव्ना, आपके इस आभूषणप्रेम की वजह से लोग हमें बुर्जुआ समझ सकते हैं।"

"साशा, ओल्गा आदमोव्ना से ऐसे मज़ाक करना ठीक नहीं है! कहीं डर के मारे उसकी जान न चली जाये!" पत्नी ने सौजन्यता-पूर्ण सहानुभूति दिखाते हुए वृद्धा महिला का पक्ष लिया, हालांकि उसकी मुस्कान का मतलब कुछ और ही था, यानी यह कि ओल्गा आदमोव्ना का मज़ाक उड़ाना उसे भी पसंद है।

"सचमुच, ओल्गा आदमोव्ना की वजह से हम मुसीबत में पड़ सकते हैं। देखो तो वह कितनी बनी-ठनी है और सिपाहियों को कैसे हिकारत की नज़रों से देख रही है!"

"मैं सिपाहियों को बिल्कुल नहीं देख रही हूं, अलेक्सांद्र व्लादीमिरोविच," ओल्गा आदमोव्ना ने शर्माते हुए तुरंत जवाब दिया। "मेरा तो सारा ध्यान अल्योशा पर है।"

"बिल्कुल नहीं!" अलेक्सांद्र व्लादीमिरोविच ने व्यंग्य के साथ हंसते हुए नकल की। "पर यह क्या शब्द है – 'बिल्कुल'? मैंने तो कभी सुना नही। आप नहीं जानतीं कि यह शब्द हटा दिया गया है। बिल्कुल नाम की अब कोई चीज़ नहीं रह गयी है, मैडम!"

"मुझे बचाइये, अनास्तासिया गेर्मानोव्ना," गवर्नेस ने असहाय होकर कहा। "मैं जब भी घबड़ाती हूं, इसका अल्योशा पर असर पड़ता है।"

"पर वह तो मज़ाक कर रहे हैं," अनास्तासिया गेर्मानोव्ना ने सहानुभूति से जवाब दिया।

"ओह, मैडम, यह घबड़ाने का वक्त नहीं है," अलेक्सांद्र व्लादीमिरोविच ने आह भरी। "अभी तो और भी बुरे वक्त आ सकते हैं। नाराज़ न होइये।"

जैसे अब बातचीत में और कोई दिलचस्पी न रह गयी हो, उसने मुंह मोड़कर अपने इर्दगिर्द उदासीभरी निगाह डाली। दीविच अब भली भांति देख सकता था कि उसका चेहरा बड़ा, ऊपरी होंठ कुछ तुनकमिज़ाजी से ऊपर को उठा हुआ और नाक के पोपटे काफ़ी चौड़े हैं। दाढ़ी बनी होने से चेहरा काफ़ी चिकना-चिकना लग रहा था, जो बड़े अचरज की बात थी: सफ़र की गंदगी, असुविधा और हड़बड़ी में वह कब और कहां अपना चेहरा इतना संवार पाया था?

एकाएक वह तन गया और आंखें कुछ भींचकर जलपानगृह की ओर देखने लगा। फिर खड़ा होकर अपने थुलथुल शरीर के बावजूद दीविच की बगल से इतने हल्के कदमों तथा इतनी सहजता से गुज़रा कि जैसे वेटिंग रूम मे कोई भीड़ ही न हो।

जलपानगृह के पास बदरंग सी टोपी पहने और गंदी सी दाढ़ीवाला स्टेशनमास्टर खड़ा मानो ऊंघता हुआ संतरी को बता रहा था कि लोगों

को विठाने, उनका सामान रखने का इंतज़ाम कैसे किया जाये, ताकि आने-जाने के लिए भी जगह रहे। उसके पीछे मुसाफ़िरों की कतार लगी हुई थी, जिनमें से ज़्यादातर सिपाही थे। अपने घिसे-फटे दस्तावेज़ों को हाथ में लिये वे कभी धमकीभरे स्वर में तो कभी निराश स्वर में चिल्ला रहे थे, "कामरेड स्टेशनमास्टर! कामरेड स्टेशनमास्टर!" स्पष्ट था कि वह गाड़ी की सीटी की तरह ऐसी चिल्लाहट का भी आदी वन गया था, क्योंकि उसने एक वार भी मुड़कर उन लोगों की तरफ़ नहीं देखा।

अलेक्सांद्र व्लादीमिरोविच ने उसके ठीक सामने रुककर उसका रास्ता रोक लिया और वड़ी विनम्रता से कहा,

"आपने हमें वलाशोव भिजवाने का वायदा किया था।"

"वलाशोव के लिए कोई गाड़ी नहीं होगी," स्टेशनमास्टेर ने यंत्रवत् जवाव दिया।

"आपको याद है, मैं आपके पास पहले भी आया था? मेरा नाम पास्तुख़ोव है।"

"याद है, याद है," स्टेशनमास्टर ने इस असाधारण मुसाफ़िर के चौड़े, छोटे कोट के चमड़े के वटनों को उदासीनता से देखते हुए जवाव दिया। "वलाशोव सिर्फ़ फ़ौजी गाड़ियां ही जा रही हैं।"

"हो सकता है कि फ़ौजी गाड़ी में ही," पास्तुख़ोव ने कुछ पूछने और कुछ सुझाने के अन्दाज़ में कहा।

"फ़ौजी गाड़ी में? पर उसका ज़िम्मा गाड़ी के कमांडर का है। मैं इस वारे में कुछ नहीं कर सकता। आप सरातोव क्यों नहीं जाते?"

"इसलिए कि मुझे वलाशोव जाना है।"

"या तो सरातोव या फिर पेंज़ा," स्टेशनमास्टर ने पहले जैसी ही उदासीनता से कहा और हाथ उठाकर इशारा किया कि पास्तुख़ोव रास्ते से हट जाये।

"पर मैं तो अभी पेंज़ा से आया हूं!" पास्तुख़ोव ने अपनी जगह से टस से मस हुए विना विरोध किया। "वापस फिर वहीं क्यों जाऊं? आप वड़ी अजीव और उलटी वात कह रहे हैं। मुझे वलाशोव जाना है। मेरे साथ मेरा परिवार भी है। चौवीस घंटे से मैं आपके स्टेशन पर वैठा हूं, जहां और तो और उवला पानी भी नहीं है।"

"मैं कुछ नहीं कर सकता। हां, कहो तो सरातोव जाने का इन्तज़ाम ज़रूर करवा सकता हूं," स्टेशनमास्टर ने दोहराया और पास्तुख़ोव पर जड़ सी निगाह डालकर अलग हट गया, मानो उसकी वगल से निकल जाना चाहता हो।

सिपाहियों की भीड़, जो सारी बातचीत ध्यान से सुन रही थी, फिर एकाएक ज़ोर-ज़ोर से चिल्लाने लगी,

"कामरेड स्टेशनमास्टर! कामरेड स्टेशनमास्टर!"

पास्तुख़ोव ने फिर स्टेशनमास्टर का रास्ता रोक लिया और अपने गुस्से को छिपाते हुए अड़ियल स्वर में कहा,

"आप अपना वायदा पूरा करेंगे या नहीं? दो वार आपने हमें वलाशोव भेजने का इन्तज़ाम करने का वायदा किया था। आपने ख़ुद कहा था।"

"क्या हुआ, अगर कहा भी था? लाइनों पर फ़ौजी गाड़ियां खड़ी हैं, समझे? या आपकी समझ में इतनी सी वात भी नहीं आती?" अपनी उवाऊ उदासीनता को एकदम छोड़कर स्टेशनमास्टर चीखा।

पास्तुख़ोव का चेहरा तमतमा गया।

"आप यों चिल्लाइये नहीं!" उसने धीमे से कहा।

"मुझे जाने दीजिये," स्टेशनमास्टर और भी ऊंची आवाज़ में बोला।

"मैं कहता हूं कि चिल्लाइये नहीं," पास्तुख़ोव अपनी जगह से फिर भी नहीं हिला।

"चिल्ला कोई नहीं रहा है। कृपया रास्ते से हट जाइये।"

"इतना तो आप कर सकते हैं कि मुझे फ़ौजी गाड़ी के कमांडर से मिला दें।"

"यह मेरा काम नहीं। कृपया..."

"अरे, खत्म भी करो वहस!" भीड़ में से किसी ने ढिठाई से कहा। "वड़ा मांग करनेवाला आया है! कौन होते हो तुम?"

फ़ौजी ओवरकोट ओढ़े और हाथ में वड़ा सा थैला पकड़े एक नौजवान सिपाही भीड़ में से आगे आया और पास्तुख़ोव की ओर वढ़ा। उसकी भूरी, थोड़ी सी आगे निकली आंखों से वेफ़िक्री और चालाकीभरा पागलपन झलक रहा था। वह अपना वड़ा, सनिया वालोंवाला सिर

ऊंचा किये हुए था, जिसपर उसने पैनकेक जैसी चिपटी टोपी पहनी हुई थी। उसकी उजली भौंहें, जो उसकी उम्र को देखते हुए बहुत ही झबरैली थीं, ऊपर-नीचे, ऊपर-नीचे कूद-फांद रही थीं,-जो काफ़ी डरावना था।

पास्तुख़ोव ने सिपाही को हटाने की कोशिश की, पर वह उसके सामने आकर खड़ा हो ही गया और जल्दी-जल्दी स्टेशनमास्टर से लोगों और लोगों से फिर पास्तुख़ोव पर नज़रें घुमाने लगा।

"सोचो तो, 'मेरा नाम पास्तुख़ोव है!' जैसे कि अब तक तुम्हारे बिना हमारा काम ही नहीं चला! अरे, मैं भी तो ऐरा-गैरा नत्थू खैरा नहीं हूं! मैं भी इपात इपात्येव हूं और लड़ाई में घायल हो चुका हूं। पर मैं इसका ढिंढोरा नहीं पीटता। मुझे इंतज़ार करने के लिए कहते हैं, मैं इंतज़ार करता हूं। पर तुम? नहीं, 'मेरा नाम पास्तुख़ोव है! मेरे बलाशोव जाने का इन्तज़ाम करो!'"

"अरे छोड़ो भी," फीकी सी, सुस्त मगर समझदारी का परिचय देनेवाली मुस्कान के साथ एक अधिक उम्रवाले सिपाही ने कहा और उसकी कोहनी पकड़कर उसे शांत कराना चाहा।

"नहीं, क्यों छोड़ूं? मेरे चाहे एक ही आंख है, पर मैं अच्छी तरह देख सकता हूं कि उसे बलाशोव पहुंचने की जल्दी क्यों पड़ी है। साहब दक्षिण जाना चाहते हैं, सफ़ेद जनरलों की शरण में, है न? मैं सब समझता हूं!"

"मैं 'साहब' नहीं हूं और तुम्हें मुझसे यों बोलने का कोई हक नहीं है," पास्तुख़ोव ने धीरे-धीरे और बड़ों जैसे समझाते हुए कहा। "रहा सवाल इसका कि मुझे कहां जाना है, इसे मैं तुम्हारी मदद के बिना ही तय कर लूंगा।"

"बड़े चालाक हो," सिपाही और भी ढीठता से और चिढ़कर चिल्लाया। "तुम्हें मालूम होना चाहिये कि अब हमारे बिना कुछ भी तय नहीं किया जाता।"

इस बीच दीबिच खड़ा हो गया था और भीड़ के धक्के ने उसे इन झगड़ते हुए लोगों के करीब पहुंचा दिया था। वह देख रहा था कि पास्तुख़ोव बड़ी कोशिश से अपनी मर्यादा बनाये हुए है और इस कोशिश ने उसकी मर्यादा को आत्मप्रदर्शन में बदल दिया है, जिससे

लोगों में कुतूहल और संदेह पैदा हो गया है। हर कोई गाड़ियों की व्यर्थ प्रतीक्षा करते-करते ऊब गया था, थक गया था और चिड़चिड़ा हो गया था और यह घटना कुछ समय के लिए उनका मन-बहलाव कर सकती थी। संतरी अनमना सा राइफ़ल हिला-हिलाकर स्टेशनमास्टर के लिए रास्ता बना रहा था। एकाएक कहीं भीड़ के छोर से किसी की भारी सी आवाज़ आयी,

"उसके दस्तावेज़ देखो! पता करो कि वह कौन है?"

"ठीक कहा," सिपाही फिर से जोश में आकर चिल्लाया। "अभी पता लगाते हैं कि वह बलाशोव क्यों जाना चाहता है!"

"क्यों उसके पीछे पड़े हुए हैं?" दीविच बीच में बोल पड़ा। "वह अपने परिवार के साथ है और आप लोगों की राह में भी नहीं आ रहा है।"

"तुम कौन होते हो बीच में बोलनेवाले? क्या उसके साथ हो?"

"देखिये बदतमीज़ी से बात न करें!" दीबिच और ज़ोर से बोला।

सिपाही ने उसपर निगाह दौड़ायी और फिर कुछ शांत होकर, पर फिर भी गुस्ताखी से बोला,

"लगता है अफ़सर हो। तभी इतना बुरा लग रहा है।"

"अफ़सर हूं या नहीं, लेकिन आपको ऐसे बदतमीज़ी से बोलने का कोई हक नहीं है।"

"और तुम्हें मुझे सिखाने का हक किसने दिया है?"

"मोर्चे पर बिताये एक साल ने!" दीविच अप्रत्याशित रूप से असहनीय और चीखती हुई आवाज़ में बोला। "दो बार दुश्मन की कैद से भागने की कोशिश ने यह हक मुझे दिया है। यह हक मैंने जर्मन कैद में, जर्मन किले में पाया है!"

उसकी सूजी हुई पलकें सुर्ख हो गयीं। वह जल्दी-जल्दी हाथ मलने और कभी दायीं तो कभी बायीं मुट्ठी भींचने लगा, मानो लड़ने की तैयारी कर रहा हो और साथ ही अपने को रोक लेना चाहता हो। अपनी उभरी हुई आंखें घुमाते हुए सिपाही चिल्लाया,

"चिल्ला क्यों रहे हो? मुझपर चिल्लानेवाले तुम कौन होते हो?"

"अरे, इपात, छोड़ भी!" अधिक उम्रवाले सिपाही ने फिर उसकी बांह खींचते हुए कहा।

"चुप भी रहो!" इपात चिल्लाया। "लो, यह पकड़ो!"

उसने अपना थैला उसे थमाया और संतरी की कोहनी पकड़ते हुए फिर बोला,

"हमें अपने चीफ़ के पास ले चलो, कामरेड! हम सबको। वहां सब कुछ साफ़ हो जायेगा।"

"दोनों के दस्तावेज़ देखो!" मोटी आवाज़ फिर आयी।

भीड़ गुस्से के मारे उफन रही थी और हर कोई आग में तेल डालने का काम कर रहा था। संतरी हाथ हिला-हिलाकर सबको पीछे कर रहा था। वह चाहता था कि मामला तूल न पकड़े, पर जवान सिपाही अपनी ज़िद्द पर अड़ा हुआ था और भीड़ भी शांत नहीं हो रही थी।

सहसा एक मंद नारी स्वर सुनायी दिया,

"साशा, एक मिनट! मैं भी तुम्हारे साथ चलती हूं। अकेले मत जाओ!"

भीड़ के बीच से रास्ता बनाते हुए अनास्तासिया गेर्मानोव्ना पास्तुख़ोव की ओर बढ़ी। वह लोगों के सिरों के ऊपर से उसे देख रहा था। सफ़ेद और जमे होठों से, जैसा कि प्रायः ठंड की वजह से होता है, वह कुछ रुखाई से, मगर स्नेहभरी आवाज़ में बोला,

"मुझे कुछ नहीं होगा। जाओ, तुम अल्योशा के पास रहो।"

फिर संतरी की ओर मुड़ गया।

"चलो, चलें," उसने कहा और पहले खुद ही चल पड़ा। उसके चलने में ऐसी दृढ़ता थी कि भीड़ पीछे हट गयी।

कांचदार दरवाज़े के पास, जहां से सारा प्लेटफ़ार्म दिखायी देता था, एक संकरे से छोटे कमरे में घुड़सवार की बिरजिस पहने और कोई कितबिया पढ़ता हुआ एक आदमी बैठा था। अंदर आये लोगों को देखकर उसने एक जली हुई तीली किताब के पृष्ठों के बीच रखी और टांगें फैलाकर खड़ा हो गया।

"ये लोग कौन हैं?" बिना कोई जल्दबाज़ी दिखाये उसने संतरी से पूछा।

"झगड़ा कर रहे हैं।"

"ये श्रीमान वलाशोव जाना चाहते हैं," इपात अंगूठे से पास्तुख़ोव

की ओर इशारा करते हुए व्यंग्य से बोला। फिर दीविच की ओर अंगूठे से इशारा करते हुए कहा, "और यह महाशय, जो अपने को जर्मन कैद से छूटा हुआ बताते हैं, उसका पक्ष ले रहे हैं। लोगों को दाल में कुछ काला लगता है।"

"लोगों को, यानी तुम्हें?"

"लोगों को भी और मुझे भी," सिपाही ने गंभीरता से जवाब दिया। "मैं भूतपूर्व तोम्स्क रेजिमेंट, तीसरी बटालियन, बारहवीं कंपनी का कार्पोरल इपात इपात्येव हूं। फिर स्वेच्छा से लाल सेना में शामिल हुआ, लड़ाई में हिस्सा लिया और अब घायल होने की वजह से छोड़ दिया गया हूं।"

"क्या चोट लगी थी?"

इपात ने सिर उठाया, अपनी नीली पुतलियां घुमायीं और अंगूठा मोड़कर उसी तरह बायीं आंख की ओर इशारा किया, जैसे कि पहले पास्तुख़ोव की ओर किया था।

"ठीक बीच में गोले की किरिच लग गयी थी, जिससे आंख की रोशनी जाती रही। यहां, इस जगह पर, छोटी सी किरिच।"

"ठीक है, बाहर खड़े हो जाओ। जरूरत होगी बुला लूंगा," सिपाही से कहकर चीफ़ मेज़ की ओर बढ़ा, जिसपर कोनों से जगह-जगह फाड़ा हुआ और स्याही के धब्बों तथा बेकार की घसीटों से रंगा हुआ अखबार बिछा हुआ था। फिर उसने बिरजिस की जेब से तकिया गिलाफ़ जैसी बड़ी तंबाकू की रेशमी थैली निकाली, उसे खोला, अखबार के कोने से कागज़ का एक टुकड़ा फाड़ा और धीरे से अपने लिए सिगरेट बनाने लगा।

"माचिस है?" उसने संतरी से पूछा।

"एक भी तीली नहीं बची है।"

पास्तुख़ोव ने अपनी माचिस जलाकर बढ़ायी। उसके उजाले में चीफ़ ने अपनी भौंहों के नीचे से उसपर एक भेदती हुई सी पीली निगाह डाली, और फिर माचिस बुझने पर उसे हटा लिया।

"आपके दस्तावेज़?"

पास्तुख़ोव ने जेब से बटुआ निकाला। सिगरेट का कश लेते हुए चीफ़ कागज़ को ध्यान से पढ़ने लगा। शिक्षा विभाग के जन-कमिसार

ने प्रमाणित किया था कि सुप्रसिद्ध नाटककार पास्तुख़ोव अपने परिवार के साथ अपनी पत्नी के जन्मस्थान जा रहा है, जो बलाशोव ज़िले में है, और इसलिए सभी संस्थाओं तथा स्थानीय अधिकारियों से प्रार्थना की गयी थी कि रास्ते में उसे हर तरह की मदद दी जाये।

"एक-आध सिगरेट मुझे नहीं मिलेगी?" संतरी ने अनुरोध किया।

"तो झगड़ा क्या है?" चीफ़ ने कागज़ से आंखें हटाये बिना तंबाकू की थैली संतरी की ओर बढ़ाते हुए पूछा।

"यह चाहते हैं कि स्टेशनमास्टर इन्हें बलाशोव जानेवाली गाड़ी में बिठा दें। पर वह कहते हैं कि वहां कोई गाड़ी नहीं जायेगी।"

चीफ़ ने कागज़ मोड़कर बिना किसी उतावली के पास्तुख़ोव को देखा।

"स्टेशनमास्टर भगवान नहीं है," उसने कहा।

"तो कौन है भगवान?" पास्तुख़ोव ने हल्के से मुस्कराते हुए पूछा।

"भगवान को बरखास्त कर दिया गया है," थैली से तंबाकू की बड़ी सी चुटकी निकालते हुए संतरी संतोषपूर्वक बोला।

"आप बलाशोव क्यों जाना चाहते हैं?"

"भुखमरी से बचने के लिए। पेत्रोग्राद में भुखमरी छायी हुई है।"

एक मिनट तक कोई नहीं बोला। चीफ़ कान खुजलाता हुआ सोचता रहा और संतरी मेज़ पर चिंगारियां बिखेरते हुए उसकी सिगरेट से अपनी सिगरेट जलाने की कोशिश करता रहा। पास्तुख़ोव और दीबिच विनम्रता से खड़े रहे। आखिरकार संतरी, जो अब तक रेलवे डिपो की तरह धुएं के गुब्बार से घिर गया था, बोला,

"ये लोग जहां अनाज है, वहां जाना चाहते हैं! किसानों का गला घोंटना चाहते हैं। जिसे देखो, उसे खाना चाहिये। पर यह साहब अपना टोप नहीं छोड़ेंगे और वह साहब अपनी छतरी। अकेला किसान ही अपनी कमर तोड़ेगा।"

"आप भी बलाशोव जा रहे हैं?" चीफ़ ने दीबिच की ओर मुड़ते हुए पूछा।

"नहीं, मैं ख़्वालीन्स्क जा रहा हूं।"

"तो आप बीच में क्यों पड़े?"

"हमदर्दी की वजह से। मुझे जर्मन कैद से छूटे महीना पूरा होनेवाला है, पर अभी तक घर नहीं पहुंच पाया हूं। स्टेशनों पर बैठकर मक्खी मारना भला कौन चाहेगा?"

उसने अपना दस्तावेज़ बढ़ाया, जिसपर तरह-तरह के ठप्पे, मुहरें लगी हुई थीं। चीफ़ ने उसे उलट-पलटकर देखा, अस्पष्ट लिखावट पढ़ने की कोशिश की और फिर उदासीनता से वापस लौटाते हुए पास्तुख़ोव से पूछा,

"तो आप मुझसे क्या चाहते हैं?"

"भाड़ में जाये सब कुछ, मुझे फ़ौजी गाड़ी में ही बिठा दीजिये," पास्तुख़ोव ने ज़ोर से कहा। अब तक की नाउम्मीदी ने उसे निर्भीक बना दिया था और उसे लगा कि दृढ़तापूर्वक मांग करने का समय आ गया है। "मेरे साथ मेरे परिवार के दो लोग और एक बुढ़िया भी है, जो मेरे लड़के की देखभाल करती है। हमें कहीं भी बिठा दीजिये, चाहे वह मालगाड़ी का खुला डब्बा ही क्यों न हो।"

"कोशिश करके देखूंगा," चीफ़ ने हौले से मुस्कराते हुए आश्वासन दिया।

उसने संभालकर तंबाकू की थैली और कितबिया बिरजिस की बड़ी सी जेब में ठूंसी और सिर हिलाकर दरवाज़े की ओर इशारा किया।

पास्तुख़ोव भी उसके पीछे-पीछे प्लेटफ़ार्म पर निकल आया।

स्तेपी की ओर से तेज़ हवा आ रही थी, जिससे हैट संभाल पाना भी मुश्किल हो गया था। आगे को झुककर पास्तुख़ोव चीफ़ के पीछे, उसकी अजीब सी, हवा में फड़फड़ाती बिरजिस पर नज़र टिकाये चलने लगा। मातहत लोग जिस तरह उसका तंबाकू फूंक रहे थे, उससे साफ़ था कि चीफ़ स्वभाव का अच्छा आदमी है। पास्तुख़ोव को ख्याल आया कि उसे कोई मज़ाकिया किस्सा सुनाना चाहिये, क्योंकि अधिकारियों का दिल जीतने के लिए हंसी से बढ़िया साधन और कुछ नहीं होता। पर सफ़र ने उसका दिमाग कुंद कर दिया था और उसे यह सोचकर अफ़सोस हुआ कि कितबियाएं पढ़नेवाला यह आदमी, जो अपने जीवन में शायद पहली बार किसी जीते-जागते और वह भी

पीटर्सवर्ग में रहनेवाले साहित्यकार से मिल रहा है, उससे एक भी मनोरंजक किस्सा नहीं सुन पायेगा।

दूर एक लाइन पर एक मालगाड़ी खड़ी थी, जिसपर रसद और मशीनगनें लदी हुई थीं। गोला-बारूद के बक्सों पर बैठे संतरी ऊंघ रहे थे। अर्दली घोड़ों को ढोने के वैगन साफ़ कर रहे थे, जिनसे लीद की तेज़ गंध आ रही थी।

पास्तुख़ोव को इंतज़ार करने को कहकर चीफ़ स्टाफ़-वैगन में चढ़ा, जिसका दरवाज़ा धूएं से काला हो गया था।

पास्तुख़ोव खेतों की ओर देखने लगा। लगता था कि उनका कहीं कोई अंत नहीं है। कहीं वे हरे थे और कहीं काले, खास तौर से जहां हल की सीधी, शांत लीकों ने उन्हें चीर डाला था। पर ज़्यादातर हिस्सा निस्सीम स्तेपियों का ही था, जो अभी अपनी सरदियों की नींद से नहीं जगी थीं। पुरविया हवा दूर की नम खाइयों से ठंडक और धूप में सड़ते हुए पिछले साल के खर-पतवार की तीखी गंध ला रही थी। मदमस्त लवा गिटकिरियां सी भरते हुए कभी तीर की तरह आसमान में ऊंचे उठ रही थी, तो कभी कंकर की तरह सीधे नीचे गोता लगा रही थी। आसमान भी निश्चल था और धरती भी निश्चल थी। सिर्फ़ घास के एक ढेर में ही थोड़ी-बहुत हरकत थी, जिससे कभी-कभी घास के पुलिंदे हवा में बिखर रहे थे।

धीरे-धीरे स्मृति की गहराइयों से किसी कवि की पंक्तियां उभरीं, जिसे पास्तुख़ोव उन्नीसवीं सदी का एक सबसे प्रतिभाशाली रूसी कवि मानता था। मुश्किल से दिखायी देनेवाले क्षितिज पर नज़रें टिकाये वह उन्हें गुनगुनाने लगा :

> राह हमारी स्तेपियाई, अगणित दुखों की बदली छायी,
> दुख जो तुमने झेले, रूस!..

सहसा कुछ आवाज़ें सुनकर उसने सिर घुमाया। एक खुले वैगन में लाल सैनिक गा रहे थे। कुछ एक दूसरे के कंधे पर बांह रखे खड़े थे और कुछ वैगन के किनारे टांगें लटकाये बैठे अपने एक साथी की पीठ पर पैरों से ठुक-ठुक कर रहे थे, जो लाइन के पास बैठा अपना राशन डिब्बा साफ़ कर रहा था।

"मेहनत में थे जो उसके साथी..." नीची आवाज़वालों ने शुरू किया और फिर ज्यों-ज्यों स्वर उठता गया, गीत की गूंज भी बढ़ती गयी, जब तक कि कोई खनकती हुई आवाज़ सहसा तार स्वर में न गाने लगी: "बे... खबर सोये पेड़ तले!" मन्द्र स्वर एक बार फिर से गूंजने, उठने लगे और तार स्वर में गानेवाले ने "बे... खबर..." के साथ अपनी खनकती, लहरीली आवाज़ को इतने ऊंचे पहुंचा दिया कि दूसरों को उसका साथ दे पाना मुश्किल हो गया। "बे... खबर" पर आते ही सिपाहियों के नंगे पांवों ने लाइन के पास बैठे अपने साथी को ऐसा धक्का दिया कि वह और उसके पीछे-पीछे उसका राशन डिब्बा भी खड़खड़ाता हुआ लुढ़ककर पुश्ते के नीचे जा गिरे। सिपाहियों ने गाना बंद कर दिया और हंसी के मारे लोट-पोट हो गये। फिर झटके से सबके सब वैगन से नीचे कूद पड़े। सब जवान थे, खुशदिल थे। कमर पर पेटी न बंधी होने से उनकी कमीज़ें हवा में फूलकर गुब्बारे जैसी हो गयी थीं।

"बे... खबर" वाला तार स्वर पास्तुख़ोव के कानों में गूंजता रहा। उस नटखट से, पतले "ए..." को सुनते हुए उसे न जाने क्यों ख्याल आया कि बेखबर – हां, बेखबर ही – ठीक जैसे कि लवा का गीत और शायद यही असल बात है। सहसा – और यह खुद उसे भी बड़ा अटपटा लगा – उसे किसी प्रोफ़ेसर श्ल्याप्किन की याद हो आयी, जिनके व्याख्यान उसने विश्वविद्यालय में सुने थे। प्रोफ़ेसर का जन्म एक कृषि-दास परिवार में हुआ था, पर अपने प्रयासों से उन्होंने समाज में काफ़ी मान-प्रतिष्ठा कमा ली थी और कुछ पैसा भी जमा कर लिया था। फिर जब कोई और चिंता न रही, तो उन्होंने फ़िनलैण्ड में अपने ग्रीष्म निवास में ज़ार अलेक्सांद्र द्वितीय की एक छोटी सी मूर्ति लगायी, जिसपर नीचे लिखा: "मुक्तिदाता ज़ार की स्मृति में कृतज्ञ सेवक श्ल्याप्किन द्वारा स्थापित।" पास्तुख़ोव को लगा कि यह किस्सा सुनाकर वह चीफ़ का मनोरंजन कर सकता था। इस ख्याल से वह खुद भी ठहाका लगाकर हंस पड़ा। वह हंस रहा था और मस्त सिपाहियों को देख रहा था कि तब तक उसे सड़क पर एक नाटा सा तातार जाता दिखायी दिया, जो रुई की मिर्ज़ई पहने था और देखने में बिल्कुल श्ल्याप्किन जैसा लग रहा था। तभी उसे याद आया कि नहीं,

मूर्ति पर खुदा लेख यों था : "मुक्तिदाता ज़ार की स्मृति में मुक्त सेवक द्वारा स्थापित।" पर वह हंसता ही रहा और इस नतीजे पर पहुंचा कि "कृतज्ञ सेवक श्ल्याप्किन द्वारा स्थापित" ही अधिक हास्यकर लगेगा।

उसी समय किसी ने उसे आवाज़ दी। लाल से चेहरे और पीली मूंछोंवाला कमांडर, जिसने पेटी नहीं बांधी हुई थी और जिसके कंधे से एक पतले से फ़ीते पर रिवाल्वर लटक रहा था, उसे स्टाफ़-वैगन से बुला रहा था।

"वलाशोव आप ही जाना चाहते हैं?"

"हां। बड़ी मेहरबानी होगी आपकी, अगर हमें भी अपनी फ़ौजी गाड़ी में ले चलें।"

"पर मैं यह ज़िम्मा क्यों लूं? वहां लड़ाई चल रही है।"

"लड़ाई तो हर कहीं चल रही है," पास्तुख़ोव बोला।

"इसे आप लड़ाई कहते हैं? नहीं, यह सिर्फ़ अव्यवस्था है," कमांडर ने दया सी दिखाते हुए जवाब दिया। "माफ़ कीजियेगा, लेकिन आपको कोई और इंतज़ाम करना होगा।"

"यानी कि आप मना करते हैं?"

"हां।"

"ठीक है तो, शुक्रिया," पास्तुख़ोव ने यों कहा, जैसे उसे ठेस पहुंची हो, पर असल में वह अजीब सी राहत महसूस कर रहा था।

वह स्टेशन लौटा, तो काफ़ी प्रसन्न सा लग रहा था। वह अटपटा लेख रह-रहकर उसे याद आ रहा था: "कृतज्ञ सेवक श्ल्याप्किन द्वारा स्थापित।"

मुस्कराते हुए वह अपने परिवार के पास पहुंचा। तीनों मूक आशंका से उसकी ओर देख रहे थे।

"पापा," झिझकते-झिझकते उससे सटते हुए बच्चे ने कहा, "वे तुम्हें गोली तो नहीं मारेंगे न?"

ओल्गा आदमोव्ना ने तुरंत अपना चेहरा हथेलियों से ढांप लिया और उसकी लटें हिलने लगीं।

"मुझे क्यों मारेंगे?" अलेक्सांद्र व्लादीमिरोविच ने गंभीरता से, पर कुछ घबड़ाकर पूछा। "मारते तो खरगोशों, रीछों और तीतरों को हैं।"

"पर लड़ाई में ?"

"हां, अगर लड़ाई हो तो ... पर यह लड़ाई नहीं, सिर्फ़ अव्यवस्था है !"

उसने अपनी पत्नी की ओर देखा। वह तनकर बैठी थी और डरी होने के बावजूद सुंदर लग रही थी। उसकी आंखें नम थीं। पास्तुख़ोव पत्नी के पास एक बक्से पर बैठ गया और उसकी मुलायम अंगुलियां सहलाते हुए बोला,

"आस्या, हमें सरातोव ही जाना होगा।"

फिर गर्दन उठाकर वह धूल से सनी, उदास सी खिड़की के बाहर देखने लग गया।

३

काम पास्तुख़ोव के लिए नशे जैसा था। अगर रोज़ाना तीन घंटे उसे कागज़ और कलम के साथ अकेले बैठने को न मिलता, तो उसे आसपास सब कुछ बेमज़ा लगने लगता।

"मैं तो जल बिन मछली सा बन गया हूं," उसने खीझते हुए आस्या से कहा, जिसने उसकी उदासी को भांपते हुए हौले से अपना हाथ उसके कंधे पर रख दिया था।

पास्तुख़ोव ने सफ़री बैग उलटकर घुटनों पर रखते हुए कागज़ पर कुछ घसीटने की कोशिश की। पर पास ही एक बक्से के इर्दगिर्द बैठे मुसाफ़िर ज़ोर-ज़ोर से शोर मचाते ताश खेल रहे थे। तत्याना* के दुःस्वप्न के राक्षसों की तरह वे न जाने क्या चिल्ला रहे थे, गालियां बक रहे थे, ठहाके लगाकर हंस रहे थे।

ओल्गा आदमोव्ना उनकी बातें सुनकर अपने हाथों से अल्योशा के कान बंद करते हुए कभी शरमा जाती, तो कभी पीली पड़ जाती और याचनाभरी नज़रों से अलेक्सांद्र व्लादीमिरोविच की ओर देखने लगती। पर वह कंधे उचकाकर रह जाता।

---

* विख्यात रूसी कवि अलेक्सांद्र पुश्किन की 'येव्गेनी ओनेगिन' शीर्षक कविता की नायिका। – अनु०

"आदी बनिये, ओल्गा आदमोव्ना।"

"मैं तो बन चुकी हूं। पर यह बेचारा बच्चा?"

वैगन आलू की देगची की तरह लोगों से खचाखच भरा हुआ था। मनपसंद जगह मिलने का तो कोई सवाल न था। जिसको जहां ठेल दिया जाता, वह वहीं बैठ जाता। ऊपर से हर स्टेशन पर और मुसाफ़िर अंदर घुस आते। उनमें सभी तरह के लोग थे – इलाज के लिए छुट्टी पर जानेवाले सिपाही, आसपास के गांवों के किसान, उक्रइना से भागे हुए शरणार्थी, सरकारी काम से भेजे गये मास्कोवासी, अकाल-ग्रस्त शहरों से भागे हुए लोग और यहां तक कि आस्ट्रियाई युद्धबंदियों का एक दल भी। ऊपर की तिमंज़िली बर्थों से नंगे पैरों की तीन कतारें झूल रही थीं। बेंचों के नीचे भी लोग गठरी बने बैठे खुर्राटे भर रहे थे। इस सारी भीड़ को देखकर लगता था कि किसी बड़े कड़ाह में कुछ खौल रहा है, खुदबुदा रहा है। ऊपर से मक्खियां इतनी कि पूछो मत। फिर भी कोई अपने को अपमानित महसूस नहीं कर रहा था। उल्टे, जैसा कि अपनी मरज़ी से सफ़र करनेवालों के साथ होता है, हर किसी को तसल्ली थी कि वह बदतर से बेहतर की ओर ही जा रहा है। इसलिए सभी बातों में खूब मशगूल थे।

जब अत्कार्स्क में गाड़ी रुकी, तो पास्तुख़ोव जैसे-तैसे उतरकर गरम पानी ले आया। हर किसी की नज़र उसकी ओर मुड़ गयी – वह चमचमाती हुई तांबे की केतली सावधानी से पकड़े चल रहा था, ताकि कहीं गरम पानी उसपर या उसकी उजली सूट पर छलक न जाये। पानी की लाइन में उसे दीविच दिखायी दे गया था और उसने उसे भी चाय पीने को आमंत्रित किया था।

वे किसी तरह खिसककर, सिमटकर बैठ गये और कृतज्ञताभरी नज़रों से अनास्तासिया गेर्मानोव्ना के नाज़ुक हाथों को देखने लगे। वह सबके गिलासों में चम्मच से चीनी डाल रही थी और पतले से चाकू से रोटी काट रही थी। उसके होंठों पर खेलती मीठी मुस्कान मानो कह रही थी कि अगर आप शिष्टों की तरह आचरण करना और कनिष्ठिका को यों आकर्षक ढंग से फैलाना जानते हैं, जैसे कि उसने फैलायी हुई थी, तो मक्खियों और ताश खेलनेवालों से गुंजार ऐसे बदबूदार वैगन में भी सफ़र करने का अपना ही मज़ा है, चाहे तब यह भी पता न हो

कि आप कहां जा रहे हैं या जहां जा रहे हैं, वहां आपने जाना ही नहीं चाहा था।

"तो आप ख़्वालीन्स्क के हैं?" अलेक्सांद्र व्लादीमिरोविच ने पूछा। "हम भी ख़्वालीन्स्क के ही हैं। पास्तुख़ोव का नाम आपने सुना है?.. बेशक मेरे दिवंगत पिता ने बहुत पहले ही वह शहर छोड़ दिया था और मैं भी सोलह-सत्रह वर्ष की आयु के बाद वहां कभी नहीं गया। शहर में हमें बहुत कम लोग जानते थे। कभी उस उयेज़्द में हमारी जागीर हुआ करती थी। पर अब तो ऐसी बातों की कोई चर्चा भी नहीं करता।"

उसने कुछ इशारा सा करते हुए दीबिच को तिरछी निगाहों से देखा। बोतल का डाट खोलते हुए उसे याद हो आया कि कैसे पेत्रोग्राद में मेहमानों को अपने अध्ययन कक्ष का कारेलियाई भूर्ज का फ़र्नीचर दिखाते हुए वह कहा करता था, "यह ख़्वालीन्स्क की, मेरे दादा के ज़माने की यादगार है... पिताजी ने बाकी तो सारी जागीर-जायदाद उड़ा दी, पर यह बचा रहा।" अब सारा घर और उसके साथ ही कारेलियाई भूर्ज का वह फ़र्नीचर भी पेत्रोग्राद में छूट गया था और पास्तुख़ोव को बिल्कुल अच्छा न लगा कि उसे यह अप्रिय बात याद हो आयी है। वह उन लोगों में से था, जो किसी भी तरह की अप्रिय बातें तनिक भी सहन नहीं कर सकते।

"इस जादुई शीशी में डाइन का खून है," दीबिच की चाय में कुछ बूंदें डालते हुए उसने रहस्यभरे अंदाज़ में कहा। "मैंने अपनी आलमारी की सभी शीशियों की सारी तलछट इस शीशी में उंडेल दी है, यानी कोन्याक, रम, वोदका, लिकर, आदि सब कुछ। आपको विश्वास होगा कि जब मैंने इसे हिलाया, तो इसमें बज-बज-बज झाग उठने लग गया! बस एक घूंट लेते ही खून में शैतान दौड़ने लग जाता है।"

दीबिच ने चाय का घूंट लिया और देखने लगा कि क्या असर होता है। कुछ ही क्षण बाद उसकी भौंहें आश्चर्य से ऊपर उठ गयीं: सचमुच उसके बदन में ऐसी नटखट गरमी दौड़ गयी थी, जैसी उसने अरसे से महसूस न की थी। पास्तुख़ोव खुश होकर हंस पड़ा।

"सुनिये," उसने दीबिच को पुराने परिचित की तरह संबोधित

करते हुए कहा, "आपको उन जर्मनों के यहां बहुत कुछ देखना-भुगतना पड़ा होगा, है न? कष्ट न समझें तो अपने कुछ अनुभव हमें भी सुनाइये। चाहे सबसे मुख्य ही सही।"

"सबसे मुख्य?" मानो अपने आप से बोलते हुए दीविच ने दोहराया। "कह नहीं सकता कि दस साल बाद इस सवाल का क्या जवाब दूंगा – बेशक अगर तब तक ज़िन्दा रहा और किसी की इसमें दिलचस्पी हुई तो। हो सकता है कि तब तक हम जर्मनों से प्यार करने लग जायें। या हो सकता है कि मैं ही सब कुछ भूल जाऊं फ़िलहाल तो मुझे दो ही अनुभूतियां याद हैं, जो वहां हर समय मेरे साथ रहीं। एक तो भूख और दूसरी भागने की चाह। ये ही सबसे मुख्य थीं।"

"घर की याद नहीं?"

"बेशक घर की याद भी आती थी। पर मैं इसे घर की याद नहीं कहूंगा। स्वाभाविकतः मैं घर वापस लौटने को आतुर था। स्वदेश का महत्त्व असल में प्ररदेस में ही समझा जाता है। फिर भी मेरी सबसे बड़ी चाह यह थी कि ख़त्म कर डालें, बिल्कुल आख़िर तक।"

"क्या?"

"लड़ाई। जानते हैं, कभी-कभी यह सोचकर रोंगटे खड़े हो जाते थे कि सब कुछ बेकार चला जायेगा!"

"बेकार?"

"हां, बेकार। यानी यह कि सारी बरबादी, सारी कुर्बानी बेकार थी। मुझे मोर्चे पर ही ऐसा लगने लगा था। लोगों को कितना सहना-भुगतना पड़ा – यह सब मैंने अपनी आंखों से देखा है... वे गाजर-मूली की तरह काटे गये! कभी-कभी तो पहचानना भी मुश्किल था कि कहां लकड़ी है और कहां हड्डी, कहां कीचड है और कहां खून। काफ़ी समय तक तो मुझे यकीन था कि हम ख़त्म कर डालेंगे। मैं बेहद चाहता था कि ख़ुद अपने हाथों ख़त्म कर डालूं।"

दीविच ने अपनी छोटी हड़ियल मुट्ठी कसकर घोर निराशा से नुकीले घुटने पर पटकी। वह अपने गठरीनुमा ओवरकोट पर यों दोहरा होकर बैठा था कि घुटने सीना छू रहे थे। जब वह उत्तेजना में भरकर

बोलने लगता, तो तमतमाये चेहरे पर दाढ़ी के बाल खड़े हो जाते थे।

"उनके हाथों में पड़ते ही मैंने भागने का फ़ैसला कर लिया। वे हमें भूखों मारते थे। इसलिए नहीं कि खाने को कुछ नहीं था, बल्कि इसलिए कि वे कमीने थे। अगर हम बंदियों को हमारी मेहनत के फल का – मिसाल के लिए हमारे उगाये हुए आलू का ही – दसवां हिस्सा भी देते, तो बहुत था। पर नहीं, हमें खाने को सिर्फ़ चुकंदर दी जाती थी। यहां भी आदमियों का वैसा ही विनाश, जैसा कि मोर्चे पर होता था। उन्होंने कब्रिस्तान का एक हिस्सा हमारे लिए रिज़र्व कर दिया – मुझे ग्रोस-पोरिच के छोटे से बंदी शिविर में रखा गया था, जिसमें हम तीन हज़ार कैदी थे – और हर सुबह हमें मुर्दों को ढोकर वहां पहुंचाना पड़ता। कुछ चुकंदर खा-खाकर पेट की तकलीफ़ से मरे होते थे, तो कुछ अपमान न सहने के कारण आत्महत्या कर लेते थे। लगभग हर रात हमें – माफ़ कीजिये (उसने अनास्तासिया गेर्मानोव्ना की ओर देखा और आवाज़ कुछ नीची कर ली) – टट्टीघर में कमर-पेटियों से लटकी लाशें उतारनी पड़तीं। उन दिनों मुझे पक्का विश्वास था कि हम इन जर्मन शैतानों से इस सबका बदला ले सकेंगे। इसलिए मैं भाग गया। पहली बार एक नौजवान जूनियर लेफ़्टिनेंट भी मेरे साथ था।"

"ज़रा विस्तार से बतायें," अलेक्सांद्र व्लादीमिरोविच ने और भी आराम से बैठते हुए कहा।

"मामूली सी बात है। कैद में रूसी आदमी को लगता है कि जैसे उसके गले में फंदा डाल दिया गया है। पर फ़्रांसीसियों के साथ यह बात नहीं। हम अफ़सरों की बैरक में आधे रूसी थे और आधे फ़्रांसीसी। कोई फ़्रांसीसी ज्यों ही वहां पहुंचता त्यों ही अपने आराम का इन्तज़ाम करने लग जाता, जैसे टोपी टांगने के लिए खूंटी लगाना, वर्दी लटकाने के लिए हैंगर बनाना, आदि। मानो वह बैरक न होकर पेरिस का ही कोई सैलून हो। दीवारों पर लड़कियों की तस्वीरें, पैरों के नीचे रेत, रेडक्रास से मिले पैकेट, खरीद-फ़रोख्त, हंसी-मज़ाक, लैटिन में कैथोलिक भजन या फ़्रांसीसी में प्रयाणगीतों जैसे उल्लासभरे गाने ... फिर फ़्रांसीसी हर समय कुछ न कुछ सीते या पालिश करते रहते थे। खाली तो वे

कभी बैठते ही न थे। पर रूसी घंटों हाथ पर हाथ धरे बैठे रहते, आसमान में किसी बादल को देखते रहते और अगर कुछ गाते भी, तो ऐसा कि आंखों में आंसू छलक आयें। बेशक वे भी कभी-कभी एकाएक मस्ती में आ जाते थे और ऐसा नाचते थे कि फ़र्श चरमराने लगता। पर ज्यों ही यह सब खत्म हो जाता, वे फिर बैठकर ताकने लगते, ताकने लगते। ऐसा हफ़्तों तक चलता रहता। बैठकर ताकते रहनेवालों में मैं भी था। पर यह बहुत समय तक नहीं चल सकता था। मैं तो भागना चाहता था। स्पष्ट था कि मुझे खेतों में फ़सल पूरी तरह खड़ी होने और बालियां पकने तक इंतज़ार करना होगा। मैंने खेत में काम के लिए अपनी सेवाएं पेश कीं – अफ़सरों के लिए यह काम लाज़िमी न था। कैदी सिपाहियों के साथ मैं भी खेत में जाता और चुकंदर की जड़ों पर मिट्टी जमाने में मदद करता। वहां मैंने आसपास का जायज़ा लिया। हमारे खेत के छोर पर एक छोटा सा जंगल था। वह अधिक घना नहीं था और जर्मनों की हर चीज़ की तरह सुनियोजित था। उसके पार सब कुछ दिखायी देता था। मैंने देखा कि जंगल के पीछे एक रेलवे लाइन है और उसके बाद अनाज का खेत। मैं जानबूझकर औरों से पीछे रहने लगा, जैसे कि उनकी बराबरी मेरे बस की बात नहीं है। पर तभी देखता हूं कि हमारी ही बैरक का एक जूनियर लेफ़्टिनेंट मुझसे भी बहुत पीछे है। जल्दी ही हम एक दूसरे का इरादा भांप गये और ताकि कोई किसी की राह में रोड़ा न बने, दोनों ने किस्मत एक साथ आज़माने का फ़ैसला किया। पहले तो उन्होंने हम पर कड़ी निगाह रखी, पर फिर ढीले पड़ गये। संतरियों में से जो लैंडश्टुर्मान था, वह हमपर हंसता था और कहता था कि किसानों का काम अफ़सरों के बस की बात नहीं। हम भी उसकी हां में हां मिलाते और कहते कि हमारी कमरें झुकने की आदी नहीं हैं। जिस समय हम भागे, उस समय शाम की हाज़िरी को अभी आधा घंटा बाकी था। हमारा अंदाज़ था कि हमें जंगल और रेलवे लाइन पार करके अनाज के खेत में छिप जाने में पन्द्रह मिनट से अधिक नहीं लगेगा। जब हाज़िरी होगी और हम नदारद पाये जायेंगे, तो संतरी दूसरे कैदियों को पहले वापस कैंप में पहुंचाकर ही हमारी खोज का इंतज़ाम करने लगेंगे। इस बीच अंधेरा हो जायेगा और हम अपने को पास ही किसी सुरक्षित जगह पर छिपा लेंगे और

वहीं रात काटेंगे। आम तौर पर भगौड़े दूर से दूर भागने की कोशिश करते हैं, पर मैंने अपने साथी को विश्वास दिलाया कि नहीं, हमें पहले कहीं पास ही छिप जाना चाहिये, क्योंकि ज्यों-ज्यों समय बीतता जायेगा, खोजनेवाले दूर, और दूर निकल जायेंगे और हम उन्हें झांसा देकर उनके आगे-आगे नहीं, बल्कि पीछे-पीछे चलेंगे। हुआ भी ऐसा ही। हम अनाज के खेत में छिपे ही थे कि खतरे की घंटी वज गयी: संतरी हवा में गोलियां दागने और जैसे लकड़ी के झुनझुने बजाकर हम बाग में चिड़ियों को डराते हैं, वैसे झुनझुने बजाने लगे। पर हमारी खुशकिस्मती से उसी समय एक मालगाड़ी आ रही थी और उसका घंटा भी वज रहा था – ये घंटे चूंकि भाप से काम करते हैं, इसलिए एक बार बजना शुरू होने पर रुकने का नाम नहीं लेते। घंटे के शोर की वजह से गांववाले खतरे की घंटी नहीं सुन पाये, हालांकि हमने उसे सुन लिया था। हमारे कान पहले से कहीं अधिक चौकन्ने थे। रात शांति से बीत गयी। हम खेत के बीच में एक खाई में छिपे रहे और सुबह हुई, तो कुछ पकी हुई बालियां तोड़कर भूख बुझायी। कुछ अनाज हमने जेबों में भी भर लिया। खेत में हमारे सरकने के निशान हमारा पता बता सके थे, पर यहां भी किस्मत ने हमारा साथ दिया। सुबह की शीतल हवा ने लेटी हुई फ़सल को सीधा कर दिया था। इस तरह हम दिनभर सुरक्षित छिपे रहे। हमें बस एक ही बात की परेशानी थी – हम अपने साथ पानी एक यूडीकोलोन की शीशी में ही लाये थे। यह शीशी फ़्रांसीसियों की भेंट थी। रात होने पर हम वहां से चल दिये और पहली मंजिल में आस्ट्रियाई सीमा पर पहाड़ों को पार किया। आप जानते ही हैं कि यह इलाका कितना सुन्दर है! सुबह तक हम फिर से घाटी में पहुंच चुके थे और हम फिर अनाज के खेत में छिप गये। अब हम बोहेमिया में थे। हमारा अंदाज़ था कि चेकों के यहां हम अपने को अधिक आज़ाद महसूस कर सकेंगे और वे शायद हमें शरण भी दे देंगे। पर फिर भी हम अपने को प्रकट करने से डर रहे थे। इसलिए हम दिन में किसी खेत में छिपे रहते और रात होने पर ही आगे कूच करते। हम गांवों-वस्तियों से दूर रहते और बत्तियां दिखते ही रास्ता बदल लेते। पांचवां दिन शुरू होते-होते हम काफ़ी कमज़ोर हो चुके थे। खाने को रोटी का एक भी टुकड़ा नहीं मिला था और

कच्चे अनाज को चबाकर ही गुज़र करनी पड़ रही थी। मैं तो फिर भी ठीक था – उन दिनों मैं काफ़ी हट्टा-कट्टा था – पर जूनियर लेफ़्टिनेंट कहने लगा कि हमें आत्मसमर्पण कर देना चाहिये, क्योंकि या तो पकड़ लिये जायेंगे या फिर भूख से यहां खेतों में मर जायेंगे। शाम को जब रवाना होने का वक्त होता, तो वह पत्थर बन जाता और उठाये भी न उठता। सुबह तक फिर ठीक से चलने लगता, लेकिन जल्दी ही लुढ़क पड़ता और सो जाता। हमारे रवाना होने के हफ़्ते भर बाद एक दिन दोपहर को हम झाड़ियों में लेटे हुए थे। पास ही मैदान में मवेशी चर रहे थे। एक गाय – खूब बड़ी और मोटी और सफ़ेद पर लाल चकत्तोंवाली – चरती हुई हमारी झाड़ियों के पास आ गयी। बाल्टी जैसे उसके थनों से दूध टपक रहा था। मैंने सीधे उसकी आंखों में झांका, जैसे कि कह रहा होऊं: 'दूध लेने दोगी न,' उसने भी मुझे आंसूभरी निगाहों से यों सहानुभूति से देखा, मानो कह रही हो: 'ठीक है, ठीक है, दे दूंगी,"– और मुड़कर झाड़ी की पत्तियां चबाने लग गयी। मैं सरककर उसके नीचे पहुंचा और थन के ठीक नीचे मुंह करके दूध दुहने लगा। जल्दी ही मुझपर नशा सा छा गया, पर मैं गरम-गरम दूध निगलता रहा। दूध मेरे गले, सारे शरीर पर बह रहा था। फिर अंगुलियां भी थकान से ऐंठने लगीं, पर मैं दूध पीता गया, पीता गया। इस बीच जूनियर लेफ़्टिनेंट भी सरककर मेरे पास आ गया था और खुसफुसाते हुए कह रहा था, 'थोड़ा मुझे भी पीने दो।' मैंने कहा, 'दूसरी ओर से लेट जाओ।' उसने सरककर दूसरी ओर से थन के नीचे मुंह लगाना चाहा, पर मेरा सिर आड़े आ रहा था। इसलिए मैंने अपना मुंह हटा लिया और उसका मुंह बाल्टी की तरह थन के नीचे करके एक साथ दो-दो धारें उसमें दुहने लगा। पर तभी किसी के कदमों की आहट सुनायी दी। 'छोड़ दो,' मैंने अपने साथी से कहा, 'खिसक चलें!' और खुद सरककर झाड़ियों में जा छिपा। पर वह अपने अनाड़ी हाथों से थन को ऐसे झंझोड़ता रहा, जैसे उसने कुछ सुना ही न हो। उसके बिल्कुल नज़दीक, झाड़ियों में सरसराहट हुई। सहसा मैं देखता हूं कि नुकीली टोपी पहने एक लड़का, जो शायद ग्वाला था, झाड़ियों में से झांक रहा है और एक आदमी को गाय के थन के नीचे लेटा देखकर भौचक्का खड़ा है। इससे पहले कि मैं तय कर

पाता कि उससे बात करूं या छिपे रहकर उसकी प्रतिक्रिया देखूं, वह पीछे कूदा और भाग खड़ा हुआ। यहीं पर आकर हमारे सफ़र का अंत हो गया... हम झाड़ियों में छिपे रहे, पर चारों ओर से लोगों की आवाज़ें और और क़रीब आती गयीं। अब हम भागते भी, तो कहां भागते? उन्होंने हमें पकड़ लिया। मैंने मन ही मन सोचा, चलो अच्छी बात है कि हम चेक किसानों के हाथ पड़े हैं – कम से कम वे हमें मारेंगे तो नहीं। मैं उनसे रूसी में बोलने लगा, पर वे सिर ही हिलाते रहे, मानो कह रहे हों: 'यह सब तो ठीक है, पर जेल की हवा खानी ही पड़ेगी।' मैं सोचता था कि वे दिखाने के लिए कुछ समय हमें बंद रखेंगे और फिर छोड़ देंगे। पर ज्यों ही गांव के करीब पहुंचे, मैं देखता हूं कि साइकिलवाला एक आस्ट्रियाई सिपाही वहां पहले से ही मौजूद है। मेरे तो पैरों तले ज़मीन खिसक गयी। सबसे बुरी बात तो यह थी कि वह आस्ट्रियाई था। १९१६ में जब हमारी फ़ौजें आगे बढ़ रही थीं, मैं इन लमटंगों को थोक के भाव पकड़ा करता था। अकेली मेरी बटालियन ने ही कोई एक हज़ार आस्ट्रियाइयों को बंदी बनाकर रूस रवाना किया था। और अब मैं खुद... उन्होंने हमें तुरंत ग्रोस-पोरिच वापस भेज दिया, जहां हमें सज़ा की कोठरी में बंद किया गया और मेरा हथियार मुझसे छीन लिया..."

"हथियार, यानी?" पास्तुख़ोव ने उसे रोकते हुए पूछा।

दीबिच ने रुककर एक मिनट सोचा, फिर सामने की ऊपर की जेब से एक लाल रिबन निकाला। पास्तुख़ोव ने उसे लेकर उलट-पुलटकर देखा और अपनी पत्नी को पकड़ा दिया।

"यह रिबन तो सेंट आन्ना का पदक पानेवालों का है। याद है न, आस्या? इसे किरिच पर बांधा जाता है।"

अनास्तासिया गेर्मानोव्ना ने श्रद्धापूर्वक रिबन को अपनी नाजुक अंगुलियों से पकड़ा और अल्योशा को भी उसे स्पर्श करने दिया।

"कुछ के सिरे पर सफ़ेद फुंदना भी होता है," अल्योशा बोला।

"मैंने फुंदना हटा दिया है," दीबिच ने कहा।

"क्या आपको पसंद नहीं आया?" अल्योशा के इस सवाल पर सभी मुस्करा पड़े।

"तो आपको पदक मिल चुका है?" पास्तुख़ोव ने पूछा।

"हां, दुश्मन के हाथ में पड़ने से कुछ ही पहले यह क्रैनबेरी मिली थी – हम इस रिबन को क्रैनबेरी के नाम से ही पुकारते हैं। एक पहाड़ी पर कब्ज़े के लिए हो रही लड़ाई में मैं कैदी बनाया गया था। जर्मनों को उसे हमसे छीनने में बहुत वक्त लगा। उन्होंने मेरी बटालियन को तहस-नहस कर डाला, पर जब तक मैं घायल नहीं हुआ, मैंने और मेरे बचे हुए साथियों ने आत्मसमर्पण नहीं किया। जर्मनों ने मुझसे मेरी किरिच नहीं छीनी। पर कैंप का कमांडर बड़ा कायर था। उसने सभी अफ़सरों से किरिचें ले लीं और उनके पास सिर्फ़ रिबन ही रहने दिये। उसका कहना था कि रिबन रसीदों की जगह हैं और लड़ाई ख़त्म होने पर हम उन्हें दिखाकर अपनी किरिचें वापस पा सकते हैं। कैंप से भागने से पहले मैंने अपना रिबन अपनी कमीज़ की बांह के अंदर सी लिया था, पर फुंदना इतना मोटा था कि उसे फेंक देना पड़ा। यह इस जगह पर सिया था। आप जानते हैं कि जर्मन युद्धबंदियों के साथ क्या करते थे? वे उनकी कमीज़ की बांह का टुकड़ा काटकर वहां एक लाल पट्टी सी दिया करते थे। उसे फाड़ा नहीं जा सकता था, इसलिए मैंने अपना रिबन उसी के अंदर सिल दिया। सूई मुझे एक फ़्रांसीसी से मिली। इन फ़्रांसीसियों के पास क्या कुछ नहीं था! ये यहां तक कि चाकू भी रखते थे, जबकि रूसी के हाथ में दांत साफ़ करने की कुरेदनी भी खतरनाक होती है। तो जब उन्होंने मुझे पकड़ा, तो कमांडेंट ने कहा कि सज़ा के तौर पर मुझसे मेरा हथियार छीन लिया जाता है और मैं रिबन लौटा दूं। मैंने कहा कि वह खो गया है। तीन दिन तक उन्होंने मुझे पीने को नहीं दिया, मेरे कपड़ों की सभी सीवनें फाड़कर देखीं, पर रिबन – यह रहा रिबन!" दीविच बच्चों जैसे गर्व से चिल्लाया।

पास्तुख़ोव ठहाका लगाकर हंस पड़ा। उसके हंसने में आश्चर्य भी था और प्रशंसा भी थी।

"इसे कहते हैं रूसी!" वह बोला। "अब मैं समझ सकता हूं कि रूसी आदमी के हाथ में दांत-कुरेदनी भी खतरनाक क्यों होती है। आपने बहुत ठीक कहा है। और हम हमेशा भागते रहते हैं! यह हमारी प्रकृति ही में है। हर कोई भागने की कोशिश में रहता है – विरोधी मत रखनेवाले, मंगेतरें, विद्यार्थी, कैदी और यहां तक कि तोलस्तोय

भी! आपने कभी इस बारे में सोचा है? कोई सुख की खोज में, तो कोई आज़ादी, किसी काल्पनिक चीज़ या यश की खोज में। कोई शहर से जंगल की ओर, तो कोई जंगल से शहर की ओर। अजीव कौम है," गाड़ी में बैठी भीड़ की ओर उत्सुकता से देखते हुए उसने अपनी वात खत्म की।

"और हम भी भाग रहे हैं," आस्या ने झेंपते हुए मुस्कराकर कहा।

"लेकिन क्यों?" पास्तुख़ोव ने पूछा।

"कैसे क्यों? इसलिए कि दाल-रोटी चाहिये," आस्या ने हर किसी को यह दिखाते हुए कि अपनी सुकोमल मुस्कान खोये विना भी वह किसी भी देहातिन की तरह दुनियादार हो सकती है, बनावटी व्यावहारिकता से कहा।

"हां, तो इसके बाद? क्या दूसरी वार भी भागे? बैठे नहीं रह सके?" पास्तुख़ोव ने पूछा।

दीविच का चेहरा विवर्ण हो गया और माथे पर पसीने की बूंदें झलक आयीं। रोटी की ओर देखकर उसका दुवला शरीर आगे-पीछे झूलने लगा।

"इसके बाद क्या हुआ?" उसने दांत भींचते हुए जवाब दिया। "सब कुछ वता पाना तो संभव नहीं। दूसरी वार मैंने अकेले ही किस्मत आज़मानी चाही। मुझे लगा था कि पहली वार भी मैं अगर अकेला होता तो पकड़ा न जाता। पर अगली गरमियों में भी भाग्य ने साथ नहीं दिया। मैं वोडेन झील तक पहुंच गया। यह काफ़ी वड़ा फ़ासला है। मैं स्विट्ज़रलैण्ड जाना चाहता था। पर नाव में मुझे पकड़ लिया गया – सर्चलाइट से उन्होंने मुझे देख लिया था। इसके बाद फिर किले में बंद ..."

दीविच ने अपनी वात बीच ही में रोककर कांपते हाथ से माथे का पसीना पोंछा।

"क्या यह सब लंबा चलेगा?" उसने बुझी-बुझी सी निगाह भीड़ पर डालते हुए पूछा।

"मालूम नहीं, पर शायद काफ़ी समय तो लगेगा ही।"

"आप वता सकते हैं कि यह सब है क्या? क्या हो रहा है?

मैं नाम नहीं जानना चाहता – नाम तो बहुतेरे हैं – मैं समझना चाहता हूं।"

पास्तुख़ोव ने आंखें भींचते हुए खिड़की से बाहर देखा। झाड़ियां और मील के निशान सरपट भाग नहीं रहे थे, बल्कि सुस्ती से रेंग रहे थे, मानो तय न कर पा रहे हों कि अपनी ही जगह पर रहें या खिड़कियों के पीछे-पीछे चलें। अपने चिंचियाते कप्लरों को खींचते हुए गाड़ी बड़ी मुश्किल से चढ़ाई चढ़ रही थी।

"कभी-कभी मुझे लगता है कि मैं सब कुछ समझता हूं," पास्तुख़ोव ने धीरे-धीरे कहा। "और कभी-कभी मैं बहुत ही मामूली, सामान्य बातें भी नहीं समझ पाता। लेकिन शायद इस बारे में दो रायें नहीं कि अब सिर्फ़ विरोधी मत रखनेवाले या तोल्स्तोय ही नहीं, बल्कि सारी जनता, सारी कौम उठ खड़ी हुई है और भाग रही है। बेहतर जीवन की खोज में, कल्पना लोक की तलाश में।"

"नहीं, दाल-रोटी की तलाश में," आस्या ने मानो उसकी भूल सुधारते हुए कहा, पर अब के उसकी मुस्कान में बड़ी मायूसी थी।

"यह रूस के इतिहास का और शायद..." पास्तुख़ोव एक क्षण के लिए रुका और फिर अपनी बात को ज़ोरदार ढंग से खत्म करते हुए आगे बोला, "सारी मानवजाति के इतिहास का भी अगला दौर है।"

"बड़ा दुखद इतिहास है," आस्या ने और भी मायूसी से कहा।

"मैं आदमी ही ऐसा हूं कि इन घटनाओं को नहीं समझ सकता," पास्तुख़ोव ने कहा। "ऐसी बात नहीं कि मैं कूड़मगज़ हूं। पर मैं बहुत संवेदनशील हूं और यही सारी ट्रेजेडी है। एक कलाकार की ट्रेजेडी। आपको शायद मालूम नहीं कि मैं कलाकार हूं। कलाकार होने के लिए अतिसंवेदनशील होना बहुत ज़रूरी है, नहीं तो आप दुनिया में पैठ नहीं पायेंगे। लेकिन आदमी जितना ही संवेदनशील होता है, उतना ही कष्ट भी भोगता है, क्योंकि कलाकार दुनिया को किसी एक अलग परिघटना के माध्यम से देखता है, जिसका नतीजा यह होता है कि वह इस परिघटना से अपनी निगाहें नहीं हटा पाता। वह एक अमूर्त प्रत्यय के रूप में मानव पीड़ा को नहीं – आप मेरी बात समझ रहे हैं न? – बल्कि पीड़ा भोगनेवाले जीवित व्यक्ति को देखता है। मिसाल के लिए, इस समय मैं आपको देख रहा हूं – समझे न? सामान्य तौर

पर आदमी को नहीं, बल्कि आपको, आपकी भागने की कोशिश में, जिसका किस्सा अभी-अभी आपने सुनाया है, और कैदी के निशानवाली उस पोशाक में, जिसके बाज़ू में आपने अपना रिबन छिपाया था। और आप मुझे शेष सारी दुनिया देखने से रोक देते हैं – कम से कम इस क्षण तो ऐसा ही है। समझे? इस समय मैं आपके अलावा और कुछ नहीं देख पा रहा हूं। आप ही मेरे लिए सारी दुनिया हैं। और मैं अमूर्त ढंग से कुछ भी बात नहीं कर सकता, सामान्यताओं में कुछ नहीं कह सकता और न ही यह बता सकता हूं कि सामान्यतः क्या होनेवाला है। हां, सिर्फ़ यही बता सकता हूं कि आपका क्या होगा। आपके लिए कठिन दिन आनेवाले हैं। मुझे लगता है कि बहुत ही कठिन दिन होंगे।"

दीबिच ने चौंककर कुछ पीछे हटते हुए हाथ से चेहरा ढांप लिया। उसका हाथ इतने ज़ोर से कांप रहा था कि कोहनी घुटने से टकरा रही थी।

"ओह, साशा! तुम भी क्या मनहूस भविष्यवाणी करने लगे!" आस्या ने नाराज़गी प्रकट की। "नहीं, नहीं, इनकी बात का विश्वास न करें। इनकी भविष्यवाणियां कभी सच नहीं निकलतीं।"

लगा कि दीबिच रो पड़ेगा। उसका बदन ऐंठने लगा था। वह चेहरे से हाथ हटाना चाहता था, पर हटा नहीं पा रहा था। आखिरकार हाथ खुद ही छटककर घुटनों के बीच झूल गया। माथे पर पसीने की बूंदें झलक आयी थीं और चेहरा फीका पड़ गया था। माफ़ी सी मांगते हुए उसने बोलने की कोशिश की।

"एक और टुकड़ा ले सकता हूं?.. तबीयत कुछ मिचलाने लगी है... खास तौर से चाय के बाद से..."

एक क्षण के लिए स्तब्धता छा गयी। फिर पास्तुखोव ने रोटी उठाकर एक टुकड़ा काटा और दीबिच की ओर यों बढ़ाया, जैसे कि उसके हाथ में ठूंस ही देना चाहता हो।

"और डाइन के खून का एक घूंट भी! हां, हां, क्यों नहीं!" उसने अचकचाकर जल्दी-जल्दी शराब उंडेलते हुए कहा।

आस्या ने नज़रें झुका लीं। उसके गालों, नाजुक कनपटियों और माथे पर ललाई दौड़ गयी थी, जिससे वह और भी सुंदर और खिली हुई लगने लगी थी।

दीविच जल्दी-जल्दी रोटी चवाने लगा। उसके लालच में कुछ जानवरों जैसी निर्लज्जता थी – मानो वह एकाएक पूरी तरह उघड़ा हुआ, नंगा सब के सामने खड़ा हो गया हो।

ओल्गा आदमोव्ना ने डरकर तुरंत अल्योशा को अपनी ओट में कर लिया।

४

जव भीड़ छंट गयी, तो पास्तुख़ोव दंपति भी अपना सामान स्टेशन से वाहर ले आये। अलेक्सांद्र व्लादीमिरोविच ने कोट उतारकर माथा पोंछा, फिर नाक-भौं सिकोड़ते हुए अपने गंदे हाथों को देखा और न जाने किम वात पर ठहाका लगाकर हंस पड़ा।

"लो पहुंच ही गये अपने वतन में!" उसने आस्या से कहा। "स्वागत है!"

सामने लंवी, सीधी सड़क के दोनों ओर ईंटों की वनी भद्दी सी वैरकें खड़ी हुई थीं। सड़क के वीचोंवीच वोरियां उठाये लोगों का जलूस सा चला जा रहा था। हर कहीं पायी जानेवाली गौरैयाएं यहां भी फुटपाथों पर गोलियों की तरह दनदनाती हुई उड़ रही थी। वंद दूकानें अपने सुनहरे, मगर अव वदरंग, साइनवोर्डों की शेखी अभी भी वघार रही थीं: "चाय – चीनी – कॉफ़ी"। पास्तुख़ोव परिवार ने अपने सभी वक्सों, गठरियों, वगैरह का खड़ंजों पर ढेर लगा दिया था और इस ढेर पर सवसे ऊपर ओल्गा आदमोव्ना की सिलाई-कढ़ाई के सामान की रंगविरंगी टोकरी और अल्योशा के खिलौनों – चाभी से चलनेवाला साइकिलसवार, रंगीन गेंद, हवाई जहाज़ और तसवीरों की किताव – का जालीदार झोला रखे हुए थे।

"कितनी वेवकूफ़ी की कि किसी भी जान-पहचानवाले से नाता नही वनाये रखा," पोस्तुख़ोव कह रहा था। "इन नौ सालों में यहां कोई वचा भी होगा कि नहीं।"

"माशा, वेहतर तो यही होगा कि तुम सीधे वड़े अधिकारियों से मिल लो," आस्या ने धीरे से, पर गहरे विश्वास के साथ सलाह दी।

"अरे, छोड़ो भी! उन्हें मेरे वक्सों की क्या फ़िक्र पड़ी है!"

"बक्सों की नहीं, तुम्हारी। उन्हें बताना कि तुम कौन हो, अपने कागज़ात दिखाना और..."

"कागज़ात? कौन हूं मैं? क्रांतिकारी सैनिक समिति का सदस्य? रसद के मामलों का कमिसार? या तुम सोचती हो कि मैं राष्ट्रीय आर्थिक परिषद का प्रतिनिधि हूं?"

उपेक्षा से फुफकारते हुए वह स्टेशन के गेट की ओर मुड़ गया। कुछ ही दूरी पर उसे एक सफ़ेद दाढ़ीवाला आदमी दिखायी दिया। वह चमकीली बाहोंवाला लंबा कोट और बदरंग सी टोपी पहने हुए था, जिसके नीचे से दाढ़ी ही जैसे सफ़ेद, अस्त-व्यस्त बाल झलक रहे थे। बूढ़ों जैसी शक्ल के बावजूद वह काफ़ी फुर्तीला था। देखनेवाला कहता कि वह या तो कोई वैज्ञानिक है या गुबेर्निया के अभिलेखागार का बाबू, यानी मेन्देलेयेव और क्लर्क, दोनों ही। उसकी आंखों में शरारत भी थी और झिझक भी। वह अल्योशा की ओर एक ऐसे लड़के की तरह देख रहा था, जो उससे जान-पहचान तो करना चाहता है, पर अभी नहीं जानता कि उसकी कोशिश सफल रहेगी कि नहीं। एकाएक वह दुबककर अल्योशा के पास पहुंच गया और भौंहें उठाते हुए बोला,

"कहां जाने की तैयारी है?"

ओल्गा आदमोव्ना ने तुरंत अल्योशा को अपनी ओर खींच लिया, पर बच्चा ज़रा भी झिझके बिना बोला,

"हम जा नहीं रहे, बल्कि पहुंचे हैं। सिर्फ़ पिताजी अभी नहीं जानते कि ठहरेंगे कहां।"

"हां, हां," पास्तुख़ोव भी चुप न रह सका।

"बच्चे से बातें करने के लिए माफ़ी चाहता हूं," बूढ़े ने शर्माकर, शिष्ट आदमी की तरह सिर से टोपी उठाकर अनास्तासिया गेर्मानोव्ना का अभिवादन किया और धीमे स्वर में बोला, "बहुत ही सुंदर बच्चा है!"

"आप भी क्या बात करते हैं!" मां ने लजाते हुए आपत्ति की और अल्योशा पर एक नज़र डालकर हाथ से चेहरा छिपा लिया, ताकि बूढ़ा न देख सके कि बच्चे की प्रशंसा उसे अच्छी लगी है।

"तो तुम सरातोव में रहना चाहते हो?" बूढ़े ने फिर अल्योशा को संबोधित करते हुए पूछा।

"हम पीटर्सबर्ग में रहते हैं," अल्योशा कड़ाई से बोला।

अलेक्सांद्र व्लादीमिरोविच व्यंग्य से मुस्कराया,

"एक तरह से हम राजधानी से भागनेवालों में से हैं। खुद अपने से ही भाग रहे हैं। मगर यहां भी हम बिल्कुल अजनबी हैं, हालांकि मेरा जन्म इसी इलाके में हुआ था। मेरा नाम पास्तुख़ोव है। कभी सुना है?"

"पास्तुख़ोव? आप? क्या वही पास्तुख़ोव? ओह, हां, समझ गया। क्यों नहीं, क्यों नहीं!" उत्तेजना के मारे बूढ़ा खुद ही अपने सवालों का जवाब भी दिये जा रहा था। "हां, हां, पहचान गया। कैसा अद्भुत संयोग है! सचमुच मुझे बड़ी खुशी है। मेरा नाम आर्सेनी रोमानोविच दोरोगोमीलोव है और आपका ही हमवतन हूं।"

उसने तुरंत सबसे हाथ मिलाया। उसके व्यवहार में एक अजीब सा विरोधाभास था: वह जितना ही उत्तेजित होकर बोलता, उतना ही हकलाने और अटपटाने लगता और साथ ही पहले से अधिक सीधा और मिलनसार बन जाता।

"मैंने कहा था न कि नाम बड़ी चीज़ है," आस्या ने यों कहा, जैसे इतनी घिसी-पिटी बात कहने पर ख़ुद उसे भी हंसी आ रही हो।

"आप हमें फिलहाल ठहरने के लिए कोई जगह बता सकते हैं?" पास्तुख़ोव ने पूछा।

"यह भी कोई मुश्किल बात है?" दोरोगोमीलोव ने तुरंत जवाब दिया। "मिसाल के लिए, आप असुविधा न समझें तो फिलहाल मेरे यहां, मेरे घर में, ठहर सकते हैं। मैं कुछ पुराने दोस्तों से मिलने एक हफ़्ते से लगातार स्टेशन आ रहा हूं। पर अभी तक कोई पहुंचा ही नहीं। दो हफ़्ते पहले तार मिला था कि मास्को से रवाना हो रहे हैं। आप ख़ुद ही सोचिये: दो हफ़्ते पहले! ख़ैर, कोई बात नहीं, मेरे सरकारी घर में काफ़ी जगह है। मैं अकेला ही हूं।"

"सरकारी घर? मतलब?" पास्तुख़ोव ने जानना चाहा।

"आप समझे नहीं," बूढ़ा ज़ोर से हंस पड़ा। "घर से मेरा मतलब पूरा मकान नहीं है। मुझे सरकार, यानी नगर प्रशासन की ओर से फ़्लैट मिला हुआ है। मकान नगर प्रशासन का है। मैं पैंतीस साल तक – हां, हां, पैंतीस साल तक – नगर प्रशासन में चीफ़ एकाउंटेंट

था और अब भी वही हूं। फ़र्क सिर्फ़ इतना है कि अब दफ़्तर का नाम म्यूनिसिपल प्रशासन विभाग हो गया है।"

"मेरा अलग कमरा होगा न?" अल्योशा ने पूछा।

"फौव्वारेवाली कोठी और टमटम भी नहीं चाहते?" पिता ने डांटकर पूछा।

"नहीं, तुम्हारा अलग कमरा ज़रूर होगा," बूढ़े ने अल्योशा की ओर झुककर उससे सहानुभूति दिखाते हुए कहा। "मां और पिताजी बड़े कमरे में रहेंगे। उसकी बगल में अलग से एक छोटा कमरा है। उसमें चाहें तो तुम और ये..." यहां दोरोगोमीलोव ने ओल्गा आदमोव्ना की ओर मुड़कर अनिश्चय की सी मुद्रा में उनका अभिवादन किया, "रह सकते हैं।"

"आपने कहा कि फ़्लैट में और लोग भी रहते हैं?" आस्या ने किंचित् आशंका से पूछा।

"बिल्कुल नहीं। मकान बेशक म्यूनिसिपल विभाग का है, मगर फ़्लैट में पहले की तरह मैं अकेला ही रहता हूं। कम से कम अभी कोई तब्दीली नहीं हुई है।"

"लेकिन आपको दिक्कत नहीं होगी?" आस्या ने होंठों को थोड़ा सा मोड़कर कृतज्ञताभरे स्वर में पूछा। दोरोगोमीलोव के उत्तर ने उसका दिल छू लिया था और उसकी आंख में आंसू की बूंद छलक आयी थी।

"आप भी क्या बात करती हैं! मेरे पास... नहीं, नहीं, आप विश्वास मानिये कि इससे मुझे खुशी ही होगी! मेरे पास दो कमरे और हैं। पूरी मंज़िल मेरे अधिकार में है। नगर ने उसे मुझे दिया था और अब याद भी नहीं कि मैं वहां कब से रह रहा हूं!"

"कमाल है!" पास्तुख़ोव बोला।

"किस्मत का, क्या?" आस्या ने पूछा।

उसने पुष्टि में सिर हिला दिया।

"तो तैयार हैं न?" दोरोगोमीलोव ने खुशी के मारे सबकी ओर मुड़ते हुए कहा और उस जहाज़ी की तरह झटककर टोपी उतार ली, जिसे चिर प्रतीक्षित धरती सहसा दिखायी दे गयी हो।

अल्योशा ने भी देखादेखी सिर से अपनी सफ़ेद, गरमियों की टोपी उतार ली और हवा में हिलायी।

"मां तैयार है! मां तैयार है!" वह चिल्लाया।

"चिल्ला क्यों रहे हो?" पिता ने विना किसी नाराज़गी के पूछा।

"तो सामान लादा जाये न? चलो, ठेला ले आयें," दोरोगोमीलोव अल्योशा की ओर हाथ बढ़ाते हुए बोला।

मगर ओल्गा आदमोव्ना तुरंत चिहुंककर नकली सील की खाल के अपने धूलभरे कोट को ठीक करती हुई सामने आ खड़ी हुई।

"नहीं, नहीं, अल्योशा अभी आपको ठीक से जानता भी नहीं है।"

"नहीं जानता, तो जान जायेगा। खैर, मैं अभी एक मिनट में आया।"

दोरोगोमीलोव स्टेशन के दूसरे छोर की ओर दौड़ चला, जहां वचे-खुचे मुसाफ़िर अभी भी अपने सामान से उलझ रहे थे। वह छोटे-छोटे डग भरता फुदक-फुदककर चल रहा था। हवा में फड़फड़ाते लंवे कोट के नीचे ढीली-ढाली पैंट में उसकी टांगें वांस के डंडों जैसी लग रही थीं। टोपी के नीचे से वाल लहरें खाते उड़ रहे थे। चलते हुए वह अपने एक कंधे को यों आगे कर लेता, जैसे कि हवा को चीर रहा हो।

अल्योशा ज़ोर से हंस पड़ा और खुद भी कभी एक पैर पर तो कभी दूसरे पर कुदकने लगा।

"वह जानवूझकर ऐसा वन रहा है, है न मां? विल्कुल क्रिसमस के पेड़ के खिलौने जैसा!"

"वह पुरानी किताव जैसा है," पास्तुख़ोव ने आस्या की ओर कनखियों से देखते हुए आंख मारी और ठहाका लगाकर हंसने लगा। "शैतान ही जाने, मैंने तो ऐसा कभी नही देखा है!"

"साशा, सच मानो, भगवान ने हमारी मदद के लिए अपना दूत भेजा है," आस्या ने एक गहन अन्तर्प्रेरणा के साथ और "दूत" शव्द पर विशेप वल देते हुए कहा। उसका चेहरा खुशी से दमक रहा था।

"या फिर कोई पागल," पास्तुख़ोव ने रुखा सा जवाव दिया।

कोई डेढ़ घंटे वाद वह छोटा सा जलूस दोरोगोमीलोव के घर के पास पहुंचा। वूढ़ा नन्हे अल्योशा का हाथ पकड़े हुए था और ओल्गा आदमोव्ना, जो सवसे ज़्यादा उत्तेजित थी, उनके पीछे चल रही थी। सड़क पर दो ठेलों को कुली खींच रहे थे। पास्तुख़ोव दंपति सवसे पीछे फुटपाथ पर चल रहे थे।

दोरोगोमीलोव जिस मकान में रहता था, वह वोल्गा नदी से लीप्की बुलवार को जानेवाली एक शांत सी सड़क पर था। मकान दोमंज़िला था और उसकी दीवारों का गुलाबी पलस्तर अब न सिर्फ़ भूरा, बदरंग हो गया था, बल्कि जगह-जगह दरारें पड़ने से भड़ने भी लगा था। नींव भी काफ़ी जर्जर हो चुकी थी। फुटपाथ तक फैली हुई मुख्य द्वार की ड्योढ़ी की वजह से मकान को आसानी से याद रखा जा सकता था। ड्योढ़ी के सजीले दरवाज़े और खिड़कियों के कुछ रंगीन कांच, जो गली के बच्चों के पत्थरों का निशाना बनने से बच गये थे, अभी भी चमक रहे थे। वास्तुकला की दृष्टि से इस मकान में ऐसा और कुछ न था, जो कि प्रदेश के शहरों और ज़िलों के सौ-डेढ़ सौ साल पुराने दूसरे मकानों में भी न पाया जाता हो, जैसे ऊपर की मंज़िल पर ड्योढ़ी के दरवाज़े से मेल खाती मेहराबदार खिड़कियां, नींव से लेकर कार्नीस तक बने आयताकार, सपाट और इतने कम उभरे हुए खंभे कि देखनेवाला कहता कि उन्हें दीवार पर रंगा गया है। यहां तक कि दायीं ओर की चहारदीवारी, जिसमें फाटक बना हुआ था, और बायीं ओर की छोटी इमारत भी पासपड़ोस के घरों जैसी ही थीं। एक अकेली नयी बात यह थी कि पुराने, पीले अकासिया के पेड़ों की टहनियां, जिनपर नयी पत्तियां फूटने लगी थीं, चहारदीवारी के बाहर तक फैली हुई थीं।

आर्सेनी रोमानोविच फाटक खोलकर अंदर चला गया। कोई एक मिनट बाद उसने हांफते हुए मुख्य द्वार खोला। मजदूर सामान भीतर पहुंचाने लगे। अल्योशा सबसे आगे-आगे दौड़कर चरमराती सीढ़ियां चढ़ता हुआ खिड़की के पास जा खड़ा हुआ। वहां से बाहर का दृश्य देखकर तो वह दंग ही रह गया। स्टेशन से आते हुए रास्ते में आर्सेनी रोमानोविच ने नये घर से दिखनेवाली जिस ख़ूबसूरती के बारे में बताया था, वह न सिर्फ़ गप नहीं थी, बल्कि अल्योशा के सामने फैले पड़े इस आश्चर्यलोक की तुलना में बहुत मामूली भी थी।

घर के नीचे ढलान पर एक बहुत बड़ा बाग था। कुछ पेड़ों पर नन्ही-नन्ही पत्तियां निकल आयी थीं और कुछ अभी फूटती हुई कोंपलों और गहरे लाल रंग की मखमली मंजरियों से ही ढके हुए थे। पर बाग में बहार आ चुकी थी। संकरी पगडंडियों पर पीले चूज़ों जैसे धूप के

चकत्ते खेल रहे थे। घास कहीं पर इतनी छोटी और सीधी थी कि मानो किसी ने कैंची लेकर उसकी छंटाई की है, और कहीं खूब लंबी, झबरी-ली और लहलहाती हुई। एक जगह पर टूटे पहियेवाली पुरानी हथगाड़ी उलटी पड़ी थी। "पहिया तो ठीक कर लेंगे," अल्योशा ने सोचा और फिर ऊपर देखने लगा।

उसकी नज़र एक सफ़ेद गिरजे और उसके ऊंचे तथा नुकीले घंटाघर पर पड़ी। उनके ठीक पीछे एक चमकती, हलचल सी करती हुई और सभी ओर से क्षितिज तक फैले अनगिनत खेतों जैसी कोई विशाल चीज़ दिखायी दी। पहले तो वह उसे पहचान न पाया। पर फिर तुरंत समझ गया कि यह खेत नहीं, पानी है और फिर उसे इस नतीजे पर पहुंचते भी देर न लगी कि यह वोल्गा नदी है।

"वोल्गा! मां, इधर देखो, वोल्गा!" वह अपने को रोक न सका।

मगर किसी ने उसकी बात पर ध्यान नहीं दिया। सभी बक्से ढोने में व्यस्त थे। सहसा उसे लगा कि कहीं उससे पहचानने में गलती तो नहीं हुई है। वोल्गा हालांकि कहीं बड़ी नदी है, पर देखने में उसे नेवा नदी की तरह ही होना चाहिये था। लेकिन यह तो नेवा जैसी बिल्कुल नहीं थी। इसका तो कहीं कोई किनारा ही नहीं था और जो किनारा सा लगता भी था, वह भी नदी की तरह सपाट और अंतहीन था। बेशक उसका रंग कुछ दूसरा था – बैंजनी भूरा सा। मगर यह रंग भी पानी जैसे ही ज़िंदा और हलचल करता हुआ था। वहां पेड़ और इक्के-दुक्के मकान भी नज़र आ रहे थे। लेकिन वे भी लगता था कि जैसे पानी में खड़े हुए हों। फिर उसने सुन रखा था कि वोल्गा में बड़े-बड़े जहाज़ चला करते हैं। पर यहां तो चारों ओर पानी ही पानी था और जहाज कहीं नज़र नहीं आ रहे थे। तभी घरों की छतों के पार, बिल्कुल पास ही उसे दो नावें दिखायी दीं। लेकिन नावें तो और नदियों में भी चल सकती हैं।

अल्योशा ने सोचा कि पहले भली भांति पता कर लेना चाहिये कि यह वोल्गा ही है या कोई और नदी। वह मन ही मन खुश भी हुआ कि उसका चिल्लाना किसी ने नहीं सुना। तभी उसे गिरजे के पीछे पानी में एक छोटी सी तिकोनी चीज़ दिखायी दी। वह पेंसिलदान के ढक्कन की

तरह गिरजे की आड़ में से निकलती हुई बड़ी होती जा रही थी। शीघ्र ही तिकोन चौकोर में बदल गया और इस चौकोर के ऊपर एक और चौकोर प्रकट हुआ। दोनों ही गिरजे की ओट से निकलते जा रहे थे। एक चौकोर दूसरे चौकोर को अपने ऊपर लिये जा रहा था। सहसा ऊपरी चौकोर के ऊपर एक और चौकोर प्रकट हुआ, ठीक वैसे ही, जैसे पहले के ऊपर दूसरा प्रकट हुआ था, और फिर उन तीनों के पीछे कतार सी बांधे हुए और चौकोर भी दिखायी देने लगे। तभी अचानक उनपर सूरज की किरणें पड़ीं और अल्योशा ने साफ़-साफ़ देखा कि वे असल में छोटी-छोटी खिड़कियों की कतारें हैं। इस बीच गिरजे क़ी ओट से और भी कई सारी खिड़कियां निकल आयी थीं। अल्योशा पहचान गया कि यह जहाज़ है। हां, हां, किनारे के पास से यह जहाज़ ही गुज़र रहा था! फिर इसके और भी कई सारे सबूत दिखायी देने लगे: ऊपर के डेक पर लटकी हुई रक्षा-नौका, कप्तान का केबिन, काली चिमनी, एक और रक्षा-नौका, जहाज़ के चक्के के नीचे से निकलता हुआ फेंटे अंडे जैसा झाग, पंखे की तरह फैलती हुई लहरें, डेक पर एक और रक्षा-नौका। फिर खिड़कियों की ऊपरी कतार खत्म हो गयी। इसके बाद बिचली कतार का भी आखिरी छोर आ पहुंचा। अब जहाज़ का पिछला हिस्सा, मस्तूल, जिसपर एक नाव टेढ़ी टंगी हुई थी, और मस्तूल पर सबसे ऊपर लोमड़ी की पूंछ की तरह फहराता हुआ झंडा भी दिखायी देने लगा। खिड़की की सिल पकड़कर पंजों के बल खड़े अल्योशा की आंखों के सामने सचमुच एक पूरा का पूरा, तीन डेकवाला जहाज़ ही गुज़र रहा था। फिर मानो शक की और कोई गुंजायश न रह जाये, जहाज़ की चिमनी ने गुस्से से दूधिया सफ़ेद भाप का भभकारा छोड़ा और कोई एक सेकंड बाद उसके भोंपू की रुखी, कर्कश आवाज़ भी खिड़की से आकर टकरा गयी।

"वोल्गा में जहाज़ जा रहा है!" अल्योशा ख़ुशी के मारे चिल्लाया।

"हुर्रा!" आर्सेनी रोमानोविच भी अपने हाथ में पकड़े बक्से को आखिरी सीढ़ी पर गिराते हुए चिल्लाया और फिर मानो उनके बीच समझौता सा हो रखा हो, सभी एक साथ खिड़की के पास आकर खड़े हो गये और नदी की ओर देखने लगे।

"अरे, हां, जहाज़ ही जा रहा है!" कोई एक मिनट की चुप्पी के बाद गहरी सी सांस लेते हुए अल्योशा के पिता ने कहा। "आस्या, शायद ठीक ही हुआ कि हम सरातोव में आ टपके। ठीक ही हुआ न?"

"क्यों नहीं?" अल्योशा की मां ने प्रसन्नतापूर्ण मौन हंसी के साथ जवाब दिया।

"ठीक ही नहीं, बल्कि बिल्कुल ठीक!" आर्सेनी रोमानोविच ने भी पुष्टि की और हल्के से अल्योशा को बगल में कोंच दिया। "है न, अल्योशा?"

"जहाज़ इससे बड़े भी होते हैं?" अल्योशा ने उससे पूछा।

"नहीं, इससे बड़े नहीं होते," आर्सेनी रोमानोविच ने जानकार आदमी की तरह बताया।

"पिता जी, हम जहाज़ पर बैठेंगे न?"

"हम्म ... हो सकता है कि जलविमान पर भी बैठेंगे," पिता ने खिड़की से हटते हुए खीझकर कहा।

नवागंतुक फिर सामान ठीक से रखने में व्यस्त हो गये। दोरोगोमीलोव ने बताया कि उसे काम पर जाना है और पास्तुख़ोव से कहा कि वह यहां किसी तरह की तंगी महसूस न करे। जाते-जाते वह अल्योशा को कह गया कि वह चाहे तो बाग में – वहां छाजन के नीचे एक बढ़ई मेज़ भी है – और चाहे तो घर के किसी भी कमरे में खेल सकता है।

वह घर कुछ अजीब सा था। बनानेवाले ने उसे अपने रहने के लिए नहीं, बल्कि अपरिचित, सरकारी किरायेदारों के लिए बनाया था। इसके बावजूद पुराने ज़माने के मकानों की तरह उसकी दीवारें काफ़ी मोटी थीं। फ़र्श के तख्ते इतने मज़बूत थे कि हृष्टपुष्ट घोड़े का वज़न भी उठा लें। दहलीज़ें तीन पीढ़ियों के चलने के बाद भी बिल्कुल नहीं घिसी थीं। सामने के जिस कमरे में अचानक आये मेहमानों को ठहरना था, उसके बीचोंबीच एक बड़ी सी रूसी अंगीठी थी। यह कमरा शायद रसोई और खाने के कमरे, दोनों का काम करता था, जो कि पुराने ज़माने में आम सी बात थी। अंगीठी की दोनों बगलों से पार्टीशन डालकर एक छोटा सा कमरा अलग बना लिया गया था, जिसमें अंगीठी की टांड़ पर सोया भी जा सकता था।

अल्योशा तुरंत उछलकर टांड़ पर बैठ गया। फिर उसने लेटकर

और खड़े होकर भी देखा कि छत कितनी ऊंची है। इसके बाद अपने सभी खिलौने, जिनसे वह ऊब गया था, टांड़ पर फेंककर वह चुपके से गलियारे में निकल आया और खिड़की के पास खड़ा हो गया। ओल्गा आदमोव्ना के विना उसे अकेले ही वाग में जाने की इजाजत नहीं थी, इसलिए थोड़ी देर वोल्गा को देखकर वह फ़्लैट का मुआयना करने लगा।

वोल्गा की ओर खुलनेवाली वह अकेली खिड़की थी। गलियारे के आखिर में विल्कुल अंधेरा था। फिर भी अल्योशा महसूस कर सकता था कि वहां दीवार के साथ तरह-तरह के वक्सों और कवाड़ का ढेर लगा हुआ है। जब आंखें अंधेरे की कुछ आदी हो गयीं, अल्योशा छोटे-छोटे डग भरता आगे वढ़ा। सचमुच वहां तरह-तरह की चीज़ें पड़ी हुई थीं – एक दूसरी पर रखी टोकरियां, जलाने की लकड़ी, आलमारी, जिसके एक किवाड़ की जगह गत्ता लगा हुआ था, लोहे का वाश-वेसिन, एक वड़ा सा पिंजड़ा, जो शायद तोते के लिए था, कुर्सियां और उनपर रखी हुई फ़ोल्डिंग चारपाई, दरी के टुकड़े से ढका कितावों का ढेर और कितावों के ऊपर लटका हुआ – भगवान जाने किस चीज़ से लटका हुआ – लैंप। अल्योशा ने चीज़ों को हौले से छुआ, खास तौर से पिंजड़े को और घुमाऊ टोंटीवाले वाश-वेसिन को। उसकी अंगुलियां मखमली सी हो गयीं। उसने उन्हें सूंघा और पाया कि उनसे गरमियों के फुटपाथों जैसी गंध आ रही है।

गलियारे के विल्कुल आखिरी छोर पर पहुंचकर अल्योशा को आमने-सामने वने दो दरवाज़े दिखायी दिये। वायां दरवाज़ा पतली सी दरार जितना खुला हुआ था। अंदर धूप फैली हुई थी। अल्योशा भीतर घुसा। यह एक कमरा था, जिसमें एक कोने पर अंगीठी वनी हुई थी। इस कमरे की खिड़की भी उसी वाग की ओर खुलती थी, मगर दूसरे कोण से। खिड़की से पड़ोस का गिने-चुने पेड़ोंवाला वाग और गिरजे का ऊंचा शिखर भी दिखायी दे जाते थे, हालांकि यहां से वह शिखर वैसा विल्कुल नहीं लगता था, जैसा कि गलियारे से देखने पर।

अंगीठी के ऊपर डूवते आदमी को वचाने का चक्का पड़ा हुआ था। उसपर लाल और सफ़े[illegible] हुआ था और [illegible] किनारे की

रस्सी के फंदे टूटे हुए थे। अल्योशा ने चक्का उठाया। वह उसे भारी लगा। अल्योशा हैरान था कि इतनी भारी चीज़ न सिर्फ़ डूबती नही है, बल्कि डूबते हुए को संभाले भी रहती है। उसे याद आया कि पेत्रोग्राद में ग्रीष्म उद्यान के पास की पुलिया पर कार्क के गोलों के साथ टंगे ऐसे चक्के पर लिखा हुआ था: "डूबते को बचाने के लिए फेंको!" उसने चक्के को अंगीठी से उतारा और लोहे के कड़े की तरह खड़ा करके लुढ़काने लगा। साथ ही मन ही मन वह चिल्ला रहा था: "डूबते को बचाने के लिए फेंको!" और सोच रहा था कि उसे किधर फेंका जा सकता है।

बाहर गलियारे में उसे नीचे अहाते की ओर जाती सीढ़ियां दिखायी दीं। सीढ़ियों की लकड़ी की ड्योढ़ी पर धूप की धारियां बिखरी पड़ी थी और दरवाज़ा हल्का सा खुला हुआ था। यदि डूबता आदमी वहां था, तो चक्कर उधर फेंका जा सकता था और फिर उसके पीछे-पीछे उतरकर अहाते में झांकना भी संभव हो जाता। अल्योशा चक्के को लुढ़काकर सीढ़ियों के पास ले आया और पूरी सांस भरकर चिल्लाने को तैयार ही हुआ था: "डूबते को..." कि तभी गलियारे में ओल्गा आदमोव्ना अपनी घुंघराली लटें उछालती और सामने जो घट रहा था, उससे दहशत में आकर आंखें भींचती हुई दौड़ी-दौड़ी आती दिखायी दी। ओल्गा आदमोव्ना ने झपटकर अल्योशा से चक्का छीनकर दूर फेंक दिया, मानो वह कोई घिनौनी चीज़ हो, और उसका कोट, घुटने और हाथ झाड़ने-पोंछने लगी। फिर जब झाड़ना-पोंछना खत्म हो गया और हक्के-बक्केपन पर काबू पा लिया गया, तो अल्योशा से जवाब-तलब हुआ:

"ये बेकार की चीज़ तुम्हें कहां मिली?"

"ये बेकार की चीज़ अंगीठी के ऊपर पड़ी हुई थी," अल्योशा ने जवाब दिया।

ओल्गा आदमोव्ना ने भुनभुनाते हुए चक्के को उठाकर फिर अंगीठी के ऊपर रख दिया।

"अल्योशा, बच्चे मेरे, मैं अभी तुम्हारे साथ बाहर घूमने नही निकल सकती। तुम्हारी मां की सामान खोलने-रखने में मदद करनी है। वचन दो कि तुम इस सीढ़ी पर कदम भी न रखोगे!" यह कहते हुए

ओल्गा आदमोव्ना ने ऊपर यों देखा, जैसे किसी आसमानी ताकत को गवाह बनाना चाहती हो।

"मैं इस सीढ़ी पर कदम भी न रखूंगा," अल्योशा ने ओल्गा आदमोव्ना की हिदायत यों दोहरायी, जैसे कि फ़्रांसीसी का पाठ दोहरा रहा हो और शरारती आंखों से खुद भी ऊपर छत की ओर देखने लगा।

अब ओल्गा आदमोव्ना चली गयी, उसने निराशा से कमरे में नज़र दौड़ायी, जहां उस चक्के के अलावा और कोई दिलचस्पी की चीज़ न थी। मालूम नहीं उस कमरे में अंगीठी क्यों थी। शायद गरमियों में वहां खाना बनाते होंगे।

तभी उसे दूसरे दरवाज़े की याद आयी और वह उस ओर बढ़ चला। दरवाज़ा बंद था, मगर हल्का सा धक्का देते ही खुल गया। यहां भी गलियारे जैसे ही बहुत सी चीज़ें पड़ी हुई थीं। अंतर सिर्फ़ इतना था कि सड़क की ओर खुलनेवाली दो खिड़कियों के उजाले में उन्हें साफ़-साफ़ देखा जा सकता था। शायद यह आर्सेनी रोमानोविच का कमरा था। फटी हुई रज़ाई से ढका बिस्तर, बढ़ई और मिट्टी तेल के स्टोवों के मरम्मतसाज़ की मेज़ जैसी लिखने की मेज, पुरानी किताबों के ढेर, बंडल और गट्ठर, एक हत्थेवाली घिसी हुई मखमली आराम-कुर्सी, फूलदार बरतनोंवाली आलमारी, जिसके कांच टूटे हुए थे, सब इस बात के परिचायक थे कि इस कमरे में रहनेवाला कर्मठ और बहुविध रुचियोंवाला आदमी है।

अल्योशा ने अधखुले दरवाज़े से अंदर पहले नाक, फिर सिर और फिर एक कंधा और पैर घुसेड़ा और फिर पूरा का पूरा ही भीतर घुस आया।

लेकिन उसने पहला कदम बढ़ाया ही था कि सहसा गुस्से में भरी दो आवाज़ों ने कमरे की खामोशी भंग कर दी। कहीं कुछ गिरा, लुढ़का और टकराया, आवाजें चीख-चिल्लाहट और गुर्राहट में बदल गयीं, कुछ मारा-फेंका गया और फिर धमकियां व गालियां साफ़-साफ़ सुनायी देने लगीं। एकाएक बायीं ओर के दरवाज़े से (अल्योशा की नज़र अभी उसपर नहीं पड़ी थी) आपस में गुत्थमगुत्था हुए दो लड़के कमरे में आ गिरे। अल्योशा सहमकर पीछे हटने को हुआ, पर इससे उसके पीछे का दरवाज़ा ही बंद हो गया। अब वह इन दो बहादुर

लड़ाकुओं के साथ कमरे में अकेला था। दोनों लड़के एक हाथ से किसी फटी हुई किताब को पकड़कर एक दूसरे के चेहरे पर पटकने की कोशिश करते हुए और दूसरे हाथ से वगलों, कंधों, सिर और पीठ पर मुक्के बरसाते हुए बेरहमी से एक दूसरे की धुनाई कर रहे थे। किताब के पन्ने फट-फटकर क़बूतरों की तरह उड़ते और फ़र्श पर गिरते जा रहे थे। मुक्के ऐसी तेज़ी से वरस रहे थे कि जैसे सिलाई मशीन का पिस्टन चल रहा हो। अल्योशा के लिए कह पाना मुश्किल था कि दोनों लड़कों में से कौन ज़्यादा मार खा रहा था, यानी कौन जीत रहा था और कौन हार रहा था। उसे लगा कि दोनों खूंखार योद्धा एक दूसरे को जान से मारकर ही दम लेंगे। उनके जगह वदलने, मुड़ने, घूमने, झुकने, छिटककर खड़े होने, लपकने, झपकने और फटे कागज़ों के गुवार में अल्योशा इतना ही देख पाया कि एक लड़के के वाल वादामी थे और दूसरे के खुद अल्योशा जैसे उजले, और यह भी कि दोनों उससे बड़े थे। अल्योशा की हथेलियों से ठंडा पसीना छूटने लगा था। उसने सोचा कि उसे वहां से भाग जाना चाहिए, मगर न तो वह टस से मस हो पाया, न उस दहला देनेवाले रोमांचकारी दृश्य से आंखें ही हटा सका। हांफते-गुर्राते लड़कों के मुंह से किताब के फटे पन्नों जैसे जो टूटे-फूटे शब्द निकल रहे थे, वह उन्हें नहीं समझ पा रहा था और सांस रोके खड़ा अनजाने में खुद भी कुछ बुदबुदाने-बड़बड़ाने लग गया था।

"मज़ा चखा?" मार-धाड़, उठा-पटकी, हांकने-फुफकारने के उस शोर-शराबे में अल्योशा सुन रहा था। "ये ले और!.. मज़ा आया?.. ये ले!.. और तू भी ले!.. ले, ले!.. और ले!.. ताड़... ताड़... हम्म..."

आखिर लड़कों के हाथ में किताब की सिर्फ़ जिल्द ही वाकी रह गयी। बादामी बालोंवाले ने उसे छीन लिया और पीछे हटकर उजले बालोंवाले पर फेंका:

"यह रहा तेरा कॉनन डॉयल! चाट इसे!"

उजले बालोंवाला चिल्लाता हुआ वादामी वालोंवाले पर फिर झपट पड़ा:

"अभी वताता हूं तुझे कॉनन डॉयल का मज़ा!"

दोनों बछड़ों की तरह सिर झुकाये फिर एक दूसरे पर मुक्के बरसाने लगे। मगर अब की बार देर तक नहीं। दो-एक वार खाली जाने के बाद दोनों अलग हो गये और हांफते हुए आस्तीनों से ही चेहरा पोंछने लगे। फिर दोनों ने पेटी ढीली करके अपनी पैंट ऊपर खींची, कमीज़ दुरुस्त की, पेटी को फिर से बांधा, खरोंच लगे चेहरे को दोबारा पोंछा, पर अब के आस्तीनों से नहीं, बल्कि हथेलियों से और देखा कि कहीं खून का कोई निशान तो बाकी नहीं रह गया है। लेकिन चेहरों को किताब से कहीं कम नुकसान पहुंचा था।

"मज़ा आया?" बादामी बालोंवाले ने कहा।

"अगली बार देखना कि तेरी क्या दुर्गत होती है," उजले बालोंवाले ने जवाब दिया।

दोनों फिर चुपचाप अपना हुलिया ठीक करने और लड़ाई के मैदान पर नज़र डालने लगे। उजले बालोंवाले ने ही पहले फ़र्श से कुछ पन्ने उठाये और उन्हें ध्यान से देखा।

"देखना, आर्सेनी रोमानोविच तेरी कैसी ख़बर लेते हैं!"

"मेरी क्यों लेंगे? तूने मेरे हाथ से किताब क्यों छीनी थी?"

"तूने उसे आलमारी से क्यों निकाला था?"

"और तुझे उसे छिपाने की क्या ज़रूरत पड़ी थी? ऊपर से झूठ बोला कि मालूम नहीं कहां रखी है जबकि खुद ही उसे छिपाया था!"

"किताब पहले मैंने देखी थी, इसलिए पहले पढ़ने का हक मुझे था। बाद में मैं तुझे भी दे ही देता।"

"पर झूठ क्यों बोला? तू जब आर्सेनी रोमानोविच की खुशामद कर रहा था, मैं तभी ताड़ गया था कि झूठ बोल रहा है।"

"खुशामदी मैं नहीं, तू है!"

"क्यों नहीं! कैसे घिघियाकर कह रहा था: 'आर्सेनी रोमानोविच, अगर हम कॉनन डॉयल की किताब ढूंढ़ लें, तो पढ़ सकते हैं न?' और यह सब तब, जब तूने ही उसे भूगोल की किताब के पीछे छिपाया हुआ था!"

"तू क्या भूगोल की किताब में सूंघता फिरता है?"

"हां, मैं जानता हूं कि कहां सूंघना है। मेरी नाक बड़ी तेज़ है।"

"एक घूंसा पड़ जाये, तो सारी तेज़ी जाती रहेगी।"

"हिम्मत है?" लाल बालोंवाले ने जवाब दिया और अपनी आस्तीनें चढ़ाने लगा।

लेकिन संकट टल गया था। कुछ ठहरकर उसने भी झुककर फ़र्श से कुछ पन्ने उठा लिये।

"पाशा, तेरे पास कौनसा पन्ना है?" थोड़ी देर खामोश रहने के बाद उजले बालोंवाले ने पूछा।

"पचहत्तरवां। और तेरे पास?"

"ग्यारहवें से सोलहवें तक।"

"चलो बिस्तर पर फैलाकर सबको ठीक से रखें।"

"और फिर चिपका भी दें। मैं नाना से गोंददार कागज़ ले आऊंगा, उनके पास ऐसा कागज़ है।"

घुटनों के बल बैठकर दोनों चारपाई, मेज़ और आरामकुर्सी के नीचे बिखरे पड़े पन्ने इकट्ठा करके एक दूसरे को पकड़ाने लगे। लड़ाई के बाद दोनों की पीठ दरवाज़े की ओर थी और फिर दोनों ही अपने झगड़े में खोये हुए थे, इसलिए अभी तक उनकी नज़र अल्योशा पर नहीं पड़ी थी। लेकिन अब पन्ने इकट्ठे करते हुए मुड़कर उनका अल्योशा को देखना लाज़िमी था – कुछ पन्ने उड़कर उसके पैरों के पास जा गिरे थे। अल्योशा खुद भी उनकी मदद करना चाहता था, क्योंकि अब डरने की कोई बात न थी। वह खुश था कि इतनी घमासान लड़ाई के बाद भी कोई खास घायल नहीं हुआ था। लेकिन पहले उसे अपनी मौजूदगी के बारे में बताना होगा। वह खंखारनेवाला ही था कि तभी बादामी बालोंवाला कमरे पर नज़र दौड़ाने के लिए खड़ा हो गया और अपनी निर्भीक पीली आंखों से सीधे अल्योशा को टकटकी लगाकर देखने लगा।

"यह कहां से आया?" उसने पूछा। "तू कौन है? वीत्या, यहां देख तो!"

अब तक उजले बालोंवाला भी अल्योशा के पास आकर उसे अपनी बहुत ही निर्भीक और इसलिए डरानेवाली आंखों से एकटक देखने लग गया था।

"पेत्रोग्राद से आर्सेनी रोमानोविच के यहां जो रहने आये हैं, शायद उनमें से है," वीत्या ने कहा।

"तू पेत्रोग्राद से आया है?" पाशा ने पूछा।

"हां," अल्योशा ने थूक घूंटते हुए जवाब दिया।

"आर्सेनी रोमानोविच को तुझमें क्या दिखायी दिया?" पाशा ने हैरानी प्रकट की।

"तू क्या सब कुछ देख रहा था?" वीत्या ने पूछा।

"हां, माफ़ी चाहता हूं," अल्योशा सिर झुकाते हुए बोला।

"खैर, हम किसी से डरते नहीं," पाशा ने कहा। "क्या नाम है तेरा?"

"अल्योशा।"

"उम्र कितनी है?"

"सात पूरे आठवां शुरू," अल्योशा यों बोला, जैसे कि एक ही शब्द में जवाब दे रहा हो।

"हम – मैं और वीत्या – सरातोव के हैं और अठारह साल पूरे कर चुके हैं। पर तू पेत्रोग्राद का होकर भी सात साल का ही है।"

"बड़े चालाक हो! दोनों की उम्र मिलाकर बताना क्या ठीक है?" अल्योशा ने कुछ ढीठ बनते हुए कहा।

"अच्छा नहीं लगता? हम बड़े हैं, इसलिए डरता है। चल, उतर मैदान में, मेरे मिट्टी के शेर! मैं बायें हाथ से ही लड़ूंगा। ठीक है?" पाशा ने चुनौती दी।

"नहीं, मैं नहीं चाहता। ओल्गा आदमोव्ना ने मुझे लड़ने से मना किया है," अल्योशा ने मुरझायी हुई आवाज़ में जवाब दिया।

"यह कौन है?"

"मेरी बोन्ना।"

"यह क्या होता है?"

"बोन्ना यानी गवर्नेस," वीत्या ने समझाया।

"खूब कहा मानो उसका!" पाशा बोला। "बस तब यह भी मना, वह भी मना, सब कुछ मना हो जायेगा!"

"अच्छा, चल, पन्ने उठाने में मदद कर," वीत्या ने हुक्म दिया।

अल्योशा तुरंत घुटनों के बल बैठकर भय से मुक्ति पाने के उल्लास में रेंग-रेंगकर पन्ने इकट्ठा करने लगा। ज्यों ही दो-तीन पन्ने मिल जाते, वह उछलकर खड़ा हो जाता और लड़कों को पकड़ा देता और फिर

घुटनों के बल रेंगते हुए दूसरे पन्ने इकट्ठा करने लगता। इस तरह वह उस कमरे तक जा पहुंचा, जहां से वे लड़के निकले थे। उसकी नज़र बेतरतीब, मगर खड़ी करके रखी हुई किताबों से भरी लंबी और ऊंची आलमारियों पर पड़ी। किताबों पर धूल कोई खास नहीं जमी हुई थी।

"पुस्तकालय!" पंजों के बल बैठते हुए वह चिल्लाया।

"तुझे कैसे मालूम?" पाशा ने ईर्ष्या से पूछा।

"मेरे पिताजी का भी अपना पुस्तकालय है।"

"लेकिन आर्सेनी रोमानोविच से बढ़िया पुस्तकालय और किसी के यहां नही हो सकता," वीत्या बोला।

"जल्दी ही हम इसे नगर पुस्तकालय बना देंगे और तब सभी लड़के-लड़कियां ये किताबें पढ़ सकेंगे," पाशा ने बताया।

"जैसे कि आर्सेनी रोमानोविच तुम्हें इसकी इजाज़त देने जा रहे हैं!" वीत्या ने पाशा को चिढ़ाते हुए कहा।

"अरे, हम चाहें तो उनसे छीन भी सकते हैं," पाशा ने डींग हांकी। "नये कानून के अनुसार कुछ भी छीना जा सकता है।"

"बेवकूफ़ कही का," वीत्या बोला।

"बेवकूफ़ तू है! सब कुछ बस अपने लिए ही चाहता है! स्वार्थी कही का!"

दोनों की त्योरियां फिर चढ़ गयीं, मगर पन्नों को फिर भी इकट्ठा करते रहे। एक मिनट बाद जब सभी पन्ने समेट लिये गये, तो पाशा वीत्या से बोला,

"तेरे नाना ने तुझे घर आने को कहा है।"

"घर? उन्होंने तो खुद ही मुझे रंग बेचने बाज़ार भेजा था।"

"कैसा रंग?"

"अंडे रंगने का। कहा था कि मैं उसे या तो बेच दूं, या बदले में अंडे ले लाऊं।"

वीत्या ने जेब से कुछ पुड़ियाएं निकालीं और तीनों मिलकर उनपर बनी खरगोशों और मुर्गों की चमकीली तस्वीरें और उन खरगोशों और मुर्गों से भी बड़े लाल, नीले और गुलाबी अंडों की तस्वीरें देखने लगे।

"तेरे रंग अब किसे चाहिए?" पाशा ने नाक-भौंह सिकोड़ते हुए कहा। "ईस्टर तो गुजर चुका है!"

"गांववाले कुछ भी ले लेते हैं," वीत्या ने जवाब दिया। "एक बार मैं रबड़ बैंड ले गया था। जानते हो न, वही गोल-गोल और जिनसे डायरियां लपेटते हैं। किसानों ने हाथों-हाथ उन्हें खरीद लिया।"

"तेरे घर में ईस्टर मनाया गया था?" पाशा ने पूछा।

"हां, और तेरे यहां?"

"कैसे मनाते? तुझे मालूम नहीं कि मेरी मां सख्त बीमार है?" पाशा ने मुंह फेरते हुए जवाब दिया।

वीत्या ने समेटी हुई किताब उठाकर अल्योशा की नाक के सामने हिलाते हुए चेतावनी के से अंदाज़ में कहा,

"खबरदार, आर्सेनी रोमानोविच को इसका पता न चलेने पाये! समझे?"

अल्योशा ने सिर हिलाकर हामी भरी और फिर गंभीरतापूर्वक हाथ पीठ के पीछे बांध लिये।

तीनों लड़के दरवाज़े की ओर बढ़ ही रहे थे कि वह खुल गया। अपना निराला मखमली कोट और उतनी ही निराली टोपी पहने ओल्गा आदमोव्ना दरवाज़े पर खड़ी थी। उसका एक हाथ सीने पर था और ठोड़ी अजीब तरह से हिल रही थी।

"अल्योशा, तुम यहां... इन बच्चों के बीच कैसे पहुंचे? कौन हो तुम. बच्चो? क्या यहीं रहते हो?"

"हम आर्सेनी रोमानोविच के यहां आया करते हैं," वीत्या ने ओल्गा आदमोव्ना को यों ताकते हुए कहा, जैसे कि वह नौकरी मांगने आयी हो।

"इन्हीं की बात कर रहा था तू?" पाशा ने बेरुखी से अल्योशा से पूछा।

"हमारी जान-पहचान हो चुकी है," अल्योशा ने ओल्गा आदमोव्ना की परेशानी दूर करने के अंदाज में कहा।

"जब तक बड़े जान-पहचान न करवा देते, तुम्हें ठहरना चाहिए था," ओल्गा आदमोव्ना बोली। "और यह तुम्हारे घुटने पर क्या लगा है? चलो, मैं साफ़ कर दूं और हाथ-मुंह धुला दूं। फिर घूमने चलना है। अलविदा, बच्चो।"

और अल्योशा का हाथ पकड़कर वह चल दी।

पाशा ने उनके पीछे सिर झटका और वीत्या को आंख से इशारा किया,

"चलो, हम बाज़ार चलें।"

गलियारे में ओल्गा आदमोव्ना को अनास्तासिया गेर्मानोव्ना मिली। उसकी कोहनी छूते हुए उसने फुसफुसाकर कहा,

"ओह, इस घर में ऐसे-ऐसे शैतान लड़के आते हैं कि क्या बताऊं! हम अच्छे घर में नहीं आये हैं!"

"आप नाहक परेशान हो रही हैं, ओल्गा आदमोव्ना," अनास्तासिया गेर्मानोव्ना ने हल्के से जवाब दिया। "यह घर खराब तो नहीं, मगर अनोखा और दिलचस्प ज़रूर है। कहीं एक भी चीज़ साबुत नहीं। सब कुछ टूटा-फूटा हुआ है। अनोखी टूटी-फूटी चीज़ों का घर!"

यह कहकर वह हौले से, बिना कोई आवाज़ किये हंस दी और फिर एकाएक उसने अल्योशा का सिर अपने सीने में छिपा लिया।

५

मेरकूरी अव्देयेविच मेश्कोव सुबह बहुत जल्दी ही उठ गया था। उसे यों ही बिस्तर में पड़े रहने की आदत तो खैर कभी नहीं थी, मगर पिछले साल-एक भर से अनिद्रारोग अवश्य हो गया था और इसलिए वह और भी जल्दी उठने लगा था। उसके लिए यह पूर्ण एकांत का, मठ के जीवन जैसा समय होता था। बगल के कमरे से उसकी लड़की की शांत और नपी-तुली सांस सुनायी दे रही थी। कभी-कभी नाती वीक्तोर का घुटना या कोहनी नींद में दीवार से टकरा जाती थी। लड़ाकू कहीं का! सपने में भी बिल्कुल मुर्गे की तरह लड़ता-झगड़ता रहता है! कहीं अपने बाप वीक्तोर सेम्योनोविच पर तो नहीं गया है? न जाने क्यों आज भी इस आदमी का दिमाग ठंडा नहीं हुआ है। कहने को तो पर कट गये हैं और हेकड़ी दिखाने के लिए कुछ बाकी नहीं बचा है। लेकिन नहीं, वह भला हार क्यों मानने लगा! आज भी जब-तब कोई फ़ितूर सवार हो जाता है और कह बैठता है, "थोड़ा सा इंतजार करें, बाबूजी, बस थोड़ा सा और।" "अरे, अब और इंतज़ार करने को है ही क्या?" मेरकूरी अव्देयेविच का

जवाब होता है। "नरक जैसे इन डेढ़ सालों से तो इंतज़ार करते आ रहे हैं! बस सिर्फ़ मौत ही नज़दीक आती दीख रही है! बेचारी वालेरिया इवानोव्ना तो और इंतज़ार न कर सकी और भगवान की प्यारी हो गयी।" "भाग्य साथ देता है या नहीं, इससे कोई अंतर नहीं पड़ता," वीक्तोर सेम्योनोविच आपत्ति करता है। "मौत तो दिन-ब-दिन नज़दीक आती ही जायेगी। यह कुदरत के हाथ में है। मगर दूसरी चीज़ें इंसान के हाथ में होती हैं। असली इंसान के पास दिमाग होता है, जिसे इस्तेमाल करके वह अपने जीवन को जैसा चाहे, बना सकता है!" "हां, कुछ तो तुम्हारे दिमाग ने बनाकर दिखा ही दिया है!" मेरकूरी अव्देयेविच जीत की सी खुशी से जवाब देता है। "यह मेरा नहीं 'उनका' दिमाग था," वीक्तोर सेम्योनोविच फिर एतराज़ करता है, "और उनका दिमाग बड़ा मामूली है। वे सोचते हैं कि ताकत से कुछ भी कर सकते हैं। पर बीसवीं सदी में शिक्षा के बिना ताकत नुकसान के अलावा और कुछ नहीं कर सकती। मेरी ही मिसाल ले लें, बाबूजी। मैं और भला उनका कर्मचारी! सोचकर ही हंसी आती है। फिर भी उनकी कार्यकारिणी ने मुझे बुलाया। क्यों? इसलिए कि सारे शहर में मुझ जैसा मोटर-मैकेनिक नहीं है। कार चलाने को तो कोई बेवकूफ़ भी चला सकता है, पर उसे ठीक-ठाक रखना – इसके लिए शिक्षित होना ज़रूरी है! वे हमारे बिना कार तोड़ तो सकते हैं, पर मरम्मत के लिए दौड़े-दौड़े हमारे पास ही आयेंगे! आप देखते रहें, शिक्षा की कमी उन्हें ले डूबेगी!" "मैंने तो तय कर लिया है कि अब इंतज़ार से कोई फ़ायदा नहीं," मेरकूरी अव्देयेविच जवाब देता है। "और हां, ये तुमने 'बाबूजी-बाबूजी' क्या लगा रखी है? तुम्हारे बच्चे को पालते मुझे तीन साल पूरे होने को आ रहे हैं और इस बीच लीज़ा ने एक बार भी तुम्हारा नाम नहीं लेने दिया है। हमारे यहां तो ये हालत है और तुम 'बाबूजी-बाबूजी' लगाये बैठे हो!" "आप मेरे बच्चे के नाना और मेरी बीवी के पिता हैं। तो बाबूजी कहने पर आपको बुरा क्यों लगता है?" वीक्तोर सेम्योनोविच अड़ा रहता है। "जल्दी ही सब ठीक हो जायेगा और लीज़ा और बच्चा, जैसे कि कानून है, मेरे पास लौट आयेंगे। इसलिए मेरे लिए आप बाबूजी थे और आगे भी रहेंगे। अंत-समय तक भी इससे आप बच

नहीं सकते।" "नहीं," मेरकूरी अव्देयेविच आपत्ति करता है, "लीज़ा अब तुम्हारे घर नहीं लौटेगी। तुम नाहक ही अपने को भुलावे में डाले हुए हो। लीज़ा आज़ादी चख चुकी है।" "आप आज़ादी की बात करते हैं। अरे, खाने को भरपेट हो, तो आज़ादी की परवाह कौन करता है?" वीक्तोर सेम्योनोविच शांत स्वर में उत्तर देता है। "और भरपेट खाने का इंतज़ाम मैं लीज़ा के बजाय कहीं पहले ही कर लूंगा। आज़ादी! आज़ादी के पीछे मैं भी लपककर दौड़ता, पर पेट इजाज़त नहीं देता। इसीलिए मैं इन ईश्वर के दिये हुए अधिकारियों की मर्सीडीज़ में चक्कर काटता रहता हूं।" "ईश्वर के दिये हुए!" मेरकूरी अव्देये-विच उलाहना देता है। "बेशर्म कहीं का!" "नहीं तो और क्या कहूं?" वीक्तोर सेम्योनोविच हैरानी से कहता है। "उन्हें शर्म-लाज नही, तो मुझे ही क्यों हो? उनसे उनकी भाषा में बोलना नहीं तो मैं कैसे सीख पाऊंगा?" "मगर तुम उनकी मदद क्यों करो?" मेरकूरी अव्देयेविच अब सचमुच गुस्से से बौखला उठता है और भटके हुए को सही राह पर लानेवाले उपदेशक जैसे अंदाज़ में संत दानियल की भविष्य-वाणी दोहराता है, जिसे वह भूला नहीं था ... "दुष्ट दुष्टाई ही दिखायेंगे और इसे कोई भी दुष्ट नहीं समझ पायेगा, जबकि समझदार समझ जायेगा ..."

नाती वीक्तोर का घुटना या कोहनी फिर दीवार से टकरायी और मेश्कोव ने सोचा: नहीं, अपनी मां पर तो बिल्कुल नहीं गया है, बिल्कुल ही नहीं! लीज़ा की आत्मा स्वर्गवासिनी अविस्मरणीया वालेरिया इवानोव्ना जैसी जीवन से विस्मयविभोर आत्मा है। बस सिर्फ़ ज़िद्दी ज़रूर बन गयी है। कहां से आयी यह बात उसमें? मुझसे तो नहीं?..

वह सोचता था कि वह अपने ज़िद्दीपन के पाप से बहुत पहले मुक्ति पा चुका है, कम से कम तब से तो ज़रूर ही, जब से उसने हर सांसा-रिक चीज़ को पूर्वनिर्धारित, ईश्वरीय दंड के औचित्य का प्रमाण और भविष्यवाणी का फलन मानकर संसार छोड़ने का निश्चय किया है। उसने फ़ैसला किया था कि जो कुछ घट रहा है, उसके सामने स्वेच्छा से ही घुटने टेक देगा। वह भली भांति देख रहा था कि घुटने टेके बिना काम न चलेगा: अगर ख़ुद न दोगे, तो छीन लेंगे, अगर छिपा-ओगे, तो खोज लेंगे और अगर नहीं झुकोगे, तो टोपी उतार देंगे

और हो सकता है कि सिर भी कलम कर दें। लेकिन अगर तुम्हें मालूम है कि तुम अपनी मर्ज़ी से और अपनी आत्मा के उद्धार के लिए घुटने टेक रहे हो, तो मन में एक तरह का संतोष भाव जग जायेगा और तब चाहे एक घड़ी के लिए ही, जैसे कि प्रभात की इस वेला में, परम आनंद की प्राप्ति का सुख अनुभव करोगे। दुष्ट लोग तो इस वेला में आयेंगे नहीं, क्योंकि उजाला हो चुका है, और भले लोगों के आने के लिए अभी बहुत जल्दी है।

घर के बाहर सामने के अहाते में बेदमजनूं की पतली टहनियां निःशब्द झूम रही थीं और हवा के हल्के झोंके उनकी दूधिया, नाज़ुक पत्तियों को हौले-हौले से स्पर्श कर रहे थे। यह पेड़ मेरकूरी अव्देयेविच ने खुद ही लगाया था। वह और वालेरिया इवानोव्ना, दोनों इसे सींचा करते थे। और अब देखो तो कितना बड़ा हो गया है! इसका मतलब था कि लंबा ज़माना गुज़र चुका है, इतना लंबा कि हिसाब लगाने बैठो, तो भी न लगे। वैसे सच कहा जाये, तो मेरकूरी अव्देयेविच के लिए सारा ही ज़माना गुज़र गया था और अब बस केवल केंचुल बाकी बची थी। उसकी जिस भी चीज़ पर नज़र पड़ती, वही उसे वालेरिया इवानोव्ना की याद दिलाती। जब तक वह ज़िंदा थी, लगता था कि मेरकूरी अव्देयेविच के व्यस्ततापूर्ण दैनंदिन जीवन में उसकी कोई खास जगह नहीं थी, पर अब तो वह मानो सब कुछ अपने साथ ले गयी है। नहीं, वह मरी नहीं है। मेरकूरी अव्देयेविच उसकी मृत्यु को स्वर्गा-रोहण, इहलीला-समाप्ति के नाम से पुकारता था और कहा करता था कि उसकी आत्मा प्रातः समीर जैसी सुकुमार श्वास के साथ उड़कर चली गयी है। मृत्यु के वक्त उसने अपने पति को भी परेशान नहीं किया था और जैसे तब तक चुपचाप, बिना किसी पर बोझ बने रहती आयी थी, वैसे ही मर भी गयी। बस रात में सोने के लिए आंखें जो मुंदीं, तो फिर कभी न खोलीं। सुबह जब मेरकूरी अव्देयेविच उसके पलंग के पास गया और उसपर झुका, तो वैसे ही चेहरा नीचे किये उसके ठंडे और तब तक अकड़ चुके चेहरे पर गिर पड़ा। यह सालभर पहले की बात है। तब से मेरकूरी अव्देयेविच ने अपने दांपत्य जीवन की किसी ऐसी घटना को याद करने की कोशिश में स्मृति को न जाने कितनी बार कुरेदा है, जिसमें कि वह वालेरिया इवानोव्ना के सामने

कसूरवार ठहरता। पर सबसे आखिरी महीनों की घटनाओं के अलावा उसे ऐसा और कुछ याद न आ पाता। वालेरिया इवानोव्ना के जीवन के इन आखिरी महीनों में उसने घर से सौंदर्य, शोभा, आराम और सुविधा का हर निशान मिटा डालने की अपनी पागलपनभरी खब्त से वालेरिया इवानोव्ना को बड़ी तकलीफ़ पहुंचायी थी। होता क्या था? माना कि दीवार पर कोई चित्र टंगा है। मेरकूरी अव्देयेविच अपनी आदत के मुताबिक पंजों के बल उचकता कमरे में इधर से उधर, उधर से इधर चक्कर लगाता रहता, चित्र को आंखों की कोरों से ताकता जाता। फिर एकाएक उसके सामने रुककर उसे दीवार से उतार देता और चौखटे से निकालकर दोबारा दीवार पर यों टांग देता कि वह भद्दे से भद्दा लगे और चौखटे को दुछत्ती में फेंक देता। "ऐसा क्यों किया?" वालेरिया इवानोव्ना पूछती। "इतने सालों से चित्र हमें अच्छा लग रहा था, पर अब एकाएक वह बुरा क्यों हो गया?" "तुम परेशान न होओ," मेरकूरी अव्देयेविच जवाब देता। "हमें जितना भद्दा लगेगा, 'उन्हें' उतना ही पसंद आयेगा।" "मगर वे तो नहीं देख सकते!" वालेरिया इवानोव्ना विस्मय से कहती। "कोई बात नहीं, आयेंगे तो देख लेंगे!" वह जवाब देता। या फिर कभी वह पलंग के निकेल के गोल हत्थे खोल डालता और पुरानी कीलों के डिब्बे में फेंक देता। कभी बरतनों की आलमारी को घुमाकर दीवार के साथ उल्टा यों खड़ा कर देता कि उसे इस्तेमाल करना भी मुश्किल हो जाता। ऊपर से हुक्म देता कि उसमें मकड-जाले लगें, तो लगने दें और धूल व मरी हुई मक्खियां भी ज्यों की त्यों रहने दें। हमेशा उसका जवाब यही होता: "'उन्हें' भद्दापन पसंद है – देखने दो उन्हें भद्दापन जी भरकर!" वह फूलों को सुखा डालता, गमले उठाकर फेंक देता, मेज़ पर मेज़पोश के बजाय मोमजामा बिछाने को कहता और इंतज़ार करता रहता कि कभी कोई न कोई तो उनके यहां आयेगा ही और देखेगा कि मेरकोव कैसी गरीबी में रह रहा है और फिर दूसरों को बतायेगा कि उसके घर की हालत उसके, यानी आगंतुक के अपने घर जैसी ही दयनीय है, दूसरे शब्दों में ठीक वैसी, जैसी कि इन दिनों होनी चाहिए। लेकिन मेरकोव के घर कभी कोई नहीं आया। उसकी खब्त वालेरिया इवानोव्ना को रुला डालती थी। किंतु अब ठंडे दिमाग से सोचने पर भी उसे यही

लगता था कि वह सही था और इसलिए अपनी स्वर्गीया पत्नी के सामने कतई कसूरवार नहीं है। वालेरिया इवानोव्ना की मृत्यु के बाद सचमुच एक दिन वे उसके घर और अहाते का मुआयना करने आये थे और इसके कुछ ही बाद उसकी सारी संपत्ति म्यूनिसिपेलिटी के हवाले कर दी गयी थी। मेरकूरी अव्देयेविच, लीज़ा और नाती वीक्तोर के रहने के लिए केवल दो कमरे छोड़ दिये गये थे। अब वे अपने भूतपूर्व घर में किरायेदार के तौर पर भी नहीं, बल्कि मात्र वाशिंदों के तौर पर रह रहे थे। उनका दर्जा वही था, जो कि घर के दूसरे कमरों में बसाये गये एक बूढ़े मज़दूर और तीन मेडिकल कालेज के विद्यार्थियों का था। मेरकूरी अव्देयेविच अब पराये घर में, ऐसे घर में रह रहा था, जो "उनका" था और इस "उन" में वह बूढ़े और विद्यार्थियों को भी शामिल करता था, क्योंकि घर चाहे वास्तव में उनका न भी हो, तो भी वे अपनी हैसियत किसी मकान मालिक से कम नहीं समझते थे और बड़े आराम, चैन और विश्वास के साथ उसमें रह रहे थे। काश, स्वर्गीया वालेरिया इवानोव्ना यह सब देख पाती और तब उसे मालूम हो जाता कि मेरकूरी अव्देयेविच सही था या गलत! यहां तक कि जिस पलंग पर उसकी मृत्यु हुई थी, वह भी अब किसी और की संपत्ति बन गया है – उसपर अब वह बूढ़ा मज़दूर सोता था। यह तो अच्छा हुआ कि मेरकूरी अव्देयेविच ने उसके निकेल के हत्थे निकाल लिये थे, नहीं तो मज़दूर अपने को बादशाह ही समझ बैठता!

भोर की उस रुपहली-दूधिया वेला में सारा घर, जो कभी मेश्कोव का था, सो रहा था। वाशिंदे बेटे समेत वाशिंदा लीज़ा, वाशिंदा बूढ़ा मज़दूर, वाशिंदा विद्यार्थी – सभी सो रहे थे। केवल वाशिंदा मेरकूरी अव्देयेविच ही जगा हुआ था। दिमाग में सभी घटनाओं को उलट-पुलट लेने और दिल और दिमाग को शांत रहने के लिए कहने के बाद मेरकूरी अव्देयेविच ने आलमारी से एक पुस्तक और नोटबुक उठायी, मेज़ पर बैठकर दवात में कलम डुबोयी और गहरी सांस लेते हुए बुदबुदाया,

"देखना, मैं अभी आता हूं!"

उसका सारा पुस्तक-संग्रह नष्ट हो गया था। एथोस की धार्मिक पुस्तकों, जिनमें साधु थियोफ़ेनीज़वाली पुस्तक भी थी, में से कुछ बिक

गयी थीं और कुछ बंट गयी थीं। बिल्कुल हाल ही में उसने अपनी सबसे कीमती और प्रिय पुस्तक 'संतों की जीवनियां' भी अपने एक विशेष मित्र को दे डाली थी, जो मठ के पीछेवाले आश्रम में अपने अंतिम दिन काट रहा था। फिर भी कुछ पुस्तकें अभी मेरकूरी अव्देयेविच के पास बाकी बच गयी थीं। इन्हें उसने जानबूझकर फाड़कर, गंदा करके और कवर उतारकर, ताकि वे देखने में बेकार लगें, छिपाया हुआ था।

इस समय वह जिस पुस्तक का मनोयोगपूर्वक पारायण कर रहा था, वह उसके लिए नयी और काफ़ी कुछ रोचक थी, क्योंकि उसका लेखक वान बीनिंगेन नाम का कोई अज्ञात और इसलिए बहुत ही रहस्यमय सा गैर-रूसी – शायद डच या फ्लैमिश – रिटायर्ड कर्नल था। लेखक हालांकि विदेशी था, मेरकूरी अव्देयेविच उसकी प्रामाणिकता मानने को तैयार था – न केवल इसलिए कि सेंसर ने उसकी पुस्तक को १९०५ जैसे भारी उथल-पुथल के वर्ष में भी पास कर दिया था (सेंसर को मालूम था कि वह क्या कर रहा है), बल्कि इसलिए भी कि पुस्तक ग्रीक आर्थोडॉक्स चर्च की भावना से पूरी तरह मेल खाती थी और ग्रीक आर्थोडॉक्स चर्च की शिक्षाओं से मेरकोव की आत्मा को बड़ी शांति और मस्तिष्क को सोचने की सामग्री मिला करती थी। नोटबुक में वह ८१५२ ईसापूर्व में मनुष्य – आदम और हव्वा – की रचना से शुरू करके सभी महत्त्वपूर्ण तिथियां दर्ज करता और रिटायर्ड कर्नल की दी हुई तिथियों को बाइबिल से मिलाता जा रहा था। तिग्लाथपिलेसर या एसरहद्दोन, जो कि असीरिया और बेबीलोनिया के राजा थे, जैसे ऐतिहासिक नामों ने उसे बहुत प्रभावित किया था। उसकी कुछ टीपें बड़ी संक्षिप्त थीं, जैसे: "७५३ – रोम की स्थापना"। लेकिन कुछ टीपें आश्चर्यजनक रूप से लंबी थीं, जैसे: "७१३ – तीन साल में सेना-हेरिब ने जूडिया के सभी किलेबंद नगरों पर कब्ज़ा कर लिया। हज़ेकिय्याह ने तीन सौ रजत टेलेंट तथा तीस स्वर्ण टेलेंट देकर सुलह कर लेनी चाही" (मेरकूरी अव्देयेविच पहले तो टेलेंट के स्थान पर गलती से रूबल लिख बैठा था, मगर ऐन मौके पर वह अपनी गलती भांप गया और यह सोचकर मन ही मन मुस्करगया कि तीन सौ रजत रूबल तो इन दिनों कुछ भी मानी नहीं रखते, क्योंकि इतने से तो तीन घड़ी

रई का आटा भी बड़ी मुश्किल से खरीदा जा सकता है। इसलिए उसने रूबल को काट डाला और आगे नकल करने लगा)। "लेकिन सेनाहेरिव का मंसूबा चूंकि आगे मिस्र पर भी हमला करने का था और पिछवाड़े में अपराजित शत्रु को छोड़ना खतरनाक था, इसलिए उसने यरूशलम को घेर लिया। हजेकिय्याह और पैगंबर यशायाह ने प्रभु मे रक्षा की भीख मांगी और एक रात असीरियाई फ़ौज के १,८५,००० योद्धा जान से हाथ धो बैठे। सेनाहेरिव वापस निनेवह लौटने को मजबूर हुआ, जहां उसके दो बड़े बेटों ने उसकी हत्या कर दी। इसके बाद छोटा बेटा एसरहद्दोन गद्दी पर बैठा।" मेरकूरी अव्देयेविच ज्यों-ज्यों आधुनिक काल के निकट आता गया, त्यों-त्यों उसकी टीपें विस्तृत होती गयीं। असीरियों और बेबीलोनियों का स्थान पारसियों, गोथों और जिन मार्कोमानी और आलेमानी का नाम उसने कभी सुना भी न था, उन्होंने ले लिया। उनके बाद हूण आये, जिनका वतन पूर्व की स्तेपियों में था। हूणों के बाद लैंगोबार्ड कबीले आये, जिनके नाम कानों में फ़ौजी ढोलों और नगाड़ों की आवाज़ जैसे गूंजते थे और जिनके राजा एल्बोईन और क्लेफ़ ने सातवें धर्मसंघ की स्थापना की थी, जो कि पवित्र भविष्यवाणी से और रिटायर्ड कर्नल की गणनाओं से पूरी तरह मेल खाता था। इतिहास में कहीं कोई ठहराव नहीं था और घटनाचक्र और-और डरावना बनता जा रहा था। "एल्बोईन और क्लेफ़ रोज़ामुंड के हाथों मारे गये, जो एल्बोईन की पत्नी और जेपिडाई के हारे और मार डाले गये राजा की पुत्री थी। (जेपिडाई – देखो, तो नाम भी कैसे-कैसे थे!) रोज़ामुंड ने इस तरह एल्बोईन से बदला लिया, क्योंकि उसने एक दावत में रोज़ामुंड को अपने मृत पिता की खोपड़ी से शराब पीने को मजबूर किया था। नपुंसकता का यह काल ५८५ तक चला।" नपुंसकता, नपुंसकता – सावधानी से तिथियों की टीपें बनाता हुआ मेरकूरी अव्देयेविच बहुत समय तक इस शब्द के बारे में सोचता रहा। पर तब तक पोप ग्रेगरी प्रथम तीन नये राज्य कायम कर चुका था: बवारियन, अवार और स्लावोनिक या चेक। इस तरह रोम की सीमाओं के भीतर एक बार फिर दस राज्य (पूरे दस राज्य!) हो गये। टीपें इसी तरह आगे भी चलती गयीं: मुहम्मद ने कुरैशों को जीतकर उन्हें नया धर्म मानने को मजबूर किया, जिसे

उमने खुद ही ईजाद किया था, हालांकि कहता था कि वह उसे आर्कएंजेल गैब्रियल मे प्राप्त हुआ है। इसके वाद खलीफ़ा उमर ने यरूशलम पर कब्ज़ा कर लिया। इसके वाद पोप वितालियस ने आदेशपत्र जारी करके पादरियों के अलावा और सबके लिए वाइबिल पढ़ना वर्जित ठहराया। फिर अपने नये इल्हाम के साथ हुस्स और लूथर आये, फिर इग्नातियस लयोला और जेसुएट आये और फिर पोप ग्रेगरी तेरहवां आया, जिसने नया पंचांग चलाया। (अच्छा तो नया पंचांग ऐसे शुरू हुआ था!) इसी तरह आगे भी जारी था: तीसवर्षीय युद्ध, स्लावेनी युद्ध, हुस्सी युद्ध... इतिहास में क्या-क्या न था? मगर इस पुस्तक को पढ़ते हुए मेरकूरी अव्देयेविच को सबसे अधिक चकित यह वात कर रही थी कि रिटायर्ड कर्नल के लिए एल्वोईन के वध से लेकर क्रुद्ध भीड़ द्वारा सम्राट फ़ोकास की वोटियां नोंचे जाने तक – साम्राज्यों का पतन और पोपों का अभिषेक तो रहा दूर – सव घटनाओं की भविष्यवाणी राजाओं की पुस्तक या इजरा अथवा ईसाइआ की पुस्तक में, अगर घटनाएं प्राचीन काल की हों, या फिर चरितों अथवा प्रकाश-नाओं में, अगर घटनाएं वाद के काल की हों, खोजना वायें हाथ का खेल था। धीरे-धीरे करके मेरकूरी अव्देयेविच १७७३ के साल तक पहुंच गया था और उसके लिए उसने सारा का सारा शीर्षक – केवल "अनीश्वरवाद" शब्द को छोड़कर – वड़े अक्षरों में लिखा था। शीर्षक वहुत ही भयंकर था: "वाल्टेयरी साहित्य का प्रभाव। धर्म का अपकर्ष और नग्न अनीश्वरवाद का आरंभ।" यहां तक कि तुर्कों पर सुवोरोव की विजय और पोप क्लीमेंट चौदहवें द्वारा बड़े राष्ट्रों के कहने पर जेसुएट संघ का मूलोच्छेदन भी इस तथ्य की भयानकता को कम नहीं कर सके थे। न वे कर ही सकते थे, क्योंकि इसके ठीक वाद १७९३ की तिथि आती थी और उसका शीर्षक भी वड़े अक्षरों में लिखा गया था: "पहली फ़ांसीसी क्रांति। अनीश्वरवाद के लिए ईश्वर द्वारा दिया गया पहला दंड।" अनीश्वरवाद के पाप के लिए दूसरा दंड नेपोलियन द्वारा छेड़े गये युद्ध थे और तीसरा दंड १८४८ की भयावह घटनाओं के रूप में सामने आया था, जव पोप पायस नौवें को रोम से भागना पड़ा था और आस्ट्रियाई सैनिकों की मदद से ही वह अपनी गद्दी को वापस पा सका था। इस तरह धीरे-धीरे रिटायर्ड कर्नल वान वीनिंगेन मेरकूरी

अव्देयेविच को पैगंबरों के चरण-चिह्नों पर चलाते हुए १८७५ के साल तक ले आया, जब गोथा नगर में सोशल-डेमोक्रेटों की कांग्रेस हुई थी। इस बिंदु पर पहुंचकर मेरकूरी अव्देयेविच ने मोटे-मोटे, मातमी अक्षरों में लिखा: "मार्क्स, लासाल और तोलस्तोय – उस विचारधारा के प्रतिनिधि।" ऐसा था मानवजाति द्वारा तय किये पथ का शोचनीय अंत, जो रिटायर्ड कर्नल के सामने भविष्यवाणियों का सहारा लेकर भविष्य पर पड़ा परदा उठाने के सिवाय और कोई विकल्प नहीं छोड़ता था। किंतु यहां उसके पास कहने को खास कुछ न था। उसके अनुसार १९२२ में पोप की संस्था और उसके समर्थकों का विनाश हो जाना था और १९२५ में सियोनवादियों द्वारा एक ईसाई प्रार्थनागृह का निर्माण किया जाना था। इसके बाद क्या होना था, इसके बारे में उसने मेग्कोव को अपनी नोटबुक में चुपचाप नकल करने के लिए १९३३ से संबंधित यही वाक्य छोड़ा था कि "धन्य है वह, जो सब्र करता है और एक हज़ार तीन सौ पैंतीस दिन पूरे करता है"।

ये दिन क्या थे और ठीक १३३५ ही क्यों थे, यह स्पष्ट नहीं था। किंतु हर कोई हर बात जान भी तो नहीं सकता है। मानव आशाओं और आकांक्षाओं के इतने लंबे इतिहास में सभी चीज़ों का विकास सामान्यतः कैसे हुआ था? आदम और हव्वा से एसरहद्दोन तक और एसरहद्दोन से लेकर रोज़ामुंड तक – और इससे पहले कि कुछ समझ पाओ, लेव तोलस्तोय का ज़माना आ जाता है या फिर म्यूनिसिपैलिटी तुम्हारा घर छीन लेती है और अनछना आटा ३०० रूबल का तीन धड़ी बिकने लगता है। सोचने बैठो, तो दिमाग चकरा जाये! शायद रिटायर्ड कर्नल वान बीनिंगेन सरीखा दिमागदार आदमी भी घटनाओं और परिस्थितियों के ऐसे पेचीदे प्रवाह को मुश्किल से ही समझ पाये! मगर समझे भी क्यों? आकर्षण अगाध गहराइयों से फूटते अजस्र सोते जैसे लुभावने रहस्य में ही तो होता है! तसल्ली ज्ञान से नहीं, विश्वास से मिलती है। ज्ञान ने विश्वास की पुष्टि ही की है और जब ज्ञान की कमी होती है, विश्वास सभी रहस्यों की भांति और भी आनंददायी बन जाता है। "धन्य है वह, जो सब्र करता है..."

मेरकूरी अव्देयेविच ने पुस्तक और नोटबुक बंद कर दीं। घर में अब हर कोई जग गया था। वह तंबाकू के ज़हर से सरोबार मज़दूर

के सामने और विद्यार्थियों की हलचल व एक दूसरे पर जूते फेंकने की आवाज़ें सुन सकता था। लीज़ा के कमरे से स्टोव जलने की गंध आ रही थी। वीत्या नानबाई की दूकान से पावरोटी लाने के लिए सीढ़ियों पर बेतहाशा भाग रहा था। नीचे सड़क पर जाती टंकी-गाड़ी की बाल्टी टंकी से टकराती बज रही थी। नये दिन ने मेरकूरी अव्देयेविच को अपना ध्यान काल की गहराइयों और ईश्वर के तौर-तरीकों के चिंतन से हटाकर रोजमर्रे की समस्याओं की ओर मोड़ने को प्रेरित कर दिया।

मेज़ की दराज़ खोलकर वह सोचने लगा कि आज बेचने के लिए क्या भेजा जाये। उसकी नज़र दराज़ में पड़ी ड्राइंग पिनों, स्याही की टिकियाओं, सिलाई मशीन के पेचकशों, संडसियों, चिमटियों, दो-तीन धागे के गोलों, क्रिसमस वृक्ष सजाने के तारे और ईस्टर अंडों को रंगने में काम आनेवाले रंगों के कुछ पैकेटों पर पड़ी। एक-दो मिनट सोचने के बाद उसने रंगों के पैकेट उठा लिये। बेशक ईस्टर खत्म हो चुका था, मगर वीत्या काफ़ी तेज़-तर्रार था और कितनी भी पुरानी व बेकार चीज़ों को आसानी से बेच सकता था। अगर वह पुराने कैलेंडरों के पीछे के गत्तों के ग्राहक खोज सकता था, तो इन रंगों के ग्राहक क्यों नहीं खोज सकेगा!

मेरकूरी अव्देयेविच जब नाश्ता करने पहुंचा, तो कुशल-क्षेम पूछने के बाद कुछ देर अपनी बेटी को ध्यान से देखता रहा। वह बहुत पीली दीख रही थी। पहले जिसे वह उसका छरहरापन कहा करता था, वह अब उसे दुबलापन अधिक लगा। फिर उसने विनोद सा करते हुए रंगों के पैकेट वीत्या के सामने रख दिये।

"क्यों, नन्हे सौदागर, आज यह सौदा पटा सकते हो?"

"फिर?" लीजा ने अपने पिता को टोका। "मैंने आपसे कहा था न कि..."

"मां, तुम चिंता न करो! इन्हें तो मैं चुटकी बजाते ही रफ़ा-दफ़ा कर दूंगा। सच कह रहा हूं!" तभी वीत्या बोल पड़ा।

"बाज़ार कोई काम की बात सीखने की जगह नहीं है।"

"पर बाजार के बिना आजकल काम भी तो नहीं चलता," मेरकूरी अव्देयेविच ने खीझते हुए कहा। "यह नया बंदोबस्त मेरे

दिमाग की उपज नही है। न ही मैंने कीमतों को आसमान चढ़ाया है। जहां तक मुझे मालूम है, घर में बस दो मुट्ठी मोटा अनाज ही रह गया है। पर शायद तुम्हारे पास पैसा हो? अगर है, तो..."

"मैं कह रही हूं कि वीत्या को बाज़ार भेजना ठीक नहीं है।"

"तो क्या मैं जाऊं? बेशक तुम शायद इसे बेइज़्ज़ती नहीं समझती कि एक भूतपूर्व व्यापारी भीड़ के बीच खड़ा होकर खाली जेब का और भी खाली जेब से सौदा करे! मगर मुश्किल तो यह है कि मैं भूतपूर्व व्यापारी होने के साथ-साथ आजकल सोवियत सरकार का कर्मचारी भीं हूं। कुछ भी कहो, मैं अब एक दूकान का 'कामरेड मैनेजर' हूं! ऐसे में क्या तुम मुझे काला-बाजारी के जुर्म में पकड़वाना चाहती हो?"

"मैं वीत्या को बाज़ार से दूर रखना चाहती हूं। नहीं तो किसी भी दिन आफ़त सिर पर आ सकती है।"

"मैं कब से कह रहा हूं कि आफ़त तो ज़रूर ही आयेगी। पर सबके लिए नहीं," मेश्कोव ने कहा और फिर मानो अपने को याद दिलाते हुए कि उसे विनम्र होना चाहिये, जोड़ा, 'धन्य है वह, जो पढ़ता है और वे, जो उसकी भविष्यवाणी के शब्दों को सुनते हैं और उन बातों को याद रखते हैं, जो उसमें लिखी हुई हैं, क्योंकि वक्त आने ही वाला है।'"

कुछ देर की खामोशी के बाद लीज़ा सिर उठाये बिना ही धीरे से बोली,

"मैं वीत्या को आखिरी बार जाने दे रही हूं। आगे से ऐसा न होगा।"

"आगे की आगे देखेंगे," मेश्कोव ने जवाब दिया।

"हां, देखेंगे," लीजा ने खामोशी से दोहराया, मानो अपने पिता की बात से सहमत हो रही हो।

और ताने-उलाहने सुनने की शक्ति न होने से मेरकूरी अव्देयेविच चाय का गिलास उठाकर अपने कमरे में चला गया।

लीज़ा उसे जाता देख रही थी। उसकी पीठ इतनी झुक गयी थी कि लगता था कि किसी ने उसके कंधे की हड्डियों के बीच तकिया घुसेड़ दिया है। बाल बिल्कुल सफ़ेद हो गये थे। शरीर सिकुड़ा हुआ

और हड़ियल बन गया था और पंजों पर उचककर चलने के ढंग में भी कुछ तकलीफ़देह लगता था।

"हे भगवान, यह कितने जल्दी बूढ़े हो गये हैं," लीज़ा ने सोचा और जैसा कि पिछले साल प्रायः होता था, इस समय फिर उसके मन में अपने पिता के लिए दया उमड़ आयी। पर वह जहां बैठी थी, वहां से उठी नहीं।

६

उस रोज़ लीज़ा दिनभर बेचैन रही। रह-रहकर उसे लग रहा था कि कुछ होनेवाला है। यह पूर्वाभास बेवजह पैदा होनेवाले और बेवजह गायब होनेवाले पूर्वाभासों में से न था। यह कंधों पर एक प्रकार के भारी बोझ की लगातार अनुभूति थी, जिससे उसका सारा शरीर दर्द करने लगा था। वह काम पर नहीं गयी। शनैः शनैः उसे पक्का विश्वास हो गया कि उसके बेटे के साथ कुछ घटने जा रहा है। वह सुबह ही घर से निकल गया था और अभी तक नहीं लौटा था।

दिन के भोजन के लिए घर लौटते वक्त मेरकूरी अव्देयेविच को रास्ते में पावलिक पाराबुकिन मिला था, जिससे उसे मालूम हुआ था कि वीत्या अभी घर नहीं लौटा है। मेश्कोव ने पावलिक से कहा था कि अगर उसे वीत्या मिले, तो उसे खाना खाने घर भेज दे। बूढ़े ने अपराधी की तरह अपनी बेटी की ओर देखा। उसने बस इतना ही कहा कि वीत्या शायद आर्सेनी रोमानोविच के घर में किताब पढ़ने में मशगूल है और हमेशा की तरह आज भी उसे वक्त का ध्यान नहीं रहा है। लीज़ा जिस तरह से अपने को काबू में रखे हुए थी और अपनी बेचैनी को प्रकट नहीं कर रही थी, उससे मेरकूरी अव्देयेविच की अपराध-भावना और बढ़ गयी और वह पूरी तरह गुमसुम हो गया।

अपनी रोज़ाना की दिन की झपकी ले लेने के बाद मेश्कोव घर से निकलने ही वाला था कि पावलिक दौड़ता-दौड़ता घर में घुसा। अपनी भयभीत सुनहरी आंखों से पहले लीज़ा और फिर मेश्कोव को देखते हुए उसने बताया कि वीत्या गिरफ़्तार हो गया है।

"गिरफ़्तार? किसने किया है?"

"बाज़ार में छापा पड़ा था और जो भी वहां चीज़ें बेच रहे थे
सब पकड़ लिये गये हैं।"

"क्या मतलब, पकड़ लिये गये हैं? तुम क्या कह रहे हो?"
लीज़ा ने कुर्सी को इतनी कड़ाई से पकड़ते हुए पूछा कि नाखून सफ़ेद
पड़ गये।

"बाज़ार में जितने भी लोग थे, सबको एक अहाते में बंद करके
अब छंटाई कर रहे हैं। कुछ को थाने ले जायेंगे और कुछ को कहीं
और।"

"और वीत्या? वह कहां है?"

"वहीं, औरों के साथ।"

"थाने में?"

"नहीं। मैंने बताया न कि अभी थाने किसी को नहीं ले गये
हैं। सभी अभी अहाते में बंद हैं।"

"तुम भी उसके साथ थे?"

"हां, पर मैं भाग निकला और वह पकड़ा गया।"

लीज़ा बड़ी मुश्किल से अपनी अंगुलियां छुड़ाकर बिस्तर की ओर
दौड़ी, जहां से उसने अपना शाल उठाया, मगर फिर वापस फेंक दिया
और फिर कपड़ों की आलमारी खोलकर कपड़ों के बीच कुछ ढूंढ़ने
लगी। वह बुदबुदाती जा रही थी, "एक मिनट ठहर, पावलिक,
एक मिनट ठहर, मुझे उसके पास ले चलना..." किंतु तभी मेरकूरी
अव्देयेविच ने बांह पकड़कर उसे एक कुर्सी पर बिठा दिया।

"तुम कहीं नहीं जाओगी... मैं खुद वीत्या को लेकर आता हूं!"

वह उत्तेजना के मारे फिर खड़ी हुई, किंतु उसने उसे फिर बिठा
दिया।

"बैठ जाओ!" वह चिल्लाया। "उसके लिए मैं ज़िम्मेवार हूं!
मैं खुद जाऊंगा!"

और वह इतनी तेज़ी से डग भरता चल पड़ा कि पावलिक को
उसके साथ चलने के लिए दौड़ना पड़ रहा था। जाना काफ़ी दूर था,
मगर सड़क का हर पत्थर मेरकूरी अव्देयेविच का जाना-पहचाना था।
कुछ ही अरसे पहले तक वह ऊपरी बाज़ार में अपनी दूकान तक जाने
के लिए रोज़ाना इसी सड़क से गुज़रा करता था। उसकी चाल-ढाल

में एक प्रकार का दृढ़-निश्चय था, जैसे कि वह किसी से बदला लेने जा रहा हो। चलते हुए वह अपनी छोटी सी छड़ी से फुटपाथ को वैसे ही ठकठकाता जा रहा था, जैसे कि कभी खूबसूरत मूठवाली पुरानी बढ़िया छड़ी को झुलाते हुए जाया करता था, जिसे दुश्मनों की निगाहों से बचाने के लिए अब उसने कहीं छिपाकर रख दिया था।

"वहां," पावलिक ने बाज़ार की पत्थर की दीवारों के बीच लोगों की एक भीड़ की ओर इशारा करते हुए बताया। "वहां, जहां मिलिशिया के आदमी भी खड़े हैं।"

मेरकूरी अव्देयेविच ने अपनी चाल धीमी कर दी और छड़ी को झुलाना भी बंद कर दिया। ज़ंग लगे तालोंवाली एक इमारत के बाहर (पहले यहां साबुन और मिट्टी का तेल बिका करते थे) लोगों की भीड़ खड़ी थी, जो शायद किसी चीज़ का इंतजार कर रहे थे और उस इमारत के फाटक पर पहरा देते हुए मिलिशिया के दो सिपाहियों को ताक रहे थे, जिसमें पहले कभी बाज़ार की सराय थी। एक सिपाही अभी कमसिन नौजवान ही था और लग रहा था कि वह अपने उत्तरदायी काम से बहुत खुश है। दूसरा ठिगना, रौबीला और बिल्ली जैसी ऊपर मुड़ी हुई लंबी मूंछोंवाला था। वैसी मूंछें अब शायद ही कोई रखता था। दोनों ने जानने-समझने के अंदाज़ में मेरकूरी अव्देयेविच की ओर देखा।

"कामरेड, मैं अपने नाती के सिलसिले में आया हूं। छापे के दौरान वह गलती से पकड़ लिया गया है," मेरकोव ने सावधानी से उनके निकट आते और अभिवादन में टोपी उठाते हुए कहा।

"गलती से कोई नहीं पकड़ा जाता," नौजवान ने जवाब दिया।

"कैसे नहीं पकड़े जाते? उसे उम्मीद नहीं थी कि पकड़ा जायेगा, पर पकड़ लिया गया। यही गलती है। उसकी मां को और मुझ बूढ़े को भी इसकी उम्मीद न थी।"

"वह वयस्क है?"

"क्या?"

"आपका नाती क्या वयस्क है?"

"आप भी, कामरेड, क्या बात करते हैं? वह तो इस लड़के से भी छोटा है," मेरकोव ने पावलिक की ओर इशारा करते हुए बताया।

"तो ऐसा दुधमुंहा चीज़ें क्यों बेचता फिरता है?"

पावलिक ने होठों पर अंगुली फेरी और गुस्से से मुंह फेर लिया।

"वह, और बेचता फिरता है?" मेरकूरी अव्देयेविच ने डरते हुए कहा और अपने आपको क्रास करने ही वाला था कि ऐन मौके पर रुक गया। "खिलवाड़ कर रहा था, और कुछ नहीं। मेरा नाती और यह उसका साथी अभी बिल्कुल बच्चे हैं। इन्हें हमेशा कुछ न कुछ चाहिए – मछली पकड़ने का कांटा, चिड़िया का पिंजड़ा या ऐसी कोई और चीज़। इसीलिए यहां बाज़ार का चक्कर काटते फिरते हैं। ये चीज़ें और मिल भी कहां सकती हैं? दोनों अभी बच्चे हैं। उनसे आप पूछ भी क्या सकते हैं?"

"पूछ भी क्या सकते हैं!" ठिगने सिपाही ने गुर्राते हुए सिर घुमाया, जिससे उसकी नुकीली गुलमुच्छें भी हिल उठीं।

"और फिर पूछेंगे कैसे?" मेश्कोव विश्वास सा जताते हुए और सिपाही की वर्दी पर लगी लाल फीतियों को आदरपूर्वक देखते हुए बोला। "ज़माना वह नहीं रहा, आप खुद जानते हैं। पहले की बात होती, अच्छी तरह पिटाई करते। पर अब तो अंगुली भी नहीं उठा सकते: बच्चों को मारना-पीटना मना जो है!"

"पिटाई?" पावलिक तमतमाते हुए एकाएक बीच ही में बोल पड़ा। "क्या कसूर है उसका? कांटों और पिंजड़ों की वजह से क्या? हुंह!"

फिर मेश्कोव को नफ़रत और उलाहनाभरी नज़रों से देखकर सिपाहियों की ओर आधा मुड़ते हुए गुस्से में कहा,

"आप जीवन नहीं जानते!"

"तेरा नाक घुसेड़ना ज़रूरी है क्या?" मेश्कोव ने पावलिक को आस्तीन से घसीटते हुए डांटा। "क्या किया जाये इन जैसे छोकरों का?"

"सुधार विद्यालय में भेज देना चाहिए," पावलिक की बात को हंसी में उड़ाते हुए सिपाही ने कहा।

"आप खुद कौन हैं?" नौजवान सिपाही ने मेश्कोव से पूछा।

"सोवियत कर्मचारी। नाती को बचाने के लिए काम छोड़कर आना पड़ा है।"

"बच्चों की छंटाई दूसरे फाटक पर की जा रही है," मूंछोंवाले सिपाही ने बताया। "चलिये, अहाते से मैं आपको वहां तक पहुंचा आता हूं।"

नौजवान सिपाही ने फाटक खोला। पावलिक भी चुपके से मेरकूरी अव्देयेविच के साथ अंदर घुस जाना चाहता था, पर उसे रोक दिया गया। नाराज़ होकर वह वहां से चला गया। जाते हुए वह बाजार की सुनसान इमारतों की कतारों को यों गौर से देखता जा रहा था, जैसे कि उनकी स्थिति का अध्ययन कर रहा हो।

अहाता लोगों से भरा हुआ था। उनकी भीड़ एक असामान्य दृश्य पेश कर रही थी। उन्हें देखते ही ऐसा लगता था कि मानो विश्व में कोई बहुत ज़बर्दस्त उथल-पुथल हुई है: पहाड़ अपनी जगह से हट गये हैं और जीवित प्राणियों की तरह चल रहे हैं, चोटियां चकनाचूर हो गयी हैं, चट्टानें उलटकर गहरी खाइयों में समा गयी हैं और उनके अनगिनत टुकड़ों में से एक न जाने कहां से उड़ता हुआ आकर यहां ऊपरी बाज़ार के उपेक्षित पिछवाड़े में गिर गया है। परिस्थितिवश तिजारती बने लोगों की बदरंग और बेतरतीब भीड़ में, जो मायूसी से अपने भाग्य का फ़ैसला किये जाने का इंतज़ार कर रही थी, चोर-उचक्के, जुआरी और भूतपूर्व छोटे-मोटे अमीर-रईस भी थे। कैसे-कैसे चेहरे नहीं थे वहां! कुछ मातमी आंखें उठाये आसमान की ओर ताक रहे थे, मानो पुराने पापी की भांति दया की भीख मांग रहे हों। कुछ अपने आसपास के लोगों को यों मुंह बिचकाकर देख रहे थे, जैसे कि उनके स्पर्श से उन्हें छूत लग जायेगी। कुछ लोग अपनी सूए जैसी पैनी निगाहों से हर किसी को यों टकटकी लगाये देख रहे थे, जैसे कि कह रहे हों: तुम्हारी तो हम नहीं जानते, पर हम धरती भी भेदकर पार ज़रूर निकल जायेंगे। कुछ ने घमंड से ठुड्डियां यों उठायी हुई थीं, जैसे कि उनके सर पर ताज रखा हो, हालांकि वह न कभी था और था भी, तो उतर चुका था। कोई अपने पास खड़े आदमी को कनखियों से ऐसे कुत्ते जैसे झांक रहा था, जिसे विश्वास न हो कि मालिक लात मारेगा या दुत्कारकर ही संतोष कर लेगा। कुछ लोग ऐसे थे, जो सिगरेट का कश पर कश लगाते हुए मानो बुदबुदाते जा रहे थे: "ठीक है, आज तुम्हारा दिन है, पर कल देखना, हम क्या रंग दिखाते हैं!"

फिर यहां कुछ उस पूर्ण आज़ादी के दावेदार भी थे, जो ऐसे लोगों को ही मिलती है, जो अपने से भी वैसे ही नफ़रत करते हैं जैसे कि दूसरों से और सवसे नीचे गिरा हुआ होने पर भी दिखावा ऐसा करते हैं कि मानो सबसे ऊंचे हों। संक्षेप में, यह मुसीवत में फंसी हुई ऐसी भीड़ थी, जो उससे मुक्ति पाने और अपनी जेवों व कोट या कमीज़ के अंदर ठूंसकर छिपाये हुए "माल" को बचाने के लिए कुछ भी करने को तैयार थी। लेकिन यह "माल" था क्या? पुराने-धुराने कपड़े, बटन और धागे, लाल सेना से चुरायी हुई खाने की चीज़ें, जालीदार परदे, जूते और ठर्रा, सपनों का मतलब बतानेवाली पुस्तकें और पंचांग, बस कुछ ऐसी चीज़ें ही।

"भगवान का शुक्र है कि मैं इनके जैसा नहीं हूं," मेरकूरी अव्देये-विच ने सिहरते हुए सांस ली और फिर सदाचारी हुतात्मा जैसे अपने को कोसते हुए अपनी गलती सुधारी, "प्रभु, मुझ पापी को क्षमा करना!"

अहाते के एक कोने में सभी किशोर, और मुट्ठीभर छोकड़े एक दूसरे से सटे हुए खड़े थे। छोकड़े पढ़ाई के वाद भी स्कूल में ठहरने को मजबूर बच्चों जैसे लग रहे थे। मेरकूरी अव्देयेविच उनके बीच अपने वीत्या को ढूंढ़ने की सोच ही रहा था कि सिपाही उसे एक पत्थर की बनी इमारत में ले गया, जहां मेज़ के पीछे काले चमड़े की टोपी पहने वैठा एक शांत आदमी कानून और व्यवस्था के उल्लंघन के अपराधों की छानवीन कर रहा था।

"तुम कौन हो?" वह अपने सामने खड़े बिखरे बालों और चंचल निगाहोंवाले एक मोर्द्वा जाति के आदमी से पूछ रहा था।

"कोयला बेचनेवाला – 'कोयला ले लो – कोयला ले लो!' ठेले पर कोयला वेचा करता था। अव घोड़ी नहीं रही, ठेला नहीं रहा, 'कोयला ले लो – कोयला ले लो' नहीं रहा, कुछ भी नहीं रहा। अपना आखिरी जूते का तलवा बेचने आया था।"

"ज़ारशाही पैसों की चोरबाज़ारी क्यों कर रहे थे?"

"मैं भला ज़ारशाही पैसों का क्या करूंगा?"

"यही मैं भी पूछ रहा हूं – क्या करोगे? दाम तुमने उन्हीं पैसों में मांगे थे, है न?"

"मैं कैसे जानूं कि गाहक के पास कौनसे पैसे हैं? मैंने कहा था –

कौनसे पैसे दोगे? अगर ज़ारशाही, तो दस, अगर केरेन्स्की, तो सौ और अगर सोवियत, तो एक हज़ार रूबल।"

"सोवियत पैसों को सबसे सस्ता बनाना चोरबाज़ारी नहीं, तो और क्या है?"

"सस्ता कैसे?!" मोर्द्वा नाराज़गी से चिल्लाया। "ज़ारशाही पैसे खराब पैसे हैं, किसी काम के नहीं हैं, इसलिए बहुत थोड़ा ले रहा था – सिर्फ़ दस रूबल। केरेन्स्की पैसे कुछ-कुछ बेहतर हैं, इसलिए कुछ ज़्यादा – सौ रूबल मांग रहा था। मगर सोवियत पैसे तो सबसे बढ़िया हैं, उनसे ज़्यादा कीमत भी और किसी पैसे की नहीं है, इसलिए उन्हें सबसे ज़्यादा – पूरे एक हज़ार – चाहता था!"

शांत आदमी हंस पड़ा और मोर्द्वा की ओर देखकर चुपके से आंख से इशारा करते हुए विनोदपूर्वक बोला,

"तुम इतने बेवकूफ़ तो नहीं लगते – ठीक कह रहा हूं न? तो सोवियत पैसे सबसे बढ़िया हैं न? उन्हें सबसे ज़्यादा चाहते हो न?"

उसने मोर्द्वा को अलग एक ओर ले जाने का हुक्म दिया और मेरकोव की ओर मुड़ा। मेरकूरी अव्देयेविच ने अदब से उसे अपना काम बताया।

"लड़के का नाम क्या है?"

"शुब्निकोव।"

"शुब्निकोव?" आदमी ने दोहराया और फिर कुछ रुककर आगे पूछा, "उन्हीं शुब्निकोवों में से तो नहीं, जिनके नाम के साइनबोर्ड आज भी सारे बाजार में टंगे हैं?"

"हां, दूर का रिश्तेदार लगता है," मेरकोव ने माफ़ी सी मांगते हुए जवाब दिया। "स्वर्गीया दारिया अन्तोनोव्ना के भाई का पोता है।"

"यही तो मैं पूछ रहा हूं – उन्हीं शुब्निकोवों में से तो नहीं है? क्या उसका बेटा है, जिसकी ये सब दूकानें थीं?"

"हां, पर उसने तो लड़के को छोड़ दिया है। अब बहुत सालों से मैं ही पिता की जगह पर हूं," मेरकोव ने बताया।

"कोई दस्तावेज़ है आपके पास?"

मेरकूरी अव्देयेविच ने संभालकर तह किया हुआ एक कागज़ निकाला। मूंछोंवाला सिपाही भी आगे मेज़ पर झुककर शांत आदमी के

साथ कागज़ पर टाइप की हुई और कहीं-कहीं स्याही से सुधारी हुई इबारतें पढ़ने लगा।

"मेश्कोव," उसने पढ़ा और घुड़की सी देते हुए अपनी आदत के मुताबिक मूंछों को झटका। "यहां बाज़ार में रंग-वार्निश, आदि की दूकान आपकी हुआ करती थी?"

"ओह-हो," मेरकूरी अव्देयेविच ने सोचा, "लगता है कि तुम्हारी मूंछें ही नहीं, याददाश्त भी बड़ी लंबी है।"

"वह तो बहुत पहले थी!" उसने विनम्रतापूर्वक जवाब दिया।

"और आप चाहते थे कि आज भी होती," सिपाही ने पूछा।

"छोड़िये इन बातों को। कुछ नहीं रखा है अब व्यापार में," मेश्कोव ने जवाब दिया।

शांत आदमी जल्दबाज़ी में पेंसिल से लिखी हुई फेहरिस्तें देर तक उलटता-पलटता रहा और फिर जब शुब्निकोव का नाम मिल गया, तो उसके आगे निशान लगाता हुआ बोला,

"हां, ऐसे नाम का लड़का है तो। उसे अंडे रंगने का रंग बेचते हुए पकड़ा गया था।"

इतना कहकर वह कोई एक मिनट चुप हो गया और निशान पर पेंसिल फेरता रहा। फिर कुछ सोचते और सीख सी देते हुए बोला,

"लोगों के दिमाग में ज़हर घोल रहे हैं, उनके पिछड़ेपन का फ़ायदा उठा रहे हैं? ये पुरानी आदते छोड़ दें अब। जाइये, अपने नाती को ले जा सकते हैं। पर अगली बार इतनी आसानी से नहीं छूट पायेंगे। अब से आपके व्यापारी खानदान पर नज़र रखी जायेगी।"

"बहुत-बहुत शुक्रिया," मेश्कोव ने आदर से टोपी उतारी, मगर फिर तुरंत पहन ली और झुकते हुए जल्दी-जल्दी फिर कहा, "बहुत शुक्रगुज़ार हूं आपका, कामरेड!"

बाहर अहाते में सिपाही ने लड़कों की भीड़ के पास जाकर शुब्निकोव का नाम पुकारा। मगर वीत्या अपने नाना को पहले ही देख चुका था और उसकी ओर दौड़ा आ रहा था। उसका चेहरा उतरा हुआ था और आंखों के नीचे झांइयां उभर आयी थीं। मगर नाना से मिलने की खुशी ने उसे पहले से भी ज़्यादा चंचल बना दिया था।

उन्हें छोड़ दिया गया। वे फाटक से बाहर निकले ही थे कि न जाने

कहां से पावलिक भी दौड़ता हुआ आ गया और वीत्या की बांह में बांह डालकर उसके कान में कुछ खुसफुसाते हुए उसके साथ चलने लगा। मेरकूरी अव्देयेविच उनके पीछे-पीछे चल रहा था। उसके सिर से वहुत वड़ा वोझ टल गया था और इस समय वह इतने उचक-उचककर कदम नहीं रख रहा था। चलते हुए वह अपनी दाढ़ी को सहलाता और छड़ी को छैलों की तरह झुलाता जा रहा था। न सिर्फ़ खतरा टल गया था, वल्कि विजली-वचाव की छड़ की तरह सारा वार उसने ही अपने ऊपर झेला था, और अगर लड़के को बचा लिया गया है, तो उसे अपने को उसका उद्धारकर्त्ता कहने का पूरा-पूरा हक था।

उनकी आवाज़ सुनकर लीजा दौड़ती हुई घर के बाहर आयी। वचपन में जव वह वहुत खुश होती थी, तो सीढ़ियों की रेलिंग पर फिसला करती थी। इस वार भी वह लगभग ऐसे ही सीढ़ियां उतरी। वीत्या को वांहों में भरकर वह भावावेश में बुदबुदाती रही,

"अव मैं तुझे कहीं नहीं जाने दूंगी! कहीं नहीं, कहीं नहीं और किसी भी कीमत पर नहीं!"

नाना भी दोहराये जा रहा था,

"शुक्र है ईश्वर का, शुक्र है ईश्वर का!"

मां के आलिंगन से अपने को छुड़ाकर वीत्या ने एक सांस में वताया कि क्या-क्या हुआ था – क्यों वह भाग नहीं पाया, कैसे उसे पहरे में ले गये, कैसे अहाते में सबके नाम लिखे गये और कैसे सबने अपना माल छिपाया और खाने-पीने की चीज़ों से पिंड छुड़ाने की कोशिश की, क्योंकि उन्हें वेचना मना था। फिर अपनी कहानी रोककर उसने सिर को हल्का सा झटका दिया और मेज़ के पास जाकर वड़े गर्व से अखवार के टुकड़े में लिपटा हुआ सूअर की चर्वी का एक टुकड़ा जेव से निकाला। पावलिक अपने दोस्त को यों देख रहा था, जैसे कि वह कोई वहुत वड़ा वीर हो। नाना ने कहा,

"ओह तू शातिर कहीं का! कव कर पाया तू यह सव?"

"भाड़ में जाये चर्वी," लीज़ा ने दरवाजे की चौखट के सहारे खड़ा होकर तथा हाथों को ऊपर उठाकर और चौखट पर रखकर कहा, फिर उसने हथेलियों से अपना चेहरा ढांप लिया।

"यह मैंने वहां अहाते में खरीदा था," वीत्या ने उत्साहपूर्वक

आगे वताना जारी रखा। "एक वुढ़िया इतना डर गयी थी कि कहीं उसे जेल में बंद न कर दें। उसके पास कोई आधा थैला चर्वी रही होगी और वह किसी भी चीज़ के वदले में उसे देने को तैयार थी। मैंने उसे रंग के पैकेट दिखाते हुए पूछा कि क्या रंग लेगी। उसने कहा कि वैसे भी सब कुछ छीन लिया जाना है, इसलिए तुम्हीं क्यों न ले लो, और उसने यह टुकड़ा मुझे दे दिया। पूरा एक पाउंड होगा, मैं ठीक कह रहा हूं न, नानाजी? मैंने उसे सारा रंग दे दिया – सिर्फ़ एक पैकेट को छोड़कर। जब फेहरिस्त वनाने लगे, तो सिपाही मुझसे पूछता है: क्या वेच रहा था? मैंने जवाव दिया: कुछ नहीं, मेरे पास सिर्फ़ रंग का यह एक पैकेट है। उसने उसे ले लिया, मुझपर नज़र डाली और कुछ नही कहा।"

"मैंने कहा न, तू सचमुच वड़ा शातिर है!" नाना उसकी पीठ थपथपाते हुए बोला।

वह अपने कमरे में गया और एक मिनट वाद लेमन ड्राप्स का एक चमकीला डिव्वा लिये हुए शान के साथ वापस लौटा।

"ये ले," अपनी उदारता से खुद ही अभिभूत होते हुए उसने कहा। "मैंने इसे तेरे जन्मदिन के लिए रखा था, पर तू अभी ले सकता है। तूने इसे कमाया है।"

उसने अपने नाती को वह डिव्वा दिया नहीं, वल्कि वड़ी औप-चारिकता से भेंट किया। फिर चर्वी का टुकड़ा लेकर सावधानी से उसपर चिपका हुआ कागज़ हटाने लगा। वीत्या ने अपनी मां पर एक नज़र डाली।

"नहीं, नहीं," लीज़ा ने उसके विचारों को भांपते और अपने दुवले हाथ उठाते हुए कहा। "नही, मैं इस चर्वी को देख भी नहीं सकती!"

"क्यों नहीं?" मेरकूरी अव्देयेविच ने वुरा मानते हुए पूछा। "हम सव मिलकर खायेंगे। मैं तुम्हारा हिस्सा नहीं छीनूंगा।" और वह चर्वी का टुकड़ा अपने कमरे में ले जाने लगा।

"नानाजी, नानाजी," वीत्या ने उसे रोका। "आपके पास जो गोंददार कागज़ हैं, उनमें से कुछ मुझे दे सकते हैं? वही, जिनसे फटी हुई कितावें, कागज चिपकाये जाते हैं। मुझे वहुत ज़रूरत है..."

यह कहते हुए उसने अपनी कमीज़ ऊपर उठायी, पैंट की पेटी ढीली की और फटी हुई पुस्तक निकाली।

"इसके कुछ पन्ने चिपकाने हैं।"

"ओह, तू पढ़ाकू बंदर कहीं का! तुझे कहां से मालूम कि नाना के पास क्या है और क्या नहीं है?" पहले जैसी ही विशाल-हृदयता दिखाते हुए मेरकूरी अव्देयेविच ने कहा।

इस समय उसका मिज़ाज सचमुच बहुत अच्छा था। नाती के बेशक सभी गुण प्रशंसायोग्य नहीं थे (मिसाल के लिए, वह बड़ों से काफ़ी नहीं डरता था और भविष्य में इसका नतीजा ईश्वर से भी न डरने में प्रकट हो सकता था – मेरकूरी अव्देयेविच ईश्वर से डरने को ही सारे ब्रह्मांड की बुनियाद मानता था)। पर जीवन आदमी से दब्बूपन की नहीं, बल्कि सूझबूझ की मांग करता था और इस मामले में वीत्या काफ़ी होनहार प्रतीत होता था। वह साहसी और तीव्रबुद्धि था और देखते ही देखते, सभी अड़चनों के बावजूद, अपनी सफलता का डंका पीटने लगेगा। मेरकूरी अव्देयेविच की दृष्टि में आदमी को उसकी सफल रहने की योग्यता से ही आंका जा सकता था और कोई भी घटना शायद ही उसे अपना यह मापदंड बदलने को मजबूर कर सकती थी। बेशक भविष्यवाणी के अनुसार "वक्त आने ही वाला" था, यानी अब किसी भी दिन दुनिया का अंत हो सकता था और तब मानवजाति तथा उसकी व्यवस्था व अव्यवस्था, किसी का भी नामोनिशान नहीं बचना था। पर वह वक्त अगर लंबा – मिसाल के लिए, पूरी एक पीढ़ी या दो पीढ़ी तक – खिंच गया तो? तब क्या होगा? दुनिया आखिरकार दुनिया ही तो है न! यह ठीक है कि भटकती भेड़ें इस पापी धरती पर अराजकता पैदा कर रही हैं। अराजकता अराजकता ही है, मगर इस दुनिया के बुनियादी कानून से तो बचा नहीं जा सकता: आदमी को सफल बनकर दिखाना ही चाहिए। इस दृष्टि से वीत्या की सूझबूझ उसके बड़े काम आयेगी। कुछ कहो, छोकरा अच्छा, तेज़-तर्रार है, चाहे शिक्षा ठीक से नहीं मिल पा रही है।

दिन के बाकी समय भी मेरकूरी अव्देयेविच चैन संतोष अनुभव करता रहा। उसे लगातार यही लग रहा था कि वह किसी आसन्न खतरे को टालने और यहां तक कि किसी की आंखों में धूल झोंकने

में भी सफल रहा है। पर दिन की शुरूआत अगर खराब हुई थी, तो अंत भी शायद खराब ही होना था।

शाम ढले जब वह लौटा, तो घर में अकेला वीत्या ही था। वह एक पैर खिड़की की चौखट के एक बाज़ू पर और पीठ दूसरे बाज़ू पर टिकाये दासे पर बैठा था और घुटनों पर रखी कोई किताब पढ़ने में मशगूल था। फूलदान की पिताई पर एक कांच की शीशी में पॉपलर की कुछ टहनियां रखी हुई थीं, जिनकी नाज़ुक हरी पत्तियां कमरे में वसंत की मीठी सुगंध फैला रही थीं।

"तेरी मां कहां है?" मेरकूरी अव्देयेविच ने पूछा।

"टहलने गयी है। वह जो मां के साथ काम करता है न, वह आया था। मां पहले तो हंसी थी, फिर कहने लगी कि घर में बैठे-बैठे ऊब गयी है।"

"अच्छा! कांच की शीशी में रखा यह झाड़ू भी क्या वही लाया था?"

पता चला कि हां, वही लाया था।

"तेरी मां को नहीं सूझा कि वह उसके काम से गैरहाज़िरी की वजह जानने भी आ सकता था?"

वीत्या इसका क्या जवाब देता – शायद मां को सचमुच ही यह नहीं सूझा पाया था।

"टहलने तो चली गयी," मेरकूरी अव्देयेविच कहता गया, "पर यह नहीं सोचती कि कोई उसे देख सकता है। पहले की बात होती, तो कहते कि काम में नागा कर रही है। यह तब कोई डरने की बात भी नहीं थी। पर अब क्या कहेंगे। तोड़फोड़ न? और अगर तोड़फोड़ की बात है, तो तुरंत पूछेंगे: पति कौन है? पिता कौन है?"

वीत्या इसका भी क्या जवाब देता – शायद सचमुच पूछ सकते थे कि लीज़ा काम में नागा क्यों करती है और सबसे निकट का रिश्तेदार कौन है? क्या वही मेरकूरी अव्देयेविच मेश्कोव तो नहीं, जिसपर इसके लिए नज़र रखी जा रही है कि वह अपने नाती को बाज़ार में चीज़ें बेचने भेजता है? तब कैसे बच पायेंगे?

मेरकूरी अव्देयेविच की चिंता इस बात से और भी बढ़ गयी थी कि उस रात मुहल्ले में गश्त लगाने की बारी उसकी थी। सभी मुहल्ले-

वाले बारी-बारी से मुहल्ले में पहरा दिया करते थे और वह भी मुहल्ले का बाशिंदा था, चाहे साझे फ़्लैट में ही क्यों न रहता हो। जब भी उसकी बारी आने को होती थी, वह भय से कांपने लगता था कि कही यह उसके जीवन की अंतिम रात तो न होगी, कहीं वह मार तो न दिया जायेगा। बेशक वह अपना भय प्रकट नहीं करता था, पर उसके हाथ-पैर ठंडे पड़ने लग जाते थे और तब वह हर समय गहरी सांस लेने की अरुचिकर ज़रूरत महसूस किया करता था।

पहले गश्त के लिए वालेरिया इवानोव्ना उसे तैयार करके भेजा करती थी। वह उसे पुराना, कैस्टर के कपड़े का ओवरकोट, चीकट सी कराकुल की टोपी और घिसे हुए रबड़ के जूते पहनाती थी, चौकीदार का डंडा पकड़ाती थी और सलीब का निशान बनाते तथा चूमते हुए विदा करती थी और वह प्रार्थना के शब्द दोहराते हुए सारी रात के लिए घर से निकल पड़ता था। मां की मृत्यु के बाद पिता को गश्त के लिए तैयार और विदा करने का भार लीज़ा ने संभाल लिया था। मगर आज ऐसे खतरनाक काम पर उसे सांत्वनादायी विदा के बिना ही जाना पड़ रहा था।

वह अंतिम क्षण तक लीज़ा की प्रतीक्षा करता रहा। फिर भी जब वह न पहुंची, तो उसने बीत्या को सो जाने को कहा, ताकि मिट्टी का तेल बेकार न जले, और डंडा उठाकर गरीबों की गृह समिति के अध्यक्ष के यहां सीटी लेने चल पड़ा। समिति के कार्यालय में वह कुछ देर बतियाता रहा कि खाने-पीने की चीज़ों की कितनी तंगी है और कि असली संकट तो अभी आनेवाला है। फिर विदा लेकर रात्रि में यों खो गया, जैसे कि बर्फ़ में किये गये छेद में गोता मारा हो।

हर तरफ़ घुप्प अंधेरा और खामोशी छायी हुई थी। सड़क के बीच से फुटपाथ भी नही दिख रहे थे। घरों के सामनेवाले अहाते, जिनमें लिलैक और अकासिया की झाड़ियां उगी हुई थीं, डरावने अंधेरे में खोये हुए थे। ज़मीन वासंती शीत के निःश्वास अभी भी छोड़ रही थी। मेरकूरी अब्देयेविच ने डंडे को हाथ में तौला, उसका मोटा सिरा घुमाकर नीचे किया और सोचा कि अगर उसपर हमला हुआ, तो शायद इस तरह अधिक कारगर जवाबी वार किया जा सकता है। फिर जेब से सीटी निकालकर बजाकर देखा, ताकि उसमें कहीं कुछ फंसा न हो।

लेकिन अगर सचमुच ही उसपर हमला होता है, तो क्या बेहतर न होगा कि वह तुरंत डंडे को फेंक दे और ओवरकोट, टोपी, आदि सब कुछ उतारकर हमला करनेवाले के हवाले कर दे और कहे कि लो, सब कुछ ले लो, पर खुदा के लिए जान बख्श दो?

रात में गश्त लगाते समय मेश्कोव को सबसे अधिक परेशानी इस डंडे के कारण ही होती थी। सड़क की मखमली धूल पर कोई आहट किये बिना डंडे को टेककर चलते हुए वह अपने को चौकीदार कम और बटमार अधिक महसूस करता था। नहीं, उसकी, मेश्कोव की भूतपूर्व धन-दौलत की रक्षा इस डंडे ने नहीं की थी, न यह सीटी ही चोर-उचक्कों और सेंधमारों को उसके घर से दूर रखने में काम आयी थी। मेरकूरी अव्देयेविच जो डंडा उठाये हुए था, या जो सीटी बजा रहा था, या जिस अमन-चैन की रखवाली कर रहा था, उनमें से कोई भी उसका अपना न था।

उसे पहले ज़माने के चौकीदार याद आये, जो ईस्टर और क्रिसमस के मौकों पर मुबारकबाद देने आते थे। मेरकूरी अव्देयेविच हमेशा उन्हें एक-एक रूबल बख्शीश दिया करता था। वे गरीब और सीधे-सादे लोग थे। एक बूढ़ा चौकीदार तो जब सांस लेता था, तो उसकी छाती बाजे की तरह आवाज़ करती थी। बूढ़ा शेखी बघारता था कि उसकी बीमारी विरली और असाध्य है और मेडल की तरह उसे जीवनभर के लिए दी गयी है। वह बख्शीश को अपने टोप के अस्तर में छिपा लेता था और टोप जैसा ही काला, बड़ा और पोपला मुंह खोलकर हंस पड़ता था।

और अब मेरकूरी अव्देयेविच को खुद भी चौकीदार बनना पड़ा है। इससे अधिक नीचे कोई भला और क्या गिर सकता था! फिर कोई उसे एक रूबल बख्शीश देनेवाला भी तो नहीं था! लेकिन कोई दे भी तो क्यों? पहले चौकीदारों को बख्शीश देना कुछ मानी रखता था: वे जानते थे कि किसकी रखवाली कर रहे हैं। पर अब मेरकूरी अव्देयेविच किसकी रखवाली कर रहा है? उसके बूढ़े हाथों में डंडा पकड़ा दिया गया है। करो, नागरिक मेश्कोव, 'उनके' क़ानून और व्यवस्था की रक्षा! बजाओ 'उनकी' सीटी! रहो तैयार और देते रहो पहरा!

मुहल्ले का चक्कर लगाते और घूम-फिरकर अपने घर के पास आते हुए ऐसे विचार कम नहीं, तो सौ बार उसके दिमाग में उठे होंगे। घर के सामने आकर वह रुक जाता और टकटकी लगाकर अंधेरे में भी अपनी जानी-पहचानी नक्काशीदार लकड़ी की कार्निस, टिन की ढलवां छत, चिमनी, आदि को देखने की कोशिश करता। मकान जर्जर होने लगा था। इतनी जल्दी! दो ही साल में! इस अरसे में लोगों में भी न जाने कितने परिवर्तन आये होंगे!

मेरकूरी अव्देयेविच ठंडी हथेली अपने चेहरे पर फेरता: भौंहों के वाल तार जैसे कड़े और खड़े थे, कनपटियां धंस गयी थीं, दाढ़ी वेतरतीव उग आयी थी और टेंटुआ पहले से नुकीला लगने लगा था। आदमी को भी मकान जैसे जर्जर बनते देर नहीं लगती। और सब कुछ फिर नये सिरे से शुरू हो जाता: मकान, जो किसी का नहीं है, 'उनका' है, सवका है, हर किसी का है। मकान, जो पहले मेरकूरी अव्देयेविच का था। मकान, जिसका हर तख़्ता मेरकूरी अव्देयेविच के पसीने से सरावोर है। मकान, जिसकी कीलें खरीदने के लिए उसने, मेरकूरी अव्देयेविच ने अपना पेट तक काटा था। वह रातों को सोया न था, घोड़ागाड़ी पर नहीं वैठा था, चाय कोरी ही पी थी, वेटी को सूरजमुखी के वीज खरीदने के लिए पैसा नहीं दिया था, पत्नी को मुरब्बा नहीं वनाने दिया था। और यह सव इसलिए कि वह मकान वना रहा था। इस तरह एक-एक दिन, एक-एक पत्थर करके मकान तैयार हुआ था। पर अव यही मकान 'उनका' था, म्यूनिसिपेलिटी का था, सवका साझा था, किसी का नहीं था। ज़मीन से ठंड का झोंका उठा। आसपास कहीं कोई न था। रात घोर अंधेरी थी।

एकाएक मेरकूरी अव्देयेविच को आवाज़ें सुनायी दीं – पहले पुरुष की और उसके वाद नारी की। फिर सव शांत, खामोश हो गया। कुछ क्षण वाद अंधकार में एक दूसरे से सटी हुई और मुश्किल से पहचानी जा सकनेवाली दो छायाएं उभरीं। वे पास आती जा रही थीं। मेरकूरी अव्देयेविच अव उनके कदमों की आहट भी सुन सकता था। नारी स्वर फिर वोला और मेरकोव अपनी वेटी की आवाज़ पहचान गया। उस आवाज में घुली अजीव सी आत्मीयता और कोमलता ने उसे चकित कर दिया। शब्द तो वह साफ़-साफ़ न सुन सका, पर आवाज़ के उतार-

चढ़ाव में ऐसा जादू, ऐसा आकर्षण था कि लीज़ा के चुप हो जाने के बाद भी उसे लगा कि वह उसके कानों में गूंजे जा रही है।

बाद में पुरुष बोला। अच्छा, तो यह वही है, जो लीज़ा के साथ नोटरी दफ़्तर में नौकरी करता है और पहले अदालत का कर्मचारी था! वही, जो फूलों के नाम पर झाड़ू लाया था! देखो तो आवाज़ में कैसी मिठास घोले हुए है! ठंडी ज़मीन पर खड़े रहने से मेरकूरी अव्देयेविच के बदन में कंपकंपी दौड़ गयी। एकाएक उसकी सांस जहां की तहां रुक गयी: वह नोटरी दफ़्तरवाला – क्या नाम है उसका? ओज़्नोबिशिन? हां, हां, वही – लीज़ा को "तुम" कहकर पुकार रहा था। ओ-हो, बात यहां तक बढ़ गयी है! लीज़ा अपने पति को त्याग, बेटे को पिता से छीन और भगवान या आदमी, किसी की परवाह न करते हुए जीभर घूम लेने के बाद अब अपने यार के साथ पिता के घर लौट रही है!

अच्छा इनाम मिला है, मेरकूरी, बुढ़ापे में तुझे तेरी सारी मेहनत का! सीटी-डंडे के साथ लगा ले गश्त रातों में बेवकूफ़ों की तरह, करता रह रखवाली अपनी बेइज़्ज़ती और मानहानि की और देखता रह कि फाटक पर तेरी अपनी ही बेटी के अपने यार से चूमा-चाटी करने में कहीं कोई खलल न पड़े! देखो तो वे चूम ही रहे हैं न? एक बार, दो बार... हिम्मत है तो गिनते जाओ बापजान!

या कहीं मेरकूरी अव्देयेविच को यह सब भ्रम तो नहीं हो रहा है? आखिरकार रात भी कितनी अंधेरी और डरावनी है!

पर नहीं, अपने को भुलावे में डालने से क्या फ़ायदा? सब सच ही तो था! लीज़ा अपने यार को विदा कर फाटक की कुंडी खोल घर में घुस गयी थी और नोटरी दफ़्तरवाला आशिक सड़क के बीचोंबीच चलता हुआ वापस लौट रहा था।

मेरकूरी अव्देयेविच दबे पांव उसके पीछे हो लिया। ताकि आहट न हो, वह ऊपर तक धूल से भरी लीक, गाड़ियों व ठेलों के चलने से बनी लीक पर चल रहा था। उसके हाथ कांप रहे थे। एक बार फिर उसने अंदाज़ लगाया कि डंडे को किस सिरे से पकड़ना बेहतर होगा। यह सोचते ही उसके कंपकंपी छूट गयी कि वार सिर पर करना चाहिये या पैरों पर।

एक क्षण के लिए उसपर ऐसी दहशत छा गयी कि वह रुक गया। ओज़्नोविशिन तुरंत अंधेरे में खो गया। अब अगर मेश्कोव उसपर डंडा फेंकता, तो बाद में ढूंढ़ना मुश्किल हो जाता। डंडे के बिना तो रात और भी डरावनी थी।

मेरकूरी अव्देयेविच ने आंखें कसकर भींच लीं। आकस्मिक उत्तेजना से उसका चेहरा जलने लगा। उसने धीरे-धीरे अपने को क़ाबू किया और आंखें खोलने से डरते हुए जहां का तहां खड़ा रहा। क्या वह सचमुच आदमी को मार सकता था? और वह भी ऐसे आदमी को, जिसे उसकी लड़की प्यार करती है? ख़ैर, इससे कोई फ़र्क नहीं पड़ता कि वह आदमी कौन है। मगर सड़क पर, रात में और चोर की तरह चुपके से पीछे से आकर? हे प्रभु!

आंखें खोलने के लिए उसे कोशिश करनी पड़ी। अंधेरे में से उजाले का एक झूलता हुआ धब्बा उसकी ओर बढ़ रहा था। सड़क, चारदीवारियों या मकानों पर पड़ती उसकी किरणों के पीले घेरे कभी सिकुड़ जाते थे, तो कभी फैल जाते थे। किंतु वह धब्बा जैसे एकाएक प्रकट हुआ था, वैसे ही एकाएक गायब भी हो गया और अंधेरा तब और भी घना लगने लगा। कहीं से धीमी, अस्पष्ट आवाज़ें आ रही थीं। मेरकूरी अव्देयेविच वापस अपने घर की ओर मुड़ गया, ताकि अहाते में जा छिपे, मगर सड़क से हटकर चारदीवारी के पास पहुंचा ही था कि सीधे अपनी ओर आते लालटेन के उजाले से उसकी आंखें चुंधिया गयीं।

बातचीत में मशग़ूल कुछ लोग उसके पास पहुंचे। उनमें से एक ने मेरकूरी अव्देयेविच को संबोधित करते हुए कहा,

"नमस्ते, पहरेदार!"

मेश्कोव पहचान गया कि ये गश्ती दल के मज़दूर हैं। उनके कंधों पर बंदूकें और कमर पर कारतूस की पेटियां लटकी हुई थीं। मगर लिबास ऐसा-वैसा ही था।

"नमस्ते," मेश्कोव ने विनम्रतापूर्वक उत्तर दिया।

"उत्तर ऐसे नहीं देते," एक युवा स्वर ने टोका।

"कैसे देते हैं, बता दीजिये," मेश्कोव बोला।

"'क्रांति का सेवक हूं, साथियो!' – उत्तर ऐसे देते हैं।"

"देखा तो नहीं कि यहां से कौन गुज़रा था?" पहले स्वर ने पूछा।

"नहीं; मैंने किसी को नहीं देखा।"

"इस आदमी को भी नहीं?"

लालटेन का उजाला मेरकूरी अव्देयेविच के चेहरे से हटकर ऊपर उठा और सामने खड़े ओज़्नोविशिन के पीताभ लाल चेहरे पर पड़ा। लीज़ा का आशिक बुत की तरह खड़ा था। लगता था कि उसकी नीली, पस्त आंखों से आंसू अब बहे, तब बहे।

"इसे भी नहीं देखा," मेश्कोव ने मुश्किल से सुनायी देनेवाली आवाज़ में जवाब दिया।

"चौकन्ने रहा करो! काम में गफ़लत ठीक नहीं है! इस नागरिक का रात्रि-पास पुराना पड़ चुका है।"

और यह कहकर वे सब मुड़ गये और झुंड बनाकर लालटेन से अपने आगे उजाला करते हुए चल पड़े। उनके कंधों पर लटकी बंदूकों की नालें उनके कदमों के साथ झूल रही थीं।

"अलविदा! देखना, चौकन्ने रहना!" युवा मज़दूर पीछे घूमता हुआ चिल्लाया।

"क्रांति का सेवक हूं, साथियो!" मेरकूरी अव्देयेविच ने जवाब दिया। उसका दिल बड़े ज़ोर से धड़क रहा था, मानो उसपर से अभी-अभी कोई बोझ उतरा हो। शुक्र खुदा का, खतरा टल गया है!

नीरव अंधकार ने उसे फिर घेर लिया। उसने अपनी पलकों पर आंसुओं की चुभन महसूस की। ये आंसू अपमान के आंसू थे, कड़ुआहट-भरे आंसू थे। हथेली के पृष्ठभाग से उसने उन्हें पोंछा और घर की ओर चल पड़ा।

लीज़ा के कमरे की खिड़की के उजाले पर उसकी नज़र पड़ी ही थी कि फाटक की कुंडी खुलने की आवाज़ सुनायी दी। वीत्या दौड़ा-दौड़ा सड़क पर आया और इधर-उधर झांककर चिल्लाया,

"नाना!"

"मैं यहीं हूं। क्यों चिल्ला रहा है? क्या बात है?"

"जल्दी चलो। मां को शायद कुछ हो गया है।"

"क्या मतलब?"

"जल्दी चलो! वह बुला रही है।"

वह मेरकूरी अव्देयेविच की अंगुलियां कसकर पकड़े खींचता, हड़बड़ाता, ठोकर खाता घर की ओर वापस भागा। मेश्कोव भी अपने नाती की पतली अंगुलियां मज़बूती से पकड़े था। बूढ़े और बच्चे की अंगुलियों की वह पकड़ मेरकूरी अव्देयेविच द्वारा अभी-अभी सड़क पर या पिछले सारे मनहूसीभरे दिनों में महसूस किये गये डर और आशंका से कहीं ज़्यादा डर और आशंका प्रकट कर रही थी।

लीज़ा कपड़े उतारे बिना ही और सिर पीछे किये बिस्तर पर पड़ी हुई थी। खून के गहरे धब्बों से सना एक तौलिया बिस्तर से आधा नीचे लटक रहा था। लीज़ा की उजली आंखें फैलकर इतनी बड़ी हो गयी थीं कि उन्हें देखते ही मेरकूरी अव्देयेविच की टांगें जवाब दे गयीं। लड़खड़ाते हुए वह उसी हालत में, यानी टोप पहने और डंडा पकड़े ही लीज़ा के पैरों के पास बैठ गया और बिना कुछ कहे उसे देखता रहा।

बगल के कमरे का एक मेडिकल विद्यार्थी मेज़ के पास खड़ा गिलास में ज़ोर-ज़ोर से कुछ घोल रहा था। उसकी भिंची हुई भौंहों पर उजले बालों की उलझी हुई लटें हाथों और शरीर की हरकतों पर ताल सी देते हुए झूल रही थीं। मेरकूरी अव्देयेविच की चुप्पी से वह समझा कि उससे शायद कुछ पूछा जा रहा है। अतः पुराने ज़माने के चिकित्सकों की भांति प्रफुल्ल और सम्मोहनकारी स्वर में उसने कहा,

"इस मामले में हमारा जिस चीज़ से वास्ता पड़ा है..."

मगर वैसा स्वर वह आगे नहीं बनाये रख सका और जल्दी-जल्दी अपनी बात खत्म करते हुए बोला,

"घबड़ायें नहीं। कोई गंभीर बात नहीं है। बस एक मिनट में रोक देते हैं।"

"लीज़ा, लीज़ा बेटी, तू यह क्या कर बैठी?" मेरकूरी अव्देयेविच बेटी के हाथ को छूता हुआ आखिरकार बुदबुदाया। उसने लीज़ा का हाथ इस तरह बड़ी सावधानी से छुआ था कि जैसे कि हल्के से स्पर्श से ही उसकी वेदना और बढ़ जायेगी।

लीज़ा ने आंखों के इशारे से उसे पास बुलाया। वह आकर उसके सिर के निकट घुटनों के बल बैठ गया। लीज़ा रुक-रुककर, शब्दों के बीच डरावने विराम देते हुए बुदबुदायी,

"वीत्या से कहें... दौड़कर अनातोली मिख़ाइलोविच को वुला लाये... उस कोनेवाले मकान में रहता है..."

"किसको, डाक्टर को? किस कोनेवाले मकान में?" जल्दवाज़ी मे गलत अंदाज़ लगाते हुए उसने पूछा।

"नही, ओज़्नोबिशिन को... वीत्या... दौड़कर... वुला लाये।"

मेरकूरी अव्देयेविच एतराज़ करना चाहता था, पर मुंह से आवाज़ न निकल सकी।

"आर्सेनी रोमानोविच के घर के सामने... जो कोना है..."

"लीज़ा, रात वहुत हो गयी है!" पस्त आंखोंवाले उस पीताभ लाल चेहरे की याद दिमाग से खदेड़ते हुए मेरकूरी अव्देयेविच वड़ी मुश्किल से बोला। "वीत्या अभी वच्चा ही है। उसे कहीं कुछ हो गया तो? नहीं, नही!"

"वीत्या... कहना... तेरे साथ ही आये... अभी..."

"नाना, मुझे कुछ नहीं होगा," वीत्या ने भी फुसफुसाते हुए कहा।

"मगर तू पता भी तो नहीं जानता। ऐसे अंधेरे में कहां ढूंढ़ता फिरेगा? और फिर यह ओज़्नोविशिन क्यों चाहिये? तुझे डाक्टर चाहिये, डाक्टर!"

"वीत्या..." लीज़ा फिर वुदवुदायी।

"वीत्या के पास रात में निकलने का पास भी तो नहीं है!" मेरकूरी अव्देयेविच ने घिघियाते हुए कहा। "और इस ओज़्नोविशिन के पास भी शायद ही हो! फिर कौन जाने, वह मिलेगा भी कि नहीं! रात का वक्त है!"

सहसा लीज़ा अपनी नुकीली ठुड्डी को और ऊंचा करके खांसी और ऐसी निश्चेष्ट हो गयी कि मानो प्याला लवालव भर उठा हो और हल्की सी हरकत से भी छलक जायेगा। उसके होंठ के कोने पर जो काला धव्वा उभर आया था, वह धीरे-धीरे अव नीचे गरदन की ओर वढ़ने लगा।

"मां, मैं खोज लूंगा उसे," एकाएक वीत्या चिल्लाया और कमरे से वाहर लपका।

"कोई वात नहीं," विद्यार्थी ने घवड़ाते हुए कहा और अपनी

लटों को पीछे झटकते हुए कांपते हाथों से गिलास लीज़ा के होंठों मे लगा दिया। "कोई बात नहीं, बस अभी रोक देते हैं।"

मेरकूरी अव्देयेविच बिस्तर पर बैठ गया।

"तुम कुछ नहीं रोक सकते, कुछ नहीं," हांफते और सिर हिलाते हुए उसने कहा। "अब कुछ नहीं रोका जा सकता... कुछ भी नहीं।"

७

रागोज़िन खिड़की खुली छोड़कर सोया था। सुबह की कच्ची नींद में उसे बाल्टियों के बजने-पटकने और औरतों के बतियाने की आवाज़ें सुनायी दीं: आसपास के घरों की औरतें पानी के बंबे पर इकट्ठा हो रही थीं और अहाते की खबरों का प्रातःकालीन मौखिक विनिमय शुरू हो गया था।

हाथ सिर के पीछे फैलाकर चारपाई की लोहे की रेलिंग पकड़ते हुए उसने अंगड़ाई ली और आंखें मूंदे-मूंदे ही याद करने लगा कि उसे क्या-क्या काम करने हैं: उसे हिरासत में लिये गये लोगों की जांच करनेवाले नगर आयोग का अध्यक्ष बनाया गया था और उसे जेल तक पहुंचाने के लिए बग्घी आनी थी। कई सालों से उसे तरह-तरह की जिम्मेदारियां सौंपी जा रही थीं। नयी-नयी जगहों और नये-नये कामों का वह आदी सा बन चुका था। क्रांति से पहले सबकी नज़र बचाकर गुप्त और चक्करदार तरीकों से उसे हथियार, पार्टी अखबार या पार्टी कागजात एक जगह से दूसरी जगह पहुंचाने होते थे। क्रांति के बाद तो ज़िम्मेदारियां बहुत ही बढ़ गयीं। छोटे से बिल में बंद, छिपी दुनिया एक ही विस्फोट से ऊपर सतह पर आ गयी थी और जीवन लोगों की आंखों के सामने ही क्या, सबको अपनी चपेट में लेता हुआ, उनके सिरों, टोपियों और छतों को निमग्न करता हुआ बासंती मेघ की भांति घुमड़ता-गरजता निर्बाध बह चला था। सब कुछ बहुत ही महत्त्वपूर्ण बन गया था। तुरंत सब जगह, हर कहीं हाज़िर रहने की ज़रूरत पैदा हो गयी थी, और वह भी परदे के पीछे नहीं, बल्कि सबकी आंखों के सामने, ताकि डिपो, बैरक, अस्पताल या फ़ैक्टरी, जहां भी आप जायें, लोग महसूस करें कि उनका नेता,

मार्गदर्शक आया है। अनुभवी घुमक्कड़ जैसे किसी भी जगह डेरा डालने में दिक्कत महसूस नहीं करता, वैसे ही वह भी नयी और अप्रत्याशित जगहों से नहीं डरता था। इसी वजह से कभी-कभी मज़ाक में वह कह वैठता था कि उसे तो लोगों के बीच घुमक्कड़ी करते रहने की आदत है।

रागोज़िन उठकर खिड़की के पास खड़ा हो गया। अहाते के शांत पेड़ सुबह की स्वच्छ, पारदर्शी नीलिमा में लिपटे हुए थे। दूर क्षितिज पर सुरमई कुहासे की घनी चादर फैली हुई थी। सूरज की किरणें धरती छूने और उष्मा बिखेरने लग गयी थीं। वंबे के नीचे पानी के डवरे के पास गौरैयाएं ढिठाई और बेगर्ज़ी से चहचहाती व पंख फड़फड़ाती फुदक रही थीं। पास ही एक ऊंचे खंभे पर एक गुस्सैल सा कौआ वैठा था, जो गला फाड़-फाड़कर कांव-कांव करता हुआ अपनी स्याह आंख से गौरैयाओं को तरेर रहा था।

सुबह ने रागोज़िन को सम्मोहित कर लिया था। उसे अफ़सोस हुआ कि अपने ज़रूरी काम की वजह से वह किरील इज़्वेकोव को ढूंढ़ने और घंटा दो घंटा उसके साथ विताने का अपना इरादा पूरा न कर पायेगा। किरील के आने के वारे में उसे कुछ ही समय पहले मालूम हुआ था। नगर सोवियत में उसे बताया गया था कि इज़्वेकोव को वहां का सेक्रेटरी नियुक्त किया गया है और उसके रहने के लिए मकान ढूंढ़ा जा रहा है। नौ साल पहले जव पुलिस ने गुप्त छापाखाने पर छापा मारा था और उस सिलसिले में रागोज़िन और किरील, दोनों को अदालत के कठघरे में खड़ा करना चाहा था, तव से उनकी मुलाकात नहीं हुई थी। रागोज़िन को किले में कैद किये जाने की सज़ा मिल सकती थी, पर वह भाग निकला था और कोई पांच साल तक नाम वदलता हुआ वोल्गा के निचले भाग में अस्त्राख़ान से नीज्नी नोवगोरोद के बीच कभी इस शहर में तो कभी उस शहर में छिपता रहा था। आखिरकार वह ओका तट के कोलोम्ना शहर में एक फ़ैक्टरी में किसी और नाम से काम करने लगा था और मछली पकड़ने के शौकीन के रूप में मशहूर बन वैठा था। फिर जव क्रांति होने को थी, तो उसे पेत्रोग्राद भेज दिया गया था। इज़्वेकोव के वारे में उसे वहुत कम मालूम था। उसने सुना था कि ओलोनेत्स गुवेर्निया में निर्वासन की सज़ा भुगतने के वाद किरील सेना में कार्यरत वोल्शेविक संगठन से संवद्ध

रहा था। फिर १९१७ में उसका नाम अखबारों में पढ़ने को मिला था – वह मोर्चे से सैनिकों के प्रतिनिधियों की कांग्रेस में भाग लेने पेत्रोग्राद आया था, मगर जिस दिन उसे कांग्रेस में बोलना था, ऐन उसी दिन रागोज़िन को क्रोनश्तादृत रवाना हो जाना पड़ा। जब तक रागोज़िन लौटता, तब तक इज़्वेकोव पेत्रोग्राद छोड़ चुका था। इसके बाद पूरे दो साल तक उसे इज़्वेकोव के बारे में कुछ नहीं सुनायी दिया – न तो उन जगहों पर ही, जहां उसे अपने नगर – सरातोव – लौटने से पहले काम करने भेजा गया था, न स्वयं सरातोव में ही, जिसे रागोज़िन अच्छी तरह जानता था लेकिन जहां इज्वेकोव की शायद ही किसी को ठीक से याद थी। कोई उस को याद रखता भी, तो भला कैसे? वह तब लड़का ही था, जब पुलिस ने उसे पकड़ा था। इसके बाद वह उत्तर के दूरवर्ती दुर्गम झील-बहुल इलाकों के दलदलों और जंगलों में खो गया था। रागोज़िन को सूझा कि इज़्वेकोव शायद उस जेल को देखना चाहे, जहां वह अपनी पहली कठिन परीक्षा से गुज़रा था और शायद इस तरह उनके बीच दोस्ती फिर से कायम हो जाये। इज़्वेकोव अपनी कोठरी खोजेगा और रागोज़िन अपनी १९०५ वाली कोठरी। और तब दोनों याद करेंगे कि क्रांतिकारी संघर्ष में उनकी तपाई कहां से शुरू हुई थी। नौ साल के बिछोह के बाद इज़्वेकोव से मिलने और उसे जेल देखने के लिए बुलाने का अपना यह खयाल रागोज़िन को बड़ा हास्यजनक लगा।

ठहाका लगाकर हंसते हुए वह खिड़की से हट गया और दर्पण के सामने जा खड़ा हुआ। अपना प्रतिबिंब देखते और बालों में दोनों हाथों की अंगुलियां फेरते हुए उसने सोचा कि दोस्ती अजीब सनकी चीज़ है, क्योंकि हो सकता है कि इज़्वेकोव काफ़ी कुछ गंजे हो चुके और झुर्रीदार चेहरे तथा खिचड़ी मूंछोंवाले इस रागोज़िन को शायद अपनी रुचि के अनुकूल न पा सके। उसने बाल्टी का पानी छूकर देखा। रात में पड़े-पड़े वह इतना ठंडा नहीं रह गया था। उसने उसे फेंक दिया और खाली बाल्टी लेकर कमरे से निकल गया। एक भड़कीला चोगा पहने मकान-मालकिन ओखली में कुछ पीस रही थी। काम से ध्यान हटाये बिना ही रागोज़िन को नमस्ते करते हुए उसने तारीफ़ जैसे अंदाज़ में कहा,

"नहाने जा रहे हैं, प्योत्र पेत्रोविच ?"

"हां, बाल्टी में हल्की सी डुबकी लगाने," बाल्टी का हत्था बजाते और सीढ़ियों पर नीचे भागते हुए उसने जवाब दिया।

डबरे में पत्थर गिरने से जैसे छींटे उछलते हैं, वैसे ही गौरैयाएं भी एकाएक उड गयीं। कौआ भी डरकर पंख फड़कड़ाने लगा, पर खंभे से उड़ा नहीं और अपना विरोध कांव-कांव तक ही सीमित रखकर संतुष्ट हो गया। बंबे से बाल्टी के खनकते पेंदे पर पानी की तेज़ धार गिरने लगी। शीघ्र ही उसकी आवाज़ अपनी कड़क खो बैठी और गूंजती खुदबुदाहट से सरसराती छपछप में बदलती हुई ऊंचे, और ऊंचे उठती गयी, जब तक कि बाल्टी लबालब न भर गयी और किनारों से पानी तरल चांदी की तरह बाहर न छलकने लगा। प्योत्र पेत्रोविच अपने को रोक न पाया और बंबे से पानी अंजलि में भर-भरकर चेहरे और गंजी खोपड़ी पर छपाके मारने लगा। तभी कौआ फिर गुस्से से कांव-कांव चिल्लाया। प्योत्र पेत्रोविच ने मुड़कर उसे देखते हुए कहा,

"बंबा बंद करना, क्या? अच्छा, बाबा, नहीं भूलूंगा!" और हंसते हुए अंजलि में पानी भरकर डरे हुए पक्षी की ओर ऊपर उछाल दिया और फिर बंबे को कसकर बंद करके व चेहरा पोंछे बिना ही लबालब भरी बाल्टी उठाकर सीढ़ियां चढ़ गया।

कमरे में चिलमची के ऊपर झुककर उसने अपने नंगे बदन पर लोटे से पानी उंडेला और ठंडक के कारण हल्के से सिसकारा। उसका कद इतना ऊंचा था कि झुकने के बावजूद उसका हाथ लंबे और हथबुने तौलिये से पीठ रगड़ते हुए उसके छोटे से कमरे की छत से टकरा जाता था। जब तक वह चाय-नाश्ते से फ़ारिग होता, फाटक पर बग्घी आ गयी। जल्दी-जल्दी आखिरी कौर निगलते हुए वह नीचे दौड़ा। मज़दूरों जैसी टोपी, जो क्रांति के बाद से जनवाद का प्रतीक सी बन गयी थी, रूसी कमीज़ और बटन न लगा छोटा कोट, जिसका रंग पहले मालूम नहीं कि नीला रहा होगा या काला, पहने वह बड़ा जवान और बड़ा बेतकल्लुफ़ लग रहा था। और ज़ंग लगी व अपनी चमक-दमक खो चुकी बग्घी की जगह-जगह से फटी हुई चमड़े की सीट पर भी वह यों बैठा, जैसे कि उसके लिए ऐसी सवारी पर चलना बिल्कुल मामूली बात हो, जो पहले किसी व्यापारी या वकील की थी। उसके

बैठने की मुद्रा ऐसी थी कि मानो वह अभी कूदकर नीचे उतर जायेगा तथा अपने लंबे, हल्के से मुड़े पैरों पर झूलता, मगर नपे-तुले डग भरता हुआ सड़क पर चल पड़ेगा।

खड़ंजों पर झटके-हिचकोले खाती बग्घी में बैठा वह सोचने लगा कि अपना नया काम कैसे शुरू करे। उसके जैसे अनुभवी आदमी को भी वह काम बड़ा अप्रीतिकर और पेचीदा लग रहा था। आयोग विभिन्न विभागों के लोगों से बना हुआ था और काफ़ी बड़ा था – स्वयं उसके, अध्यक्ष के समेट सात आदमी। उन्हें हिरासत में लिये हुए सभी लोगों की भी और जहां उन्हें रखा गया था, उन जगहों, उनकी गिरफ़्तारी के कारणों और अधिकारियों द्वारा की गयी कार्रवाइयों के औचित्य की भी जांच करनी थी। आयोग को किसी को भी रिहा करने, मामला एक विभाग से दूसरे विभाग को सौंपने, और मामलों की सुनवाई यथाशीघ्र पूरी करने का आदेश देने का अधिकार था। संक्षेप में, जैसा कि आयोग की नियुक्ति के समय स्पष्टतः कहा गया था, उसे पब्लिक प्रोसीक्यूटर से अधिक अधिकार दिये गये थे और उससे ऊपर केवल अदालत थी। रागोज़िन ने फ़ैसला किया कि आयोग के सदस्य अलग-अलग तौर पर काम करेंगे, कैदियों से मिलेंगे, आसान, मगर निर्विवाद मामलों में अपने निष्कर्ष खुद निकालेंगे और जो मामले पेचीदे हैं, उन्हें सारे आयोग के सामने पेश करेंगे। जेल के फाटक तक पहुंचते-पहुंचते उसने आयोग के काम की सारी योजना तैयार कर ली।

उसने फाटक के सीखचोंवाले झरोखे पर दस्तक दी और वह तुरंत खुल गया। उसके अपना परिचय देते ही फाटक का ताला भी खुल गया। उसने फाटक पर नज़र दौड़ायी। किसी ज़माने में वह हरे रंग का हुआ करता था, पर अब ईंटों के रंग का था। मगर उसे लगा कि वह अगल-बगल के खंभों पर बने फ़र वृक्ष के डिज़ाइन को पहचान गया है। फाटक से अंदर घुसते हुए उसने अपने ध्यान को बंटा हुआ पाया : वह चाहता तो था कि भावी काम के बारे में ही सोचे, मगर दिमाग में रह-रहकर पुरानी यादें उभरी जा रही थीं और जितना ही वह अपने विचारों को काम पर एकाग्र करने की कोशिश करता, उतना ही अधिक वे भटकने लग जाते।

उसकी नज़र सुनसान अहाते की रौंदी हुई धूल पर पड़ी। जेल

की यह मिट्टी तब भी ऐसी ही नंगी, उजाड़ और सुनसान थी, जब उसे उसपर पैर रखने को और वह जिस क्रूर व्यवस्था को उखाड़ फेंकने पर आमादा था और जो क्रूर व्यवस्था अब सचमुच उखाड़ फेंकी गयी है, उसकी कीमत अपने खून और आज़ादी से चुकाने को मजबूर किया गया था। नंगी ज़मीन के इन धब्बों से, नगरों और कसबों के चेहरों पर चेचक के दाग जैसे इन धब्बों से बचने में उसके जीवन के दस से अधिक साल गुज़र गये थे। उसे आश्चर्य सा हुआ कि यह जाना-पहचाना अहाता आज भी वैसा ही मुर्दा, उजाड़ है, कि उसमें घास आज भी नहीं उग पायी है। उसने अपनी निगाह जेल की सफ़ेदी पुती हुई इमारतों और उनके उबाऊ चौकोर झरोखों पर दौड़ायी। किन सीखचों के पीछे उसने अपने खून का खिराज चुकाया था? किन सीखचों के पीछे उसकी नन्ही क्साना ने दम तोड़ा था? किन सीखचों के पीछे बैठे उसके साथी—वे साथी, जिनमें से कुछ आज भी याद हैं और कुछ को भूल गया है, जिनमें से कुछ को अरसे से जानता था और कुछ को कभी नहीं देखा था—अपने कड़ुआहट और नफ़रतभरे, मगर उदात्त खयालों में खोये रहते थे? काले झरोखे यों लग रहे थे, जैसे कि उजाले से चुंधिया गये हों। मुर्दा सफ़ेद दीवारें ऐसी अछूती, उदासीन सी खड़ी थीं, जैसे कि उनके पीछे कुछ न हो, कोई सांस न ले रहा हो या कोई सोच न रहा हो। पर दुनिया में ऐसी शायद ही कोई और दीवार थी, जिसके पीछे हमेशा, हर घड़ी, हर क्षण इतना अधिक, इतनी व्यग्रता तथा इतने आवेग से और इतनी निरर्थकतापूर्वक सोचा जाता हो। रागोज़िन ने अपने से पूछा: लोगों को आज भी क्यों इन दीवारों के पीछे मरना-घुटना पड़ रहा है?

"लोग? शायद, मगर आम लोग नहीं!" सहसा अपने सवाल पर वह फुफकार उठा। जेल की दीवारों से नज़रें हटाकर उसने अपने विचार फिर अपने तात्कालिक काम पर केंद्रित किये और तेज़ी से कदम बढ़ाता अपनी ओर आते लोगों की तरफ़ चल दिया। उनसे हाथ मिलाते हुए उसने पूछा,

"क्या सब आ गये हैं? एक की कमी है? तो क्या ठहरें या शुरू कर दें?"

वे एक दूसरे अहाते से होते हुए जेल के दफ़्तर में पहुंचे, जहां

मामलों की जांच की कार्यविधि तय की गयी। सबके चले जाने के बाद रागोज़िन खिड़कियों और दरवाज़ों पर सीखचोंवाले एक कमरे में अकेला रह गया।

फ़ाइलों का एक ढेर लाकर उसके सामने रखा गया। उनका मोटा-मोटा बंटवारा करके उसने उन्हें आयोग के सभी सदस्यों को दे देने का हुक्म दिया और अपने हिस्से पर नज़र दौड़ायी। इन फ़ाइलों में पकड़े गये लोगों से की गयी पूछताछ की रिपोर्टें, उनके निजी कागज़ात, प्रार्थनापत्र, गवाहों के बयान, आदि थे। कुछ मामले उसे मामूली से और आम मध्यवर्गीय द्वेष, कलह और दंभ की उपज लगे। कुछ में बयानों की अस्पष्टता ने उसे चक्कर में डाल दिया। फिर कुछ मामले ऐसे थे, जो स्पष्टत: गंभीर थे और महत्त्वपूर्ण निर्णयों की अपेक्षा करते थे। उसने सभी फ़ाइलों को अपने पहले अहसास के मुताबिक अलग-अलग किया और सबसे पहले आसान मामलों को, जिन्हें उसने "देखने में मामूली" नाम दिया था, निबटाने की सोची, ताकि अधिक संगीन मामलों को हाथ में लेने के लिए रास्ता साफ़ हो जाये। लेकिन फिर एक क्षण सोचकर इरादा बदल लिया: "मामूली मामले ठहर सकते हैं!"—और सबसे संगीन मामलों से ही शुरू करने का निर्णय किया।

एक फ़ाइल पर सबसे ऊपर लाल पेंसिल से रेखांकित बड़े-बड़े अक्षरों में आड़े लिखा हुआ था: "ज़ारकालीन पब्लिक प्रोसीक्यूटर कार्यालय का अधिकारी"। रागोज़िन ने इस कैदी को लाने का आदेश दिया और फ़ाइल पढ़ने लगा। पढ़ने को कोई बहुत ज़्यादा न था: अनातोली मिख़ाइलोविच ओज़्नोबिशिन, आयु ३५ वर्ष, विश्वविद्यालय स्नातक, सोवियत नोटरी का सहायक, एक मज़दूर गश्ती दल द्वारा रात में सड़क पर रात्रिकालीन पास की अवधि गुज़र जाने के बाद भी घूमने के कारण गिरफ़्तार किया गया; पूछताछ में पता चला कि क्रांति से पहले पब्लिक प्रोसीक्यूटर कार्यालय में काम करता था और जज के पद का उम्मीदवार था, लेकिन जांचकर्त्ता के अनुसार प्रोसीक्यूटिंग अटार्नी समेत कई महत्त्वपूर्ण ओहदों पर भी काम कर चुका है। इस तथ्य की ही विशेष रूप से जांच की जानी थी।

दस मिनट बाद ओज़्नोबिशिन को ले आया गया। रागोज़िन को देखकर उसने सिर झुकाया और जब उससे बैठने को कहा गया, तो

हाथों को मलते हुए, मानो उनसे कुछ पोंछ रहा हो, धन्यवाद कहकर कुर्सी पर बैठ गया। आम सवालों का जवाब उसने स्पष्ट, संक्षिप्त, तुरंत, मगर बिना किसी हड़बड़ाहट के और अपनी गरिमा बनाये रखते तथा साथ ही पूछताछ करनेवाले के प्रति उचित आदरभाव का प्रदर्शन करते हुए दिया।

"आपको क्यों गिरफ़्तार किया गया है?" औपचारिक सवालों के खत्म हो जाने के बाद रागोज़िन ने पूछा।

"इसलिए कि मेरे रात्रिकालीन पास की अवधि खत्म हो गयी थी। मगर एक दिन पहले।"

"क्या बढ़वाना भूल गये थे?"

"नहीं, भूला तो नहीं था, पर घरबार के काम के कारण समय नहीं मिल पाया। सोचा था कि उस रात पास की ज़रूरत नहीं पड़ेगी और अगले रोज़ बढ़वा लूंगा। बेशक यह मेरा कसूर है।"

"वैसे भी आपको रात्रिकालीन पास क्यों चाहिये?"

"मुझे प्रायः काम पर देर हो जाती है। हमारा बहुत ही मेहनत का काम है। दिन में मुवक्किलों से निबटना पड़ता है और शाम को कागज़ात तैयार करने होते हैं। हमारे कई कर्मचारियों को ऐसे पास मिले हुए हैं।"

"क्या उस शाम भी काम पर रुकना पड़ा था?"

"नहीं, उस शाम नहीं।"

"तो कहां थे उस शाम?"

"उस शाम? निजी काम से कहीं गया था," ओज़्नोबिशिन ने हिचकते हुए जवाब दिया।

"घूमने?"

"हां।"

"किसी औरत के साथ?"

"हां," ओज़्नोबिशिन ने नज़रें झुका लीं।

रागोज़िन को लोगों को तरह-तरह की स्थितियों में देखने का मौका मिला था। वह आदमी की असलियत उसके शब्दों से ही नहीं, बल्कि उनके अंतर्मन की उन छोटी सी झलकियों से भी पहचान सकता था, जिन्हें भावों की रासायनिक क्रिया कहा जा सकता है और जब

आदमी की भावनाएं एकाएक कभी एक यौगिक में बदल जाती हैं और कभी अपने संघटक तत्त्वों के रूप में विघटित हो जाती हैं और इस तरह एक चीज़ दूसरी चीज़ को अस्पष्ट, प्रच्छन्न बना देती है तथा मिथ्या सत्य वास्तविक सत्य लगने लगता है। मगर ओज़्नोबिशिन के व्यवहार मे वह लेशमात्र भी छल न भांप सका और इसलिए जानना चाहता था कि उसकी सच्चाई कही नाटक तो नहीं है और क्या दूर-दर्शिता के कारण ही तो वह इतना स्पष्टवक्ता नहीं बन रहा है।

"क्या आप सचमुच सोचते हैं कि रात्रिकालीन पास के कारण आपको पकड़ा गया है?"

"बेशक नही," ओज़्नोबिशिन ने कंधे उचकाते और हल्के से हाथ फैलाते हुए कहा और इस तरह अपने शिष्ट हावभाव से संकेत दिया कि पहले तो वह अधिकारियों को ऐसे अन्याय का दोषी नहीं ठहरा सकता और, दूसरे, रात्रिकालीन नियमों-कानूनों से वह भली-भांति अवगत है।

"पर आपने तो अभी कहा कि आपको पास की अवधि गुज़र जाने के कारण पकड़ा गया था।"

"वह मैंने आपके इस सवाल के जवाब में कहा था कि मुझे क्यों पकड़ा गया। मुझे पास की अवधि खत्म हो जाने के कारण पकड़ा गया था। पर अभी आपने मुझसे पूछा कि क्या मैं सचमुच सोचता हूं कि मेरे पकड़े जाने का यही कारण है और मैं फिर दोहराता हूं कि नही, मैं ऐसा नही सोचता।"

"यानी कि आप जानते हैं कि आप यहां क्यों हैं?"

"नही, मैं नही जानता। मैं सिर्फ़ अंदाज़ लगा सकता हूं कि मेरे अतीत के कारण आपको मुझपर विश्वास नहीं है।"

"क्या काम करते थे आप?"

"मैं पब्लिक प्रोसीक्यूटर के कार्यालय में काम करता था।"

"किस ओहदे पर?"

"मैं जज के ओहदे का उम्मीदवार था।"

"क्या बहुत समय तक रहे?"

"हां – पहले शायद मैं कहता: अभाग्यवश," ओज़्नोबिशिन ने मुश्किल से दिखायी देनेवाली क्षमाप्रार्थी जैसी मुस्कान के साथ और

मानो झेंपते हुए जवाब दिया। "मगर अब मैं कहूंगा: सौभाग्यवश बहुत समय तक। कोई सात साल – विश्वविद्यालय से निकलने के तुरंत बाद से ही। जैसा कि पहले कहते थे, कैरियर के मामले में मैं बड़ा अभागा था।"

"क्यों?"

"क्या बताऊं?" ओज़्नोबिशिन ने भौंहें उठायीं। "बात यह है कि मैं कैरियरिस्ट कतई नहीं हूं। फिर मेरी सिफ़ारिश करनेवाला भी कोई न था। मैं मामूली परिवार का हूं।"

"अगर कोई सिफ़ारिश करनेवाला होता?"

"तब भी शायद ही कोई काम बन पाता।"

"अच्छी सिफ़ारिश है, जो काम नहीं आ सकती!" रागोज़िन ने टिप्पणी की।

"आप ठीक कहते हैं," ओज़्नोबिशिन ने सहमति जतायी और मानो मज़ाक में आगे कहा, "लेकिन मेरी सिफ़ारिश करने को शायद ही कोई तैयार होता।"

"क्या आप इतने अभागे हैं?"

"हां, स्वभावतः।"

"स्वभावतः से आपका मतलब?"

"यानी कि अपने स्वभाव मे ही।"

और उसने फिर आंखें कुछ झुका लीं।

"प्रोसीक्यूटर कार्यालय में मुझपर भरोसा नहीं करते थे।"

"भरोसा नहीं करते थे?"

"मैं और अधिकारियों जैसा नहीं था, इसी से भरोसे योग्य नहीं समझा गया।"

रागोज़िन ने सहसा दृढ़तापूर्वक कहा,

"भरोसा नहीं करते थे, मगर पब्लिक प्रोसीक्यूटर ज़रूर बना दिया!"

ओज़्नोबिशिन का चेहरा ही नहीं, सारा तना हुआ शरीर भी कोई सवाल करना चाह रहा था, पर उसे वह किसी भी प्रकार अपने निश्चल और ठेस व्यक्त करनेवाले होंठों पर न ला सका। बड़ी मुश्किल से उसने अपनी भावनाओं पर काबू पाया और परेशानीभरे स्वर में कहा,

"बताऊं, क्यों?"

"मैं नहीं जानना चाहता। हां, इतना ज़रूर चाहता हूं कि आप अपने अतीत के बारे में मुझसे कुछ भी न छिपायें।"

"मैं कुछ नहीं छिपा रहा हूं," ओज़्नोबिशिन ने कहा। उसके चेहरे पर जो ठेस का भाव उभर आया था, वह अभी पूरी तरह खत्म नहीं हुआ था। फिर भी अपने होंठों पर एक कड़ुआहटभरी, मगर बहुत ही विनम्र और सौम्य मुस्कान लाते हुए वह आगे बोला,

"अब समझा कि आप मुझपर अपनी असलियत को छिपाने का शक कर रहे हैं। मगर यह ठीक नहीं है। मैं प्रोसीक्यूटर कभी नहीं था। क्रांति से ठीक पहले मुझे कोर्ट चैंबर के सेक्रेटरी का काम ज़रूर सौंपा गया था, पर स्थायी तौर पर नहीं। यह बात कैसे फैली कि मैं पब्लिक प्रोसीक्यूटर था? मेरे ख्याल में इसका कारण शायद यही हो सकता है कि अक्तूबर क्रांति के ठीक दो दिन पहले, यानी अस्थायी सरकार के जमाने में, चैंबर को पेत्रोग्राद से एक आदेशपत्र मिला था, जिसके अनुसार मुझे असिस्टेंट प्रोसीक्यूटर नियुक्त किया गया था। नियुक्ति २३ तारीख को हुई थी और सरकार, जैसा कि आप जानते हैं, २५ तारीख को गद्दी से उतार दी गयी। नियुक्ति से संबंधित कोई भी औपचारिकताएं पूरी नहीं हो पायीं।"

"पूछताछ में आपने ये सब बातें क्यों छिपायीं?"

"मैंने कुछ नहीं छिपाया। मुझसे पूछा गया था: मैं क्या था? रही बात इसकी कि मैं क्या नहीं था, यह सवाल जब मुझसे पूछा ही नहीं गया, तो मैं जवाब क्या देता!"

"फिर भी आप अगर ज़ार के ज़माने में नहीं, तो केरेन्स्की के जमाने में तो प्रोसीक्यूटर थे ही?"

"नहीं, मैं प्रोसीक्यूटर तो क्या, असिस्टेंट प्रोसीक्यूटर भी नहीं था, क्योंकि मैंने उस पद का चार्ज कभी नहीं लिया।"

"लेकिन ज़ार के ज़माने में चैंबर के सेक्रेटरी तो थे?"

"केवल अस्थायी तौर पर, स्थायी तौर पर कभी नहीं," ओज़्नोबिशिन ने यों कहा, मानो बिल्कुल सच बोल रहा हो।

रागोज़िन हंस पड़ा।

"बड़े चालाक हैं आप!"

"इसमें चालाकी की क्या बात है? मैंने जो कुछ कहा है, दस्तावेज़ों से उसकी तसदीक हो सकती है। चैंबर के सभी दस्तावेज़-कागजात सही-सलामत हैं। और फिर आप जितने चाहें, गवाह भी मैं पेश कर सकता हूं।"

"केरेन्स्की को आप इतने पसंद क्यों आये कि उसने आपको प्रोसीक्यूटर बना दिया?"

"प्रोसीक्यूटर नहीं, असिस्टेंट प्रोसीक्यूटर और केरेन्स्की ने नहीं, केरेन्स्की सरकार ने," ओज़्नोबिशिन ने गलती सुधारी। "केरेन्स्की मुझे नहीं जान सकता था। फिर उन दिनों नियुक्तियां थोक में की गयी थीं।"

"क्या मतलब?"

"सभी अदालतों और उनके मातहत हल्कों में एक साथ बहुत से लोगों की नियुक्तियां हुई थीं—ठीक वैसे ही, जैसे सेना में जनरल आर्डर जारी करके लेफ़्टिनेंट बनाये जाते हैं।"

"लेकिन इन नियुक्तियों का उद्देश्य क्या था? सरकारी पदों को केरेन्स्की के वफ़ादार आदमियों से भरना, है न?"

"उद्देश्य, जहां तक मैं समझता हूं, अदालतों में ज़ारशाही के अधिकारियों की जगह पर अधिक उदारमना और नौजवान लोगों को लाना था। नियुक्त उन्हें किया गया, जिन्हें ज़ार के ज़माने में ऊपर नहीं उठने दिया गया था, जिनपर किसी वजह से भरोसा नहीं किया जाता था। मैं समझता हूं कि बहुत से दूसरों की तरह मैं भी इन्हीं लोगों की श्रेणी में आता था। इतने सालों से मुझे जज के पद का उम्मीदवार देखकर शायद सोचा होगा कि ज़ारशाही न्याय-कानून के कर्त्ताधर्ताओं को मैं कोई खास पसंद नहीं हूं।"

"यानी कि उस न्याय-कानून की नज़रों में आपमें कोई खूबी नहीं थी?"

"खूबी? बात शायद उल्टी ही थी," ओज़्नोबिशिन ने कंधे थोड़ा सा उचका दिये। "क्रांति से पहले शायद अधिकारियों को मुझसे जो असंतोष था, उसी के इनाम के तौर पर तो क्रांति के बाद मुझे मौजूदा नौकरी मिली है, हालांकि, न जाने क्यों, यही अब मेरे गले का ढोल भी बन गयी है।"

"अच्छा! इनाम के तौर पर!" रागोज़िन ने व्यंग्य से हंसते हुए कहा। "बातों को आप अच्छा तोड़ते-मरोड़ते हैं!"

"मैं तोड़-मरोड़ नहीं रहा हूं, मैं सिर्फ़ यही कहना चाहता हूं कि क्रांति से पहले मैं नौकरी में कोई तरक्की नहीं कर सका था, क्योंकि बड़े अधिकारी मुझपर भरोसा नहीं करते थे।"

"लेकिन क्यों?" रागोज़िन ने कुछ चिढ़ते हुए पूछा। "आप बार-बार कह रहे हैं कि आप पर भरोसा नहीं करते थे। पर क्यों नहीं करते थे? क्या वजह थी?"

"मैं केवल अनुमान लगा सकता हूं," ओज़्नोबिशिन ने यों जवाब दिया, जैसे कि किसी दोस्त को कोई राज़ की बात बता रहा हो। "शायद इसलिए कि मैं दमन के विरुद्ध था और राजनीतिक मामलों में कोई खास रुचि नहीं लेता था। बेशक, मुझे कोई महत्त्वपूर्ण काम नहीं सौंपा जाता था। मेरा काम बस सबूत-गवाहियां जुटाना और तैयार करना ही था। लेकिन इसमें भी जहां तक मुझसे हो सकता था, मैं ज़ारशाही द्वारा अपने विश्वासों के लिए सताये जानेवालों की हर तरह से मदद करता था। मौका पड़ने पर मैं क्रांतिकारियों की मदद करने से भी नहीं चूका।"

"ऐसी बात है!" रागोज़िन ने सिर को हल्का सा पीछे झटकते हुए कहा। "कोई मिसाल दे सकते हैं?"

"मिसाल के लिए रागोज़िनवाले मामले में ही, जिसने तब बड़ी सनसनी मचायी थी," ओज़्नोबिशिन बोला।

"यह ... यह कौन सा मामला था रागोज़िनवाला?" रागोज़िन ने कुछ रुककर पूछा।

"उसका संबंध एक गुप्त छापाखाने से था, जिसे रागोज़िन नाम का कोई क्रांतिकारी चलाता था। उसमें बहुत से लोग फंसे थे। मामला बहुत लंबा खिंचा, मगर रागोज़िन आखिर तक नहीं पकड़ा जा सका। वह भाग गया था।"

"कौन था यह रागोज़िन?" रागोज़िन ने ओज़्नोबिशिन को टकटकी लगाकर देखते हुए पूछा। "क्या सोशलिस्ट-रिवोल्यूशनरी था?"

"नहीं, सोशल-डेमोक्रेट था और रेलवे डिपो में मजदूरी करता था। उस मामले में कई बुद्धिजीवी और नौजवान लोग भी उलझे हुए थे।"

"और आपने ... आपने भी क्या मुकदमे में हिस्सा लिया था?"

"मामला चैंबर के हाथों में था और मुझे उससे संबंधित कागज़ात तैयार करने का काम सौंपा गया था। इसलिए मैं सब कुछ जानता था। बेशक मेरा कोई खास प्रभाव तो था नहीं, फिर भी मैं उस मामले में फंसे पास्तुखोव की मदद करने का सौभाग्य अवश्य पा सका। आपने उसका नाम सुना होगा – जाना-माना नाटककार है।"

"क्या उसका भी कोई ... मेरा मतलब है कि क्या वह भी अंडर-ग्राउंड आंदोलन में था?"

"नहीं, वह अपने कुछ अप्रत्यक्ष संबंधों के कारण फंसा था और बहुत से दूसरों की तरह उसे भी निर्वासन की सज़ा हो सकती थी। त्स्वेतुख़िन – एक स्थानीय अभिनेता – भी इसमें फंसा हुआ था। मैंने उसकी भी मदद की। बेशक, इन 'अविश्वसनीय' लोगों – उन दिनों ऐसे लोगों को इसी नाम से पुकारते थे – के प्रति मेरी सहानुभूति मेरे अफ़सर यानी असिस्टेंट प्रोसीक्यूटर को पसंद नहीं आ सकती थी। मेरे साथ काम करनेवाले दूसरे लोग भी मुझे संदेह की नज़रों से देखने लगे थे। प्रोसीक्यूटर कार्यालय में मुझपर भरोसा न किये जाने से मेरा मतलब यही था।"

"यानी कि यह मामला बहुत गंभीर था, ठीक है न?" रागोज़िन ने ओज़्नोबिशिन की ओर से मुंह मोड़ते हुए कहा।

"कौन, रागोज़िनवाला? बहुत ही पेचीदा – पर्चे, गुप्त संगठन, छापाखाना, ढेर सारे अभियुक्त। हमारे हल्के में ऐसी सनसनी बहुत कम मामलों ने मचायी थी।"

"और वह, क्या नाम था उसका ... रागोज़िन, उसे कुछ नहीं हुआ?"

"कह नहीं सकता। उसे पकड़ा नहीं जा सका और कानून के अनुसार, उसके मामले की फ़ाइल बंद कर दी गयी। हो सकता है कि उसे कुछ न हुआ हो – ऐसी मिसालें बहुत हैं; जब पुरानी सरकार अनुभवी क्रांतिकारियों का कुछ नहीं बिगाड़ सकी थी।"

"अनुभवी क्रांतिकारियों का ... बेशक," रागोज़िन बुदबुदाया, फिर यों ही पूछा, "उसके क्या बीवी-बच्चे नहीं थे?"

"किसके? रागोज़िन के? जहां तक मुझे याद है, बच्चे नहीं

थे। हां, बीवी ज़रूर थी। यह मुझे मालूम है, क्योंकि वह खुद भाग गया लेकिन उसकी बीवी नहीं भाग सकी थी और पकड़ ली गयी थी। बाद में यहां जेल में पूछताछ के दौरान उसकी मृत्यु हो गयी।"

"क्या हो गया था उसे? वह कैसे मरी?"

"आप जानते हैं, जेल क्या होती है। अगर मुझे सही याद है, तो उसकी मृत्यु बच्चे को जन्म देते हुए हुई थी।"

रागोजिन ने अपने सामने रखे कागज़ उठाये और सिर झुकाकर जड़ सी अवस्था में उन्हें यों देखने लगा, मानो उनमें कुछ पढ़ने की कोशिश कर रहा हो। बाद में आंखें उठाते हुए एकाएक पूछा,

"और बच्चा? क्या वह ज़िंदा रहा?"

"कह नहीं सकता। वैसे संभव भी है।"

"मैं भी जानता हूं कि संभव है। पर मैं पूछ रहा हूं: आपको मालूम है कि नहीं?" रागोज़िन ने कड़ाई से पूछा।

"नहीं, मुझे नहीं मालूम," ओज़्नोबिशिन ने चौकन्ना होते और अपनी छोटी-छोटी आंखों को भींचते हुए, जो एकाएक फिर शांत हो गयी लगती थी, जवाब दिया।

"संभव तो है, इसमें कोई शक नहीं," रागोज़िन ने पहले जैसे शांत-संयत स्वर में और मानो यह दिखाने की कोशिश करते हुए कहा कि वह अपने व्यवहार में बेअदबी सहन नहीं करेगा। "मैंने आपसे इसलिए पूछा कि सभी जानते हैं कि ऐसे बच्चे – जेल में पैदा हुए बच्चे – बहुत ही ज्यादा हैं।"

"निस्संदेह," ओज्नोबिशिन ने झिझकते हुए पुष्टि की।

"और उनकी चिंता करने की जरूरत है।"

"बच्चों की अब सचमुच बड़ी चिंता की जा रही है," ओज़्नोबिशिन ने गहरी सांस भरी।

"अब?" रागोज़िन ने फिर कड़ाई से कहा। "अब की बात दूसरी है। लेकिन पहले भी क्या उनके बारे में सोचते थे? जेल में पैदा हुए बच्चे की कौन परवाह करता था? क्या होता था उस बच्चे का? कहां भेजते थे उसे? – मैं आपसे पूछ रहा हूं।"

"आम तौर पर यतीमखाने में," ओज़्नोबिशिन बोला।

"यतीमखाने में? किस यतीमखाने में?"

"ऐसे कई यतीमखाने थे।"

"मैं जानता हूं। मैं पूछ रहा हूं कि माना कि उस ... वही औरत, जिसकी आपने चर्चा की और जो मर गयी, उसका बच्चा ज़िंदा बचा रहा। उस बच्चे का क्या हुआ होगा? उसे कहां भेजा होगा?"

"कह नहीं सकता," ओज़्नोबिशिन ने अपनी आवाज़ में सतर्कता लाते हुए कहा। "लेकिन मालूम करने की कोशिश की जा सकती है, अगर आपकी दिलचस्पी रागोज़िन की बीवीवाले मामले में ही है।"

"मालूम हो सकता है?"

"हां। रागोज़िनवाली फ़ाइल में इस बारे में कुछ न कुछ ज़रूर होगा।"

"यह फ़ाइल क्या बची रही होगी?"

"मैं आपको बता ही चुका हूं कि चैंबर के सभी दस्तावेज़ सही-सलामत हैं।"

"आप क्या उसे खोज सकते हैं?" अचानक व्यग्र होते हुए रागोज़िन ने पूछा।

"शायद – बहुत करके," एक क्षण कुछ सोचकर ओज़्नोबिशिन ने रुकते-रुकते जवाब दिया। "मगर अपनी मौजूदा हालत में नहीं, कम से कम जब तक मैं अपनी आज़ादी से वंचित हूं, तब तक तो कतई नहीं।"

सहसा दोनों चुप होकर देर तक एक दूसरे को, मानो सब कुछ समझनेवाली दृष्टि से देखते रहे। रागोज़िन की जल्दी-जल्दी चल रही सांस और मूंछों के बीच से निकलती सी-सी की आवाज़ साफ़ सुनायी दे रही थी, जबकि ओज़्नोबिशिन के अधखुले मुंह से घर्राती सी उसांसें निकल रही थीं। दोनों कई क्षण तक निश्चेष्ट बैठे रहे। फिर रागोज़िन ने अपने सामने मेज़ पर रखी फ़ाइल को उलटकर और अलग खिसकाकर रुखाई से पूछा,

"तो आपका कहना है कि आपने ज़ारशाही अदालत द्वारा सताये जा रहे कुछ लोगों की मदद की थी? उदारपंथी के नाते? उदारपंथी इरादों से?"

"सहानुभूति की वजह से," ओज़्नोबिशिन ने स्पष्ट किया।

"समझा। सिर्फ़ जब हम सत्ता में नहीं होते, तब हमसे कोई सहानुभूति नहीं दिखाता।"

"मगर यह तो आप लोगों के सत्ता में आने से पहले की बात है," ओज़्नोबिशिन ने विनम्रतापूर्वक याद दिलायी।

"पर आप अपनी इस सहानुभूति की बात आज जब हम सत्ता में हैं, तब कर रहे हैं, न कि ज़ार के दिनों में," रागोज़िन ने आपत्ति की। "आप उन सब लोगों के नाम एक कागज़ पर लिखकर दे दें, जो आपकी पिछली नौकरी से संबंधित आपके बयानों की तसदीक कर सकते हों। और कुछ तो नहीं पूछना है मुझसे?"

"हां, एक सवाल है। मैं रिहाई का प्रार्थनापत्र किसे दूं?"

"उसकी जरूरत नहीं है। आयोग छानबीन करके खुद तय कर लेगा। अब आप जा सकते हैं।"

ओज़्नोबिशिन उठा और उसी तरह विनम्रतापूर्वक झुका, जिस तरह कि कमरे में आते वक्त झुका था। वह दरवाज़े पर पहुंचा ही था कि रागोज़िन ने कुछ सोचते हुए उसे रोक लिया।

"एक मिनट। तो क्या आप उस दिलचस्प मामले की, वही जिसके बारे में आप बता रहे थे, फ़ाइल ढूंढ़ने में मदद कर सकते हैं?"

"रागोजिनवाले मामले की?" ओज़्नोबिशिन ने पूछा और फिर एक बहुत ही वफ़ादार सलाहकार की भांति और बड़े-बुजुर्गों जैसे स्नेह से कहा, "हां, इसमें मुझसे अधिक मददगार और कोई शायद ही मिले। चैंबर के सभी कागजात से मैं परिचित हूं। लेकिन गुप्त पुलिस और यहां जेल के कागजात भी देखने पड़ेंगे, क्योंकि सुराग बिल्कुल अप्रत्याशित रूप से भी मिल सकते हैं।"

"और हो सकता है कि यतीमखानों में भी?" रागोज़िन ने सुझाया।

"यतीमखानों में?" ओज़्नोबिशिन पहले तो न समझ पाया, मगर जब समझ गया, तो हड़बड़ाकर बोला, "हां, हां, क्यों नहीं! भूतपूर्व यतीमखानों में भी। बच्चे के बारे में न?"

"हां। खैर आप जा सकते हैं," रागोज़िन ने अधीरतापूर्वक कहा। किन्तु तभी एक अजीब सी अचकचाहट और खीझ ने उसे एक और सवाल पूछने को प्रेरित कर दिया, जो स्वयं उसके लिए भी अप्रत्याशित था।

"आप मेरा नाम जानते हैं? किसी ने बताया नहीं?"

"नहीं। पर क्या अव जान सकता हूं, कामरेड ?"

रागोज़िन ने उसे अनसुना करते हुए कड़ी आवाज़ में कहा, जैसे कि उसकी आज्ञा का पालन न किया जा रहा हो।

ज्यों ही गलियारे से ओज़्नोबिशिन और उसे ले जानेवाले संतरी के कदमों की आहट सुनायी देना वंद हुआ, रागोज़िन उछलकर खड़ा हो गया और कमरे में तेज़ी से चहलकदमी करने लगा।

"ओह कितना बेवकूफ़ हूं मैं भी!" कसी हुई मुट्ठी ज़ोर से खिड़की के सिल पर पटकते हुए वह चिल्लाया। "अव वह सोचेगा कि मुझे उसकी ज़रूरत है। क्या भूत सवार हो गया था मुझपर, और वह भी आज ही के दिन!"

उसने फिर सिल पर मुट्ठी मारी और इसके वाद खिड़की खोलकर उसके सीखचे कसकर पकड़े वुत की तरह खड़ा हो गया।

उसकी आंखों के आगे फिर जेल के अहाते की नंगी, वीरान ज़मीन फैली पड़ी थी। शायद क्साना जीवन में अंतिम वार इसी कड़ी, संवेदना-शून्य ज़मीन को अपने थके-हारे पैरों से स्पर्श करती हुई गुज़री होगी। क्साना! एक क्षण के लिए वह रागोज़िन के सामने जीती-जागती खड़ी थी, जव किन्हीं पराये से होंठों से वह इतने अरसे से किसी द्वारा न दोहराया गया, वहुत-वहुत पहले कहा गया प्यारभरा शव्द निकला – पत्नी! रागोज़िन की नज़र उसके हाथों पर पड़ी और याद आया कि कैसे वह अपनी नुकीली कोहनियां उसके गोल, खुरदरे घुटनों पर रख दिया करती थी और छोटी-छोटी हथेलियां यों ऊपर फैला देती थी कि जैसे इंतज़ार कर रही हो कि वह उनमें कुछ भरेगा, उंडेलेगा, जिसे वह वहुत संभालकर भविष्य में ले जायेगी। यह भविष्य तो आ गया था, पर क्साना नहीं थी और वह, रागोज़िन, न जाने कितने वर्षों से अपने विचारों-स्वप्नों के साथ विल्कुल अकेला रह गया है। किंतु नहीं, अकेला तो वह नहीं है – उसके साथ उसके साथी, वहुत से साथी भी हैं और वह अपने मन की कोई भी वात उनसे खुलकर, गंभीरतापूर्वक कह सकता है। हां, यह अलग चीज़ है कि हर वार साथियों से वातें करते हुए उसे सही-सटीक शव्द खोजने पड़ते हैं, जवकि क्साना उसके सिर की मूक हरकत, उसकी अधमुंदी आंखों, उसकी घुरघुराहट, उसके खंखारने

और, शायद जो सबसे महत्त्वपूर्ण था, उसके उस अटपटे से, मगर साथ ही उन्मुक्त परिहास से ही सब कुछ समझ जाती थी, जिससे वह अपनी पत्नी को तब देखा करता था, जब वे अपने होनेवाले बच्चे के बारे में, जिसकी वे दोनों इतनी आतुरता से प्रतीक्षा कर रहे थे, उस बच्चे के बारे में सोच रहे होते थे। क्साना जेल में बच्चे को जन्म देते समय चल बसी थी, यह रागोज़िन को आठ साल पहले ही मालूम हो गया था और अब तक वह अपने इस असांत्वनीय दुख का आदी भी बन चुका था। अपने शहर में लौटने के बाद उसने उस अविस्मृत मृत्यु के ब्योरे मालूम करने की कोशिश की थी, मगर हर कहीं नये लोग थे और कोई उसे कुछ नही बता सका। न जाने क्यों वह सोचता था कि यदि कोई औरत बच्चा जनते हुए मर जाती है, तो बच्चा भी ज़िंदा नहीं रहता या मरा हुआ पैदा होता है। किंतु क्साना की मृत्यु के बाद भी बच्चा, बेटा – हां, हां, बेशक बेटा ही! – ज़िंदा रह सकता था, यह बात उसे सहसा अभी ही सूझी। वह तो सोचता था कि क्साना की मृत्यु के साथ सब कुछ हमेशा के लिए खत्म हो गया था। किंतु एकाएक अब वह पाता है कि यह उसका बहुत बड़ा भ्रम था! क्साना पूरी तरह नहीं मरी थी, बल्कि उसके लिए अपना एक हिस्सा, उसके साथ बिताये हुए अपने जीवन का एक हिस्सा छोड़ गयी थी और यह हिस्सा मर नहीं सकता था, कभी नहीं! बेटा, बेटा, जिसकी उन्हें इतनी प्रतीक्षा थी और जिसके रूप में वे मानो अपने पहले, रागोज़िन को कालापानी मिलने के बाद मरे बच्चे को फिर से जीवित हुआ चाहते थे! और उसकी जान से भी प्यारी क्साना का यह बेटा निश्चय ही जीवित था! इस विश्वास ने रागोज़िन को सहसा पूरी तरह अभिभूत कर दिया और वैसा ही यथार्थ बन गया, जैसा यथार्थ कि रागोज़िन की आंखों के सामने नंगी ज़मीन पर अचल खड़ी वह विशाल जेल थी। इसी जेल मे उसके बेटे का जन्म हुआ था और इसी जेल में उसका यह विश्वास भी पैदा हुआ कि बेटा ज़िंदा है और मरा नहीं होगा।

"मैं उसे खोज कर रहूंगा," उसने दृढ़ता से कहा और ज़ोर लगाया, ताकि ठंडे सीखचों पर कसी मुट्ठी खुल जाये। खिड़की से मुड़ते हुए उसकी नजर मेज पर रखे कागजों पर पड़ी, जो उसे काम में जुट जाने के लिए बुला रहे थे।

ओज़्नोबिशिन की तफ़्तीश की याद करके वह इस नतीजे पर पहुंचा कि नहीं, वह प्रोसीक्यूटर नहीं था, क्योंकि अगर होता, तो इसी शहर में न रहता और भाग जाता। इतना चालाक और सावधान तो वह है ही!

रागोज़िन ने लिखा: "गवाह बुलाकर ओज़्नोबिशिन के बयान की सच्चाई की जांच करें" और फिर अगली फ़ाइल देखने लग गया। वह एक अजीब से तनाव में काम कर रहा था। उसने बहुत कोशिश की कि बेटे के बारे में न सोचे, पर हर समय उसी के बारे में सोचता रहा: उसे कैसे खोजे, कहां से पता चलाये, किससे मदद मिल सकती है और कैसे जब वह मिल जायेगा, तो उसे अपने साथ रखेगा और दोनों साथ-साथ रहने लगेंगे।

दिन खत्म होते-होते रागोज़िन इतना थक गया था कि घर भी बड़ी मुश्किल से वापस पहुंच पाया। बदन में ताज़गी लाने के लिए वह पैदल ही चल पड़ा था। अहाते में मकान-मालकिन ने अफ़सोस सा ज़ाहिर करते हुए बताया,

"एक कामरेड आपसे मिलने आया था और खेद प्रकट कर रहा था कि आपसे मुलाकात न हो सकी।"

"कौन कामरेड?"

"जवान सा था। कार से आया था और कार भी ऐसी थी कि सारी गली के लड़कों का हजूम लग गया।"

"नाम क्या था? पूछा नहीं?"

"वह एक पर्ची और अपना पता छोड़ गया है। बहुत कह रहा था कि आपको उसका नमस्कार कहना भूलूं नहीं।"

रागोज़िन धीरे-धीरे सीढ़ियां चढ़कर अपने कमरे में पहुंचा और बिना किसी खास दिलचस्पी के मेज़ से पर्ची उठायी। किंतु हस्ताक्षर पर नज़र पढ़ते ही वह सभी पंक्तियों को एक ही बार में लील गया। उसे किसी नुकीली पैंसिल से लिखा हुआ था, जिससे कागज़ कहीं-कहीं फट गया था।

"प्रिय प्योत्र पेत्रोविच! मैं आया था। पर अफ़सोस कि तुम न मिल पाये! पर अब जाओगे कहां — सारा सरातोव मेरी हथेली पर

है! मुझे मालूम है कि तुम्हें क्या काम दिया गया है और यह भी कि उसमें कोई खास मज़ा नहीं है। लेकिन ज्यों ही किसी शाम फ़ुरसत मिले, मुझे मिलने आना। मैं अभी मां के साथ रह रहा हूं – फ़ौजी मुहल्ले में। ट्राम के आखिरी स्टाप पर पहुंचकर स्कूल का पता पूछना। वहीं हम रहते हैं। तुमसे मिलने और तुम्हें देखने की बहुत इच्छा है। मैं अधीरता से इंतज़ार करूंगा।

किरील।"

रागोज़िन ने पर्ची मेज़ पर फेंककर हथेली से उसे धप्प से दबाया और फिर दोनों हाथ ऊपर छत तक उठाकर आपस में गुंथी हुई अंगुलियां चटकाते हुए गहरी सांस छोड़ी,

"अच्छा, तो किरील महाशय आये थे!"

और हंसते हुए दरवाज़े के पास जाकर मकान-मालकिन को आवाज़ लगायी,

"समोवार नहीं गरमा सकतीं क्या?.. अच्छा होता... और क्या पिछली बार की वोद्का कुछ बची हुई है? एक-आध चुस्की उसकी भी हो जाती, तो बुरा न था!"

एक बार फिर वह बुदबुदाया, "तो किरील पधारे थे!" और एक बार फिर हंस पड़ा।

८

ख़्वालीन्स्क जाने के लिए स्टीमर पर बैठने की दीविच की सभी कोशिशें बेकार सिद्ध हुई थीं। किंतु इन असफलताओं से उसका घर पहुंचने का इरादा और पक्का ही बनता गया था और उसने तय कर लिया था कि अगर यात्री स्टीमर न मिला, तो किसी कर्षक नौका से ही चला जायेगा या फिर किसी बजरे पर खलासी बन जायेगा, क्योंकि उसके लिए अब सब एक बराबर था। उसने सभी घाटों के चक्कर लगाये, मगर हर कहीं मिठाई के गिर्द भिनभिनाती मक्खियों की तरह लोगों की भीड़ लगी हुई थी। फिर सभी दफ़्तरों के दरवाज़े खटखटाकर, पास, परमिट या इजाज़त पाने के लिए लगी कतारों में रात-रात भर खड़ा रहकर, नेक दिल से दी हुई तरह-तरह की सलाहों पर या उनके विपरीत चलकर भी देख लिया, मगर काम किसी भी तरह नहीं बन पा रहा था।

इसी तरह भटकते-भटकते एक बार वह नगर के सैनिक कमिसार के दफ़्तर में पहुंचा। लेकिन पहले दिन जब वह आया, कमिसार किसी से नहीं मिल रहा था। अगले दिन दीबिच को शाम तक रोटी की कतार में खड़े रहना पड़ा। तीसरे दिन उसे बताया गया कि मुलाकात का दिन कल था और उसे मुलाकात के दिन ही आना चाहिए। चौथे दिन कमिसार को किसी ज़रूरी काम से कहीं बुला लिया गया और सिर्फ़ पांचवें दिन जाकर ही दीबिच का नाम मुलाकातियों की लिस्ट में दर्ज किया जा सका। और जगहों की तरह सैनिक कमिसार के दफ़्तर में भी बेहद भीड़ लगी हुई थी। लोग देखने में तो एक जैसे थे, मगर वास्तव में उनमें बहुत फ़र्क था। कोई ज़ारशाही फ़ौज की बहुत पहले ही भंग कर दी गयी टुकड़ियों के सैनिक थे और अपने किसी निजी काम के सिलसिले में मदद मांगने आये थे, तो कोई लाल सेना के नये रंगरूट थे। कुछ लोग ऐसे भी थे, जो बीमारी की वजह से छुट्टी पर थे या भरती की तारीख बढ़वाना चाहते थे या सैनिक सेवा से कतराने के लिए जिनसे जवाब-तलब किया जाना था। वहां जवान और बूढ़े, हर तरह के दिन देख चुके, घरबार, शांतिमय काम-धंधों और नाते-रिश्तेदारों से कटे हुए मर्द, सभी थे। सबके सब थके हुए थे। कुछ की कटुता तो इस हद तक पहुंच चुकी थी कि अपने भाग्य के निपटारे – घर या फ़ौज, इसके फ़ैसले – के लिए वे कुछ भी कर गुज़रने को तैयार थे, सिवाय इस घिसी हुई सीढ़ियों और ड्योढ़ियों पर और गलियारों और पुराने व बदरंग पोस्टर टंगे कमरों में बैठे-बैठे अंतहीन इंतज़ार करने के।

दीबिच की मुलाकात की बारी दोपहर बाद ही आ सकी। सैनिक कमिसार अपंग सैनिकों को पेंशन न दिये जाने की शिकायतें और मदद व भत्तों की मांगें सुनते-सुनते तब तक थक चुका था और घुटन के मारे पसीने से सराबोर तथा सिगरेट के धूएं से बदहवास सा हुआ मेज़ पर कोहनियां टिकाये बैठा था। सजे-संवरे बालों और नयी, लकदक ख़ाकी वर्दीवाला एक नौजवान अफ़सर अपनी शक्ल सूरत पर इतराता हुआ उसे कुछ रिपोर्ट कर रहा था। ख़ाकी वर्दी देखते ही दीबिच ने घृणा सी महसूस की, क्योंकि एक तो वह लड़ाई के ज़माने में सैनिक मुख्यालय के इर्दगिर्द चक्कर काटनेवाले छैलों की याद दिलाती थी

और दूसरे, उसकी हर चीज़ से ज़्यादती झलक रही थी – कोट लगभग घुटनों तक लंबा था, सीने और बगल की जेबें ऊपर से सिली हुई और लैटरबक्स जैसी बड़ी-बड़ी थीं; पतली कमर पर बंधी पेटी एक बालिश्त से कम चौड़ी न थी, चुन्नटदार बिरजिस गाड़ी के पहिये जैसी फूली हुई थी और सींकिया टांगों पर पट्टियां ऐसी सावधानी से लपेटी हुई थीं कि देखनेवाले को डंडे में सजाकर डाले हुए छल्लों का भ्रम हो जाये।

"लेकिन यह तो असभ्यता है," नौजवान अफ़सर ने अपनी बात खत्म करते हुए घृणापूर्वक कहा और हथेली का किनारा अपने बालों पर फेरा।

"सचमुच?" कमिसार ने कहा और सामने रखे कागज़ों पर अपने काले, गंदे नाखूनों से ठुक-ठुक करने लगा – एक-दो, एक-दो, एक-दो-तीन, जैसे कि मन ही मन कोई सरल बाल-धुन गुनगुना रहा हो।

"आपका क्या काम है, कामरेड?" फिर दीविच को देखकर उसने पूछा। जब दीविच ने सब कुछ बता दिया, तो वह उबासी सी लेते हुए बोला, "इसका हमसे कोई मतलब नहीं। इसके लिए आप युद्धबंदी समिति के पास जायें।"

"मैं दो बार वहां भी हो आया हूं।"

"तो क्या कहा उन्होंने?"

"उन्होंने मुझे विस्थापन विभाग में भेजा, विस्थापन विभाग ने सामाजिक कल्याण विभाग में, सामाजिक कल्याण विभाग ने कमांडेंट के पास और कमांडेंट ने आपके पास। आखिरकार मैं..." दीविच के लिए अपने गुस्से पर काबू रख पाना कठिन सा हो रहा था।

"श्श!" नौजवान अफ़सर ने अपना बायां अंगूठा पेटी में खोंसते हुए उसे बीच ही में टोक दिया।

"आपको राशन कहां से मिलता है?" कमिसार ने पूछा।

"सेना से। अस्पताल से हाल ही में छूटे सैनिक के नाते।"

"यह तो गलत है। आपको राशन युद्धबंदी समिति से मिलना चाहिए।"

"मुझे कोई फ़र्क नहीं पड़ता। मैं अपने शहर, अपने घर पहुंचना चाहता हूं, बस।"

"आपको नहीं पड़ता, मगर हमें तो पड़ता है।"

"जब तक मुझे, यानी एक भूतपूर्व सैनिक, बीमार सैनिक, बरखास्त सैनिक को, या चाहें पागल भी कह लीजिये, मुझे इससे कोई फ़र्क नहीं पड़ता, घर पहुंचाने का इंतज़ाम नहीं कर दिया जाता," दीबिच अड़ा रहा, "मैं अपने को सेना विभाग के मातहत समझता हूं। जब तक मुझे ख़्वालीन्स्क नहीं भेज दिया जाता, मैं यहां से टस से मस नहीं होऊंगा।"

"सोच-समझकर बोलें," नौजवान अफ़सर ने फिर उसे बीच ही में टोक दिया। "आप जानते हैं, किससे बात कर रहे हैं? कामरेड सैनिक कमिसार ने बता तो दिया है कि आपके लिए ज़िम्मेदार अब सिविल विभाग, सोवियत विभाग हैं, न कि सैनिक विभाग। समझ में आया?"

"इन्हें नगर सोवियत के नाम एक पर्ची दे दो। वे अपने आप देख लेंगे कि क्या करना है," कमिसार ने सारे झगड़े को खत्म करते हुए कहा और नाखूनों से फिर ठुक-ठुक करने लग गया।

नौजवान अफ़सर ने भौंह के इशारे से दीबिच को दरवाज़ा दिखाया, एड़ियां बजाकर सावधान की मुद्रा में खड़ा हुआ और फिर पहले खुद ही कमरे से बाहर निकल गया। उसके बूट चौड़ा हिस्सा आगे करके रखी हुई इस्तरियों जैसे थे और ललाई ली हुई अंडे की ज़र्दी की तरह चमक रहे थे। वह बाहर के अपने कमरे में पहुंचा ही था कि टेलीफ़ोन की घंटी बजी। उसने रिसीवर उठाया, कान पर लगाया और फिर कुछ रुखाई से कहा,

"मैं, ज़ुबीन्स्की, एडीकांग सुन रहा हूं... हां-हां, ज़ुबीन्स्की, एडीकांग... अगर आप 'एडीकांग' का मतलब नहीं जानते, तो आप या तो सिविलियन हैं या फिर घनचक्कर!"

उसने रिसीवर रख दिया, दीबिच के कागज़ात मांगे और उन्हें पढ़ते हुए पूछा,

"आप स्थायी अफ़सरों में से हैं?"

तभी टेलीफ़ोन की घंटी फिर बज उठी।

"यह फिर आप हैं?" ज़ुबीन्स्की ने अपने पैडदार कंधे उचकाते हुए कहा। "आप नाहक नाराज़ हो रहे हैं, महाशय। मैंने कहा: मैं, ज़ुबीन्स्की, एडीकांग सुन रहा हूं... हां-हां, पुराने ज़माने की बात

होती, तो मैं कहता: एडजुटेंट जुबीन्स्की... लेकिन हम तो अब नये जमाने में रह रहे हैं, न कि पुराने ज़माने में... अच्छा, अब समझ में आ गया? शुक्र खुदा का..."

जब बातचीत खत्म हो गयी, उसने दीविच की ओर देखा और स्पष्टत: उसकी सहानुभूति पाने की उम्मीद से बुदबुदाया,

"सचमुच, पहले कितना सरल और आसान था: एडजुटेंट मानी एडजुटेंट... तो, आप स्थायी अफ़सरों में से हैं?" कागज़ात देखते हुए उसने फिर पूछा। "नही?.. और लेफ़्टिनेंट कब बनाये गये थे?.. कंपनी के कमांडर थे... अच्छा, कंपनी के नहीं, बटालियन के... क्या कैप्टेन बनने की बारी नही आयी थी?"

"लेकिन कमिसार ने आपको जो करने को कहा है, उससे इस सबका क्या लेना-देना है?" दीविच अपनी खीझ नहीं छिपा पाया।

दीविच के सवाल को अनसुना करते हुए जुबीन्स्की ने एक कोरा कागज़ लिया, कलम नकली कट-ग्लास की बड़ी सी दवात में डुबोयी और फिर उसे कागज़ के किसी अदृश्य बिंदु के ऊपर हवा में यों बड़े-बड़े गोले बनाता हुआ घुमाता रहा, जैसे कि अपने ही सरीखा कुछ गैर-मामूली लिखने की तैयारी कर रहा हो। लेकिन उसने लिखा कुछ नही और कलम घुमाना बंद करके पूछा,

"आप लाल सेना मे क्यों नहीं भरती हो जाते? आप जानकार हैं, अनुभवी हैं और ऐसे आदमियों की हमें ज़रूरत भी है।"

"मैं बीमार हूं," दीविच ने उसे बीच ही में टोक दिया।

"चंगा होने के लिए सबसे बढ़िया जगह सेना है। हमारे यहां राशन अच्छा है। आप खूब मोटे हो जायेंगे।"

"मैं सूअर नहीं हूं," दीविच ने गुस्से से तमतमाते हुए जवाब दिया। "अगर लाल सेना में आप जैसे लोगों को भरती का काम सौंपा गया है, तो भगवान ही उसका मालिक है!"

जुबीन्स्की ने आंख भी न उठायी और दवात में कलम एक बार फिर डुबोकर कागज पर ही ध्यान एकाग्र रखते हुए कहा,

"यों तैश में आना ठीक नहीं है, लेफ़्टिनेंट।"

"आपकी सूचना के लिए मैं अब अरसे से लेफ़्टिनेंट नही हूं!

वैसे ही, जैसे आप एडजुटेंट नहीं हैं!" दीविच ने गुस्से से और उफनते हुए जवाब दिया।

ज़ुबीन्स्की ने खामोशी से पर्ची लिखी, उसे एक फर्राटेदार दस्तखत से सजाया और फिर कहा,

"आप नाहक चिढ़ रहे हैं, कामरेड। ऐसे लोगों की कद्र करनी चाहिये, जो आपकी मदद करने को तैयार हैं। यह रही पर्ची नगर कार्यकारिणी के सेक्रेटरी कामरेड इज़्वेकोव के नाम। अगर काम न बने, तो वापस मेरे पास आना। मैं औरों की तरह असभ्य, गंवार नहीं हूं और आपकी कठिनाई समझता हूं।"

"निश्चित रहें, मैं आपको और कष्ट नहीं दूंगा," दीविच ने कटुता से जवाब दिया और नमस्कार कहे बिना ही कमरे से चला गया।

पिछले कुछ समय से वह देख रहा था कि वह बहुत जल्दी ही ताव में आने लगा है। जर्मनों की कैद में रहने के बाद, जहां उसे जबरन अपने आपको रोके और हर इच्छा को दबाये रखना पड़ता था, अब उसके लिए अपनी भावनाओं पर नियंत्रण बनाये रखना कठिन हो गया था। उसकी राह में कदम-कदम पर रुकावटें थीं, जो प्रायः बहुत मामूली ही होती थीं। किंतु जैसे मच्छरों से परेशान आदमी पहले तो खूब हाथ पटकता-मारता है और फिर कोई फ़ायदा न देख छोड़ देता है, वैसे ही वह भी छोटी-छोटी बातों पर झींखने-झल्लाने के बाद शीघ्र ही शांत पड़ जाता था।

बाहर आकर उसने तुरंत राहत सी महसूस की। जब तक वह सैनिक कमिसार के दफ़्तर में रहा, तब तक मौसम में काफ़ी परिवर्तन आ चुका था। उसके दफ़्तर में घुसते समय तक आसमान साफ़ था, चारों ओर चटख धूप छायी हुई थी और लगता था कि गरमी, उमस बढ़ जायेगी। किंतु अब ठंडी हवा के झोंकों से पेड़ सहमे-सहमे से झूम रहे थे और राख जैसा धुंधला उजाला चारों ओर छा गया था, मानो किसी ने कोई मनहूस सी चादर फैला दी हो। आसमान में घने बादल घिर आये थे और स्पष्ट था कि कहीं मूसलाधार पानी और शायद ओले भी बरसना शुरू हो गया था।

"जैसे कि अब भीगना ही बाकी रह गया है," दीविच ने सोचा और हवा से बचने के लिए सिर झुकाये जल्दी-जल्दी चलने लगा।

सड़क पर कागज़ के टुकड़ों, तिनकों, सूखे पत्तों, घोड़ों की कुचली हुई लीद, आदि के बगूले उठने लगे थे। तेज़ हवा न होती, तो इस कूड़े-धूल के मारे सड़कें शायद दिखायी भी न पड़तीं। हवा के थपेड़ों से हर चीज़ गा रही थी, बज रही थी, टीन की छतें झनझना रही थीं, टेलीफ़ोन के तार झूलते हुए सिसक रहे थे, फाटकों और दरवाज़ों के किवाड़ टकराते या बंद होते हुए बंदूक की गोलियों की तरह तड़ाक-फटाक कर रहे थे। लोग कहीं सिर छिपाने के लिए भागे जा रहे थे।

दीविच को थोड़ी ही दूर जाना शेष रह गया था। सामने ही हवा के तेज़ झोंकों से डोलते पेड़ों और झाड़ियों से घिरी एक ऊंची इमारत थी। किंतु तभी मानो कोने के पीछे से आती, तिरछी, सीसे जैसी भारी और गरजती पानी की दीवार ने दीविच का रास्ता रोक लिया। इमारत की ड्योढ़ी में पहुंचने की हड़बड़ी में वह उसे चीरता हुआ भागा, मगर क्षणभर में ही सिर से पैर तक काले-काले धब्बों से सन गया, जो तुरंत ही उसके कंधों, सीने और घुटनों से बहती पानी की धारों में बदल गये। दीविच का सारा शरीर ठंड की चुभन से सिहर गया।

जब तक वह ड्योढ़ी की सीढ़ी पर पहुंचता, जहां पहले ही कई लोग खड़े हुए थे, तब तक वह सारा भीग चुका था। उसने अपने को झटकारा और डामर पर गिरती बड़ी-बड़ी बूंदों का सफ़ेद बुलबुलों में बदलकर और फूटकर सितारों जैसे बिखर जाना, दरवाज़े के दोनों ओर के परनालों से पानी का उत्तरोत्तर तेज़ी से उफनते हुए निकलना और सड़क तथा फुटपाथ के बीच की नाली का गंदगी से भरना, छलकना देखने लगा।

ड्योढ़ी के सामने एक भीगा हुआ ड्राइवर अपनी लंबी, चमकीली मर्सीडीज़ कार की छत जल्दी से जल्दी खोलने की ताबड़तोड़ कोशिश कर रहा था, पर पानी कार के ऊपर मूसलाधार गिरा जा रहा था और रेडियेटर, मडगार्डों और काले चमड़े की सीटों पर उसके बहने से कार बारिश में फंसे किसी दयनीय जानवर जैसी लगने लगी थी।

तभी इमारत के भीतर से सांवले चेहरे और सीधी तथा चकत्तेदार नाकवाले एक नाटे, गठीले आदमी ने ड्योढ़ी के दरवाज़े में कदम रखा। वह सफ़ेद रूमी कमीज़ पहने था, जो गले पर खुली हुई थी। मुट्ठी में

भींची हुई टोपी थोड़ा सा उठाते हुए उसने मुंह से सीटी की आवाज़ निकाली।

"यह हुई न वारिश!" संतोष सा ज़ाहिर करते हुए वह बोला।

उसने कामकाजी ढंग से ऊपर नज़र उठायी, जहां होना तो आसमान चाहिये था, मगर इस समय तेज़ हवा के झोंकों से कभी विखरते, तो कभी फिर घुमड़ आते काले, घने वादलों का चंदोवा ही दिखायी दे रहा था। दीबिच को लगा कि उस आदमी के टकटकी लगाकर देखने में एक तरह की अकड़ या घमंड है और जैसे कि इस नाटे से आदमी को ज़रा भी शक नहीं कि वह चाहे तो वारिश को रोक भी सकता है और चाहे तो और ज़ोरदार भी कर सकता है। तभी दीविच को यह भी लगा कि उसने आगे को निकले जवड़े, सीधे मुंह और वैसी ही सीधी, थोड़ी सी जुड़ी हुई, भूरी भौंहोंवाले इस चेहरे को कहीं देखा है। किंतु यह क्षणिक याद धुंधली ही वनी रही। दीविच उस चेहरे को, जो किसी जाने-पहचाने आदमी का भी हो सकता था, ठीक से नहीं देख पाया था, क्योंकि बादलों पर वह असामान्य नज़र डालने के तुरंत वाद ही उस आदमी ने अपनी टोपी पहन ली थी और चुपचाप, मानो जानबूझकर धीरे-धीरे कदम बढ़ाता हुआ वाहर कार की ओर चला गया था, जहां उसने विना कुछ कहे, ज़ानकार आदमी की तरह, कार की छत खोलने में मदद की और फिर ड्राइवर की वगल में वैठकर यों रवाना हो पड़ा, जैसे कि सड़क पर उमड़ी हुई वाढ़ को नाव से पार कर रहा हो। न जाने कहां से प्रकट हुए, ऊपर समेटी पैंटें पहने और बदन से चिपकी कमीज़ोंवाले दो छोकरे चिल्लाते, शोर मचाते कार के पीछे भागे और फिर तुरंत ही चीनी कठपुतलियों की भांति पानी के भूरे परदे में खो भी गये।

दीबिच ड्योढ़ी पार करके अंदर गया।

दूसरी मंज़िल पर एक वड़े और अप्रत्याशित रूप से शानदार कमरे में कोई आधा दर्जन मुलाकाती बैठे थे। वहीं दरवाज़े के पास, जिसका पीतल का हत्था किसी भी जहाज़ के दरवाज़ों के हत्थों से कम चमचमा नहीं था, मेज़ के पीछे कटे हुए बालोंवाली सेक्रेटरी वैठी हुई थी। दीविच को वताया गया कि इज़्वेकोव एक घंटे से पहले नहीं लौटैगा, कि उससे पहले मिलनेवाले दस आदमी और हैं और चूंकि इज़्वेकोव

उन सबसे भी शायद ही मिल सके, इसलिए बेहतर है कि वह वहां इंतज़ार करके अपना समय बरबाद न करे। लेकिन दीबिच अड़ा रहा। मुलाकातियों की सूची में अपना नाम लिखाकर वह भी औरों के साथ बैठ गया। उसे यह सुखद सा अहसास हो रहा था कि यहां उसकी सारी दौड़-भाग का अंत अवश्य हो जाना चाहिये। गदगदी आरामकुर्सी में बैठकर बड़ी राहत मिल रही थी, साफ़-सुथरी दीवारें हल्की-हल्की ऊष्मा छोड़ रही थीं और कांच की खिड़कियों के बाहर की तेज़ बारिश के शोर से टक्कर सी लेती हुई कमरे के अंदर की खामोशी कानों के लिए बहुत ही प्रीतिकर लग रही थी। कपड़े भीग जाने के कारण ठिठुरता हुआ दीबिच कुर्सी में और धंसकर बैठ गया और शायद तुरंत ही ऊंघने भी लगा, क्योंकि एकाएक उसने पाया कि वह एक स्टीमर के अग्रभाग की मुंडेर पर झुका हुआ है और अग्रभाग पर एक धूप से झुलसे बदनवाला नौजवान खड़ा है, जिसके हाथ में एक रस्सा है, जिसे वह छल्ला बनाकर पहले तो देर तक हवा में घुमाता है, फिर बड़ी कुशलता से नीचे घाट पर फेंक देता है, जहां वह सांप जैसे खुलता हुआ घाट के दफ़्तर की छत पर जा गिरता है और कप्तान अपने डेक पर खड़ा, भोंपू मुंह पर लगाये चिल्ला-चिल्लाकर नीचे इंजिन-रूम को हुक्म दे रहा है: "स्टाप! पीछे! .." और फिर स्टीमर के चक्कों के नीचे सब कुछ उफनने, घुमड़ने और गरजने लगता है, स्टीमर थरथरा उठता है, मुसाफ़िर हड़बड़ी मचाते ऊपरी डेकों से निचले डेकों की ओर लपक पड़ते हैं और कप्तान एक बार फिर चिल्लाता है: "स्टाप!" – और तभी दीबिच की आंख खुल गयी।

उसने देखा कि इंतज़ार में बैठे लोग अपनी कुर्सियां पीछे खिसकाकर उठ खड़े हुए हैं और वही गठीला, नाटा सा आदमी टोपी मुट्ठी में भींचे और लंबे डग भरता हुआ कमरा पार करके और पीतल का हत्था पकड़कर दरवाज़ा खोल करके अंदर गायब हो गया है और उसके पीछे-पीछे सेक्रेटरी भी दरवाज़ा बंद करती हुई अंदर चली गयी है। दीबिच समझ गया कि उसे गहरी झपकी आ गयी थी। उसने उतावली से कमरे में इधर-उधर चक्कर लगाते मुलाकातियों से पूछना चाहा कि यह अभी-अभी आया आदमी कौन है, मगर तभी दरवाज़ा खुला और सेक्रेटरी ने उसे गौर से देखते हुए और एक नयी सी आवाज़ में कहा,

"कामरेड दीबिच, आप अंदर जा सकते हैं।"

वह इस बुलावे के लिए बिल्कुल तैयार नहीं था। वह कुछ अचकचाया, मगर सेक्रेटरी ने सिर के इशारे से पुष्टि सी करते हुए फिर कहा,

"हां-हां, कामरेड इज़्वेकोव ने आपको ही बुलाया है।"

दीबिच ने अपनी फ़ौजी कमीज़ खींच-तानकर, सभी सिलवटें पीछे, पेटी के अंदर खोंसते हुए ठीक कीं। मानो फ़ौजी चाल-ढाल ने उसकी सारी थकावट दूर कर दी। जब वह कमरे में घुसा, तो सैनिक की तरह एक क्षण के लिए दरवाज़े पर रुक गया। यह उसका, जैसे कि वह सोचता था, किसी बड़े सोवियत अधिकारी से और वह भी सैनिक नहीं, बल्कि सिविल अधिकारी से पहला साक्षात्कार था और इसलिए कुछ पशोपश में पड़ गया कि उसके सामने उसका व्यवहार कैसा होना चाहिये।

इज़्वेकोव मेज़ के सामने अचल खड़ा था और अपनी उठी हुई, बिल्कुल सीधी भौंहों के नीचे अपलक नेत्रों से आगंतुक को देख रहा था।

"आप ही दीबिच हैं? आइये, बैठिये," उसने कहा और दीबिच से नज़रें न हटाते हुए मेज़ का चक्कर लगाकर पहले खुद ही अपनी जगह पर बैठ गया।

दीबिच को फिर लगा—और इस बार तो उसे इसमें कोई संदेह न रहा—कि इस आदमी को उसने पहले भी देखा है, मगर कहां, यह याद न था। अनजाने ही उसकी दृष्टि इज़्वेकोव की तंबाकू के रंग जैसी पीली आंखों पर और नाक के चकत्तों पर, जो सांवले चेहरेवालों के लिए असामान्य बात हैं, टिक गयी। कुछ क्षण तक दोनों एक दूसरे को गौर से देखते रहे। सहसा इज़्वेकोव ने दबंग आवाज़ में पूछा,

"आप आठवीं इंफ़ेंट्री डिविज़न की दूसरी बटालियन के कमांडर तो नहीं थे?"

"हां। मैं आठवीं रिज़र्व इंफ़ेंट्री डिविज़न में लेफ़्टिनेंट था।"

"अगर आपका इतना विरला नाम न होता, तो मैं शायद ही आपको याद रख पाता," इज़्वेकोव ने सिर हिलाते हुए कहा, जो न जाने सहानुभूति का सूचक था या उलाहने का।

"मगर मुझे लगता है कि मैंने आपको कहीं देखा है, पर कहां, याद नहीं आ रहा। शायद मोर्चे पर?"

"लोमोव याद है? आपकी बटालियन की कंपनी नंबर छह का सिपाही लोमोव?"

"लोमोव?" दीविच एकाएक चौंक गया। "टोही लोमोव?"

"कहां का टोही! खैर अगर था भी, तो आपकी बदौलत ही बना था," इज़्वेकोव मुस्करा पड़ा।

यह संकोचभरी और साथ ही व्यंग्यपूर्ण हल्की मुस्कान ही वह खोयी हुई कड़ी थी, जिसके मिल जाने पर दीविच इज़्वेकोव में न केवल अपने भूतपूर्व सिपाही को तुरंत पहचान गया, बल्कि लोमोव के नाम से जुड़ा सब कुछ उसे एकाएक याद हो आया।

वे उस समय दक्षिण-पश्चिमी मोर्चे पर थे। रूसी सेना का मई आक्रमण चल रहा था, जिसने आस्ट्रो-हंगेरियाई सैनिकों का मनोबल बुरी तरह तोड़ने के साथ-साथ रूसी सैनिकों के मनोबल और अपनी जनता की अक्षय शक्ति में उनके पूर्ण विश्वास को पुनर्जीवित कर दिया था।

कंपनी कमांडर दीविच लड़ते हुए १३० मील से भी आगे बढ़ आया था। अभियान के आखिर में बटालियन का कमांडर बुरी तरह घायल हो गया था और दीविच को, जिसे कुछ ही समय पहले सेंट आन्ना का पदक मिला था, उसकी जगह पर नियुक्त किया गया था। तब तक शत्रु के मोर्चे पर बहुत जगहों पर आस्ट्रियाइयों का स्थान जर्मन यूनिटों ने ले लिया था, जिन्हें अपनी हारी हुई और दहशत के मारे पीछे हटती हुई मित्र सेनाओं की मदद के लिए भेजा गया था। किंतु रूसियों द्वारा तोड़े हुए और बुरी तरह अस्त-व्यस्त मोर्चे को जर्मन भी बहाल न कर सके और उन्हें अपने को रूसियों को आगे और बढ़ने से रोकने की कोशिशों तक ही सीमित रखना पड़ा, ताकि उत्तर में उनके बाजू और दक्षिण में आस्ट्रो-हंगेरियाई मोर्चे को पैदा हुआ खतरा टल जाये। पश्चिम से लायी गयी और फ़्रांसीसियों के साथ लड़ाइयों में तपी हुई जर्मन इंफ़ेंट्री को रूसियों पर जवाबी हमला करने के लिए झोंका गया, जो इतनी व्यापक लड़ाइयों और अभियान के बाद रिजर्वों का अभाव महसूस करने लगी थी। मोर्चे को सर्वत्र अभेद्य बनाने के लिए जर्मन अपनी नयी पोजीशनों की दृढ़तापूर्वक रक्षा कर रहे थे तथा मजबूत बना रहे थे और साथ ही रूसियों पर हमले पर हमला

करके कुछ खोयी हुई महत्त्वपूर्ण पोज़ीशनों पर दोबारा कब्ज़ा करने के प्रयास भी कर रहे थे।

दीबिच की बटालियन को शत्रु की बदली के बारे में एक दिन सुबह तब मालूम हुआ, जब पहले रोज़ कब्ज़े में लिया गया एक छोटा सा टीला एकाएक हल्के तोपखाने से की गयी गोलाबारी का निशाना बना। आस्ट्रियाइयों के पास ऐसा तोपखाना नहीं था। दीबिच को रेजीमेंट हेडक्वार्टर्स ने चेता दिया था कि उसके दायीं और बायीं ओर की बटालियनों के सामने की पोज़ीशनों पर जर्मन आ गये हैं और चूंकि वे कभी भी जवाबी हमले कर सकते हैं, इसलिए टीले को किसी भी कीमत पर हाथ से नहीं निकलने देना है। शत्रु की गोलाबारी से पहले ही दीबिच अपने सैनिकों को खंदकें खोदने और उनमें छिप जाने का आदेश दे चुका था। इसके बाद वह गोलों की वर्षा के बीच भाग-भागकर हर खंदक में अपनी बटालियन की पोज़ीशन का मुआयना करता रहा। कंपनी नंबर छह को उसने हुक्म दिया कि पीछे टीले की चोटी के जंगल में चली जाये और वहां रिज़र्व रक्षा पंक्ति बनाये। उसने जवाबी गोलाबारी नहीं की, बल्कि हमले को नाकाम करने की तैयारियों में ज़ोरशोर से लगा रहा और शत्रु की पोज़ीशन और उसकी गोलाबारी का अध्ययन करता रहा। लेकिन इस अप्रत्याशित गोलाबारी के अलावा जर्मनों ने और कोई कदम नहीं उठाया और उसके बाद सारी सुबह और सारे दिन ऐसी खामोशी छायी रही, जैसे कि गोलों की आवाज़ से अपने आने की सूचना देकर शत्रु ने फ़ैसला कर लिया हो कि यही काफ़ी है।

रात में शत्रु के हमले की संभावना देखकर दीबिच ने शाम को अपने अधतैयार बंकर में कंपनी कमांडरों की बैठक बुलायी, ताकि टीले को मज़बूत किये जाने के काम की रिपोर्टें सुन सके और जहां जो कमी रह गयी है, उसे जल्दी से जल्दी पूरा करवा सके। बैठक में उपस्थित अफ़सर उसके लिए मातहत इतने न थे, जितने कि हाल ही तक के समकक्ष सहकर्मी और मित्र, और इसलिए उनके साथ बात-चीत से वह तुरंत ही भांप गया कि शत्रु की चुप्पी और इरादों से वे भी वैसे ही चक्कर में पड़े हुए हैं, जैसे कि वह खुद। उनके चेहरों पर घबराहट के चिह्न स्पष्ट दिखायी दे रहे थे। हर किसी का कहना

था कि ऐसी हालत में किसी को टोह पर भेजना बहुत ज़रूरी है। अतः दीविच ने तय किया कि अंधेरा होते ही छठी कंपनी को छोड़कर शेष सभी कंपनियां अपने-अपने इलाके में टोही दस्ते भेजें, जो शत्रु की पंक्तियों में घुसकर चुपचाप किसी "जीभ", यानी शत्रु सैनिक को पकड़ लायें, ताकि उससे पूछताछ की जा सके।

इस फ़ैसले के बाद सभी कमांडर चले गये, मगर छठी कंपनी का कमांडर, जो शतरंज के खेल में दीविच का साथी हुआ करता था और उसके जैसे ही रिज़र्व रेजीमेंट का जूनियर लेफ़्टिनेंट था, बंकर के दरवाज़े पर रुका रहा। उसने दीविच को बताया कि उसकी कंपनी में एक अप्रिय घटना हुई है: कंपनी को जो आखिरी कुमुक मिली है, उसमें लोमोव नाम का एक सैनिक है। उसके बारे में सार्जेंट मेजर के जरिये मालूम हुआ है कि वह सैनिकों के साथ खतरनाक बातें कर रहा था और युद्ध को आम आदमी के लिए बेकार बता रहा था। इस सैनिक ने ट्रेनिंग नीज्नी नोवगोरोद में पायी थी और भरती से पहले सोरमोवो फ़ैक्टरी में नक्शानवीस था। वह खूब पढ़ा-लिखा है। लेकिन सार्जेंट मेजर दाल में काले का शक कर रहा है।

"ठीक है," दीविच ने कुछ सोचकर कहा। "फिलहाल उसे टोही का काम सौंप दो। शायद इससे उसकी अक्ल ठिकाने लग जाये। आज रात के काम पर उसे किसी अनुभवी टोही के साथ भेजे जाने का मैं आदेश दे दूंगा।"

लगातार जारी खामोशी से उत्पन्न परेशानी रात तक असह्य बन बैठी। नीचे बादल काली ज़मीन के साथ एकाकार से हो गये थे। जब टोही भेजे गये, तब तक इतना घुप्प अंधेरा हो चुका था कि हाथ को हाथ नहीं सूझता था। कुछ समय बाद दीविच ने दायीं ओर से गोलियां चलने और फिर तुरंत ही मशीनगन से गोलीवर्षा किये जाने की भी आवाज़ सुनी। इसके लगभग एकदम बाद बायीं ओर कहीं दूर से राइफ़ल की लंबी दनदनाहट सुनायी दी। दीविच समझ गया कि इनका कारण उसके टोही हैं। घनघोर अंधेरी रात में इंतज़ार के इस एक घंटे में ही उसने उतनी सिगरेटें पी डालीं, जितनी कि दिनभर में भी नहीं पीता था।

सहसा एक हरकारे ने आकर बताया कि एक "जीभ" पकड़

ली गयी है और वह जर्मन है। दीविच छोकड़ों की तरह उछल पड़ा और हरकारे को गले लगाते हुए चिल्लाया,

"कहां है? कहां है? तुरंत यहां लाओ! और जिन्होंने पकड़ा है, उन्हें एक-एक जोड़ा नया जूता – नहीं, नहीं, अतिरिक्त छुट्टी भी – इनाम! शाबाश मेरे जवानो!"

पकड़े हुए जर्मन से पूछताछ कर लेने और फिर उसे रेजीमेंट हेडक्वार्टर्स में भेज दिये जाने के बाद ही दीविच को मालूम हो सका कि वह अतिरिक्त छुट्टी किसने कमायी है। यह वही छठी कंपनी का नया टोही था और अकेले उसे ही, और वह भी बहुत ही असामान्य परिस्थितियों में, किसी जर्मन को ज़िंदा पकड़ने का श्रेय प्राप्त हो सका था।

नियत समय पर लोमोव समेत छह टोहियों का एक दस्ता खंदकों से निकला था और टीले पर नीचे रेंगने लगा था। पहले कोई दो सौ गज तक नयी घास से ढका हल्का ढलान था। उसके बाद एक उथली सी खाई आती थी, जिसमें एल्डर के पेड़ और जंगली चेरी की झाड़ियां उगी हुई थीं। खाई के बीच एक ठहरे से पानी का नाला भी था। इनके बाद फिर वैसा ही कोई दो सौ गज़ चौड़ा घास का मैदान था, जिसके अंत में एक थोड़ी सी ऊंची मेंड़ थी। इस मेंड़ पर शत्रु की अग्रिम पंक्ति होनी चाहिए थीं और टोहियों का काम चुपके से इसी मेंड़ तक पहुंचना था। इसके आगे उन्हें क्या मिलता, कोई नहीं जानता था।

दस्ते का मुखिया एक सार्जेंट था, जो इस बात से बहुत नाखुश था कि उसे एक नौसिखुआ और वह भी किसी दूसरी कंपनी का टोही दिया गया है। उसे इतना ही समय मिल पाया था कि लोमोव से उसका नाम पूछ सके और पीछे-पीछे आने का आदेश दे सके। ढलान पर रेंगना शुरू करते ही दस्ता दो-दो के जोड़ों में बंट गया था। लोमोव और सार्जेंट का जोड़ा बीच में था और दोनों बगल के जोड़े धीरे-धीरे उससे यों दूर होते जा रहे थे कि उनके निशान अगर दिख भी जाते, तो और-और चौड़े फैलाये जाते पंखे जैसे ही लगते। पर उस घोर अंधियारी रात में कुछ भी नहीं देखा जा सकता था। ज्यों ही बगलों के जोड़े अलग हटे, लोमोव को उनकी काली, पृथ्वी पर कूबड़ की तरह उठी हुई छायाएं दिखायी देना बंद हो गयीं और फिर घास पर

उनके सरकने की आवाज़ भी धीरे-धीरे इतनी मंद होती गयी कि कुछ समय बाद उसे बिल्कुल भी नहीं सुना जा सकता था।

लोमोव अब केवल वही आवाज़ें सुन रहा था, जिन्हें सार्जेंट और वह खुद कर रहे थे: उनके स्पर्श से किसी पुरानी, सूखी घास के कुचले जाने की आवाज़, ज़मीन पर घुटनों और कोहनियों की सरसराहट, खुले मुंहों से जल्दी-जल्दी सांस लेने की आवाज़, पीठ पर रखी राइफ़ल की कमर से रगड़ने की आवाज़, जो यथार्थ कम, अनुमानित अधिक थी, और कानों में लगातार एक असामान्य सी धप-धप, जो दिल की धड़कन थी। अंधकार का अंतहीन विश्व नीरवता में डूबा हुआ था, किंतु यह नीरवता मैदान के अविराम जीवन से, घास और मिट्टी के अदृश्य वासियों के कोलाहल से भरी हुई थी। यह आवाज़ों की एक और अलग परत थी, जो दिल के धड़कने की आवाज़ और आसपास की नीरवता के ऊपर फैली पड़ी थी।

लोमोव के हाथों और घुटनों ने ज़मीन को छुआ ही था वह सारा ओस से भीग गया और नमी जल्दी ही उसके कपड़ों में रिसने लग गयी। उसे लगा कि वह पानी में रेंग रहा है, क्योंकि चेहरा, सीना और पीठ, सभी भीग गये थे। ठंड का अहसास ज़मीन से सटे सीने पर ही हो रहा था, जबकि पीठ गरम ओस जैसे पसीने के कारण गरम बनी हुई थी। वह मुट्ठी में एक भारी, लंबी, फौलादी कैंची पकड़े हुए था, जिससे अगर शत्रु ने अपनी खंदकों के आगे कांटेदार तार की बाड़ खड़ी कर दी है, तो उसे काटा जा सकता था। कैंची से उसे बहुत असुविधा हो रही थी, क्योंकि जब भी वह मुट्ठी ज़मीन पर टेकता, फ़ौलाद उसकी हथेली और अंगुलियों में चुभ जाता। पर उसने उसे कमर में नहीं खोंसा, क्योंकि तब उसके गिर जाने और घास में खो जाने का डर था। उसके दिमाग में यह खयाल भी आया कि रेंगने के बजाय खड़े होकर ही क्यों न चलें – आखिर कोई उन्हें देख तो पायेगा नहीं। पर फिर सोचा कि अगर कहीं अचानक उजाले का राकेट छूटा या सर्चलाइट का प्रकाश पड़ा, तो वे चलते हुए दिख जायेंगे और तब सब किया-कराया खाक में मिल जायेगा। वह लगातार अपने को याद दिलाता रहा कि ऐसी बातें सोचते रहने से उसी तरह कोई फ़ायदा नहीं, जिस तरह कि तब एतराज़ करने से कोई फ़ायदा न था, जब

उसे टोह पर भेजा जाना तय हुआ था और उसने सोचा था कि उसकी मौत अब लगभग निश्चित है।

उसे लगा कि उन्हें रेंगते हुए अरसा हो गया है और अब खाई व नाला पास ही होंगे। लेकिन एकाएक आगे से बुलबुल का चहकना सुनायी दिया और वह समझ गया कि नाला अभी दूर है। फिर चहकने की जगह गिटकिरियां, सीटियां और बांसुरी जैसे स्वर सुनायी देने लगे। लोमोव ने दस-एक गिटकिरियां गिनी होंगी कि बगल से हांफते हुए सार्जेंट ने फटी और दबी आवाज़ में कहा, "सुन रहा है? हरामी कहीं का!" और ऐसे हल्के से सांस ली कि उससे भी चिड़िया के चहकने का भ्रम हो सकता था।

बुलबुल का गाना लोमोव को उसके कैशोर्य के दिनों में वापस ले गया। वह रेंग रहा था, सुन रहा था और कल्पना कर रहा था कि हरे द्वीप पर नीले बेदमजनुओं के बीच खड़ा है, जहां बुलबुलों की आवाज़ रेतीले तट से टकराती लहरों की छप-छप ध्वनि के साथ एकलय हो रही है। चांदनी में मोतियाई आभा लिये वोल्गा वह रही है, बीच धारा में एक लाल प्लवक टिमटिमा रहा है, दूर परीकथाओं के राजा दोदोन के किले जैसा एक अनोखा बजरा गुजर रहा है, जिसपर मानो अनगिनत कंगूरे और बुर्ज भी बने हैं, और नन्हा किरील इज़्वेकोव घुटने सीने से लगाये और इस सोच में डूबा हुआ रेत पर बैठा है कि बड़ा होकर क्या बनेगा। वह बच्चा शायद कल्पना भी नहीं कर सकता था कि एक दिन वह किरील इज़्वेकोव न रहेगा और सिपाही लोमोव बन जायेगा। इस समय बचपन का वह हरा द्वीप दूर, बहुत दूर था और सिपाही लोमोव भीगा हुआ और थका हुआ, राइफ़ल और फ़ौलाद की कैंची लिये, जंगली चेरियों की मादक सुरभि का पान करता और नाले के किनारे उगी एल्डर की झाड़ियों को धीरे-धीरे पास, और पास आता देखता, घुटनों और कोहनियों के बल रेंगे जा रहा था।

झाड़ियों के पास पहुंचकर सार्जेंट खड़ा हो गया और उसके पीछे लोमोव भी खड़ा हो गया। दोनों ने कमर सीधी की, कुछ आराम किया, कंधों से राइफ़लें उतारीं और झाड़ियों में घुस गये। उनकी आंखें अंधेरे की इतनी आदी बन गयी थीं कि धुंधली छायाओं को देखकर ही पेड़ों के तनों और टेढ़े-मेढ़े शिखरों को पहचान लेते थे। खाई ज़्यादा

गहरी न थी। टटोल-टटोलकर कदम रखते हुए वे नीचे उतरे। नाले की मंथर कलकल साफ़ सुनायी दे रही थी। ऊपर बुलबुल का चहकना जारी था। जल्दी ही झाड़ियों के पीछे पानी की काली, चमकती हुई सतह दिखायी दे गयी। एक मिनट बाद सारा ही नाला सामने था। वह केवल तीन कदम चौड़ा था। किनारे पर वे किन्हीं बड़े पेड़ों– शायद बेदमजनुओं – का सहारा लेकर खड़े हो गये।

तभी उन्हें कहीं दूर से छिट-पुट गोलियां दागने और फिर मशीनगन के भी चलने की आवाज़ सुनायी दी। लोमोव ने अपने मुखिया की ओर देखा। वह निश्चेष्ट खड़ा था। जब गोलियां चलनी बंद हो गयीं, उसने खुसफुसाते हुए कहा, "थोड़ा और ठहर लें।" गोलियों की आवाज़ फिर आयी, पहले जैसे ही दूर से, मगर दूसरे किनारे से और फिर खामोशी छा गयी।

अचानक लोमोव ने अपने ठीक सामने छलांग लगाकर नाले को लांघती दो छायाएं देखीं। फिर दो बार ज़मीन पर कुछ धप्प से गिरने और किनारे के पत्थरों के बजने-लुढ़कने की आवाज़ सुनायी दी। दो आदमियों ने नाला लांघा था और अब सीधे, चुपचाप खड़े सुन रहे थे। पीछे पानी की चमकीली काली सतह पर उनकी रूपरेखा साफ़ देखी जा सकती थी। लोमोव ने दो अटकलें लगायीं: ये या तो शत्रु है, या फिर मित्र। अगर शत्रु हैं, तो शायद टोह पर निकले हैं, और अगर मित्र हैं, तो या तो लौट रहे हैं, या झाड़ियों में रास्ता भूल गये हैं। लेकिन रात्रिचर पक्षी जैसी किसी नयी दृष्टि से उसे उनके देगची जैसे टोप पहचानते देर न लगी और वह समझ गया है कि वे जर्मन हैं। तभी एक अमानवीय सी आवाज ने उसे चौंका दिया: सार्जेंट कुछ हुक्म दे रहा था।

असल में वह हुक्म तो क्या, एक ऐसी भयानक चीख थी, जो आदमी के गले से शायद ही निकल सकती थी।

"कुंदा मारो!" यह चीखने के साथ ही सार्ज़ेंट अपने नज़दीकवाली छाया पर झपट पड़ा था।

लोमोव की हथेलियों से तुरंत पसीना छूट गया और पीठ मानो शरीर के शेष भाग से अलग हो गयी। राइफ़ल को ठीक से पकड़ने के लिए उसे मुट्ठी खोलकर कैंची फेंक देनी चाहिये थी। लेकिन अचानक

विना सोचे कि वह क्या कर रहा है, उसने मुट्ठी घुमाकर पूरे जोर से कैंची बायीं ओर वाली छाया में घोंप दी, जो कि चीख सुनकर तब तक नीचे झुक चुकी थी। प्रहार मुलायम और कुछ गीला-गीला सा था और लोमोव ने देखा कि छाया तुरंत ज़मीन पर ढेर हो गयी है। इसके बाद भी विना कुछ सोचे दोनों हाथों में राइफ़ल पकड़े वह दायी ओर घूमा और देखा कि दूसरी छाया ज़मीन पर गिरे सार्जेंट के ऊपर झुकी है और एक हाथ उठाये हुए है। लोमोव तुरंत उधर लपका और अपने वदन की पूरी ताकत से इस उठे हुए हाथ के नीचे संगीन घुसेड़ दी। उसे उस समय का बस एक ही अहसास याद रहा: कितनी मुश्किल और भोंडेपन से उसने लाश से संगीन को वाहर निकाला था। वाद में उसने सार्जेंट की कराह सुनी,

"पहले आदमी को वांध दो!"

लोमोव वापस लपका। जर्मन औंधा पड़ा हुआ था। लोमोव ने उसके कंधों को घुटनों से दवाया और दोनों हाथ पीछे मोड़कर अपनी पेटी से मज़बूती से वांध दिये।

"ज़िंदा है?" सार्जेंट ने पूछा।

"सांस तो ले रहा है," लोमोव ने जवाव दिया।

"मुंह में कपड़ा ठूंस दो।"

लोमोव ने जर्मन का सिर घुमाया, टटोलकर देखा कि मुंह कहां है और उसमें अपनी आधी से ज़्यादा टोपी ठूंस दी। फिर खड़ा होकर गीली आस्तीन से अपना चेहरा पोंछने लगा।

एक वार फिर सव कुछ पहले जैसा ही था। वुलवुल पहले की तरह ही गाये जा रही थी। नाला अविचलित सा वहे जा रहा था।

लोमोव मानो किसी स्वप्न से जगा और समझ गया कि उसने संगीन घोंपकर दूसरे जर्मन को जान से मार डाला है। वह सार्जेंट के पास आया। उसके कंधे पर कुंदे से ज़वर्दस्त चोट लगी थी, फिर भी उसने चलने में मदद करने के लोमोव के प्रस्ताव को ठुकरा दिया। दोनों ने काम वांट लिया: सार्जेंट ने जर्मन राइफ़लें उठायीं और लोमोव को घायल जर्मन को खींचना पड़ा। जव वे वापस अपनी खंदकों में पहुंचे, तो थककर वेहद चूर हो गये थे।

दीविच ने लोमोव से जव सारा वाकया सुना, तव तक सुवह

का उजाला होने लग गया था। सार्जेंट हाज़िर न हो सका था, क्योंकि उसकी मरहम-पट्टी की जा रही थी। लोमोव के कपड़े अभी भी गीले थे और भोर की ठंड मे ठिठुरता-सिहरता वह उस नीचे बंकर में भी छोटा और मरियल सा लग रहा था। दीबिच उसकी शांत, संक्षिप्त, मगर स्पष्ट रिपोर्ट सुनकर और आंखों में झांककर, जिनकी सुनहरी चमक लैंप के उजाले में मानो व्यंग्य से कभी तेज़ और कभी मंद हो रही थी, चकित रह गया था।

"शाबाश!" दीबिच ने कहा। "तुमने एक साथ दो काम किये हैं – 'जीभ' भी पकड़ लाये हो और जर्मन टोहियों को भी नाकाम बना दिया है। अच्छी शुरूआत है।"

लोमोव कुछ न बोला।

"मालूम नही, जवाब कैसे देते हैं?"

"सेवा करके खुशी है, हुज़ूर!" लोमोव ने अपनी आंखें थोड़ा सा सिकोड़ते हुए जवाब दिया।

"तुमने छठी कंपनी की इज़्ज़त रखी है।"

"कंपनी हमारी अच्छी है। मेरी जगह पर दूसरा भी यही करता।"

"तारीफ़ की बात है। लेकिन... लड़ाई के बारे में तुम्हारे विचारों का क्या हुआ? दूसरे सैनिकों से तो कहते हो कि न लड़ें, मगर खुद के लड़ने पर जैसे कोई एतराज न हो। क्या मतलब लगायें इसका?"

लोमोव पहले एक पांव पर झुका खड़ा था, तो अब दूसरे पाव पर झुककर खड़ा हो गया। दीबिच ने एक क्षण के लिए भी उसपर से अपनी निगाह न हटायी।

"जवाब दे सकता हूं, हुज़ूर?"

"क्यों नही। मैं जानना चाहता हूं कि तुम और सैनिको को क्या सिखाते हो।"

"मेरे लिए लड़ाई एक चीज़ है और सैनिक की वफ़ादारी दूसरी चीज। लडाई के बारे में हर कोई अपने ढंग से सोचता है। जिसका जैसा दृष्टिकोण होगा, वह वैसा ही सोचेगा। किंतु मोर्चे पर अपने साथी की मदद केवल डरपोक ही नही करेगा। इसलिए यहां कोई विरोध नही है।"

लोमोव ने ये शब्द उस समय के मुकाबले और भी शांत स्वर में

कहे, जबकि वह "जीभ" के पकड़े जाने का वाकया सुना रहा था, और इसलिए वे और भी—एक तरह के रुखेपन की हद तक—स्पष्ट और अकाट्य लग रहे थे। साथ ही दीविच देख रहा था कि लोमोव मुश्किल से अपने को शांत रख पा रहा है। उसे लगा कि लोमोव की सिहरन-ठिठुरन की वजह ठंड नहीं, बल्कि दवी हुई उत्तेजना है। वह यों कांप रहा था, जैसे कि उसका सारा बदन फड़क रहा हो और ऐसी हर फड़कन के बाद उसके छोटे से शरीर की शांति और बढ़ जाती थी। यह फड़कन ऐसी छुतहा थी कि दीविच खुद भी कांप गया।

खड़े होकर और एकाएक लोमोव को "आप" करके संबोधित करते हुए उसने कहा,

"सुनिये, मुझे आपके दृष्टिकोण से कोई मतलब नहीं। पर इतना ज़रूर कहूंगा कि उसे अपने ही तक सीमित रखें। लड़ाई चल रही है और किसी को हक नहीं कि उसमें दखल डाले। कम से कम आपको तो ऐसा कतई नहीं करने दिया जायेगा।"

वह रुक गया। लोमोव चुपचाप इंतज़ार करता रहा।

"और यह एक की कायरता के विरुद्ध और सारी सेना, सारे रूस की सामूहिक कायरता के पक्ष में प्रचार करना भी बंद कर दीजिये, क्योंकि अगर आप हर किसी को लड़ाई का विरोधी देखना चाहते हैं, तो इसका मतलब है कि आप हर किसी को कायर बना देखना चाहते हैं।"

लोमोव ने पहले की तरह ही कोई जवाब नहीं दिया। उसकी चुप्पी में एक बर्फ़ीली सी असहमति थी। दीविच अपनी आवाज़ को उठने से बड़ी मुश्किल से रोक पाया।

"भूलिये नहीं कि आप सिपाही हैं।"

"जी, हुज़ूर," लोमोव ने सिपाही की तरह जवाब दिया, लेकिन उचित गंभीरता से नहीं, बल्कि हल्की सी शोखी और छिपे व्यंग्य के साथ।

"क्या मतलब—'जी, हुज़ूर'? आपसे जब आदमी के तौर पर बात की जा रही है, तो इस 'जी, हुज़ूर' की क्या ज़रूरत है? आप क्या मुझसे सहमत नहीं हैं? आप सोचते हैं कि हमारा आगे बढ़ना बेकार है? हम क्या बेकार ही खून बहा रहे हैं?"

"जवाब दे सकता हूं?"

"हां, हां, क्यों नहीं!"

"मेरी राय में गलती स्वीकार कर लेना कायरता नहीं, बहादुरी है। और यह लड़ाई अगर गलती नहीं, तो और क्या है?"

"ठीक है," दीबिच ने अपने को संयत रखते हुए कहा। "अफ़सर के नाते, कमांडर के नाते मेरा काम आपको आगाह करना था। अब से इस विषय पर सब चर्चाएं बंद हो जानी चाहिये और याद रखें कि फौजी अदालत उस भाषा में बात नहीं करती, जिसमें मैं आपसे बोल रहा हूं। अब आप जा सकते हैं।"

दीबिच ने छठी कंपनी के इस विचित्र सिपाही के बारे में या उसने उसके मन में जो विचार जगाये थे, उनके बारे में फिर नहीं सोचा, क्योंकि इसके बाद में उसे इन बेकार की बातों के लिए फ़ुरसत ही नहीं रह गयी थी: सूरज उगने से पहले जर्मनों ने हमला शुरू कर दिया था। पहले दो दिन की लड़ाई में उन्होंने बटालियन को रेजीमेंट से काट डाला, टीले को घेर लिया और बारी-बारी से तब तक गोलाबारी और इफ़ेंट्री के हमले करते रहे, जब तक कि घायल दीबिच युद्धबंदी न बना लिया गया। छठी कंपनी टीले की चोटी पर आखिर तक लड़ती और अपनी पोजीशन की रक्षा करती रही, जो रिजर्व रक्षा-पंक्ति से अग्रिम रक्षा-पंक्ति बन गयी थी।

अब किरील इज्बेकोव के कक्ष में बैठे दीबिच को नाटे सिपाही की वह निगाह एक बार फिर दिखायी दी, जो उसे इतनी अच्छी तरह याद थी और जिसने व्यंग्य से मुस्कराने की अपनी आदत आज भी नहीं छोड़ी थी। किरील मानो इस मुस्कान को छिपाना चाहता था, पर उसे छिपाना मुश्किल था और उसके बार-बार उभर आने से किरील बड़ी झिझक महसूस कर रहा था।

"तो भाग्य ने आपको यहां ला पटका है," दीबिच बोला।

"भाग्य क्यों? हम यही तो चाहते थे!"

"क्या यही? हार?" दीबिच ने पूछा। उसकी आवाज़ में कड़ुआहट और अनिश्चय था।

"ज़ार की सेना की हार, ताकि मजदूरों और किसानों की सेना की विजय की राह खुल सके।"

दीविच ने देखा कि अचानक इज़्वेकोव की आंखों की वह व्यंग्यभरी मुस्कान गायव हो गयी है। उसने मुंह दूसरी ओर मोड़ लिया और फिर कुछ रुककर, मानो विषय को बदलना चाहता हो, कहा,

"आपकी छठी कंपनी वड़ी वहादुरी से लड़ी थी।"

"हां, वहादुरी से, मगर वेकार," इज़्वेकोव ने सिर को झटका देते हुए जवाव दिया।

"अफ़सोस है कि यह वात सारी लड़ाई पर भी लागू होती है।"

"आप ऐसा सोचते हैं?" इज़्वेकोव ने कोहनियां मेज़ पर रखते हुए तुरंत पूछा। "लेकिन यह सच नहीं है। लड़ाई ने लोगों को अपने भविष्य की राह खोजने में मदद दी है। आप इसे क्या वेकार कहेंगे?"

"लेकिन आप ही तो कह रहे हैं कि कंपनी वेकार लड़ी थी।"

"हां, वह हार गयी थी। लेकिन कंपनी का कुछ हिस्सा वचा रहा – आप इसे नही जानते, न जान ही सकते थे, क्योंकि आपकी वदकिस्मती से जर्मनों ने आपको पकड़ लिया था। वे जो वचे रहे, वे अव नयी सेना में हैं। यह नयी सेना उस लक्ष्य के लिए लड़ रही है, जिसे पुरानी सेना या पुरानी लड़ाई नहीं पा सकती थी, लेकिन साथ ही जिसे लोगों ने उस पुरानी लड़ाई के दौरान पहचान लिया था। यह लक्ष्य है सभी लोगों की मुक्ति।"

"समझा," दीविच ने वहुत ही हल्के से कंधा उचकाते हुए कहा। "जो लड़ाई लोमोव हार गये थे, उसे इज़्वेकोव ने जीत लिया है।"

इज़्वेकोव मुस्कराया, लेकिन तुरंत ही होंठों पर अंगुलियों की नोक चुटकी जैसे रखकर उसने उस मुस्कान को छिपा लिया, और यहां तक कि हल्के से चौंक भी पड़ा, जैसे कि दीविच ने उसके मुंह की वात छीन ली हो।

"हां, हां, विल्कुल यही। मैं देखता हूं कि आपके लिए लड़ाई के दौरान जो हुआ था, वह एक वात है और अव जो हो रहा है, वह दूसरी वात है। लेकिन ऐसा सोचना विल्कुल गलत है! जो लोग तव वहां थे, अव यहां हैं। उनका जीवन वदल गया है, लेकिन रुका नहीं है।"

"फिर भी आप असल में हैं कौन – लोमोव या इज़्वेकोव?" अपने व्यंग्य को छिपाये विना, लेकिन सचमुच की उत्सुकता से दीविच ने पूछा।

"इससे क्या कोई फ़र्क पड़ता है?" इज़्वेकोव ने अब खुलकर मुस्कराते हुए जवाब दिया।

"लगता है कि हम उस, तीन साल पहले मेरे बंकर में शुरू हुई बातचीत को ही आगे जारी रख रहे है। लेकिन इससे भी ज़्यादा मुझे यह लग रहा है कि... हमने जगहें बदल ली हैं। नही क्या?" दीविच ने अपनी गीली कमीज़ को अंगुलियो से पकड बदन से छुड़ाते और सिहरते हुए कहा। "मैं इस समय वैसे ही भीगा हुआ हूं, जैसे कि तब आप थे।"

"भीगा हुआ तो मैं अब भी हूं," इज़्वेकोव ने कोई दिखावा किये बिना कहा और अपने तने हुए कंधे स्पर्श किये। "शायद हमारी स्थिति एक जैसी है। सचमुच। आप कह रहे हैं कि हमने जगहें बदल ली है। पर आप भी मेरी जैसी या मेरी ही जगह पर बैठ सकते है, अगर आपके विश्वास मुझ जैसे हों।"

"मेरे पास इस समय विश्वासों के लिए वक्त नही है," दीविच बुदबुदाया।

उसने जुबीन्स्की की दी हुई पर्ची निकाली और इज़्वेकोव की ओर बढ़ायी।

"ख्वालीन्स्क में आपके रिश्तेदार हैं?" इज़्वेकोव ने पर्ची पढ़कर पूछा।

"हां, मा और बहन। मैंने उन्हें कोई पांच साल से नहीं देखा है।"

"काफ़ी लंबा समय है। मैं भी अपनी मां से लगभग नौ साल बाद अब हाल ही मे मिल पाया हूं। मैं यहां, सरातोव का ही रहनेवाला हूं," इज़्वेकोव ने आत्मीयताभरे स्वर में कहा और फिर कुछ सोचकर बोला, "मैं आपकी चिंता समझता हूं और मदद करने को तैयार हूं। आपको स्टीमर का टिकट देने के लिए आर्डर अभी लिखे देता हूं।"

उसने कलम उठायी, मगर फिर रुक गया और अपने खयालों का जवाब सा देते हुए आगे बोला,

"जाइये, अपने नाते-रिश्तेदारों से मिलिये और आराम कीजिये। लेकिन याद रहे कि आप ख्वालीन्स्क में हों या सरातोव में, इस सवाल से आप बच नही सकते: हमने जगहें बदली हैं कि नही?"

"मैं तीन साल रूस मे नही था," दीविच बड़ी कठिनाई से

बोला। "मेरे लिए यहां सब कुछ नया है। और तो और, मैं लोगों को भी नहीं पहचान पा रहा हूं।"

"आप सेना को जानते थे। सिपाहियों को आप से लगाव था। लाल सेना के लोगों को गौर से देखें। इससे आपको बहुत सी चीज़ें जानने-समझने और पसंद कर पाने में मदद मिलेगी।"

"आप सब कुछ तुरंत चाहते हैं – कि मैं आपके विश्वास भी अपना लूं, लाल सेना को भी पसंद करने लगूं..."

"तुरंत?" इज़्वेकोव हंस पड़ा। "तुरंत क्यों? आपको रूस लौटे कितना अरसा हुआ है? एक महीना? आजकल तो एक दिन, एक घंटा भी एक महीने से ज़्यादा कीमत रखता है। यह क्रांति है, कामरेड दीविच! थोड़ा सोचिये!"

"मुझे सोचने को कुछ नहीं है!" दीविच ने हताश और विवशताभरी आवाज़ में कहा। "कुछ नहीं है, समझे? खोपड़ी में भेजा नहीं है! मैं उसे खा चुका हूं, समझे? अकेली चुकंदर ही काफ़ी नहीं थी, इसलिए मैंने उसमें अपना भेजा भी मिला लिया! दो साल तक जर्मन चुकंदरों में अपना भेजा मिलाता रहा, समझे? ठीक वैसे ही, जैसे पनियल सूप में राशन की रोटी मिलाते हैं। ताकि हैवान न बन जाऊं, पगला न जाऊं, जिंदा रहूं, मैं शरीर को, कोशिकाओं को अपना बचा-खुचा भेजा, बची-खुची रगें खिलाता रहा। ये इन कोशिकाओं को, इस हाड़-मांस को..."

और वह अपनी हड़ियल बाह की झूलती, ज़र्द चमड़ी को खींच-खींचकर दिखाने लगा। उसकी निगाह धुंधली हो गयी थी और चौड़ा, पसीने से नम माथा सूप से निकाली हुई हड्डी जैसी चमक और पीलापन लिये और भी ज़्यादा आगे को उभरा दीखने लगा था।

"आपकी तबीयत ठीक नहीं क्या?" इज़्वेकोव ने तुरंत खड़े होते हुए पूछा और मेज़ के दूसरी ओर लपका।

लेकिन दीविच का सिर तब तक उसके नुकीले घुटनों पर झुक चुका था और फिर वह बच्चे जैसी अजीब सहजता से धीरे से कुर्सी से ज़मीन पर लुढ़क गया।

किरील ने उसे उठाकर सोफ़े पर लिटाया और फिर भागकर

सावधानी से दरवाज़ा खोला तथा कटे हुए बालोंवाली सेक्रेटरी से बहुत धीमी आवाज में कहा,

"डाक्टर बुला लाइये। तुरंत। यहां मेरे कमरे में।"

९

घर लौटने पर किरील ने लीजा के बारे में कोई पूछताछ नहीं की थी। उन्हे एक दूसरे से बिछुड़े बहुत ही ज्यादा समय हो चुका था। लीजा की जो याद निर्वासन के पहले महीनों में उसके लिए पंखों का काम करती थी, जिनकी मदद से वह अपनी कालापानीवाली बस्ती की उदासी से मुक्ति पा लेता था, वही याद लीजा के आगे के भाग्य के बारे में मालूम होने पर उसके लिए असह्य बोझ बन बैठी थी। किरील ने पहली बार यादों की ताकत को पहचाना था और इस खोज ने उसे अभिभूत कर दिया था। जब तक वह मानता रहा था कि लीज़ा से उसका बिछोह अस्थायी है, कि उसकी निर्वासन की अवधि पूरी हो जायेगी और फिर उनके लिए वह जीवन शुरू हो जायेगा, जिसका कि वे दोनो स्वप्न देखते रहे थे, तब तक लीज़ा की छवि दिन-रात उसके साथ थी, हालांकि उन्हें एक दूसरे से अलग करनेवाली बहुत बड़ी और जड़ भौगोलिक दूरी के कारण वह धुधली ही दिखायी देती थी। विवाह के बाद लीजा अतीत की बात बन गयी, किंतु यह ऐसा अतीत था, जो निरंतर यंत्रणा देता रहता था। किरील लाख कोशिश करने पर भी लीजा को नही भुला पाया। मां को अपनी चिट्ठियों में उसने लीजा की चर्चा तुरंत बंद कर दी और वेरा निकान्द्रोव्ना ने भी यह जानकर कि उसे लीज़ा के भाग्य के बारे में मालूम हो गया है, उसका कभी कोई उल्लेख नही किया। किरील जानता था कि लीजा को विवाह के लिए बाध्य किया गया है, किंतु उसका पति कौन था, इसका उसे न कोई अदाज था, न उसने मालूम करने की ही कोई कोशिश की। किरील को अपने एकमात्र पत्र में, जो लंबी और मनहूस सरदियों में पहुंचा था, जब वह बहुत ही अकेला, उदास महसूस कर रहा था, लीजा ने अपने विवाह के बारे में लिखा था और विनती की थी कि वह उसे कसूरवार न ठहराये, अगर और किसी वजह से नहीं,

तो केवल इसी वजह से कि इस विवाह मे उसे दुख ही हाथ लगा है। उसने लिखा था कि उसने विवाह अपनी इच्छा से नहीं, बल्कि दूसरों द्वारा विवश किये जाने पर किया है। इसलिए किरील बहुत समय तक इस घटना को त्स्वेतुखिन के नाम से नहीं जोड़ सका, जिसके प्रति लीजा का झुकाव कभी उसे बड़ी पीड़ा पहुंचाया करता था (फिर यह असंभव था कि मेरकोव अपनी लड़की का विवाह किसी अभिनेता से करेगा)। मगर जब उसे सूझा कि लीज़ा का पति त्स्वेतुखिन भी हो सकता है, उसने एकाएक एक विद्वेषभरी सी राहत महसूस की कि चलो, लीज़ा को अपनी कमज़ोरी की अच्छी सज़ा मिली है, ज्यों-ज्यों वर्ष बीतते गये, लीज़ा की याद कम-कम आने लगी, फिर भी जब आती, तो यों एकाएक आती कि किरील अपने को उसका सामना करने के लिए बिल्कुल तैयार न पाता। आम तौर पर ये उसके लिए घोर उदासी या किसी गहरी सोच के क्षण होते थे। ऐसे क्षण उसके निर्वासन की सज़ा पूरी करने के बाद भी आये, जब वह अपना असली नाम छिपाकर नीज्नी नोवगोरोद में वसीलसूर्स्क के किसी मेहनती, मगर प्रतिभाहीन और कारखाने में नौकरी खोने की आशंका से हमेशा भयभीत नक्शानवीस लोमोव के नाम से रह रहा था और हर तरह से आत्मसंयमी तथा शांतचित्त बनने की कोशिश कर रहा था। उन दिनों जब वह कभी शाम को मेला मैदान की बत्तियों पर मुग्ध होता वोल्गा के कगार पर टहलता होता, तो एकाएक उसके मन में यह विचित्र सी इच्छा जग जाती कि सड़क पर किसी के पीछे-पीछे चले और तब तक चलता रहे, जब तक कि उसके बराबर न पहुंच जाये, और बहुत समय तक वह अपने इस भ्रम से छुटकारा न पाता कि वह जिसका पीछा करना चाहता है, वह और कोई नहीं, लीज़ा ही है। उसे उसके तिरते कदमों की आहट ही न सुनायी देती, बल्कि सांझ के धुंधलके में वह उसकी सांस की उस नाज़ुक, ताज़े कच्चे दूध जैसी मीठी-मीठी महक को भी पहचान जाता, जिसने तब उसे चकित कर दिया था, जब उसने अपने तपते गालों से उसके चेहरे को पहली बार स्पर्श किया था। सपनों में वह उसके और भी निकट होती, किंतु सपनों को तोड़ना वह जानता था, जबकि यादों के ऐसे आवेग की आकस्मिकता के सामने वह असहाय सा हो जाता था।

वेरा निकान्द्रोव्ना के लिए किरील पहले जैसा लड़का भी था, जिसकी छवि उसने उसकी गिरफ्तारी के दिन से अपने दिल में बिल्कुल ज्यों की त्यों सुरक्षित रखी हुई थी, और सर्वथा अपरिचित, वयस्क पुरुष भी, जो कभी-कभी तो खुद उससे भी बड़ा लगता था और जिसका एक निराला जीवन उससे दूर और ऐसे असामान्य कार्यों में व्यस्त रहते बीता था, जिनके बारे में वह उसके पत्रों से ही अनुमान लगा सकती थी। बेटे से बिछोह के नौ लंबे वर्षों में उसके जीवन की सबसे महत्त्वपूर्ण घटनाएं ये पत्र ही थे। किरील उसे सारे निर्वासन के दौरान नियमित रूप से लिखता रहा था और फिर सूचित किया था कि अगर सालभर या इससे भी कहीं ज़्यादा समय तक उससे पत्र न मिले, तो चिंता न करे। वेरा निकान्द्रोव्ना को किरील से अगला पत्र क्रान्ति के बाद ही मिल पाया। वह समझ गयी कि अपने भूमिगत जीवन की विवशताओं के कारण ही किरील इतने समय तक पत्र नहीं लिख पाया है और उसे यह भूमिगत जीवन इतना उदात्त और पवित्रता की हद तक अबोधगम्य लगा कि उसका अनुमान करके ही वह अपने को बेटे के कटु रहस्य की सहभागिनी सी महसूस करने लगी। वह पहले की तरह अध्यापन का कार्य ही करती रही, लेकिन इन सभी वर्षों में चूंकि वह अपने विचारों में बेटे की राह का अनुगमन करती रही थी और उसके पत्रों और यहां तक कि उसकी चुप्पियों से भी उसमें आये परिवर्तनों से वाकिफ़ होती रही थी, इसलिए वह अनजाने ही अपने को मात्र सामान्य अध्यापिका नहीं, बल्कि ऐसा व्यक्ति मानने लगी थी, जो ·· तो और सब लोगों से बिल्कुल भिन्न हो।

आखिरकार जब किरील घर लौटा, तो उनकी संक्षिप्त, किंतु कभी न अघानेवाली बातचीतों का एक विशेष ढर्रा बन गया। वेरा निकान्द्रोव्ना या तो अपने बेटे को सुनती थी, या उसके सवालों का जवाब देती थी। वह मानो उससे पहले जैसा पत्रव्यवहार जारी रखे हुए थी। वह सोचती थी कि क्या कहा जा सकता है या कहना चाहिये, इसे किरील बेहतर जानता है और अगर वह चुप रहता है, तो इसका मतलब है कि उससे कुछ पूछना बेकार है। लीज़ा के बारे में किरील ने कभी एक भी शब्द नहीं कहा और मां इसका कारण तुरंत समझ गयी· अतीत पर विस्मृति की परत चढ़ गयी है और जैसे कि सूर्य

की किरणों के लिए चिरतुषार को भेद पाना असंभव होता है, वैसे ही यादों की कितनी भी ऊष्मा इस परत को नहीं भेद सकती है।

लेकिन एक बार एक भटकती किरण संयोगवश इस अंधेरे कोने पर पड़ ही गयी।

अक्तूबर क्रांति के कुछ ही समय बाद वेरा निकान्द्रोव्ना नगर के धूलभरे चौक के सामनेवाले अपने छोटे से घर को छोड़कर स्कूल की इमारत में मिले एक फ़्लैट में आकर रहने लगी थी। वह इतनी अधिक जगह की आदी नहीं थी – दो बड़े-बड़े, कक्षाभवनों की तरह उजले और सफ़ेदी पुते कमरे, खूब बड़ी रसोई और इतनी लंबी-चौड़ी ड्योढ़ी कि उसमे उसका पहलेवाला सारा घर समा जाये। नया फ़्लैट उसे उनके पुराने तहखानेवाले फ़्लैट की याद दिलाता था, जिसमें वे किरील की गिरफ़्तारी से पहले वर्षों तक रहे थे। अब जब किरील इन बड़े कमरों में लौटा, जहां पास ही दिनभर बच्चों की धमा-चौकड़ी, शोर-शराबा मचा रहता था, मां को लगा कि पुराने दिन लौट आये हैं – फिर से वह अपने बेटे के साथ रह रही थी और फिर से स्कूल की इमारत में। कमी थी तो केवल आपस में जुड़े दो छल्लों के डिज़ाइनवाली खिड़की की जालियों की और खिड़की के सामने हमेशा सरसराते तीन ऊंचे पापलर के पेड़ों की। फिर भी कभी-कभी वेरा निकान्द्रोव्ना को इस फ़्लैट में बड़ा सूना लगता था और अफ़सोस होता था कि अपनी आराम-देह डच अंगीठी के पास नहीं बैठ सकती और उसमें जब-तब भूर्ज की मुड़ी हुई छाल के टुकड़े नहीं फेंक सकती। यहां जो अंगीठियां थीं, वे इतनी बड़ी थीं कि स्कूल का चौकीदार भी मुश्किल से ही उन्हें गरम और साफ़ रख पाता था।

किरील को आये हफ़्ताभर भी नहीं हुआ था कि उसकी मां समझ गयी कि वह उसके साथ नहीं रहेगा। किंतु किरील का कहना था कि वह अलग नहीं रहना चाहता, हालांकि व्यावहारिक कारणों से उसके लिए नगर के केंद्र में, सरकारी दफ़्तरों के पास रहना ही अधिक उचित होगा, जबकि फ़ौजी मुहल्ला नगर के छोर पर था, जिसका मतलब था कि आने-जाने में ही रोज़ाना काफ़ी समय निकल जायेगा। वेरा निकान्द्रोव्ना फ़ौजी मुहल्ले को छोड़ना बिल्कुल नहीं चाहती थी। इसका मुख्य कारण स्कूल में उसकी नौकरी नहीं, बल्कि उसका अरसे से

चला आ रहा यह विश्वास था कि बार-बार स्कूल बदलने का अध्यापक के काम पर बुरा असर पड़ता है: अध्यापक को विद्यार्थी के मां-बाप का विश्वास जीतना चाहिये, लेकिन यदि वह स्कूल बदलता रहे, यह विश्वास कैसे जग सकता है? उसके लिए नगर के केंद्र में रहना कठिन था और किरील के लिए नगर के बाहरी इलाके में। उन्हें जुदा होना ही था। किंतु बेटे ने तय किया कि वह जब-जब मां के पास आता रहेगा और वही उसका मुख्य डेरा होगा। इसके लिए वह एक कमरे में अपना पुस्तकालय भी बनाने लगा।

उसका अरसे से सपना था कि उसका अपना पुस्तकालय हो, जिसमें किताबों से भरी ढेर सारी और ऐसी आलमारियां हों कि उन्हें खिसकाया भी न जा सके और वे दीवारों के साथ-साथ नहीं, बल्कि उनसे समकोण बनाते हुए खड़ी हों, ताकि आलमारियों के बीच आसानी से आया-जाया और कसी हुई कतारों में से आवश्यक किताब खींचते हुए, उसका टाइटिल पन्ना खोलते हुए, विषय-सूची पर नज़र दौड़ाते हुए, किसी अज्ञात पन्ने को खोजते हुए या किसी जानी-पहचानी पंक्ति में कोई अप्रत्याशित, नया और प्रीतिकर अर्थ छिपा देखकर आश्चर्यचकित होते हुए देर तक सूरज की तिरछी किरणों के प्रकाश में खड़ा हुआ जा सके। परिवर्तनों और उतार-चढ़ाव से भरपूर अपनी अब तक की घुमक्कड़ ज़िंदगी में किरील मुश्किल से इतनी ही किताबें इकट्ठी कर पाया था कि गठरी बांधकर उन्हें एक हाथ में उठा सके, जबकि उसका स्वप्न बहुत, बहुत सारी किताबें इकट्ठी करने का था।

अब वह समय आ गया था। बेशक किरील का हमेशा ही या लंबे अरसे तक भी फ़ौजी मुहल्ले में रहने का कोई इरादा न था। उल्टे, वह जानता था कि उसकी नकेल घटनाओं के हाथ में है, जो आदमी से सचल रहने की अपेक्षा करती हैं, और कि पेड़ के पत्ते की भांति कभी भी उसे अपनी जगह से विच्युत कर न जाने कहां पहुंचा दिया जायेगा। लेकिन यहां, मां के कमरे में उसका अपना घर, अपना डेरा और अपनी आत्मा का शरणस्थल होगा, और यह शरणस्थल, जिसका वह हमेशा ही स्वप्न देखता रहेगा, पुस्तकालय को होना था।

"मां, जानती हो," उसने अपनी मां से कहा, "फिलहाल जो किताबें तुम्हारे पास हैं और जो थोड़ी-बहुत मेरे पास हैं, उनसे ही

शुरूआत की जा सकती हैं। कोई पचास-एक तो हो ही जायेंगी। रहा सवाल आलमारी का..."

"आलमारी अभी अध्यापकों के कमरे से ले आओ, वहां फालतू पड़ी है। स्कूल का नया बजट मंजूर होते ही मैं वहां के लिए एक नयी आलमारी खरीद लूंगी।"

वेरा निकान्द्रोव्ना को कुछ ही समय पहले मुख्याध्यापिका नियुक्त किया गया था और अपने नये पद का उसे हल्का सा मद हो गया था। स्कूल में बहस चाहे नयी शिक्षण विधियों के बारे में ही क्यों न चल रही हो, वह मौक-बेमौके "स्टाफ़", "बजट", "अतिव्यय" जैसे शब्दों का प्रयोग करने से न चूकती। "पाठ्यक्रम", "समय-सारिणी", "घंटे", जैसे शब्द तो उसके लिए अब गौण से बन गये थे।

अध्यापकों के कमरेवाली आलमारी किरील को पसंद न आयी। वह बहुत संकरी थी और स्याही व मिट्टी तेल के धब्बों से इतनी भद्दी हो गयी थी कि वह उसे लेने का विचार छोड़ने ही वाला था। तभी उसकी नजर उसी कमरे में पड़ी रद्दी कापियों के ढेर पर पड़ी, जिन्हें अंगीठी में आग जलाने के लिए रखा हुआ था। उनके नीले कवर भीतर से साफ़ थे। किरील ने इन कवरों को ही आलमारी में बिछानें का निर्णय किया और सचमुच एक दो कवर बिछाने से आलमारी खूबसूरत दिखायी देने लगी। बेशक उसे फिलहाल दीवार के साथ सटाकर रखना पड़ा, क्योंकि एक अकेली को दीवार से समकोण पर रखने में कोई तुक न था, हालांकि किरील ने पहले उसे उस तरह भी रखकर देख लिया था, ताकि अंदाज़ हो सके कि जब आलमारियां कई सारी हो जायेंगी, तब कैसा लगेगा। पता चला कि वैसे भी अच्छा लगेगा।

वेरा निकान्द्रोव्ना रसोई के चाकू से कापियों की तार की सिलाई खोलकर सावधानी से कवर निकालने लगी। किरील अपनी सख्त अंगुली से उन्हें खानों के किनारों पर दबाता हुआ आलमारी में बिछाता जा रहा था।

"अरे हां, मैं तो बताना भूल ही गया। मुझे जो फ़्लैट दिया गया है, मैं आज उसे देखने गया था।"

"अब तक चुप क्यों थे? कहां पर है?"

"बड़ी सुविधाजनक जगह पर। ऊपरी बाज़ार के पास ही। शुव्लि-कोवो का घर जानती हो न? उसी में।"

वेरा निकान्द्रोव्ना के मुंह से हल्की सी आह निकली, जिसे उसने तुरन्त दबा दिया।

"क्या हुआ?" किरील ने मुड़े बिना ही पूछा।

"अंगुली में तार चुभ गया था।"

"ज़रा सावधानी से। जानती हो ये तार और कीलें..."

"तुम भी ध्यान रखना कि हाथ में फांस-वांस न लग जाये," मां ने हड़बड़ाकर अपने बालों को कान के पीछे समेटते हुए कहा।

"हमारी रेजीमेंट की समिति का एक किस्सा है," किरील बताने लगा। "हम पोलेसिये इलाके के एक गांव में पहुंचे ही थे कि सिपाहियों को किसी अहाते में समोवार दिखायी दे गया। समोवार अरसे से नहीं देखा था, इसलिए तुरंत चाय पीने की इच्छा जग गयी। एक नौजवान लकड़िया फाड़ने लगा और हथेली में फांस लगा बैठा। उस समय तो उसने इसे हंसी में टाल दिया, लेकिन दो दिन बाद हमें उसे अस्पताल ले जाना पड़ा। गैंग्रीन हो गया था। सारी लड़ाई में कुछ न हुआ, कैसे-कैसे रोंगटे खड़े कर देनेवाले अनुभवों से सकुशल गुज़र गया और यहां मामूली सी चीज से!"

"मर गया क्या?"

"नहीं, हाथ काट देना पड़ा। बहुत अच्छा आदमी था। हमारी समिति का सदस्य था।"

"देखा," मां बोली।

"क्या मतलब? अंगुली में तार तुम्हारे चुभा है और किस्सा भी मैं तुम्हारे फायदे के लिए सुना रहा था।"

"फ्लैट क्या काफ़ी बड़ा है?" मां ने कुछ ठहरकर पूछा।

"व्यापारी-बनियों के घरों जैसा। चाहो, तो साइकिल भी चला लो।"

"क्या करोगे इतने बड़े का?"

"अगर तुम भी मेरे साथ रहने आ जाती..."

"हां, अगर आ सकती..."

"मैं जानता हूं। खैर, मैं सोचता हूं कि अपने लिए दो ही कमरे रखूंगा। उनका अलग दरवाज़ा भी है।"

दोनों एक दूसरे की ओर देखे विना अपने सरल काम में व्यस्त थे। किरील कागज़ को फटाफट खानों के तख्तों के नीचे अटकाता जा रहा था। ऊपर की तरफ़ कितावें कागज़ को दवाये रखतीं।

"मालूम नहीं, तुम्हें वहां अच्छा लगेगा कि नहीं," वेरा निकान्द्रोव्ना वोली।

"उस घर में? लेकिन क्यों? मेरी ज़रूरत कोई खास नहीं है।"

"मैं जानती हूं," वेरा निकान्द्रोव्ना ने हौले से कहा और अपने वेटे की ओर देखा। "मगर इस घर में एक खास वात है।"

"भूत-प्रेत रहते हैं क्या?"

"शायद," उसने हंसने की कोशिश करते हुए जवाव दिया।

"इस घर में रहनेवाले वनिये के साथ अगर कुछ हुआ होता, तव तो कोई वात भी थी। लेकिन जहां तक मुझे मालूम है, ऐसा कुछ भी नहीं हुआ। वस उसे वहां से निकालकर मकान को म्यूनिसिपैलिटी की संपत्ति वना दिया गया है। मैंने तो यह भी सुना है कि वह कहीं हमारे ही यहां नौकरी कर रहा है। ऐसे में भूत-प्रेत कहां से आयेंगे?"

उसने मुस्कराते हुए अपनी मां को देखा, लेकिन तुरंत समझ गया कि वह मज़ाक नहीं कर रही है: वेरा निकान्द्रोव्ना के लटके हुए हाथों की हरकतें, चेहरे का भाव, सांस, आदि हर चीज़ एक अजीव से तनाव का परिचय दे रही थी। वेरा निकान्द्रोव्ना ने आंखें उठायीं और देखा कि किरील उसके कुछ कहने का इंतज़ार कर रहा है।

"शुब्निकोव लीज़ा का पति था," उसने कहा।

किरील के चेहरे का सांवलापन और गाढ़ा हो गया। उसमें ज़ैतून जैसी हरी छाया भी उभर आयी। वह जड़ वना जहां का तहां खड़ा था।

"तुमने पूछा नहीं था, इसलिए मैं भी चुप रही," उसकी निगाहों में छिपे उलाहने को भांपकर वेरा निकान्द्रोव्ना ने आगे कहा।

किरील ने मुड़कर आलमारी के खाने पर अपनी भारी मुट्ठियां फेरीं, एक मुट्ठी एक ओर और दूसरी मुट्ठी दूसरी ओर, और इस तरह हाथ फैलाये चुपचाप खड़ा रहा।

"मेरे पास कागज़ खत्म हो गया है। तुम पिछड़ रही हो," आखिरकार उसने कहा।

वेरा निकान्द्रोव्ना ने उसे कुछ और कवर पकड़ाये और वह झुककर,

चेहरे को छिपाते हुए नीचे के खाने पर कागज़ बिछाने लगा। एकाएक उसके मुंह से हल्की सी सिसकारी निकली और वह तन गया।

"क्या हुआ? फांस चुभ गयी? दिखाना तो!" वेरा निकान्द्रोव्ना ने उसके पास आते हुए पूछा।

"नहीं, कोई खास नहीं है," दांतों से अंगुली की नोक दबाते और फिर इसी हाथ को फैलाते हुए, ताकि मां नजदीक न आये, किरील ने कहा।

काम छोड़कर वह खिड़की के पास चला गया और उसे खोलकर वहीं खड़ा हो गया। दूर से ट्राम की आवाज सुनायी दी। उसके इंजन का शोर कभी-कभी कर्कश सीटी में बदलता हुआ लगातार बढ़ता ही जा रहा था। तभी सड़क के मोड़ के पीछे से आती गायों के झुंड ने मानो नाराजगी से रंभाकर ट्राम के शोर का जवाब दिया। डूबते सूरज की किरणों से लाल शहतीरों के मकान तसवीरोंवाली किताबों में बने मकानों जैसे लगने लगे थे। गायों के ऊपर सांझ की गुलाबी धूल यों उड़ रही थी, जैसे कि वे उसे अपने सींगों पर उठाये लिये जा रही हों।

"तुमने 'था' कहा," किरील ने खिड़की से बाहर देखते हुए ही कहा और जब कोई जवाब न मिला, तो आवाज कुछ और ऊंची करके पूछा, "क्या अब नहीं है?"

"लड़ाई के जमाने में लीजा ने उसे छोड़ दिया था," वेरा निकान्द्रोव्ना बोली।

किरील फिर चुप हो गया और देर तक बस्ती को ताकता रहा, देखता रहा कि कैसे मकानों का शांत गुलाबीपन लौ जैसी दमकती लालिमा में बदल रहा है और फिर कैसे यह लालिमा चुपके-चुपके घिरती आती सांझ की सुरमई आभा धारण करती जा रही है। गायें सतोष और साथ ही आतुरता से रंभाते हुए अपने-अपने बाड़ों में घुस रही थीं। फिर कुछ समय बाद चारों ओर खामोशी छा गयी।

"और अब कहां है?" किरील ने यों पूछा, मानो खामोशी को सम्बोधित कर रहा हो।

"मालूम नहीं। हां, तब अपने पिता के पास चली गयी थी।"

"उसके बच्चे हैं?"

"शायद एक लड़का है।"

"कितना बड़ा होगा ?" किरील ने कुछ रुककर पूछा, फिर एकाएक खिड़की से हटकर मां के पास आया और उसकी बांह पकड़कर एक बेंच के पास ले गया, जिसपर दोनों बैठ गये।

"तुम्हें सब कुछ मालूम है, है न? कैसे हुआ यह सब ? कैसे, कैसे हो सका? क्या वजह थी? तुम क्या सोचती हो? क्यों, क्यों, क्यों?"

उसने सवालों की ऐसी झड़ी लगा दी, जैसे कि उन सभी गांठों और उलझनों से एक साथ छुटकारा पा जाना चाहता हो, जो उसकी अदम्य जिज्ञासा को अब तक रोके हुई थी। उसकी मां भी उसकी सब कुछ जान लेने की भूख से खुश होकर वैसी ही आतुरता से बताने लगी कि उसकी वजह से उसपर और लीज़ा पर क्या-क्या बीती थी, लीज़ा के बारे में उसने क्या-क्या सोचा था, क्या-क्या सुना था या अंदाज़ किया था, यानी किसी औरत से संबंधित छोटी-मोटी ऐसी सभी बातें, जिन्हें केवल कोई दूसरी औरत ही जान सकती है और सिर्फ़ तभी बतायी जाती हैं, जब वह दूसरी औरत कोई बात छिपाकर रखना न चाहती हो।

किरील कोहनियां घुटनों पर और ठोड़ी हथेलियों पर टिकाये बैठा था। वह अपनी मां के हर शब्द को बड़े ध्यान से सुन रहा था। बेशक वह लीज़ा को लीज़ा के तौर पर ही जानता था। पर वह मेश्कोवा भी तो थी। पहले किरील के लिए मेश्कोवों का कोई अस्तित्व न था— उसके लिए अस्तित्व केवल लीज़ा का था। शायद उन दिनों वह अपने को भी मात्र किरील समझता था। लेकिन वह इज़्वेकोव का, जिसकी उसे कोई याद न थी, और एक स्कूली अध्यापिका का, जिसने उसे वैसा आदमी बनने की शिक्षा दी थी, जैसा कि वह अब था, बेटा भी तो था। लीज़ा के साथ जो घटा, उसका कारण शायद उसका मेश्कोव होना था, पर किरील के लिए यह कारण पर्याप्त न था। उसे लगा कि लीज़ा ने अपने स्वभाव के विरुद्ध काम किया है, लेकिन क्यों, यह वह नहीं समझ रहा था। मां की बातों ने उसे परेशानी में डाल दिया था। वे इतनी सारी थीं कि उसे वे बोझ सी लग रही थीं। वह चाहता था कि लीज़ा के बारे में यह उनकी पहली और आखिरी बातचीत हो। इसलिए उसे खत्म सा करते हुए उसने कहा,

"आखिरकार तुम उसके बारे में क्या सोचती हो?"

"मैं सोचती हूं कि वह ज़रूरत से ज़्यादा नेक है।"

"यानी कमज़ोर?"

"नहीं, नेक। नेक उसके लिए, जो उसके पास है। नेक आम तौर पर, अमूर्त रूप में।"

"अमूर्त रूप में?" किरील ने दोहराया और असहमति सी जताते हुए कंधे उचकाये। "यह तो कमज़ोर होने से भी बदतर है। यह तो उदासीन होना है। लेकिन मुझे लगता है कि तुम ठीक नहीं हो। शायद वह ज़रूरत से ज़्यादा नरम है?"

"हो सकता है," वेरा निकान्द्रोव्ना ने बेटे की तरह सोच में पड़ते हुए जवाब दिया।

सीढ़ियों पर किसी के चढ़ने की आहट सुनायी दी। शायद चौकीदार समोवार लेकर आ रहा था।

"फिर भी उसने पति को छोड़ दिया और बच्चे को अपने साथ ले गयी," वेरा निकान्द्रोव्ना ने कहा। "कमज़ोर औरत ऐसा न कर पाती।"

"औरतें अपने पति को या तो डर के मारे छोड़ती हैं या फिर और कोई चारा न देखकर। कभी-कभी इसलिए भी कि पति से दिल ऊब जाता है। ये सभी ताकत की नहीं, कमज़ोरी की निशानियां हैं। इसके अलावा, समय भी आदमी को बदल डालता है – कितने साल रही वह अपने पति के साथ? लेकिन शादी से पहले उसके साथ जो हुआ, उसकी वजहें ये नहीं हो सकतीं।"

किरील ने खड़े होकर अंगड़ाई ली, मानो बातचीत को यहीं पर खत्म कर देना और इस विषय पर फिर कभी न लौटना चाहता हो।

"मैं सोचता था कि समझ जाऊंगा," उसने शांति से कहा। "लेकिन समझ न पाया और न शायद कभी समझ ही सकूंगा। शायद यह अच्छा ही है... आओ, काम खत्म कर दें।"

स्टेज के उजाले की भांति डूबते सूरज की लाल किरणों ने कमरे को और बड़ा और क्षितिज तक फैले प्रकाश से जगमग दुनिया का अंग सा बना दिया था। ड्योढ़ी का दरवाज़ा खुला हुआ था और उसके पीछे के बड़े कमरे में भी यह मूक, लाल दीप्ति बिखरी हुई थी।

सीढ़ियों पर आहट बंद हुई और ड्योढ़ी में ऊंचे कद, मगर झुके

कंधोंवाले एक आदमी ने प्रवेश किया। दहलीज़ पर पहुंचते ही उसकी आंखें भिंच गयीं और वह रुक गया – उजाला उसके मुछैल, वड़े चेहरे पर सीधे पड़ रहा था।

"मुझे बताया गया है कि कामरेड इज़्वेकोव यहां रहते हैं," आगंतुक ने सावधानी से शब्द चुनते हुए कहा।

किरील ने पास जाकर गौर से उसे देखा और अपने दोनों हाथ तुरंत उसकी ओर यों बढ़ा दिये, जैसे किसी बेढव और नाज़ुक चीज को पकड़ना चाहता हो।

"प्योत्र पेत्रोविच, तुम?" उसने हौले से पूछा।

आगंतुक ने उसका हाथ अपने हाथों में लिया और उसे उजाले की ओर मोड़कर खुशी सी ज़ाहिर करते हुए सिर हिलाया।

"मज़बूत हो गये हो, हालांकि देखने में वैसे ही लग रहे हो।"

"और तुम भी तो वैसे ही हो," किरील ने पहले जैसे ही हौले से कहा।

"क्या बात करते हो!" प्योत्र पेत्रोविच ने टोपी उतारते और खोपड़ी पर हथेली फेरते हुए कहा। "यह चांद नहीं देखते क्या?"

दोनों ने एक दूसरे को बाहों में भरकर गले लगाया, फिर अलग होकर एक दूसरे को दुबारा गौर से देखा और न जाने क्या-क्या कहते और ज़ोर-ज़ोर से हंसते हुए धीरे-धीरे कमरे की ओर बढ़ चले। दोनों में ज़मीन-आसमान का अंतर था – किरील सीधा तना हुआ, यहां तक कि थोड़ा सा पीछे को झुका हुआ और अपने मेहमान से पूरे डेढ़ बालिश्त छोटा और प्योत्र पेत्रोविच भारी-भरकम, आगे को झुका हुआ और लंबी बांहों तथा गरदनवाला। लेकिन लाल उजाले ने इस क्षण दोनों को एकाकार और एक दूसरे से मिलता-जुलता बना दिया था और यह सादृश्य उनके हंसी-ठहाके और उल्लास के कारण और भी बढ़ गया था।

"मां, यह रागोज़िन हैं," किरील ने वैसे ही हर्षित स्वर में कहा और अपने मित्र की बांह फिर पकड़ ली।

"अच्छा तो वही हैं आप!" वेरा निकान्द्रोव्ना बुदबुदायी।

उसने रागोज़िन को यों देखा, जैसे किसी असामान्य ऊंचाई से देख रही हो और एक ही क्षण में उसके बेटे का अतीत, उसका

10*

अपना अतीत और वह सब उसकी आंखों के सामने से गुज़र गया, जिसे देख पाना उसके भाग्य में अब तक नहीं बदा था।

"हां, मैं..." रागोज़िन क्षमायाचना सी करते हुए बुदबुदाया, "मैं वही रागोज़िन हूं। अब हम..."

तीनों ऐसे लोगों की तरह मुस्करा रहे थे, जो अरसे से मिलने को आतुर रहे हों और उत्तेजना के मारे ठीक-ठीक शब्द भी न खोज पा रहे हों, लेकिन जिनके होंठों पर आये पहले शब्द अपनी अस्पष्टता में ही उनकी उस क्षण की भावनाओं को सही-सही व्यक्त किये दे रहे हों।

"अब हम..." रागोज़िन ने दोहराया और किरील की ओर देखते हुए हल्के से आंख झपकी। "अब हम फिर साथ हैं। है न?"

"तुम तो रत्तीभर भी नहीं बदले! बिल्कुल ज़िंदा लगते हो!" इज्वेकोव उसके आसपास घूमते और उसकी आस्तीन व कोट के घिसे किनारों को छूते हुए कह रहा था।

"मैं भला ज़िंदा क्यों न लगूं? ज़िंदगी का मज़ा लेने का वक्त तो अब आया है!" रागोज़िन ने जवाब दिया।

"और मूंछें भी वैसी ही ऐंठी हुई। मां, इधर देखो तो! तब भी ये ऐसी ही ऐंठी हुई होती थीं," किरील ने तारीफ़ सी करते हुए याद किया।

"और ऐसी ही होनी भी चाहिए," रागोज़िन ने संतोष से अपनी मूंछें उमेठते हुए कहा।

"मां, जल्दी में किसी दावत-शावत का इंतज़ाम नहीं हो सकता?"

"क्यों नहीं!" वेरा निकान्द्रोव्ना ने मेहमान से अपनी नज़रें न हटाते हुए जवाब दिया। "अभी समोवार तैयार हो जाता है।"

"यह हुई न बात!" रागोज़िन ने अपनी भारी-भरकम आवाज़ में कहा।

"मां, तुम्हें क्या इससे बेहतर कुछ न सूझ सका?"

"इस समय और क्या इंतज़ाम हो सकता है?" मां ने अचकचाकर पूछा।

उनकी प्रसन्नता का पहला दौर ऐसी ही अटपटी बातों में गुज़रता रहा, जब तक कि उसने हवा के तेज़ झोंके के बाद शांत हुए जलाशय

की चमकती सतह की भांति उनकी आत्मा को पूर्णतः मग्न न कर दिया। बाद में रागोज़िन ने आलमारी के खानों पर नज़र दौड़ायी, मेज़ पर पड़े गत्ते के टुकड़े उठाये, जिनपर बड़े-बड़े अक्षरों में लिखा हुआ था: 'इतिहास', 'समाजशास्त्र', और फिर हंसते हुए पूछा,

"विचार तो अच्छा है। पर पुस्तकालय कहां है?"

"पुस्तकालय हो जायेगा।"

"बड़े दुनियादार हो!"

अब वे एक दूसरे का शांत नज़रों से अध्ययन कर सकते थे। रागोज़िन ने रुके बिना कहा,

"इस समय किताबों की आलमारी तो भाग्य का निर्णय नहीं करेगी। क्यों, ठीक है न?"

"ठीक तो है, लेकिन किताबों की आलमारी के बिना भी निर्णय नहीं होगा।"

"और उच्च गणित के बिना भी, है न?"

"बिल्कुल ठीक कहा।"

"यह न सोचो कि मैं इस सबके खिलाफ़ हूं," रागोज़िन ने समझौता सा करते हुए कहा और फिर हंस पड़ा। "बिल्कुल छुईमुई हो! ज़रा सा बात पर बिदक जाते हो! खैर, जहां तक याद है, तुम पहले भी ऐसे ही थे!"

"नहीं, ऐसी बात नहीं है," किरील एकाएक बच्चों की तरह शरमा गया। "किताबों से मेरा यह लगाव निर्वासन के दिनों में पैदा हुआ था। वहां सेंट पीटर्सबर्ग से निर्वासित एक बहुत ही असाधारण आदमी था। दाढ़ी इतनी लंबी कि क्या बताऊं।"

"कोई नरोद्निक था क्या?"

"यानी कि समाजवादी-क्रांतिकारी? नहीं। वह अपने को किताब पार्टी का कहा करता था। वह लाइब्रेरियन था, पुस्तकसूचीकार था। यहां तक कि हमारे लोग भी उसके घर में आलमारियों के पीछे अपना साहित्य छिपाया करते थे, ताकि बाद में मौका मिलते ही बाहर भेज सकें। सबका अंत उसके निर्वासन में हुआ। वह शामों को हमें किताबों के बारे में बताया करता था और उसे सुनने में हमें बेहद आनंद आता था। कभी-कभी तो बातें करते हुए उसके आंसू बहने लगते और दाढ़ी

भी भीग जाती। वह हमें एल्ज़ेवीरों, वेनिस की एल्डीनों, हमारे रूसी प्रकाशनों, 'कोलोकोल', 'पोल्यार्नाया ज़्वेज़्दा', आदि के बारे में बताता। एक बार उसके सामने मैं किसी किताब को 'किताबिया' कह बैठा। उसे यह इतना बुरा लगा कि बोला: 'तुम क्या चाहते हो कि तुम मेरी नज़रों में गिर जाओ?' उसका कहना था कि किताबिया घृणा का शब्द, पाखंडियों और ढोंगियों का शब्द है, जबकि किताब जीवन, मान, यश, समृद्धि, उल्लास, परम सुख और मानवता के लिए अगाध स्नेह का प्रतीक है। मैंने पूछा, 'तो क्या मैं प्रतिक्रियावादियों के ज़हरभरे कबाड़ को भी किताब कहूं?' उसका चेहरा मुरझा गया। वह बोला, 'ऐसा कबाड़ तो किताबिया कहलाने के भी योग्य नहीं है।'"

"दिलचस्प बातें हैं," रागोज़िन बोला।

"उसे हर किताब याद थी, चाहे वह उसके हाथों में एक ही दिन क्यों न रही हो। एक बार उसने शरमाते हुए यहां तक कबूल किया कि वह लोगों से ज़्यादा किताबों का भक्त है। उसने हमें मास्को के एक किताबें इकट्ठा करनेवाले का किस्सा सुनाया, जो सुबह उठकर रोज़ाना सबसे पहले रूसी प्रकाशक और रूसी साहित्य के प्रथम इतिहास-लेखक निकोलाई नोविकोव की आत्मा की शांति के लिए प्रार्थना किया करता था। 'मैं तुम लोगों से सहमत हो जाता कि धर्म को खत्म कर देना चाहिए – मैं भी शिक्षित आदमी हूं,' उस दढ़ियल का कहना था, 'लेकिन धर्म को खत्म नहीं किया जा सकता, क्योंकि नोविकोव के लिए प्रार्थना करना हर शिक्षित आदमी का कर्तव्य है।'"

"ऐसे लोगों से मेरा भी साबिका पड़ा है," रागोज़िन ने सहमति में सिर हिलाते हुए कहा। "मैं उन्हें भी खत्म कर देता, लेकिन तब किताबों से प्यार करने की सीख कौन देगा?"

"यही तो बात है!" किरील बोला। "मैं सोचता हूं कि तुम यह गंभीरता से कह रहे हो। है न? तो इस किताबी कीड़े ने किताबों की छूत मुझे भी लगा दी। बेशक मैं प्रार्थना तो नही करता, पर किताबों का भक्त जरूर बन गया हूं।"

"तुम किसी की मूर्ति बनाकर नहीं पूजोगे..." रागोज़िन ने हंसते हुए पादरियों जैसे अंदाज़ में कहा और फिर गंभीरतापूर्वक बोला, "चलो, मैं तुम्हें एक जगह ले चलूं। किताबों के पहाड़ लगे हैं! जानते

हो न कि हमारे यहां पुरानी चीज़ों का विभाग भी है। उसका एक पूरा गोदाम लावारिस किताबों से भरा पड़ा है। चलेंगे, देखेंगे न? बेशक पढ़ने का तो मुझे मौका नहीं मिल पाता, पर अरसे से मैं कुछ खोज रहा हूं... किताबों में से ही। जानते हो न कि..."

"सफ़ाई देने की ज़रूरत नहीं। मैं राज़ी हूं," किरील ने यों कहा, जैसे उसका हौसला बढ़ा रहा हो।

दोनों ने एक दूसरे को कनखियों से देखा।

"फिर बिदक उठे!" रागोज़िन ने दोहराया। "लगता है कि कालापानी ने कुछ फ़ायदा किया है अगर इतने उत्साह से सब कुछ याद कर रहे हो। और मैं... मेरे दिल में हूक सी उठती रहती थी कि कहीं मेरी वजह से ही तो छोकड़े को वहां भालुओं के बीच नहीं जाना पड़ा है..."

"तुम मेरे धर्मपिता ज़रूर हो, लेकिन मैं क्या करता हूं, इसके लिए जवाबदेह नहीं हो सकते। ओखली में सिर मैंने अपनी मर्ज़ी से दिया था। है न? मुझे दूसरा ही खयाल सताता था: कहीं मैंने साथियों को, और उनके साथ तुम्हें भी, निराश तो नहीं किया है? अगर मैं तब उन परचों को समय पर बांट देता, तो शायद कुछ भी न हुआ होता।"

"नहीं, इस सबका इंतज़ाम पुलिस ने पहले ही कर लिया था। उनका इरादा एक साथ सबको पकड़ने का था, इसलिए ऐरे-गैरों को भी हिरासत में ले लिया। लोग ऐसे फंसे, जैसे कि जाल में मछलियां। मैं तो संयोगवश ही बच निकला।"

बत्ती जलायी जा चुकी थी और वे मेज़ के पास बैठे हुए थे। उन्हें एक दूसरे से जुदा करनेवाले, अतीत की चर्चा खत्म हुई, तो उसकी चर्चा होने लगी, जिसके बारे में वे अब हर समय सोचते रहते थे, यानी युद्ध की चर्चा। तभी अचानक उनकी बातचीत में विघ्न पड़ गया: कोई दरवाज़े के अंधेरे में आकर खड़ा हो गया था। वेरा निकान्द्रोव्ना ने आंखों पर हाथ की ओट करते हुए कहा,

"तुम हो? आओ-आओ।"

विराम एक ही क्षण का था और उसके दौरान इज़्वेकोव और रागोज़िन मानो तय कर रहे थे कि बातचीत में, जो वास्तव में तो

अभी शुरू हुई थी, पड़े इस विघ्न को कैसे लें। किंतु अगले ही क्षण स्वतः उनका ध्यान कमरे में दाखिल हुई लड़की की ओर खिंच गया और दोनों एक साथ खड़े हो गये।

लडकी ने वेरा निकान्द्रोव्ना का गाल चूमा और घनिष्ठ मित्र जैसी तेर्जा और सहजता से अपना गाल भी चूमने के लिए आगे बढ़ा दिया।

"आज इतवार है। मैंने सोचा कि आप घर पर होंगी," उसने कहा और फिर दो मर्दों को देखकर आगे बोली, "मैं थोड़ी देर के लिए ही आयी हूं।"

वह धीमे बोल रही थी, किंतु उसकी आवाज़ में गायिकाओं जैसी जन्मजात गूंज और पूर्णता थी।

"हां, हां, तुम्हारे पास खाली समय भला क्यों होगा!" वेरा निकान्द्रोव्ना ने उलाहना दिया, लेकिन किसी मां जैसे गर्व और प्रशसाभरे स्वर में। "किरील, यही है आनोचका पाराबुकिना।"

आनोचका ने तेज़ और निःशब्द कदमों से समीप आते हुए किरील की ओर अपना लंबा, छरहरा हाथ बढ़ाया नहीं, बल्कि झटके से फैला दिया।

"हम परिचित हैं," उसने पहले जैसी ही धीमी, मगर और भी भरपूर आवाज़ में कहा, "हालांकि स्वाभाविक है कि आपको याद न हो। मैं तब इतनी सी थी," उसने छाती के सामने हाथ से दिखाते हुए बताया। "लेकिन मैं आपको तुरंत पहचान गयी।"

उसने प्योत्र पेत्रोविच से भी हाथ मिलाया, फिर इधर-उधर नज़र दौड़ायी और कोई खाली कुर्सी न पाकर बगल के कमरे में चली गयी। उसकी चाल विचित्रता की हद तक सहज और फिसलती हुई सी थी, लेकिन अपनी निःशब्दता के बावजूद इस चाल में कुछ अटपटापन भी था। वह इतनी हल्की-फुल्की अपने बदन की लोच के कारण नहीं, बल्कि कृशता के कारण लग रही थी, जो पतली और वह भी अपनी आयु से ज्यादा दिखनेवाली लड़कियों जैसी बहुत ही लंबी टांगों और बाहों से साफ़-साफ़ झलक रही थी। एक कुर्सी लाकर वह वेरा निकान्द्रोव्ना के पास बैठ गयी। बत्ती का उजाला उसके पीछे गरदन पर लड़कों जैसे लहराते और माथे तथा कनपटियों पर छोटी-छोटी, चमकीली, घुंघराली लटों के रूप में बिखरे पड़े, छोटे कटे हुए बालोंवाले

सिर पर पड़ रहा था। उसके चेहरे में कुछ विरोधाभास सा था क्योंकि अंडाकार चेहरा, तीखे नक्श और सुंदर ठोड़ी तथा मुंह ज़रूरत से ज़्यादा तनी हुई भौंहों से कतई मेल नहीं खा रहे थे, जिसके कारण शांत नीली आंखें भी कठोर लगने लगी थीं।

"तुम इसे ऐसे क्या देख रहे हो?" वेरा निकान्द्रोव्ना ने किरील से पूछा, जो आनोचका को चुपचाप देखता बुत सा खड़ा हुआ था। "यह सिरफिरी शायद तुझे भी लड़के जैसी अधिक लग रही है, है न?" वेरा निकान्द्रोव्ना ने आनोचका की लटों को सहलाते हुए कहा।

"मैं सोच रहा था कि कितना लंबा अरसा गुज़र गया है!" किरील ने जवाब दिया और अपनी कुर्सी कुछ ऐसे खिसकायी कि आनोचका को बेहतर देख सके। लेकिन तभी रागोज़िन पर भी नज़र पड़ी और उसने जल्दी से कुर्सी पहले की जगह पर खिसका दी। बीच में टूटी हुई बातचीत को आगे जारी रखने के दृढ़ इरादे से और अपनी अप्रत्याशित उलझन को छिपाते हुए उसने वे ही शब्द कहे, जो ऐसी स्थिति में आम तौर पर कहे जाते हैं,

"तो मैं कह रहा था कि..."

लेकिन उसका दिमाग कहीं और ही था और हालांकि वह संबोधित रागोज़िन को कर रहा था, बातचीत उससे नहीं हो रही थी।

"अपने को देखकर लगता है कि कुछ भी नहीं हुआ है। सिर्फ़ समय दौड़ रहा है और बाकी सब कुछ वैसे ही है। लेकिन दूसरे को देखो, तो लगता है कि उस लोक से आ टपके हो! अगर तुम्हारे इर्द-गिर्द हर कोई इतना बदल गया है, तो तुममें भी क्या कोई परिवर्तन नहीं आये होंगे?!"

"पहली बार मैंने आपको जैसा देखा था, मैं बिल्कुल वैसी बन गयी हूं," आनोचका ने कहा और एकाएक अपने पर लगाम सी लगाते हुए बात को स्पष्ट किया, "मेरे कहने का मतलब है कि उम्र के लिहाज़ से।"

अपनी हंसी रोकने के लिए उसने ओंठ काट लिया और इसके साथ ही उसकी भौंहें ऊपर ऐसे उठीं कि आंखों में अब तक जो कठोरता का भाव था, वह लुप्त हो गया और उसकी जगह उनमें आश्चर्य और शरारत झलकने लगी। सब एक साथ मुस्करा पड़े और

वेरा निकान्द्रोव्ना ने विल्कुल अध्यापिका जैसे अंदाज़ में कहा, "अगर नौ साल पहले लड़की की उम्र लड़के की उम्र से आधी थी और अब लड़के की उम्र उससे डेढ़गुनी ज़्यादा है, तो लड़की की उम्र कितनी होगी?"

"लड़की की तो नहीं जानता, पर लड़के की उम्र, मेरे हिसाव से, सत्ताइस साल है," रागोज़िन ने आंखें सिकोड़ते हुए जवाब दिया।

"ओ-हो, तुम्हें तो वित्त विभाग में होना चाहिए!" किरील बोला।

"मेरे पीछे पड़े तो हुए हैं, पर मैं बच निकला।"

"अब नहीं बच सकोगे!"

"ऊंह, कितने खूंखार हो!"

किरील के लिए इस मज़ाक में भी कोई गंभीर बात छिपी हुई थी। वह कभी इस ओर, तो कभी उस ओर झुककर आनोचका को देखे जा रहा था, क्योंकि बीच में समोवार आड़े आ रहा था। उसने जो लंबे अरसे की बात कही थी, वह उसके दिमाग में अभी भी चक्कर काट रही थी। रागोज़िन से दोबारा मिलने पर उसे अपने और उसके बीच के पहलेवाले अंतर में कोई नवीनता नहीं दिखी थी: दोनों एक ही कतार में आगे बढ़े जा रहे थे। किंतु आनोचका के आगमन ने उसे अपने में ऐसे परिवर्तन का अहसास करा दिया, जो मानो एकाएक ही आ गया था। उसने पाया कि सचमुच लंबा अरसा, उसे और मुश्किल से याद उस सनिया बालोंवाली लड़की को अलग करनेवाला लंबा अरसा गुज़र गया है और उन दोनों के बीच का अंतर विल्कुल नया है। लेकिन हैरानी की बात यह थी कि उसे उसमें आये परिवर्तन का बोध करवाकर और उसके सामने बिल्कुल नये रूप में आकर भी आनोचका उसे किसी अपरिवर्तित की सी याद दिला रही थी। वह लेशमात्र भी लीज़ा जैसी न थी, किंतु किरील को उसमें लीजा ही दिखायी दे रही थी और वह हैरान था कि यह लीज़ा बिल्कुल भी नहीं बदली है, पहले जैसे ही अठारह साल की है, पहले जैसी ही सुंदर–हो सकता है कि और भी सुंदर–है, जबकि वह खुद पूरी तरह से बदल गया है और दोनों एक दूसरे से बहुत दूर स्थित कतारों में हैं। किरील ऐसी दोहरी अनुभूतियों का आदी नहीं था, इसलिए यह उसे अप्रिय भी लगा और सुखद भी।

"तुम्हें कहां की जल्दी है?" वेरा निकान्द्रोव्ना ने पूछा।

"येगोर पावलोविच ने शाम को हमारे साथ रिहर्सल का वायदा किया है।"

"येगोर पावलोविच कौन है?" किरील ने पूछा।

"हमारी नाटक मंडली के मुखिया। अभिनेता त्स्वेतुख़िन।"

"त्स्वेतुख़िन? वह ज़िंदा है?"

"क्यों नहीं होंगे? वह इतने बूढ़े तो नहीं हैं," आनोचका ने बुरा सा मानते हुए कुछ कटुता मे जवाब दिया।

"नहीं, नहीं, मेरा मतलब था कि क्या वह अब भी यहीं है?" किरील ने अपने को सही करते हुए कहा।

लो, लीज़ा की याद आयी, तो त्स्वेतुख़िन को भी टपकना ही था – और कुछ हो भी नहीं सकता था।

"मैं तुम्हें बताना भूल गयी कि आनोचका थियेटर में अभिनय किया करेगी," वेरा निकान्द्रोव्ना ने गर्व और क्षमायाचना, दोनों में से न जाने किसका-पुट लिये हुए उस मुश्किल से पहचान में आनेवाले अंदाज़ में कहा, जिसमें कि नये, उभरते कलाकारों और अभिनेताओं के बारे में लोग बोला करते हैं। "इसने अपने लिए पेशा चुन लिया है।"

"तुम कहना चाहती हो कि कोई ऐसा भी है, जिसने अभी तक नहीं चुना है?" किरील अपनी कड़वाहट न छिपाते हुए बोला।

"तुम्हें नाक क्यों लग रही है?" उसकी मां ने सीधे जवाब दिया। "तुम तो कह चुके हो कि मौका मिलते ही पढ़ाई में जुट जाओगे, ताकि कोई पेशा सीख सको। आदमी को कुछ न कुछ तो बनना ही चाहिए, उसका अपना कोई न कोई पेशा तो होना ही चाहिए।"

"ऐसी बात है!" अब तो किरील खुलकर हंस पड़ा और रागोज़िन के कंधे पर बांह रखकर उससे सट गया, मानो सहानुभूति चाह रहा हो। "राजनीतिवाले ज़िंदगीभर सीखते रहते हैं, फिर भी आखिर तक नहीं सीख पाते। क्यों, ठीक है न, प्योत्र पेत्रोविच? कुछ न कुछ तो बनना ही चाहिए, जबकि राजनीतिवाले किसी भी गिनती में नहीं आते। समाज बनाना, नयी दुनिया का निर्माण करना, जीवन का कायाकल्प करना – यह भी भला कोई पेशा है! लेकिन मिसाल के लिए, अगर तुम कविता करते हो, तो यह दूसरी बात है। यह पेशा होगा। लेकिन कवि आखिरकार करता क्या है? किस काम में व्यस्त रहता है?"

"वह रखता है," रोगोजिन ने कहा।

"क्या रखता है? कविता से न हल लगाया जा सकता है, न पेट भरा जा सकता है। फिर भी इसे पेशा कहते हैं!"

"आपको कला क्या बिल्कुल पसंद नहीं?" आलोचका ने गंभीरता से पूछा।

"नहीं, कला तो पसंद है," किरील ने जवाब दिया और कुछ क्षण के लिए चुप हो गया। फिर एकाएक बोला, "लेकिन मैं उसे गंभीरता से लेता हूं। सच कहूं, तो मैं भी कलाकार बनना, कला की सेवा करना चाहूंगा, क्योंकि तब मैं लोगों पर ज़्यादा असर डाल सकता हूं। लोगों को प्रभावित कर पाना क्या महान कला नहीं है? इस समय तो मैं लोगों को संगठित करने, उनका नेतृत्व करने का धंधा सीख ही रहा हूं। लेकिन मैं जानता हूं कि इस धंधे को भी बड़ी ऊंचाई तक, कला के स्तर तक उठाया जा सकता है। जब मेरे हाथ में लोगों को प्रभावित करने के सभी हथियार, सभी साधन हो जायेंगे, मैं कारीगर से कलाकार बन जाऊंगा। अगर मैंने नये समाज का निर्माण करना सीख लिया, तो मैं जो हर्ष, उल्लास अनुभव करूंगा, वह दर्शकों को अश्रु-विभोर करना जाननेवाले किसी अभिनेता के हर्ष, उल्लास से कम न होगा। मैं भी कलाकार की तरह हर्षित होऊंगा, जब देखूंगा कि लोगों के कठिन जीवन से अतीत का एक टुकड़ा टूट गया है। मैं जो सुखी, स्वस्थ और बलिष्ठ व्यवस्था लाना चाहता हूं, लोगों के आपसी संबंधों में उसके अंकुर पनपने भी लग गये हैं... नहीं, नहीं, मुझे कला पसंद है," किरील ने एक बार फिर गहन विश्वास के साथ कहा और रोगोजिन को और करीब खींचकर मां की ओर देखकर मुस्करा दिया। "खैर, हम भी कुछ न कुछ बन ही जायेंगे। है न, प्योत्र पेत्रोविच? कुछ न कुछ!"

"वह ठीक कह रहा है?" वेरा निकान्द्रोव्ना ने रोगोजिन से पूछा – इसलिए नहीं कि उसे अपने बेटे के सही होने की पुष्टि चाहिये थी, बल्कि इसलिए कि वह इसमें अपना विश्वास जता देना चाहती थी। रोगोजिन ने हल्के से सिर हिलाकर किरील के सही होने की पुष्टि की और कंधे से उसका हाथ हटाकर हथेलियों में दबा लिया।

"आप सोचते हैं कि मैं कला को उतनी ही गंभीरता से नहीं लूंगी?" आलोचका ने उसी संजीदगी से पूछा।

"मैंने यह नहीं कहा," किरील चौकन्ना हो गया। "मैं तो यही चाहता था कि आप न सोच बैठें कि मेरी कला से कुछ खटपट है।"

"कविता के बारे में आपकी बातों से तो यही निष्कर्ष निकलता था..."

"मैंने क्या कविता के बारे में बुरी बातें कही हैं?"

"बुरी तो नहीं," आनोचका ने सिर को झटका दिया और फिर मानो सही शब्द पाकर कहा, "मगर उनमें बड़प्पन की बू अवश्य थी।"

"बड़प्पन? नहीं। यह तो कवियों की ही विशेषता है। वे सोचते हैं कि कविता करना क्रांति करने से कहीं बड़ा काम है। आप भी कहीं ऐसा ही तो नहीं सोचतीं?"

आनोचका ने जवाब नहीं दिया, लेकिन वेरा निकान्द्रोव्ना की ओर झुककर शरारतभरे अंदाज़ में बुदबुदायी,

"लो, 'मानव सुख' में फिर फ़ेल हो गयी।"

"मानव सुख?" किरील बोला।

"यह उनके स्कूल में एक विषय था," वेरा निकान्द्रोव्ना ने मुस्कराते हुए समझाया। "वे 'मानव सुख'... क्यों, आनोचका, तुम लोग 'मानव सुख' किसे कहा करते थे?"

"मैंने अभी-अभी जिम्नाज़ियम – इसे अब स्कूल कहते हैं – की पढ़ाई खत्म की है," आनोचका जल्दी-जल्दी बोली, "और वहां हम, यानी लड़कियां, हर विषय को किसी खास नाम से पुकारा करती थीं। मिसाल के लिए, साहित्य को हमने 'चिरस्वप्न' नाम दिया हुआ था। आखिरी साल में हमें राजनीतिक अर्थशास्त्र और संविधान भी पढ़ना पड़ा और उन्हें हम 'मानव सुख' कहा करते थे। इस 'मानव सुख' में मैं कभी पास न हो पायी।"

"देखा, 'मानव सुख' कितनी टेढ़ी खीर है!" रागोज़िन ने हंसते हुए कहा।

"लेकिन हम तो 'चिरस्वप्न' की बातें कर रहे थे," किरील बिना किसी मुस्कराहट के और आनोचका को देखते हुए उत्तेजित स्वर में बोला।

"आप ठीक कह रहे हैं," आनोचका भी उसे एकटक देखते हुए बोली। "लेकिन मुझे लगता है कि आप 'चिरस्वप्न' के बजाय 'मानव

मुख' का ज्यादा मूल्य करते हैं। और चूंकि आप चाहते हैं कि सब आपके जैसा ही सोचें, आपने पहली ही मुलाकात में मुझे फ़ेल कर दिया।"

"बस, अब तुम न जाने क्या बकवास कर रहे हो," वेरा निकान्द्रोव्ना बोली।

किरील ने ओठों पर अंगुलियां रखकर अपनी मुस्कान छिपाते हुए कहा,

"लेकिन मैं नहीं चाहता कि सब मेरी तरह ही सोचें। मैं तो तुम लोगों को अपने जैसा सोचते देखना चाहता हूं।"

"मांग बड़ी नहीं है, लेकिन मैं शायद पूरी न कर पाऊंगी।"

"अगर बड़ी नहीं है, तो क्यों?"

"इसलिए कि हमारे मतभेद तुरंत प्रकट हो गये हैं।"

"मिसाल के लिए?"

"मिसाल के लिए, मेरे त्स्वेतुखिन का नाम लेते ही आप न जाने क्यों एकदम बदल गये थे।"

"मैं कह नहीं सकता कि अब वह कैसा होगा," किरील ने नज़रें झुकाते हुए कहा। "लेकिन पहले वह मुझे फूटी आंखों नहीं सुहाता था। वह बड़ा घमंडी है... बिल्कुल मोर जैसा।"

"आपका पूरा नाम क्या है? किरील... और आगे?" आनोचका ने एकाएक पूछा।

"जब मैं यहां नहीं होता, आप मुझे क्या कहकर पुकारती हैं?"

"जब आप नहीं होते, मैं कुछ भी कहकर नहीं पुकारती।"

"बड़ी धूर्त है!" वेरा निकान्द्रोव्ना मुस्करा दी। "ख़ैर, इसका पूरा नाम किरील निकोलायेविच है।"

"तो सुनिये, श्रीमान किरील निकोलायेविच। मैं आपको एक सलाह देना चाहती हूं। जिन लोगों को आप नहीं जानते, उनके बारे में राये मत दिया कीजिये।"

"ठीक कहा," वेरा निकान्द्रोव्ना कुछ परेशान सी होते हुए बोली। "त्स्वेतुखिन साहसी और सरल आदमी है।"

आनोचका ने हौले से झुककर वेरा निकान्द्रोव्ना का गाल जल्दी से फिर चूम लिया।

"मैं अब चलूं," उसने कहा और वेरा निकान्द्रोव्ना का सिर अपने हाथों में लेकर और अपना सिर हिलाकर शब्दों पर ज़ोर देते हुए जोड़ा, "बिल्कुल ठीक! बहुत ही साहसी और सरल आदमी!"

वेरा निकान्द्रोव्ना ने आनोचका के हाथ अपने हाथों में लिये और उसकी आंखों में झांकते हुए पूछा,

"ओल्गा इवानोव्ना की तबीयत कैसी है?"

"बहुत खराब है," आनोचका ने कुछ लापरवाही से जवाब दिया, लेकिन साथ ही इस तरह कि जैसे इस बारे में और कुछ पूछने-बताने की ज़रूरत नहीं है, और फिर सीधी होकर मेज़ का चक्कर लगाया, ताकि किरील से विदा ले सके।

"ठीक है," किरील ने अचकचाते हुए एकाएक कहा, "मैं आपकी सलाह मानने को तैयार हूं। नाराज़ न हों।"

"मैं नाराज़ नहीं हूं," आनोचका ने सहजता से जवाब दिया और क्षणभर में ही कमरे से गायब हो गयी।

एक मिनट तक कोई कुछ न बोला। फिर गहरी सांस लेते हुए रागोज़िन ने पूछा।

"सुनते हैं, तुम्हारे लिए मकान का इंतज़ाम हो गया है। उसी में रहोगे?"

"नहीं। मुझे वह पसंद नहीं है।"

"ऐसी बात है! बुर्जुआ का घर पसंद नहीं आया!"

"हां, नहीं आया," किरील ने कहा, किंतु स्पष्ट था कि वह किसी और चीज़ के बारे में सोच रहा था। "मैं. भई, नकचढ़ा हो गया हूं..."

१०

गरमियों का मौसम लगभग आ ही गया था। एक दिन जब हवा बिल्कुल नहीं चल रही थी, पास्तुख़ोव सफ़ेद चमकीले धागेवाला, पीले-कत्थई रंग और पुराने से फ़ैशन का घुटनों तक लटकता कोट पहने दोरोगोमीलोव की ड्योढ़ी से उतरा। पहले उसने ऊपर देखा कि बादल तो नहीं छाये हैं। इसके बाद दायें-बायें देखा कि किधर जाना बेहतर

होगा और फिर नीचे झांका कि कहीं कीचड़ तो नहीं है। तभी उसकी नज़र सामने फ़ुटपाथ पर एक ही उम्र के तीन छोकड़ों पर पड़ी, जो मकान के धूप से चमकते हुए अग्रभाग की ओर पीठ किये और सड़क के डामर पर पैर पसारे बैठे थे। डामर पर जगह-जगह थूका हुआ था। पास्तुख़ोव के पैरों की आहट सुनकर उन्होंने उसकी ओर देखा और इंतजार करते रहे कि वह कुछ कहेगा या चुपचाप चला जायेगा। उन तीन गंदे चेहरों में से एक को पास्तुख़ोव ने पहचान लिया। यह उसका लड़का अल्योशा था।

"तुम लोग यहां क्या कर रहे हो?" उसने पास जाकर पूछा।

"खेल रहे हैं," अल्योशा ने जवाब दिया।

"क्या खेल रहे हो?"

"कौन ज़्यादा दूर थूकता है।"

"हम्म," पास्तुख़ोव के मुंह से निकला। पहले तो उसकी समझ में न आया कि आगे क्या कहे, फिर तुरंत बर्फ़ीली आवाज़ में, फुफकारते हुए बोला, "जाओ, अभी घर जाओ और मां से कहो कि मैंने तुम्हें गधा कहा है और बाहर निकलने की मनाही की है।"

फिर उसने थूकनेवालों को देखा। कहां से आ जाते हैं ये? सचमुच इस घर में न मालूम क्या शहद लगा था कि गली-मुहल्ले के छोकड़े मक्खियों की तरह यहां मंडराते रहते हैं। अल्योशा को उनसे दूर रखना नामुमकिन था – सड़क पर, बाग में, पिछवाड़े की सीढ़ियों के पास, आर्मेनी रोमानोविच के कमरों में, हर कहीं तो थे वे। शायद उनके साथ खेलने में कोई हर्ज था भी नहीं (अलेक्सांद्र व्लादीमिरोविच का भी यही सोचना था कि बच्चों को गमलों के पौधों की तरह अलग-थलग नहीं, बल्कि खेत के गेहूं की तदह अपने जैसों के बीच बड़ा होना चाहिए), लेकिन छोकड़ों की तादाद कोई कम थोड़े ही थी। ओल्गा आदमोव्ना अपने को घर के कामों मे शहर भेजे जाने और अल्योशा को निगरानी के बिना छोड़े जाने का विरोध करती थी। उसने यहां तक कह दिया था कि बाज़ार जाना उसकी ड्यूटी में शामिल नहीं है। लेकिन पास्तुख़ोव ऐसा भी तो नहीं होने दे सकता था कि मैडम घर में बैठी रहें और बाजार का काम आस्या करे। समय ही ऐसा था। गुज़र तो करनी ही थी। सारा सवाल समय का था और असुविधाएं भी

कुछ ही समय के लिए थीं। जब यह भयंकर भ्रातृघाती लड़ाई खत्म हो जायेगी, अलेक्सांद्र व्लादीमिरोविच कारेलियाई फ़र्नीचरवाले अपने पीटर्सबर्ग के अध्ययनकक्ष में लौट जायेगा। तब तक तो सभी को सहन करना ही होगा।

कुल मिलाकर पास्तुख़ोव को औरों से ज़्यादा ही सहना पड़ रहा था। वह काम का, अपने नाटक थियेटरों में खेले जाने का आदी था। लेकिन आजकल तो थियेटरों में सिर्फ़ बातें होती थीं, काम-धाम कुछ नहीं, क्योंकि पास्तुख़ोव के नाटक खेलना बंद कर दिया गया था। वहां लोग यूनानी और रोमन नाटकों, सोफ़ोक्लीज़ और एरिस्टोफ़ेनीज़, उद्दाम आवेग जगानेवाले नाटकों, शेक्सपियर और शिलर, चौराहों पर आयोजित तमाशों, सैकड़ों लोगों की सहभागिता से किये जानेवाले शानदार प्रदर्शनों और ऐसे दर्शक की बातें करते थे, जो अभिनेताओं जैसा ही महसूस करता है और उनके साथ हंसता, रोता और गाता है। बातें नहीं की जाती थीं, तो सिर्फ़ पास्तुख़ोव और उसके विख्यात नाटकों और शायद सचमुच ही अच्छी कामेडियों की, हालांकि पास्तु-ख़ोव के नाटक कोर्श और नेज़्लोबिन के थियेटरों में ही नहीं, स्वयं अलेक्सांद्रीन्स्की थियेटर में भी खेले जा चुके थे। कभी सड़क पर परिचित अभिनेता मिल जाते, तो उसे चूमने और अभिवादन के दो-चार शब्द ("कैसे हैं? क्या समाचार हैं?") गरज लेने के बाद दयनीय से स्वर में वे उसे विश्वास दिलाने लगते कि आज स्टेज को जिस चीज़–उदात्त, शानदार, भव्य ढंग की चीज़–की ज़रूरत है ("जिसका आयाम सचमुच बहुत बड़ा हो, ऐसी चीज़, समझे!"–वे कहते थे) उसे केवल वही लिख सकता है, क्योंकि अकेला वह, पास्तुख़ोव, ही बचा है, जो ऐसे काम का बीड़ा उठा सकता है ("दूसरे सब बहुत छिछले हैं। नहीं? तो आप ही बतायें, कौन उठा सकता है। कोई भी तो नहीं!")। और फिर जब यह सारा उफान खत्म हो जाता, वे उसी आत्मीयता का प्रदर्शन करते हुए दयनीय स्वर को भावुकतापूर्ण गुटर-गूं में बदल डालते, जिससे पास्तुख़ोव समझ जाता कि चाहे वह कितना भी शानदार नाटक क्यों न लिखे, कोई उसे खेलेगा नहीं, क्योंकि अब जो ज़माना आया है, वह नये की खोज का और शायद पुराने की टूटन का ज़माना है, ऐसा ज़माना है, जब हर कोई खोज रहा है,

लेकिन क्या खोज रहा है, यह खुद भी नही जानता, हालांकि इस प्रक्रिया में पहले से चली आ रही, विकसित शैलियों को सभी ठुकराये जा रहे हैं, जबकि पास्तुख़ोव की सबसे बड़ी खूबी यही है कि उसकी अपनी शैली, पूरी तरह प्रौढ़ शैली है ("पास्तुख़ोव, तुम अपने आपमें एक विधा हो, समझे? तुम्हें वे नहीं समझेंगे। ज़रा भी नहीं। और फिर समझ भी कौन सकता है? कौन?")।

ऐसे में लगता था कि लिखने में कोई तुक है भी नहीं। फिर पास्तुख़ोव जानता था कि इस समय वह लाख कोशिश करने पर भी नही लिख सकता। पृथ्वी की पपड़ी ने करवट ली है – उन दिनों जो कुछ घट रहा था, उसके बारे में पास्तुख़ोव की यही राय थी। पहले अपने किसी नये नाटक के लिए दृश्य पर दृश्य लिखते जाना उसके बायें हाथ का खेल था, लेकिन अब तो जैसे उसकी कल्पना को जंग लग गया है। पहले वह ऐसे अनायास लिखा करता था, जैसे पेट में खाना पचता है। अब काम उसके लिए यंत्रणा बन गया है और वह नहीं जानता कि क्या करे। जब सारी पृथ्वी पर ही ऐसी हलचल मच गयी हो, तब उसके काम जैसी मामूली चीज़ क्या भला ज्यों की त्यों रह सकती थी? इस भूकंप में सब कुछ डगमगा गया था, सदियों पुराने ढांचों की कार्निसें भरराकर लोगों पर गिरी जा रही थीं, बाइबिल के ज़माने की तरह लोग दहशत के मारे जहां बन पड़ा या जहां संयोग ले गया, भागे जा रहे थे। पास्तुख़ोव भी भाग रहा था।

किंतु देखने में वह भगोड़ा नहीं लगता था। उसका पहरावा पहले जैसा ही सुरुचिपूर्ण था। बेशक पिछले दो सालों में उसने नया कुछ न खरीदा था और पहले के कपड़े भी जो हल्के से घिस गये थे, उससे उनमें मानो जान ही आ गयी थी, जो कि सलीके से रहनेवालों के पहरावे की विशेषता होती है। असल में वह पहले जैसा ही बना-ठना लगता था और जानकार लोग तुरंत कह सकते थे कि वह पीटर्सबर्ग का रहनेवाला है। हर तरह की परिस्थिति में जीवन का अध्ययन करने की आदत के कारण उसकी स्वतंत्र चाल-ढाल मे एक तरह का बड़प्पन झलकता था, लेकिन इसे वह उसी सीमा तक प्रकट होने देता था, जिस सीमा तक कि वह सहज और स्वाभाविक लगे। उसका व्यवहार जिज्ञासु आदमी जैसा भी था और जानकार विशेषज्ञ जैसा भी, जिससे कभी वह भोले

गंवार जैसा लगने लगता था, तो कभी किसी छोटे-मोटे देश के राजदूत जैसे आत्मगर्व से भरपूर। साथ ही वह विनम्र दिखना और जीवन का आनंद उठाना जानता था। इस समय भी जब वह परेशान था, भविष्य की चिंता से ग्रस्त था, उसे देखकर कोई नहीं कह सकता था कि वह जीवन से संतुष्ट नहीं है।

सरातोव पहुंचते ही पहला काम जो उसने किया, वह था अभिनेता त्स्वेतुख़िन को ढूंढ़ना, जिससे उसकी अपनी मातृभूमि की पिछली यात्रा के दौरान गाढ़ी मित्रता हो गयी थी और जिसे बाद में पीटर्सबर्ग में उसने भुलाया तो नहीं था, हां तात्कालिक मित्रों की श्रेणी से मात्र कभी-कभार याद किये जानेवाले मित्रों की श्रेणी में अवश्य शामिल कर लिया था। जैसे स्कूली साथियों को स्कूल एक दूसरे के निकट लाता है और फिर जीवन जुदा कर देता है, वैसे ही कोई दस-एक साल पहले एक ही नगर में निवास ने पास्तुख़ोव और त्स्वेतुख़िन के बीच घनिष्ठता पैदा कर दी थी और फिर पास्तुख़ोव के प्रस्थान ने उन्हें जुदा कर दिया था। उनकी जुदाई में उस सूक्ष्म बाधा का भी हाथ था, जो राजधानी के निवासियों को हमेशा से प्रांतीय नगरों में रहनेवालों से अलग करती है और जिसकी प्रायः मात्र कल्पना ही की जा सकती है।

इन सारे वर्षों में संपर्क न बनाये रखने के लिए त्स्वेतुख़िन भी पास्तुख़ोव से कम ज़िम्मेदार न था। वह पत्र लिखने का खास शौकीन न था। अपनी इस आदत को उसने कभी तोड़ा होगा, तो केवल किसी औरत के लिए ही और वह भी बहुत कम। मर्दों से पत्रव्यवहार करने को तो वह बेवकूफ़ी मानता था। – "क्या मैं किसी बनिये का क्लर्क हूं कि चिट्ठियां लिखता रहूं?" – वह कहता था और दावा करता था कि अभिनेता अकेली चिट्ठियां जो लिखते हैं, वे अपने महाजनों को ही लिखते हैं। वैसे हो सकता है कि पास्तुख़ोव की चुप्पी उसे बुरी लगी हो और यह सोचकर कि अगर पहले वह चिट्ठी लिखेगा, तो पास्तुख़ोव जवाब नहीं भी दे सकता है, उसने अपने अहं को दांव पर न लगाना चाहा हो।

पास्तुख़ोव सबसे पहले म्युनिसिपल थियेटर में गया – नगर के जाने-माने अभिनेता का पता लगाने के लिए वही सबसे उपयुक्त जगह थी। किंतु वहां भी कुछ खास पता नहीं चल सका। पिछले कुछ समय से येगोर पावलोविच वहां काम नहीं कर रहा था और अपनी अलग नाटक-

मंडली बनाने में जुटा हुआ था, जो या तो रेलवे मजदूरों के क्लब, या स्थानीय गैरीजन के क्लब या ऐसी किसी और जगह रिहर्सल किया करती थी। पास्तुख़ोव की थियेटर में जिस बूढ़े, दढ़ियल आदमी से बात हुई, उसने हल्के से आंख मारते और अंगुली से माथे की ओर इशारा करते हुए कहा,

"लगता है कि उनपर कोई फ़ितूर सवार है।"

"क्या मतलब? येगोर पावलोविच पर?"

"हां-हां, उन्हीं पर। वह हमारे यहां से चले गये हैं और बातें अजीब-अजीब सी करते हैं।"

"आप भी क्या अभिनेता है?"

"नहीं। मैं रंगमंच के साज़-सामान की देखभाल करता हूं। पर आप मेरी बात का विश्वास कर सकते हैं।"

पास्तुख़ोव विश्वास करने को बिल्कुल तैयार था। वह अपने मित्र की सनकों से परिचित था – उसकी वायलिन, उसका आविष्कारों का शौक, मंच पर पेश करने के लिए ठेठ चरित्रों की खोज की उसकी धुन, आदि उसे याद थीं। उस मौके को तो वह कभी नहीं भूल सकता था, जब त्स्वेतुख़िन ऐसे ठेठ चरित्रों की खोज में निकला था और इस चक्कर में उसने पास्तुख़ोव को भी क्रांतिकारियों से संबंधित एक संगीन अदालती मामले में फंसा दिया था, जिससे वे दोनों बड़ी मुश्किल से छुटकारा पा सके थे। इसलिए वह येगोर पावलोविच से जैसे सामान्य, प्रिय आदमियों जैसी सामान्य हरकतों की उम्मीद कर सकता था, वैसे ही झक्कियों जैसी किसी सनकभरी हरकत की भी।

लीप्की बुलवार पार करके अलेक्सांद्र व्लादीमिरोविच संगीत महाविद्यालय के पास स्थित उस पुराने, जर्जर होटल की ओर बढ़ा, जहां कभी त्स्वेतुख़िन रहा करता था। वह होटल के अहाते को पहचान गया, हालांकि डामर लगी पगडंडियों के किनारे के पापलर बड़े होकर बहुत फैल गये थे। पहले की तरह ही हवा में संगीत महाविद्यालय की खुली खिड़कियों से आती ध्वनियां – पियानों का आर्पेजियो, बांसुरी की सिसकनें, चेलो की मंद्र कराहें – हवा में घुलमिल रही थीं। नुकीली छतोंवाली ऊंची लाल इमारत संगीत की मिली-जुली आवाज़ों से खिंचकर मानो पंजों के बल खड़ी आकाश छूने को आतुर हो रही थी। उसके

पैरों के पास होटल की इमारतें सिमटी हुई थीं। पास्तुख़ोव ने सबसे दूर की इमारत का चक्कर लगाया। यहां भी खिड़कियां खुली हुई थीं और एक बेसुरे पियानो के स्वर बड़ी इमारत से आती ध्वनियों का क्षीण सा उत्तर दे रहे थे।

पास्तुख़ोव को कुकुरमुत्तों और अमोनिया की गंधवाले लंबे गलियारे और कत्थई कंबलों से ढकी चारपाइयोंवाले खुले कमरों का मुआयना करने से रोकनेवाला कहीं कोई न था। आखिरकार वह एक हॉल में पहुंचा, जिसमें एक नकली झबरैला ताड़ का पेड़ खड़ा हुआ था। वे वेसुरे स्वर यहीं से आ रहे थे। वह दरवाज़े पर खड़ा संगीत की इस न रुकने-वाली नकल को सुनता रहा। एक युवती, जो ऊंची, तंग स्कर्ट और घुटने तक बंधे कपड़े के फ़ैशनेबुल जूते पहने हुई थी, अपनी लकड़ी जैसी तनी, कड़ी तर्जनी परदे पर ऊपर से तड़ाक-तड़ाक मारती और पैडल पर पैर ज़ोर-ज़ोर से पटकती हुई बेचारे पियानो से जैसे-तैसे 'कुमारी की प्रार्थना' नामक धुन-युगों तक प्रांतीय जीवन की आशाओं और आकांक्षाओं का प्रतीक बनी रहनेवाली धुन – के सुर निकाल रही थी।

पास्तुख़ोव खंखारा। युवती ने पियानो के परदे से तर्जनी हटाये बिना मुड़कर उसकी ओर देखा।

"आपको मुझसे काम है?" युवती ने पूछा।

"माफ़ कीजिये, मैंने आपके अभ्यास में विघ्न डाला।"

"क्या!

"विघ्न के लिए माफ़ी चाहता हूं। अभिनेता त्स्वेतुख़िन क्या यहीं रहता है?

"अभिनेता?" युवती ने झट से दोहराया और पैडल से पैर ऐसे हटाया कि पियानो बूढ़े कुत्ते की तरह गुर्रा उठा। "वह कोई डेलीगेट है?"

"मालूम नहीं," पास्तुख़ोव ने कहा। "वैसे हो भी सकता है।"

"यहां ज़्यादातर डेलीगेट ठहरे हुए हैं।"

"कौन से डेलीगेट? शायद त्स्वेतुख़िन भी डेलीगेट हो?"

"क्यों नहीं," युवती ने घुटने पर घुटना टिकाते हुए सहमति जतायी। "जो भी कांग्रेसों वगैरह में भाग लेने आता है, यहीं ठहरता है।

यह होस्टल सा है। आखिरी दो कमरों में संगीत महाविद्यालय के विद्यार्थी रहते हैं। लेकिन उनमें तो कोई अभिनेता नहीं है।"

"माफ़ कीजिये, क्या आप भी संगीत महाविद्यालय में पढ़ती हैं?" पास्तुख़ोव ने ऐसे आदरभरे स्वर में पूछा कि किसी को उसमें छिपे व्यंग्य का भान भी नही हो सकता था।

"आप शायद मुझे पियानो बजाता देखकर ऐसा सोच रहे है? नही, मैं यों ही बजा रही थी। आपसे किसने कहा कि यह अभिनेता यहां रहता है?"

"वह यहां रहा करता था।"

"बहुत पहले?"

"हां," पास्तुख़ोव ने गंभीरता से जवाब दिया। "कोई आठ या नौ साल पहले।"

युवती ने झुककर अपनी फीते बंधी पिंडलियों को पकड़ लिया और आश्चर्य से अपनी उजली बत्तीसी दिखाती हुई खिलखिलाकर हंस पड़ी।

"नौ साल? यह तो पिछली सदी की बात है! नहीं, आप शायद मज़ाक कर रहे हैं। अगर आप सच कह रहे हैं, तो बेहतर होता, मेरे दादा से पूछते। आप भी शायद अभिनेता हैं। मेरा अंदाज़ ठीक है न?"

उसकी प्रशंसाभरी निगाहें पास्तुख़ोव के हैट, सूट और जूतों पर दौड़ रही थीं। चेहरे पर तो वे एक बार भी नहीं टिकीं। वह बिना रुके बोले जा रही थी।

"आप यहां काम करती हैं?" पास्तुख़ोव ने मुस्कराते हुए पूछा।

"नहीं, मैं 'जीवन दर्पण' में हूं।"

"अच्छा, आप जीवन दर्पण में हैं? क्या बला है यह जीवन दर्पण?"

"सिनेमाघर। यही बगलवाला। आप नहीं जानते? मैं वहां टिकट बेचती हूं। चाची माशा मुझे कभी-कभार यहां पियानो बजाने की इजाजत दे देती है।"

"चाची माशा?"

"हां, वह यहां परिचारिका है। पियानो वैसे हमारे सिनेमाघर में भी है, पर मैनेजर छूने भी नहीं देता। चाची माशा और मैं यहां पास ही रहती हैं और हमारे बीच गाढ़ी दोस्ती है। इस समय वह खाना खाने गयी है। मैं उसी की जगह पर बैठी हुई हूं।"

"अच्छा?" पास्तुख़ोव ने कहा। "ख़ैर, मैं आपका शुक्रगुज़ार हूं।"

"पर क्या आप अभिनेता नहीं हैं?" युवती ने अंगुलियों से माथे पर गिरी लट को ठीक करते हुए फिर पूछा।

"मैं नहीं बताऊंगा।"

"न बतायें। मैं खुद जानती हूं। सभी अभिनेता ऐसे ही विचित्र होते हैं। अगर आप मज़ाक नहीं कर रहे थे कि आपका दोस्त यहां इतने पहले रहा करता था, तो पहली इमारत में कमांडेंट से जाकर पूछ सकते हैं। शायद उसे मालूम हो।"

पास्तुख़ोव ने उसे फिर धन्यवाद दिया और उसकी नारी-सुलभ उत्सुकता से छलकती शरारती निगाहों पर मुग्ध होता हुआ हल्के से मुस्कराया, जिसके जवाब में वह फिर खिलखिलाकर हंस पड़ी। बाहर आकर अहाते में पास्तुख़ोव को पियानो की वह बेरोक, मगर अब पहले से और तेज़ आवाज़ फिर सुनायी दी और वह पियानो के परदे पर उस खड़ी तर्जनी के गिरने की कल्पना करके मन ही मन हंसने लगा।

संगीत की इस हास्यजनक शौकीन के रूप में उसे एक नयी और इतने आत्मविश्वास से भरपूर चीज़ दिखायी दी थी कि उसे लगा कि अजूबा वह युवती नहीं, बल्कि वह खुद है, उसके अपने पिछली सदी के सपने हैं। पिछली सदी! वह चौंक पड़ा, क्योंकि वह यह विशेषण उस हाल के ज़माने के लिए इस्तेमाल कर रहा था, जिसे वह किसी भी तरह अतीत का हिस्सा मानने को तैयार न था, हालांकि वह अब कभी लौटकर नही आ सकता था। सचमुच क्या वह खुद ही तो पिछली सदी नही है? किसी डगमगाती इमारत की टूटी कार्निस का टुकड़ा? किसी विस्मृत धुन का हवा में ठहरा हुआ अंश, या फिर इसी प्रांतीय 'कुमारी की प्रार्थना' धुन का ही कोई तुच्छ सा सुर?

"क्या बकवास है!" उसने एकाएक अपने से कहा।

लेकिन ज्योंही उसने अपने इन सब खयालों को बकवास कहा, वह ज़माना, जिसे वह अतीत का हिस्सा मानने को तैयार न था, सहसा इतनी दूर चला गया कि वह डर के मारे जहां का तहां रुक गया। उसे लगा कि उसके चारों ओर सब कुछ बिल्कुल बदला हुआ है, कि जैसे नगर का नक्शा खुद नगर जैसा नहीं होता, वैसे ही कुछ भी

पहले जैसा नही है। बेशक नगर का नक्शा वही है, जो कि पहले था और मकान भी पहले की जगह पर ही खड़े हैं, पहले जितने ही ऊंचे और पहले जैसे ही रंगोंवाले हैं, फिर भी सब कुछ में एक नया भाव, एक नया अर्थ आ गया है। इस आमूल बदले हुए परिवेश में वह अकेले अपने को ही पहले जैसा पा रहा था। इस अनजाने नगर में वह अपने अतीत को, अपनी सदी को ढूंढ़ता हुआ भटक रहा था।

"मैं बूढ़ा हो गया हूं," धीरे-धीरे सड़क पर आते और हक्का-बक्का होकर उसे देखते हुए उसने अपने से कहा। "यहां ऐसा बूढ़ा अकेला मैं ही हूं।"

अपना पहले जैसा सुखद आत्मिक संतुलन वापस पाने के लिए उसे बुढ़ापे से संबंधित इस अनावश्यक स्वीकारोक्ति के खंडन की ज़रूरत थी। तभी सहसा राहगीरों में उसकी नज़र एक असाधारण से आदमी पर पड़ी।

यह एक बूढ़ा था, जिसने अपनी बेरंग चांद को सूप जैसे बड़े कानों तक काढ़े सफ़ेद-नीले, इक्के-दुक्के बालों के हंसिये से छिपाने की कोशिश की थी। उसकी गोल दाढ़ी और सफ़ेद भौंहें, जो मूंछों से किसी भांति छोटी न थीं, देव-प्रतिमा की याद दिलाती थीं, जबकि पैनी आंखें किसी शहीद या प्रतिशोधी की आंखों जैसी लगती थीं। वह जैसा मुड़ा-तुड़ा पांजी कोट पहने हुए था, वैसा अब अरसे से गरमियों में कोई नहीं पहनता था। उसकी जेबें घुटनों तक लटकी और तरह-तरह के कागजों व पुड़ियाओं से भरी हुई थीं। वह हाथ में जो पनामा हैट पकड़े था, उसे देखकर सूखे हुए कद्दू की याद आ सकती थी। पास्तुख़ोव के समीप पहुंचते ही उसने यों गौर से देखा कि गालों पर गहरी शिकनें पड़ गयी। फिर अगले ही क्षण वह मुस्करा भी उठा, जिससे उसके हरित-पीले दांत यों दिखायी देने लगे कि जैसे उसने मुंह में पिस्ते भरे हुए हों।

"कब पधारे, अलेक्सांद्र व्लादीमिरोविच?" पास्तुख़ोव को गले लगाने के लिए बांहें फैलाते हुए वह चिल्लाया। "स्वागत है! आपने मुझे पहचाना नहीं?"

"माफ़ी चाहता हूं, नहीं पहचान पाया," पास्तुख़ोव ने आंखें झपकते हुए जवाब दिया।

"पहचानेंगे भी कैसे! जवान बढ़ते हैं और बूढ़े बुढ़ाते हैं। मैंने ही आपकी मदद की थी, आपको बचाया था, जब आप अंडरग्राउंड आंदोलन से ताल्लुक की वजह से पुलिस के चंगुल में फंस गये थे। याद है न?"

"हां, हां, एक मिनट..." पास्तुख़ोव ने याद करने की कोशिश करते हुए कहा, हालांकि उसे विश्वास था कि ऐसी कोई बात उसे शायद ही याद आ पायेगी।

"कोशिश करें, कोशिश करें," बूढ़े ने मदद करनी चाही।

"हां... ऐसा कुछ शायद सचमुच..."

"क्यों नहीं, उस समय पुलिस ने आपसे मुचलका भी लिखवाया था कि आप शहर छोड़कर नहीं जायेंगे। याद है?"

"सचमुच, सचमुच!" पास्तुख़ोव ने आश्चर्य प्रकट किया।

"और उस समय आप अस्तापोवो जाने की तैयारियां कर रहे थे, जहां लेव तोलस्तोय मृत्युशय्या पर पड़े थे। है न?"

"अरे, हां, बस एक मिनट..."

"ज़रा ज़ोर डालिये दिमाग पर। याद आ जायेगा।"

"बेशक, लेकिन सचमुच कुछ याद नहीं आ पा रहा..."

"अच्छे हैं आप भी, अलेक्सांद्र व्लादीमिरोविच! भूल गये कि किसने तब प्रोसीक्यूटर से आपके लिए मिन्नतें की थीं, किसने कला की खातिर और हम सबकी खातिर भी आपको बचाया था! अब भी याद नहीं कर सके?"

"कुछ-कुछ तो..." पास्तुख़ोव ने दयनीय स्वर में कहा।

"मैं मेर्त्सालोव हूं। क्या याद नहीं?" बूढ़ा यों चिल्लाया कि जैसे यह नाम कोई रामबाण औषधि हो।

"अच्छा! मेर्त्सालोव!" पास्तुख़ोव ने और परेशान होते हुए दोहराया।

"हां, हां, मेर्त्सालोव! वही, जो पहले यहां के 'लिस्तोक' का संपादक हुआ करता था!"

"अ-हां, अब याद आ गया! नमस्ते, नमस्ते!" पास्तुख़ोव ने राहत महसूस करते हुए हथेली से माथा पोंछा।

दोनों ने गर्मजोशी से हाथ मिलाया। बूढ़े की ठसाठस भरी जेबें

उसके घुटनों से टकरा रही थी। वह अपना पनामा हैट कभी सिर पर रख रहा था, तो कभी उतार ले रहा था। पास्तुख़ोव उसे देखता और अपने स्फूर्तिदायी आत्मसंतोष की पूर्ण शक्ति के साथ मन ही मन कहता जा रहा था: कितना अच्छा है कि मैं जवान हूं, जवान हूं, जवान हूं, कि मुझे पांजी कोट नहीं पहनने पड़ते, जेबों में अख़बार नहीं ठूंसे रहता, कि मेरे दांत सुंदर व सही-सलामत हैं... कितना अच्छा है, कितना अच्छा है!

"कितना अच्छा हुआ," उसने बूढ़े की बांह में बांह डालते और उसे उधर नहीं, जिधर कि वह जा रहा था, बल्कि उधर, जिधर उसे ख़ुद जाना था, मोड़ते हुए कहा, "कितना अच्छा हुआ कि आप मिल गये। कैसी कट रही है?"

"आजकल कैसी कट सकती है? बस काम में और इंतजार में।"

"'लिस्तोक' की वजह से आपको तंग तो नहीं किया गया?" पास्तुख़ोव ने यों ही पूछ लिया।

"क्यों करेंगे? जानते हैं, मैं कभी लिबरल-शिबरल तो था नहीं। ज्यों ही होश आया, क्रांति के स्वप्न देखने लग गया था। यह सभी को मालूम है। घोर संकट के दिनों में अंडरग्राउंड आंदोलन से संपर्क बनाये रखा था और जैसे आपको बचाया था, वैसे न जाने कितने औरों को भी बचाया होगा।"

"सचमुच?"

"नहीं तो क्या? आप सोचते हैं कि मुझे आसमान से ख़बर लगी थी कि आप भी क्रांति के लिए काम कर रहे हैं?"

"सचमुच?" पास्तुख़ोव ने मन ही मन मुस्कराते हुए दोहराया।

"बेशक! हम एक दूसरे को समझते हैं, है न! आपने अपना नाम और भविष्य दांव पर लगाया था और मैंने अपना जीवन। उन दिनों क्या-क्या नहीं करना पड़ा था! मुझे याद है कि अफ़सरों की निगाह में आपको निर्दोष सिद्ध करने के लिए मैंने कितनी कसमें खायी थीं, जबकि मैं जानता था कि आप इतने दूध के धुले नहीं थे!"

मेर्त्सालोव ने हल्के से मुस्कराते हुए सिर हिलाया, मानो अपने को उस काम के लिए शाबाशी दे रहा हो, जिसके लिए कि फटकारा जाना चाहिए था। पास्तुख़ोव ने उसे भेदती निगाहों से देखा और कहा,

"मुझे नहीं मालूम था कि आपने मेरी इतनी मदद की थी।

ख़ैर, चाहे देर से ही सही, मैं आपका आभार प्रकट करता हूं।"

उसने बूढ़े की ओर हाथ बढ़ाया।

"आप भी क्या बात करते हैं। यह तो मेरा कर्त्तव्य था, मेरे लिए सम्मान की बात थी। आदमी अपने सभी भले काम क्या याद रख सकता है! जानते हैं, उस समय मैंने त्स्वेतुख़िन की भी सिफ़ारिश की थी, हालांकि, जानते हैं, वह भी इतने पाक-साफ़ नहीं थे। हा-हा!"

"अच्छा हुआ कि उसकी चर्चा आ गयी। कहां है वह? मैं उसे किसी तरह ढूंढ़ नहीं पा रहा हूं।"

"कौन? त्स्वेतुख़िन? यहीं तो रहते हैं! आम लोगों में से नयी प्रतिभाएं इकट्ठी कर रहे हैं। अपनी अलग मंडली बनायी है और घुमंतू थियेटर चलाना चाहते हैं। दिलचस्प आदमी हैं। सबसे झगड़ा कर चुके हैं। मिजाज ऐसा कि कुछ न पूछो! अपने को पूरा तीसमारखां समझते हैं!"

"अच्छा? पहले भी वह ऐसा ही था। मगर मुझे वह कहां मिल सकता है?"

"यह तो बड़ा आसान है। जानते हैं, मेरी थियेटर के लोगों से गाढ़ी दोस्ती है। मैं थियेटर के बारे में लिखा करता हूं। बेशक, अखबार में वे मुझे ज़्यादा जगह नहीं देते – मेरा सोचने का अपना ढंग है, हालांकि अगर आप गहराई में जायें, तो पायेंगे कि मैं सच्चा समाज कर्मी हूं। कुछ भी हो, मेरी इज़्ज़त की जाती है और मुझे कोई शिकायत नहीं है। मुझे कला-समीक्षा का कॉलम दिया गया है। इसलिए मैं लिखता रहता हूं। बेशक ज़्यादा नहीं। पर आगे देखना कि ..."

"लेकिन मैं त्स्वेतुखिन से कैसे मिल सकता हूं?" पास्तुख़ोव ने बीच ही में टोकते हुए पूछा (वह देख रहा था कि बूढ़े को बातूनियों जैसे बार-बार "जानते हैं" कहना बड़ा पसंद है, जैसे कि उससे, मेर्त्सालोव से, संबंधित हर बात की जानकारी हर किसी को होना ज़रूरी हो)।

"मैं मालूम करके कि हमारे येगोर पावलोविच का अड्डा आजकल कहां है, उन्हें आपके बारे में खबर कर दूंगा और वह मिलने आ जायेंगे। सचमुच, सुनेंगे तो बड़े खुश होंगे। हम अपने हमवतनों की कद्र करना जानते हैं। आप ठहरे कहां हैं?"

"यहां पास ही में, एक जान-पहचानवाले के घर में। दोरोगोमीलोव का नाम तो आपने सुना होगा?"

"अरे, आप दोरोगो..."

बूढ़े के लिए यह इतना अप्रत्याशित था कि वह एकाएक चुप हो गया और पास्तुख़ोव को पकड़ लिया ताकि उसका चेहरा अच्छी तरह देख सके। लेकिन फिर अपनी तराशी हुई सी भौंहें सिकोड़कर, जिससे उसकी चांद माथे पर गली हुई मोम जैसे और नीचे खिसक आयी थी, उसने तुरंत अपने आश्चर्य को निश्छल हंसी में बदल लिया। अब चौकन्ना अलेक्सांद्र व्लादीमिरोविच के होने की बारी थी।

"मेरी उससे जान-पहचान संयोग से ही हुई है। कैसा आदमी है वह?"

"उसे कौन नहीं जानता? वह यहां एक पुराना बाशिंदा और अजीब सा आदमी है। जीवन में बड़े उतार-चढ़ाव देख चुका है।"

"रहस्यवादी है क्या?" ख़ुद भी न जानते हुए कि क्यों, पास्तुख़ोव ने पूछा।

"शायद नहीं। हां, उसे आप स्वप्नद्रष्टा, पहेलियां पसंद करनेवाला, कल्पनालोकविहारी अवश्य कह सकते हैं।"

"और एकाउंटेंट?"

"आपको सुनकर आश्चर्य होगा, पर वह सचमुच ज़माने से नगर प्रशासन के एकाउंट्स विभाग का बोझ संभाले हुए था। फिर भी वह दो दुनियाओं में रहता है। वह रहस्यवादी तो नहीं, जैसा कि आप कहते हैं, पर रहस्यमय ज़रूर है," मेर्त्सालोव ने अपने शब्द-प्रयोग पर ख़ुश होते हुए कहा। "आपने क्या उसे पहले नहीं देखा था? जानते हैं, ऐसा नहीं हो सकता कि उसपर नज़र न पड़े – वह हमेशा छोकड़ों से घिरा रहता है।"

"यही तो! इसकी क्या वजह है?"

"यह उसकी कमज़ोरी है। और छोकड़े उसे भगवान मानते हैं। ख़ैर, यह एक लंबा किस्सा है। उसके बारे में प्रचलित बहुत सी कहानियां गप्प हो सकती हैं, पर कुल मिलाकर वे उसकी काफ़ी-कुछ सच्ची तसवीर ही पेश करती हैं..."

वे लीप्की पर आ गये थे और पास्तुख़ोव ने मेर्त्सालोव का सुझाव

मान लिया था कि कहीं बैठ जायें और तब वह आर्सेनी रोमानोविच का सारा किस्सा सुना देगा। पता चला कि मेत्सालोव निरा बातूनी नहीं, बल्कि अच्छा-खासा किस्सेबाज़ है।

नगर में आर्सेनी रोमानोविच का जो किस्सा कहा जाता था, वह तब से शुरू होता था, जब वह कज़ान विश्वविद्यालय में पढ़ ही रहा था। एक बार वह ख़्वालीन्स्क के पास बत्तखों का शिकार करने गया। वहां उसे कुछ शिकारी मिले, जो उसे अपने साथ ख़्वालीन्स्क खींच ले गये। इस शांत और उबाऊ नगर में उन्होंने डटकर शराब पी, जिससे उनके बीच और भी गाढ़ी दोस्ती हो गयी। वहां से वे पास ही किसी बैरन मेदेम की ज़मींदारी में पहुंचे, जहां, जैसे कि कहते हैं, एक भाग्यनिर्णायक मुलाकात होनी थी। मेदेमों के घर में एक लड़की थी – बैरन की आश्रिता, बड़ी सुंदर, समझदार और शहरी नाज़-नखरों से अनजान। दोरोगोमीलोव तो अपना होशोहवास ही खो बैठा, जो कि अगस्त की सुहानी शामों को खेतों, बागों और पार्कों में स्वच्छंद घूमते उस जैसे नौजवान के लिए असामान्य बात न थी। अपनी भावनाओं का बहुत ही स्नेहसिक्त उत्तर पाकर खुशी से पागल वह घर रवाना हो गया। लेकिन मेदेमों ने अपनी आश्रिता के लिए दूसरा ही मंसूबा बांधा हुआ था: उन्होंने उसकी अपने एक गरीब रिश्तेदार से, जो मास्को में ग्रेनेडियर था, शादी कर दी। दोरोगोमीलोव पर तो मानो गाज गिर गयी। उसने विश्वविद्यालय छोड़ दिया और अरसे तक बिस्तर पकड़े रहा। उस समय वह अपने धर्मपिता के यहां रह रहा था, जिसके कामा में जहाज़ चला करते थे। यह उन सालों की बात है, जब वोल्गा और उसकी सहायक नदियों में जिनके जहाज़ चला करते थे, वे रातों-रात मालामाल हो उठते थे। लेकिन उन दिनों दिवाला भी बहुतों का पिटा। ऐसे ही एक दिन दोरोगोमीलोव का आश्रयदाता भी अपना सब कुछ खो बैठा और भूतपूर्व विद्यार्थी को, जो अपने मानसिक आघात से अभी पूरी तरह संभल नहीं पाया था, सरातोव में अपने गरीब रिश्तेदारों की शरण ले लेनी पड़ी। वह जो भी काम करता, उसी में असफलता हाथ लगती। विवाह की बात तो उसे फिर कभी सूझी ही नहीं। वह उन लोगों में से था, जो कसम तोड़ना नहीं जानते – और भाग्य ने उसे यह कसम खाने पर मजबूर कर दिया था कि वह कभी शादी न करेगा। दो साल बाद उसे

मालूम हुआ कि ग्रेनेडियर ने अपनी बीवी को छोड़ दिया है और वह तपेदिक की वजह से मृत्युशय्या पर पड़ी हुई है। बेचारा दोरोगोमीलोव भागा-भागा जब मास्को पहुंचा, तो पाया कि उसकी प्रेमिका सचमुच अंतिम सांसें गिन रही है। उसके एक बच्चा था। दोरोगोमीलोव ने उसे वचन दिया कि बच्चे को पालेगा-पोसेगा और फिर बच्चे को लेकर वापस लौट आया। अब उसपर अपने अकेले का ही बोझ न था, इसलिए उसने जो पहला काम मिला, उसी को स्वीकार कर दिया। इस तरह वह नगर प्रशासन की नौकरी करने लगा। उसने कभी सोचा भी न था कि उसे यों जोड़-भाग-गुणा में सिर खपाना पड़ेगा, किंतु बच्चे को तो पालना था और इसका मतलब था कि दाई रखनी पड़ेगी और उसकी तनख्वाह का इंतज़ाम करना होगा। दोरोगोमीलोव इतना कुशल और मेहनती कर्मचारी था कि जल्दी ही नगर प्रशासन का उसके बिना काम चलना असंभव हो गया। लेकिन अपनी नौकरी पक्की करने के लिए लगन से काम करते हुए वह दिल से पूरी तरह बच्चे को समर्पित बना रहा और दिन-ब-दिन उससे और-और बंधता गया। उसने उसे कानूनी तौर पर गोद ले लिया, उसके पालन-पोषण को अपने जीवन का ध्येय बना लिया, अपने को सुखी समझने का आदी बन गया और बच्चे के सुख को सदा के लिए सुनिश्चित मान बैठा। लेकिन दोनों के भाग्य में कुछ और ही लिखा था। एक दिन आर्सेनी रोमानोविच बच्चे और अपने एक साथी – स्कूली अध्यापक इज़्वेकोव – के साथ वोल्गा में नाव पर सैर कर रहा था कि अचानक तूफ़ान आ गया। वे उस समय मंझधार में थे, जहां से अब न किनारे पर पहुंचा जा सकता था, न किसी टापू पर ही। नाव में पानी भर गया और वह उलट गयी। इज़्वेकोव ही पहले बच्चे को बचाने को लपका, लेकिन वह उसे पीछे से न पकड़ सका और बच्चे ने डर के मारे अपने रक्षक के गले में इतनी कसकर बाहें डाल दीं कि दोनों ही नदी के गर्भ में समा गये। अधिकांश दुर्घटनाओं की तरह यह भी एक ही पल में, दोरोगोमीलोव की आंखों के सामने ही हो गया। वह उलटी हुई नाव पकड़े रहा और पानी के थपेड़ों से किसी टापू पर जाकर पटक दिया गया। कोई एक हफ़्ते बाद उसी टापू पर इज़्वेकोव की लाश भी मिली, लेकिन बच्चे का कभी कोई निशान न मिल सका।

इस आघात ने दोरोगोमीलोव को यों ही न छोड़ा – उसे पागलों के अस्पताल में भरती होना पड़ा। उन दिनों के पागलखानों के और मरीज़ों की भांति उसका इलाज भी मामूली तरीकों से किया गया: स्नान और उत्तेजनाशामक दवाएं – बस इनसे ही। जब वह छूटा, तब वह घोर विषाद की हालत में था। लेकिन एकाएक उसने एक नया लक्ष्य पा लिया। उसका बारहवर्षीय दत्तक-पुत्र बड़ा प्यारा था और उसके बहुत से अपने हमउम्र दोस्त थे। अब इन बच्चों से ही आर्सेनी रोमानोविच को वह बालसुलभ सहानुभूति मिली, जिसकी और किसी चीज़ से तुलना नहीं की जा सकती। वे उसे देखने आते, सारा-सारा दिन उसके साथ बिताते। इस तरह उनके बाल-स्नेह की गरमी पाकर वह अपना दुख धीरे-धीरे भूलने लगा। शुरू में उसने अपना लक्ष्य यह बनाया कि अपने मित्रों को नदी के पास न फटकने दे। वह खुद भी अब नदी किनारे जाते या उसकी झिलमिल चमकती सतह देखते डरने लगा था। लेकिन बच्चों की दोस्ती खोने का शायद सबसे आसान तरीका यह है कि पानी के प्रति उनके आकर्षण को रोका जाये। आर्सेनी रोमानोविच के साथ वनों और पहाड़ों में टहलने, गांवों की सैर करने, प्राचीन तातार बस्ती उवेक की खुदाई देखने या किसी तंबाकू फ़ैक्टरी अथवा चिरीख़िना की फ़ाउंड्री के भ्रमण पर जाने में कितना भी मज़ा क्यों न आता रहा हो, बच्चे वोल्गा के लिए ललकते ही रहते थे। इसने दोरोगोमीलोव के सामने धर्मसंकट पैदा कर दिया: या तो बच्चों की दोस्ती से हाथ धो बैठे या फिर अपने पानी के डर पर काबू पाये। किंतु समय और बच्चों के नदी-प्रेम ने उसे अपने डर पर काबू पाने में समर्थ बना ही दिया। फिर तो वह उन्हें जहाज़ की सैर पर और मछुआरों के डेरे दिखाने भी ले जाने लगा, जो मछलियों के जगह बदलने के साथ किनारों और टापुओं पर अपनी जगहें बदलते रहते थे। मां-मुर्गी जैसे आर्सेनी रोमानो-विच की देखरेख में बच्चों का झुंड का झुंड मछली पकड़ने की बंसियां लिये प्राय: नदी तट पर बिखर जाता और ज्यों ही वे कुछ मछलियां पकड़ लेते, अलाव जला लिया जाता और मछलियों का सूप पकाया जाता, जिसे कि केवल वही खा सकता था, जिसने बचपन से ही बंसी डाले पानी किनारे बैठ सपनों में खोने का आनंद अनुभव किया हो। सरदियां आने पर इन सभी खुशियों पर विराम लग जाता और तब दोरो-

गोमीलोव का पुस्तकालय बच्चों के जीवन का केंद्रबिंदु बन जाता।
किताबें अपने लिए इतना नहीं, जितना कि अपने बाल मित्रों के ि
इकट्ठा किया करता था और किताबों से प्रेम करना सिखाकर उ
अपने आरामदेह, अविवाहित घर का भक्त बनाया करता था। हालां
वह जन्मजात शिक्षक था, फिर भी वह बच्चों से अपने सभी सं
व्यक्तिगत मैत्री के आधार पर बनाता था। बहुतों को यह अजीब लग
था और उसे देखकर लोगों की भौंहें भी उठ जाती थीं, लेकिन तब
ही, जब तक कि वे इसके वैसे ही आदी न बन जाते, जैसे कि बेवकू
या पागलों के आदी बना करते हैं। जो बच्चे उससे दोस्ती न कर पा
वे उसे "झबरैला" कहकर पुकारते थे और खुले आम उसका मज़
उड़ाते थे, खास तौर से जब वह बूढ़ा हो गया और उसकी आ
बहुत ही अजीबो-गरीब बन गयीं। पुराने ज़माने के सूरमाओं की त
बच्चे आर्सेनी रोमानोविच का विशेष कृपापात्र होने का अधिकार पाने
लिए या फिर जो उसका अपमान करते थे, उनसे उसकी इज़्ज़त
रक्षा करने के लिए लड़ा भी करते थे। दोरोगोमीलोव के लिए बच्चों
स्नेह-प्यार, स्वप्नों, दोस्ती और झगड़ों की यह रूमानी दुनिया,
बिरंगी कल्पना, अदम्य जिज्ञासा और भोली निश्छलता से तमतमात
जैसी भोली निश्छलता केवल ऐसे जंगली जानवरों में पायी जाती
जो अभी शिकारी के भय से अनजान हैं, वैसी निश्छलता से लब
बच्चों की निर्भीक आंखों में व्यक्त यह दुनिया एक नशा सा बन ग
और ज्यों-ज्यों समय गुज़रता गया, बूढ़ा इस नशे का और-और अ
होता गया। बच्चे बड़े हो जाते, कोई कहीं, तो कोई कहीं चला ज
और उनकी जगह दूसरे बच्चे ले लेते। फिर जब उनकी बारी आत
वे भी दोरोगोमीलोव को उत्तराधिकार में दूसरे बच्चे छोड़ जा
उन्हें अपनी आदतें, परंपराएं सिखा जाते। इस तरह दोरोगोमीलोव
भक्ति की परंपरा चलती रहती। एक बार में बूढ़े के चार-पांच से ज़्य
दोस्त विरले ही होते थे और उनके संबंध को किसी भी तरह अध्याप
विद्यार्थी का संबंध नहीं कहा जा सकता था। उसमें एक ऐसी स्वच्छंद
थी, जो बड़ों के आपसी संबंधों में ही पायी जाती है। बच्चे सोचते
कि वे आर्सेनी रोमानोविच के यहां खेलने, मन बहलाने के लिए ज
हैं, किंतु वहां से स्कूल से कहीं ज़्यादा सीखकर आते थे।

बेशक दोरोगोमीलोव न अपनी ख़्वाल्नोन्स्कवाली दुर्भाग्यपूर्ण मुलाकात को भूला था, न उस गोद लिये हुए बेटे को ही, जिसकी वह रक्षा नहीं कर सका था। लेकिन वह इसकी चर्चा किसी से नहीं करता था और अपने मित्र इज़्वेकोव की मृत्यु के बारे में पूछे जाने पर भी चुप्पी लगा जाता था। दूसरों को लगता था कि वह हमेशा अपने कामों में खोया रहता है, हमेशा किसी न किसी ज़रूरी काम से कहीं जा रहा है। नगर के लोग उसके हवा में उड़ते पल्लूवाले पुराने, घिसे कोट से भली भांति परिचित थे। लेकिन उसका आदी होने के बावजूद कोई भी यह मानने को तैयार न था कि वह इतना सीधा-सादा है। सबको उसके चेहरे और आचरण में कुछ अबोध्य सा दिखायी देता था, जो, प्रसंगतः, पागलखाने में रह चुके दूसरे आदमियों में भी पाया जाता है।

"दिलचस्प कहानी है," पास्तुख़ोव ने दोरोगोमीलोव का सारा किस्सा सुन लेने के बाद संतोष से मुस्कराते हुए कहा। "लेकिन यह इज़्वेकोव कौन था? नाम तो जाना-पहचाना लगता है।"

मेत्सालोव अर्थभरी निगाह से पास्तुख़ोव को देखता और नाक में कोई रंगीली सी धुन गुनगुनाता हुआ आगे-पीछे झूलने लगा।

"अम्म-म-म-म ... अलेक्सांद्र व्लादीमिरोविच, मेरे खयाल से आपके लिए तो इस नाम को बहुत ही ज़्यादा अर्थ रखना चाहिए," यह कहते हुए उसके चेहरे की झुर्रियां और गहरी हो गयीं। "जानते हैं, आप और इज़्वेकोव उस समय एक ही मामले में फंसे हुए थे, हालांकि तब वह लड़का ही था। याद है न?"

"सचमुच?" पास्तुख़ोव ने फिर कुछ न समझते हुए पूछा।

"और आपका यह साथी इज़्वेकोव उसी अध्यापक का बेटा है, जो डूब गया था। जानते हैं, आजकल वह कौन है? यहां की सोवियत का सेक्रेटरी! अम्म-म-म ..."

"अच्छा!" पास्तुख़ोव ने यों जवाब दिया, जैसे कि मेत्सालोव के शब्दों पर गंभीरतापूर्वक सोच रहा हो, लेकिन फिर तुरंत बात को बदलते हुए कहा, "जानते हैं, मेरी पत्नी आस्या ने दोरोगोमीलोव को जब पहली बार देखा था, तो उसे वह देवदूत लगा था। क्या खयाल है आप-का?"

"इस नगर के रक्षक देवदूतों में से एक, यही न?" मेत्सालोव हंस

पड़ा। "हो सकता है, ऐसा ही हो। लेकिन अब देवदूत भी इस नगर को शायद ही बचा सकते हैं। मेरा मतलब सारी धरती पर जो उथल-पुथल हो रही है, उससे बचाने से है।"

"धरती पर उथल-पुथल..." पास्तुख़ोव ने दोहराया।

दोनों ने एक दूसरे पर नज़र डाली, मुस्कराये और विदा लेने के लिए उठ खड़े हुए। पास्तुख़ोव ने याद दिलायी कि त्स्वेतुखिन को खोजना है और मेर्त्सालोव ने वायदा किया कि इस काम में वह मदद ज़रूर कर देगा।

मेर्त्सालोव की कहानी सुनकर मन में दोरोगोमीलोव के बारे में जो विचार जगे थे, उनमें और कहानी कहनेवाले के खुद के स्वभाव की विचित्रताओं के विश्लेषण में खोया पास्तुख़ोव जब वापस घर पहुंचा, तो अचानक पाया कि ड्योढ़ी का दरवाज़ा खुला हुआ है। बाहर सड़क पर कोई न था, यहां तक कि आम तौर पर वहां आसपास खेलते रहनेवाले छोकड़े भी कहीं गायब हो गये थे।

वह हड़बड़ाता हुआ सीढ़ियां चढ़ा। ऊपर फ़्लैट का दरवाज़ा भी खुला हुआ था और गलियारे के दूसरे छोर से झगड़ने की आवाज़ें आ रही थीं।

"नहीं, आप ऐसा नहीं कर सकते, नहीं कर सकते!" दोरोगोमीलोव चिल्लाता हुआ कह रहा था। उसकी आवाज़ में धमकी कम, याचना अधिक थी।

पास्तुख़ोव अपने कमरे में दाखिल हुआ। तभी उसकी नज़र आस्या पर पड़ी और उसकी आंखों में आंसू की बूंद देखकर, जिससे वह भली भांति परिचित था और जानता था कि वह किसी दुख या ठेस को नहीं, बल्कि चुपचाप स्वीकार कर लेने की कमज़ोरी को व्यक्त करती है, इस दिल को छू लेनेवाली अदृश्य सी आंसू की बूंद को देखकर वह समझ गया कि गलियारे में सुनायी दे रहे शोर का संबंध चीख-चीखकर बोलते हुए दोरोगोमीलोव से ही नहीं, शायद सबसे पहले उसके, पास्तुख़ोव के अपने परिवार से भी है। उसके पैर जहां के तहां रुक गये।

"अल्योशा को कुछ हो गया है क्या?" उसने पूछा। वह सोच कुछ और ही रहा था, पर उस क्षण सबसे पहले यही बात उसके होंठों पर आयी।

आस्या ने सिर हिलाया, बच्चे के लिए पिता को चिंतित देखकर प्रसन्न मां जैसे गर्व से मुस्करायी और पति के पास आयी। पास्तुख़ोव ने उसकी नाज़ुक अंगुलियों को चूमा और तभी जाकर उसकी नज़र अल्योशा पर पड़ सकी।

अल्योशा बड़ों की तरह सीने पर हाथ बांधे अंगीठी से सटा हुआ खड़ा था और सतर्क निगाहों से पिता को देख रहा था। ओल्गा आदमोव्ना छोटे कमरे के दरवाज़े पर पाखा पकड़े यों बैठी थी, जैसे पाखा बंदूक की नाल हो और वह खुद संतरी हो, जो पत्थ त्रन जायेगा, पर अपनी जगह से टस से मस न होगा।

"अच्छा हुआ, तुम आ गये," आस्या बोली।

"क्यों, क्या हुआ?"

"हमें यहां से निकाल रहे हैं," उसने सरलता और कुछ विनोद के साथ कहा, जैसे कि पति का उसकी अंगुलियां अपने हाथ में दबाये रहना उसके लिए इतना प्रीतिकर हो कि वह अप्रिय से अप्रिय बात को भी भूल सकती थी।

"सिर्फ़ हमें?"

"हमें भी, हमारे शरणदाता को भी और उसके सारे सामान को भी, यानी कि बांधो सब बोरिया-बिस्तर!" वह हंस पड़ी, लेकिन फिर अपनी मुस्कराहट थोड़ी सी दबाकर व्यावहारिक और रोबीले अंदाज़ में बोली, "तुम जाकर बात करो। आर्सेनी रोमानोविच इतने आपे से बाहर हो गये हैं कि शायद काम बिगाड़ देंगे। वह जो नौजवान अफ़सर आया है, वह देखने में तो सुंदर है, पर गुस्ताख भी कम नहीं। ज़रा उसकी अक्ल ठिकाने लगा दो। सुन रहे हो, कैसे झगड़ रहे हैं!"

अलेक्सांद्र व्लादीमिरोविच शांति से गलियारे में निकल गया।

बक्सों और फ़र्नीचर के ढेर भी उस शोर-शराबे को दबा नहीं पा रहे थे। लगता था कि एक साथ कई लोग गला फाड़ रहे हैं – झगड़ती आवाज़ों के लहजे इतने विविध प्रकार के थे! धमकियां, व्यंग्य, दलीलें, गालियां, अपशब्द, सबका इस्तेमाल किया जा रहा था।

"मैं आपको दसवीं बार बता रहा हूं कि आवास विभाग का इससे कोई संबंध नहीं है। मकान सैन्य विभाग ले रहा है! सैन्य विभाग!"

"ले रहा है, ले रहा है!" दोरोगोमीलोव चीखती, फटी आवाज़ में चिल्ला रहा था। "आवास विभाग की जायदाद उसकी इजाज़त और रज़ामंदी के विना कोई भी नहीं ले सकता। समझे?"

"सैन्य विभाग को ज़रूरत है, तो ले सकता है। लड़ाई चल रही है, लडाई! समझे?"

"नहीं, नहीं समझा! आप अपने विभाग को कानून तोड़नेवाला बनाकर उसे कलंकित कर रहे हैं!"

"मैं किसी को कलंकित नहीं कर रहा। मैं अपनी ड्यूटी कर रहा हू। रहा सवाल कानून का, तो वेहतर है आप चुप रहें। कानूनी आर्डर मिल जायेगा।"

"आवास विभाग का आर्डर!"

"कानूनी आर्डर।"

"कानूनी केवल आवास विभाग का आर्डर होगा!"

"आप चिंता न करें।"

"अच्छी रही यह भी! मुझे घर से वेदखल कर रहे हैं, मुझे कह रहे हैं कि अपनी चीज़ों और किताबों का अगर कुछ नहीं कर सकता तो निगल डालूं – हां-हां, आपने यही कहा था! – और अब मुझे ही कहा जा रहा है कि चिंता न करूं! आप क्यों नहीं समझते..."

पास्तुख़ोव खिड़की के पास धूप में खड़ा था और वहुत कोशिश करने पर भी नही पहचान पा रहा था कि गलियारे में यह कौन आदमी चक्कर लगा रहा है और वीच-वीच में रुककर और मुड़कर आर्सेनी रोमानोविच की चिल्लाहट का जवाब दे रहा है। तभी अंधेरे से एक साथ दो आकृतियां उजाले में प्रकट हुई। पहला तो शानदार चुस्त पोशाक और भौंहों तक लटकी, किताव जैसी छज्जेवाली और उसके ठीक ऊपर छोटा सा लाल सितारा लगी हुई टोपी पहने हुए एक अफ़सर था। उसके ही वरावर दूसरा आदमी चल रहा था, जो उसके कंधों तक आता था। यह दूसरा आदमी कसकर मुंह वंद किये हुए था और अर्ध-सैनिक तथा अर्ध-सिविल पोशाक – सैनिक विरजिस, चितकवरा कोट और वोल्गा के मुख्य मल्लाहों जैसी सफ़ेद किनारीवाली टोपी – पहने था। पास्तुख़ोव को रास्ते में खड़ा देखकर अफ़सर ने हल्के से एड़ियां वजाते हुए इशारा किया कि हट जाये।

तभी उनके बीच से आगे आकर दोरोगोमीलोव ने निराशाभरे स्वर में चिल्लाते हुए अपने हाथ आगे बढ़ा दिये।

"अलेक्सांद्र व्लादीमिरोविच!"

वह कलाइयों पर खर-खर रगड़ते हुए कलफ़दार कफ़ोंवाली पुरानी कमीज़ पर केवल वास्कट पहने था। उसके लंबे बाल कनपटियों पर लटककर दाढ़ी से उलझे जा रहे थे, जिसके नीचे से धब्बेदार, खुली टाई के किनारे झांक रहे थे।

"अलेक्सांद्र व्लादीमिरोविच! माफ़ कीजिये। लेकिन ज़रा सुनें तो! यह कामरेड पधारते हैं, घर का मुआयना करते हैं और फिर यह एलान सुनाते हैं कि घर सैनिक विभाग ले लेगा। वाह! क्या कहने! सैनिक विभाग को मकान की ज़रूरत है! लेकिन आप और आपका परिवार? नन्हा अल्योशा? मैं और मेरी पुस्तकें? नगर सोवियत का आवास विभाग, जिसका कि यह मकान है? सेना के इन महाशय को इस सबसे कोई मतलब नहीं, इन्हें तो केवल लड़ाई से मतलब है!"

"माफ़ी चाहता हूं," उस महाशय ने कहा, जिसे केवल लड़ाई से मतलब था और कमरपेटी में अंगूठा खोंसकर एक मिनट के लिए आंखें यों आधी बंद कर लीं, जैसे कि अपने पर नियंत्रण रखना चाहता हो और दूसरों से विवेक की बात सुनने की अपील कर रहा हो। अलेक्सांद्र व्लादीमिरोविच ने उचित क्षण समझकर सिर के इशारे से अभिवादन करते हुए रोबीले अंदाज़ में अपना नाम बताया। इस तरह वह तभी बोला करता था, जब वह विशेष धाक जमाना चाहता था। अफ़सर ने एड़ियां बजायीं और एक अजीब से ढंग से सैल्यूट किया: हाथ झटके से ऊपर उठा, अंगुलियों ने सिमटकर और तनकर नाव जैसा आकार बनाते हुए शानदार टोपी के नीचे कनपटी को छुआ और फिर पीछे फिसलीं, जैसे कि कान के पास की किसी बेकाबू लट को सहेज रही हों।

"ज़ुबीन्स्की, सैनिक कमिसार का एडिकांग," उसने मीठी सी आवाज़ में, जोकि उस आवाज़ से बिल्कुल भिन्न थी, जिसमें वह अब तक झगड़ रहा था, अपना परिचय दिया। "बात यह है कि सैनिक कमिसारियत इस मकान की ऊपरी मंज़िल पर अपना एक दफ़्तर खोलना चाहती है। नागरिक दोरोगोमीलोव नाहक ही इतना नाराज़ हो रहे हैं..."

"नाहक ही!" आर्सेनी रोमानोविच चिल्लाया। उसकी कमीज़ के कफ़ फिर खरखराये।

"हां, नाहक ही, क्योंकि कानून के अनुसार आपको दूसरा कमरा, हो सकता है कि यहीं निचली मंज़िल में ही, मिल जायेगा।"

"कमरा! शुक्रिया! और मेरे पुस्तकालय के लिए?"

"जहां तक पुस्तकालय की बात है, मैं सोचता हूं कि अगर वह कीमती ..."

"कौन आंकेगा कीमत? आप? आप? आप?" दोरोगोमीलोव फिर आपे से बाहर होते हुए चिल्लाया।

"अगर वह कीमती है," ज़ुबीन्स्की ने अपने आत्मनियंत्रण का प्रदर्शन सा करते हुए कहना जारी रखा, "तो सार्वजनिक इस्तेमाल के लिए दे दिया जायेगा, लेकिन अगर नहीं है ..."

"नहीं है!" आर्सेनी रोमानोविच ने नकल उतारते हुए कहा।

"तो मालिक अपने ही पास रख सकता है।"

"लेकिन उसके लिए जगह? जगह कहां होगी?" मालिक ने पूछा।

"अगर जगह नहीं होगी, तो किताबें पुरानी चीज़ों के विभाग को सौंप दी जायेंगी।"

यह सुनकर दोरोगोमीलोव के पैर लड़खड़ा उठे। दीवार का सहारा लेते हुए उसने एकाएक शांत स्वर में कहा,

"सुना आपने, अलेक्सांद्र व्लादीमिरोविच?"

"हां," पास्तुख़ोव ने ज़ुबीन्स्की की ओर देखकर व्यंग्यपूर्वक मुस्कराते हुए जवाब दिया। "लगता है कि आप ज़्यादती कर बैठे है।"

"मैं सवाल का जवाब दे रहा हूं। यह मेरी निजी राय है, और कुछ नहीं।"

"और मेरे और मेरे परिवार के संबंध में आपकी क्या राय है?"

"नागरिक दोरोगोमीलोव कह रहा है कि हम आवास विभाग का आर्डर लायें। लेकिन, नागरिक पास्तुख़ोव, मैं पूछता हूं कि उसने आपको बिना किसी आर्डर के अपने घर में जगह कैसे दे दी?"

सब चुप हो गये। ज़ुबीन्स्की नम्रतापूर्वक और दिलचस्पी के साथ अपने सवाल का असर देख रहा था: अलेक्सांद्र व्लादीमिरोविच

निरुत्साहित होकर आंखें झपक रहा था, दोरोगोमीलोव अपने बाल सहला रहा था और भिंचे हुए होंठोंवाला आदमी पहले की तरह ही मुंह पर ताला लगाये हुए था। अंत में ज़ुबीन्स्की ने धीरे से अपनी निगाह अनास्तासिया गेर्मानोव्ना की ओर मोड़ी, जो अपने कमरे से चुपचाप इस सार दृश्य को देख रही थी।

"यानी कि आप नागरिक पास्तुख़ोव और उसके परिवार को सड़क पर फेंकना चाहते हैं, है न?" एकाएक अनास्तासिया गेर्मानोव्ना ने अपनी मुलायम आवाज़ में और मुस्कराते हुए पूछा। उसकी मुस्कान लुभावनी और चुनौतीभरी, कुछ भी लग सकती थी। ज़ुबीन्स्की ने अचकचाकर अस्पष्ट सा जवाब दिया,

"नहीं, आपके जैसे नामवाले को तो बेघर शायद ही रहने दिया जायेगा।"

"यह तो आप शिष्टतावश कह रहे हैं," आस्या ने वैसे ही मुस्कराते हुए कहा। "लेकिन हमें इस शिष्टता के बजाय किसी अच्छे होटल में ठहराया जाता, तब तो बात भी थी। क्यों, मैं ठीक कह रही हूं न, साशा?"

"बेहतर होता है कि हमें छूते ही न," पास्तुख़ोव ने खिन्न मन से जवाब दिया।

ज़ुबीन्स्की ने कंधे उचकाये, मानो कहना चाहता हो कि वह जानता है, यह सब कितना अप्रीतिकर है, लेकिन वह नौकर आदमी है और अपना कर्त्तव्य पूरा कर रहा है।

"आशा है कि आप अपनी ओर से नागरिक पास्तुख़ोव की मदद कर देंगे," उसने अपने साथवाले आदमी को संबोधित किया, जिसने एक क्षण तक और मौन धारण किये रहने के बाद मुश्किल से मुंह खोलते हुए, मानो सिर दर्द से फटा जा रहा हो, सिर्फ़ इतना कहा,

"कर देंगे।"

"माफ़ कीजिये, आपका परिचय?" आस्या ने सहानुभूतिभरे स्वर में पूछा।

"आवास विभाग का प्रतिनिधि," ख़ामोश आदमी ने कुछ कड़ुआहट के साथ जवाब दिया।

"अच्छा, तो आप आवास विभाग के हैं?" आर्सेनी रोमानोविच का

पारा फिर चढ़ गया। "यानी कि आवास विभाग को सब पता था और आप एक शब्द भी नहीं बोले! मैं अभी आपके साथ चलकर शिकायत लिखता हूं! हां, हां, बाकायदा शिकायत!"

किसी से भी नज़र मिलाये बिना आवास विभाग का प्रतिनिधि अपनी बत्तख जैसी चाल से सीढ़ियों की ओर चल दिया। ज़ुबीन्स्की ने अपने खास, अतिरंजनापूर्व ढंग से अनास्तासिया गेर्मानोव्ना को सलाम किया, शरीर को हल्का सा, झुकाकर दिखाया कि वह सलाम पास्तुख़ोव और दोरोगोमीलोव के लिए भी है – बेशक पास्तुख़ोव के लिए कुछ ज़्यादा और दोरोगोमीलोव के लिए बहुत ही कम – और तेज़ कदमों से वहां से चला गया। लकड़ी की सीढ़ियों से उसके बूटों की नपी-तुली खट-खट साफ़ सुनायी दे रही थी।

आर्सेनी रोमानोविच ने अपना सीना हथेलियों से छिपाने की कोशिश करते हुए अनास्तासिया गेर्मानोव्ना का झुककर अभिवादन किया,

"मेरी शक्ल और चीख-चिल्लाहट के लिए माफ़ कीजिये" (उसकी आस्तीनों के कफ़ फिर खरखराये), "घर बिल्कुल मछली बाज़ार जैसा लग रहा था!"

वह मुड़ा और पलभर में ही गलियारे के अंधेरे में खो गया।

पत्नी के साथ अकेला रह जाने के बाद पास्तुख़ोव खिड़की के पास जाकर खड़ा हो गया और नाखूनों से उसके कांच बजाने लगा। सहसा उसे होस्टल में मिली शौकिया पियानोवादिका का स्मरण आया और वह हंस पड़ा।

"क्या बात है?" आस्या ने पूछा।

"कुछ लोग इतने ढीठ, घमंडी होते हैं कि यदि उनसे पूछा जाये कि क्या, पियानो बजा सकते हैं, तो बेहिचक जवाब देंगे: कह नहीं सकता, कभी कोशिश नहीं की, पर शायद बजा सकता हूं..."

"तुम सोचते हो कि ज़ुबीन्स्की भी ऐसा ही है?"

"हां।"

"तब तो भगवान ही बचाये!" आस्या ने विनोदपूर्वक कहा और एक दूसरे की ओर मुड़कर दोनों ऐसे ठहाका लगाकर हंस पड़े कि जैसे कोई भी अप्रिय बात न हुई हो और आगे बहुत ही सुखद दिन आनेवाले हों।

इस बीच अल्योशा भी अपने कोने से हटकर माता-पिता और

ओल्गा आदमोव्ना के बीच में आ खड़ा हुआ था, मानो ज़रूरत पड़ने पर भागकर तीनों में से किसी की गोद में छिप सके। वह बोला,

"पिताजी, अगर हमें घर से निकालते ही हैं, तो हम सड़क के बजाय बाग में क्यों न रहें? और आर्सेनी रोमानोविच भी हमारे साथ रहेंगे। ठीक है न?"

अलेक्सांद्र व्लादीमिरोविच ने हंसना बंद कर दिया और जैसा कि बेटे के साथ बातचीत में हमेशा होता था, कुछ सोचते हुए उसे गौर से देखकर गंभीरता के साथ उत्तर दिया,

"हां, हम ऐसा ही करेंगे। तुम्हें और मुझे बाग में बड़ा सुभीता होगा... मां और ओल्गा आदमोव्ना के साथ खेलेंगे कि कौन ज़्यादा दूर थूकता है..."

११

अगले रोज़ पास्तुख़ोव और उसकी पत्नी जब बिशप मार्केट के पुराने नाम से पुकारी जानेवाली दूकानों के पास से गुज़र रहे थे, तो ईंट की दीवार पर अभी-अभी चिपकाया हुआ अखबार पढ़ने रुक गये। अख़बार के किनारों पर जहां लेई सूख नहीं पायी थी, मक्खियां भिनभिना रही थीं।

लाल सेना के मोर्चे की खबरें भयभीत करनेवाली थीं: दक्षिण और पूर्व में लड़ाइयां और भी घमासान होती जा रही थीं। वोल्गा का निचला और मध्य भाग पहले की तरह ही सफ़ेद गार्ड जनरलों का मुख्य निशाना बना हुआ था और दोन स्तेपियों से देनीकिन की फ़ौज के दायें बाज़ू और वोल्गा पार से कोल्चाक की केंद्रीय फ़ौज द्वारा एक साथ इस मोर्चे को भेदने का मतलब होता प्रतिक्रांति की सामरिक शक्तियों का एक हो जाना, जो स्पष्टतः अब निर्णायक प्रहार करने पर तुली हुई थीं। उराल और ओरेंबुर्ग स्तेपी के कज़्ज़ाकों को सोवियत जनतंत्र के गिर्द फेंकी हुई इस घातक ज़ंजीर के दोनों सिरों को जोड़ना था। अपार रणनीतिक महत्त्व की इस लड़ाई में सरातोव वोल्गा के साथ-साथ दक्षिण की ओर घोंपी हुई उस कटार की मूठ की तरह था, जिसकी एक धार पश्चिम में देनीकिन की फ़ौज की ओर थी और दूसरी पूर्व में कज़्ज़ाकों की ओर।

सफेद गार्डों का तात्कालिक लक्ष्य बोल्शेविकों की इस सुपरीक्षित, विश्वसनीय कटार के टुकड़े-टुकड़े करना और क्रांति के गुस्ताख हाथों से इस मूठ को छुड़ाना था और अपने इस लक्ष्य को पाने के लिए वे खून की नदियां बहाने को भी तैयार थे।

ग्रीष्म सिर पर आ गया था और सरातोव एकसाथ तीन ओर से गर्म हवाओं से घिरा हुआ था: वोल्गा के निचले इलाकों की ओर से, जहां पिछले साल की तरह अब भी लोगों की जबान पर त्सरीत्सिन का ही नाम था, दोन इलाके के खेतों की ओर से, जहां एक भयंकर दुर्दम फोड़े की तरह नया मोर्चा एकाएक प्रकट हो गया था, और वोल्गा पार से, जहां स्तेपियों में कज़्ज़ाकों ने अपने मुख्य कस्बे – लाल सेना द्वारा हाल ही में जीते हुए उराल्स्क – को घेर रखा था। इन हवाओं के बढ़ते वेग के कारण सांस लेना दूभर होता जा रहा था और नगर महसूस कर रहा था कि इस बार ग्रीष्म बहुत ही विकराल होगा।

हर कोई भली भांति जानता था कि भविष्य – तात्कालिक भी और सुदूर भी – गृहयुद्ध की आये रोज़ की घटनाओं और अंतिम परिणाम पर निर्भर है। लेकिन यह जानते और युद्ध की मांगों के सामने झुकते या उनका प्रतिरोध करते हुए हर कोई सबके साझे जीवन से भी जुड़ा हुआ था, और इस जीवन का संबंध युद्ध से नहीं, शांतिमय भविष्य से था। इसके अलावा हर कोई अपना निजी जीवन भी जिये जा रहा था, जिसकी साझे जीवन से संगति कभी बैठती थी, कभी नहीं। यह सब आपस में गुंथकर एक ऐसी तसवीर पेश करता था, जो कभी नीरस लगती थी, तो कभी रंग-बिरंगी और हमेशा इतने अप्रत्याशित रूप से बदल जाती थी कि अगले क्षण क्या होगा, यह बता पाना बिल्कुल असंभव था।

सड़कों पर धूल से सने और कंधों पर लकड़ी के चांदमारी के निशाने उठाये मजदूरों के दस्तों का तांता लगा रहता। मरीज़ों के बिस्तर या मेज-कुर्सी, आलमारियों से लदे ट्रक कभी इस अस्पताल तो कभी उस अस्पताल, कभी इस दफ़्तर तो कभी उस दफ़्तर के बीच दौड़ते रहते। व्यावसायिक स्कूलों में लड़के-लड़कियां गुलाबी या हरे प्लैस्टिसीन से घोड़ों और मुर्गों के मॉडल बनाते, अपनी कला की प्रदर्शनियां करते। कारखाने और वर्कशाप हथगोले बनाने, उन्हें विस्फोटकों से भरने में व्यस्त थे। सांझ के धुंधलके में संगीतप्रेमी लीप्की बुलवार के सामने

खुले चबूतरे के गिर्द गोला बनाकर खड़े हो जाते, सिंफ़नी आर्केस्ट्रा सुनते, जिसमें युद्ध के बाद से बहुत कम साज़िंदे रह गये थे, और उसके दुबले-पतले निर्देशक – लिस्त जैसे सीधे बालोंवाले और पगानिनी जैसे काले-नीले संगीतज्ञ – के पेचोखम को देखते रहते। कभी-कभी लाल सेना के आदमियों का दस्ता भगोड़ों को पकड़ने के लिए ऊपरी बाज़ार को घेर लेता। स्थानीय समाचारपत्र में पेत्रोग्राद की किसी मंडली द्वारा पेश किये जानेवाले नाटक 'फ़ाउस्ट और शहर' के बारे में एक काफ़ी बड़ा लेख छपा था। देहाती सोवियतों और गरीब किसानों की कांग्रेसें चल रही थीं। सिनेमाघर में तोलस्तोय के 'पादरी सेर्गियस' पर बनी फ़िल्म दिखाई जा रही थी। बेकरियों के सामने लोगों की कतारें लगी रहतीं। नगर सोवियत ने सभी दूकानों से पुराने साइनबोर्ड हटाने का आदेश जारी किया था। गिरजों के घंटे ज़ोर-ज़ोर से बजते हुए लोगों को सांध्य प्रार्थना के लिए बुलाते थे। भूतपूर्व टाउन हॉल के सामने सीमेंट से क्रांति का एक स्मारक बनाया जा रहा था, जिसकी आकृति का अभी अस्पष्ट अनुमान ही लगाया जा सकता था।

मोर्चे की खबरें पढ़ लेने के बाद आस्या और अलेक्सांद्र व्लादीमिरोविच की नज़रें मिलीं और दोनों ने एक दूसरे के भावों को ताड़ लिया। किंतु तभी अखबार की ओर मुड़कर आस्या विस्मय से चिल्लायी:

"यहां देखो तो!"

और दोनों ही एकसाथ, अपने सिर से एक दूसरे को लगभग छूते हुए गीली लेई से काली पड़ी हुई पंक्तियों को पढ़ने के लिए आगे झुके:

"**अ० पास्तुख़ोव का आगमन।** रंगमंचप्रेमियों द्वारा प्रशंसित अनेक नाटकों के लेखक अलेक्सांद्र पास्तुख़ोव सरातोव पधारे हैं। उनके नाम से रंगमंच कला के प्रशंसक ही नहीं, क्रांतिकारी हल्कों से संबंध रखनेवाले भी परिचित होंगे। एक ज़माने में अ० पास्तुख़ोव ने हमारे नगर में अवैध पर्चे बांटने में मदद की थी, जिसके कारण उन्हें पुलिस के हाथों काफ़ी कष्ट भुगतने पड़े। स्थानीय प्रगतिशील पत्रकारों ने उनकी रक्षा के लिए कदम उठाये, किंतु उनसे कोई लाभ न हो सका। अतीत की अंध शक्तियां साहित्यकार को उसकी बढ़ती लोकप्रियता, उत्पीड़ित जनता के प्रति उसकी सहानुभूति और क्रांतिकारियों को उसकी निःस्वार्थ

सहायता के लिए क्षमा न कर सकीं। अब जबकि मज़दूर वर्ग ने जनता की सृजन प्रतिभा के मुकुलन के लिए व्यापक अवसर प्रदान कर दिये हैं, हम आशा कर सकते हैं कि हमारे सहनागरिक अ० पास्तुख़ोव की कुशल लेखनी हमें ऐसी अनेक रचनाएं प्रदान करेगी, जिनकी कि आधुनिक पाठक-दर्शक उनसे उचित ही आशा रखते हैं। रंगमंच के प्रेमी जन सृजन के इस उदात्त क्षेत्र में उनकी महती सफलताओं की कामना करते हैं। यू० मे०"

दोनों अखबार से हटे और सड़क के कोने पर मुड़ गये। आस्या ने अपने पति की बांह अपनी बांह में ले ली। उसकी ओर देखे बिना भी वह उसका चेहरा देख रही थी। गर्दन कोट के कालर में छिपा लेने के कारण उसकी ठोड़ी के नीचे शिकन पड़ गयी थी, चेहरे का निचला हिस्सा कुछ बड़ा लगने लगा था और होंठ पकी हुई मटर की फलियों की तरह फूल गये थे। वह कही दूर देख रहा था, कभी आंखें जल्दी-जल्दी झपकते हुए, जैसे कि उनमें कुछ पड़ गया हो, और कभी उन्हें अधमुंदा रहने देकर टकटकी लगाये हुए।

एकाएक बिशप के गिरजे के घंटों के बजने की आवाज़ आयी और फिर नये गिरजे के अनेक स्वरवाले घंटे भी घनघनाने लग गये: आर्कबिशप भारी-भरकम, सुस्त चालवाले दो घोड़ों की अपनी गाड़ी पर फाटक से निकल रहा था। पास्तुख़ोव दंपति को रास्ते से हटना पड़ा। गाड़ी के दरवाज़े के चमकते हुए कांच के पीछे उन्हें उसमें सवार आदमी की एक झलक दिखायी दी: उसका काली टोपी से ढका सिर थोड़ा सा आगे झुका हुआ था और कासनी रंग की रेशमी आस्तीनों से थोड़ा सा बाहर निकली हुई उसकी ताज़ी डबलरोटी जैसी फूली हुई छोटी अंगुलियां दायें-बायें हर किसी को सलीब का निशान बनाकर आशीर्वाद देती जा रही थी।

आस्या ने भी जल्दी से अपने सीने पर सलीब का निशान बनाया।

"थू! पादरी रास्ता काट गया है," पास्तुख़ोव यों गुर्राया, जैसे दिखाना चाहता हो कि इस समय उसका मिज़ाज बहुत बढ़िया है।

"वह पादरी कहां, मठवासी है!"

"क्या मठवासी का रास्ता काटना शुभ होता है?"

"बेशक!"

"तब तो ठीक है," वह चेहरे पर हाथ फेरता हुआ हंस दिया। "मेत्र्सालोव! यू० में०! बेवकूफ़ कहीं का! सोचा होगा कि मेरी तारीफ़ कर रहा है! हुंह!"

"तुमने मुझे कभी इस किस्से के बारे में नहीं बताया," आस्या ने राहत महसूस करते हुए कहा। "अंडरग्राउंड, परचे, क्रांतिकारी – क्या है यह सब?"

"कुछ नहीं, यों ही। तुम्हें वह मुचलकेवाली बात याद है न, या भूल गयी? खैर, उस समय सचमुच मुझे यहां रोक लिया गया था और गैरकानूनी तरीके से फंसाने की कोशिश की गयी थी। पर सब झूठ था, बकवास था!"

उसने बेचैनी से कोट के बटन खोलते और पल्लू चौड़े करते हुए बात को टालने की कोशिश की, पर फिर एकाएक आगे बोला,

"कुछ भी हो, बहुत बढ़ा-चढ़ाकर कहा गया है। यह खूसट प्रगतिवादी शायद अपने लिए कुछ पका रहा है। प्रांतीय गप्पों से बना पनियल सूप ..."

"फिर भी हुआ क्या था?"

"क्या हो सकता था? बस मामूली सी ..."

उसने कंधे सीधे किये और मुंह से सीटी बजाने लगा। आस्या समझ गयी कि इस थोपी हुई तारीफ़ को कैसे लिया जाये, इस बारे में उसने अभी कुछ तय नहीं किया है।

"मामूली थी, तो क्या हुआ?" उसने कोमलता और प्यार से कहा। "हम जैसे गरीब लोगों को मामूली चीज़ों की उपेक्षा नहीं करनी चाहिए, खास तौर से अगर वे काम आ सकती हों। आखिरकार हमारा तो कोई कसूर नहीं था, हमने तो नहीं चाहा था ..."

पास्तुख़ोव चौंक पड़ा। आस्या ने अपनी हल्की, विनोदपूर्ण और विश्वासोत्पादक हंसी से इसका उत्तर दिया।

"मगर मैं नहीं सहन कर सकता," पास्तुख़ोव ने खीझकर कहा। "यह मेरी मर्यादा के खिलाफ़ है।"

आस्या ने कोहनी के ऊपर उसकी बांह हल्के से दबा दी। पास्तुख़ोव के माथे पर बल पड़ गये और बाकी सारे रास्ते वह एक भी शब्द नहीं बोला।

आर्सेनी रोमानोविच का शुरू से ही आग्रह था कि पास्तुख़ोव उसका अध्ययनकक्ष और पुस्तकालय इस्तेमाल करे, क्योंकि जिस कमरे में परिवार भी रह रहा हो, उसमें काम नहीं किया जा सकता था। पास्तुख़ोव ने यह प्रस्ताव स्वीकार कर लिया। दोरोगोमीलोव की मेज़ को अपने इस्तेमाल में लाने से पहले उसने उसे झाड़-बुहारकर साफ़ किया, हालांकि मानता था कि ऐसा करके वह कुंवारे मकानमालिक के एक बुनियादी उसूल को तोड़ रहा है। लेकिन वह अपने सामने मेज़ पर धूल और फालतू की चीज़ें सहन नहीं कर सकता था। रह-रहकर उसे अपनी मेज़ याद आ जाती–हल्के बैंगनी शेडवाला बिल्लौरी लैंप, बड़ा, चौकोर बिल्लौरी स्याहीदान, पैप्ये-माशे का पेंसिलदान, जिसपर सुनहरा चीनी ड्रैगन बना हुआ था, और ढेर सारी तराशी हुई पेंसिलें। पेंसिलें आस्या का ज़िम्मा थीं–वह तोड़ता था, वह फिर तराश देती थी। वही इसका भी खयाल रखती थी कि स्याहीदान की बगल में हमेशा फूल रहें। जैसा मौसम हुआ, वैसे ही फूल होते थे–वसंत में ट्यूलिप या नरगिस, सरदियों में पौधाघर से लायी हुई आग सी दहकती अज़ालिया की टहनी, गरमियों में जिलीफ़्लावर या डेज़ी या दो-तीन गुलाबी ल्यूपिन। अलेक्सांद्र व्लादीमिरोविच के अध्ययनकक्ष में महकों का एक अनोखा तांता लगा रहता था और वह भी इन नाजुक महकों में कोई न कोई नयी बात पाता रहता था। बहुत बार उसने अपनी खोजों से आस्या को चकित किया था।

"आस्या!" एक बार वह इतने उत्तेजित स्वर से चिल्लाया था कि सारा घर थर्रा उठा था। "यहां आना तो!.. आंखें बंद करके इस महक को सूंघो। तुम्हें इन लिलियों की कमबख्त मासूमियत के नीचे कुकुरमुत्ते छिपे नहीं लगते?"

"सचमुच!" वह खुशी से उछल पड़ी थी। उसे विश्वास नहीं हो पाया था। "सचमुच! और लोग कहते हैं कि लिली में महक नहीं होती! इस ओर मेरा ध्यान पहले क्यों नहीं गया? सचमुच, बिल्कुल कुकुरमुत्तों जैसी महक है! तले हुए कुकुरमुत्तों जैसी!"

"नहीं, तले हुए नहीं, ताज़े, किसी सड़े हुए ठूंठ के नीचे से अभी-अभी बटोरे हुए! हल्के गुलाबी, किनारों पर थोड़े से कत्थई, पीली

डंडियों पर झुंड में उगनेवाले। पर नहीं, तुम जाओ, तुम कुछ नहीं समझती। तुम्हें या तो जुकाम हो रखा है या फिर नाक में रुई ठूंसी हुई है और तुम मेरे काम में विघ्न डाल रही हो!"

दोरोगोमीलोव के अध्ययनकक्ष में चूहों की गंध आती थी, जो दिन के उजाले में भी दीवार और आलमारियों के बीच किताबें कुतरते रहते थे। लेकिन किताबों से किताबों की ही गंध आती थी – ऐसी गंध, जिसकी तुलना और किसी से नहीं हो सकती। खास तौर से अठारहवीं सदी की किताबें, – केवल उजाले के सामने करने पर ही दिखनेवाले वाटरमार्क से युक्त पीले या नीले-भूरे कागज़ पर छपी 'नया प्लूटार्क', 'अंधविश्वास कोश', 'हंसता डेमोक्राइटस' जैसी किताबें, जो देहाती कोठियों से फटेहाल अभिजातवर्गीय लोगों के साथ या अपने पिताओं के देहाती पैरिशों से भागे हुए पादरी-पुत्रों के साथ धीरे-धीरे शहरों में पहुंचती जा रही थीं। लेकिन जो किताबें पिछले सालों में नयी या पुरानी किताबें बेचनेवालों के हाथों से गुज़री थीं, उनकी जिल्दों में भी शराब के पीपों और बेद की छिली हुई टहनियों जैसी तरह-तरह के खमीर और रसदारू की गंध समायी रहती थी। असल में यह नयी आसानी से सोखनेवाली लकड़ी की लुगदी, जो पिछले कुछ समय से कागज़ में और-और ज़्यादा मिलायी जाने लगी थी, की गंध थी। पहले कागज़ केवल चीथड़ों से बनाया जाता था और उससे दर्ज़ी की दूकान या कुछ समय के लिए खुली छोड़ी हुई कपड़े की आलमारी जैसी गंध आती थी। लेकिन ये सब तुलनाएं स्थूल ही हैं, क्योंकि किताब से किताब की ही गंध आती है, जैसे शराब से शराब और कोयले से कोयले की ही गंध आ सकती है। किताब ने प्रकृति के मूल तत्त्वों में अपना स्थान बना लिया है। वह यौगिक नहीं, बल्कि स्वतंत्र तत्त्व है।

पास्तुख़ोव अपनी घड़ी स्याहीदान की बगल में रख लेता था। वह जमकर काम करने का आदी था, लेकिन घड़ी सामने रखकर ही। सैकंड की सुनहरी, नाज़ुक सूई देखकर उसे लगता कि वह अपने विचारों को एकाग्र नहीं कर पा रहा है, कि दोरोगोमीलोव के अध्ययनकक्ष में उसके विचार वसंत में हवा से इधर-उधर उड़ते भारहीन पराग जैसे भटके जा रहे हैं। तब वह खड़ा होता और आलमारियों के पास चला जाता और जैसे ज्योतिषी का तोता भाग्य बतानेवाला जो पत्ता पहले सामने

आता है, उठा लेता है, वैसे ही वह जो किताब सामने आती, उठा लेता।

आम तौर पर वह इतिहास की किताबोंवाली आलमारी के पास ही जाता था। जिस इतिहास को वह पहले प्रोफ़ेसरों-रीडरों और अभिलेखागारी कीड़ों की दिलचस्पी की चीज़, कार्डबोर्ड की फ़ाइलों और पाठ्यपुस्तकों में दफ़नाये हुए बेजान तथ्य मानता था, वह अब उसके लिए बहुत ही महत्त्वपूर्ण बन गया था और अपने भाग्य जैसे ही चिंतित करने लगा था। उसे लगता कि उसे शरण देनेवाली छतों – क्या वह उन्हें सचमुच शरण देनेवाली कह सकता था? – के ऊपर दो सालों से दिन-रात हो रहा गर्जन इन अधबिसरे पृष्ठों पर दर्ज दूर अतीत की घटनाओं की ही प्रतिगूंज है। शायद अतीत पुराने पड़ चुके इतिवृत्तों के साथ जो मौत मरा है, वह असली नहीं है, क्योंकि वह लोगों की रगों में सदा जीवित है और ज्यों ही कोई नयी आग – प्रतिशोध की आग, बेहतर जीवन की अदम्य लालसा की आग – भड़कती है, पुरानी लपटें फिर लपलपाने लगती हैं।

पास्तुख़ोव पुगाचोव के नेतृत्व में हुए जन युद्ध के बारे में पढ़ रहा था। पुगाचोव सरातोव के आसपास की पीली, नंगी पहाड़ियों पर घूमते प्रेत जैसा उसके सामने प्रकट हो गया। कज़्ज़ाक रिसाले का भूतपूर्व जूनियर अफ़सर नंगे सिर और मुट्ठियां कूल्हों पर जमाये खड़ा था। अगस्त की गरमी में उसके घने, लंबे सनई बाल लहरा रहे थे और वह शांत, स्थिर दृष्टि से नीचे नगरवासियों को देख रहा था, जो सहमे-सहमे ऊपर पहाड़ी पर चढ़ रहे थे, ताकि नगर की चाभियां विजेता के पैरों पर रख सकें। फिर कौए जैसे रंग के घोड़े पर सवार और ख़ुद भी कौए जैसा काला और पंखयुक्त, कमर पर कज़्ज़ाक तलवार लटकाये, अपनी लाल रेशमी कमीज़ का कालर खोले वह त्सरीत्सिन दरवाज़े से नगर में दाख़िल हुआ और लोग टोपियां हवा में उछालते, दुश्मनों और उत्पीड़कों के विरुद्ध मदद की याचना करते, शोर मचाते उसके घोड़े के पीछे-पीछे भागने लगे। शाम को गिरजे के घंटे बजने लगे, तो वह एक ऊंचे चबूतरे पर बैठ गया, जिसपर अमीरों से छीने हुए ईरानी गलीचे बिछे हुए थे, और नगरवासियों की वफ़ादारी की शपथें स्वीकार करने लगा। इधर दूसरी ओर उसके आज़ाद, चटपट बदला लेने में माहिर सैनिक

नगर के मुख्य चौराहे पर कुलीनों, सरकारी अधिकारियों और दुश्मन के साथी व्यापारियों को सूली पर लटका रहे थे और स्तेपी से आती नागदौन की महक से भारी हवाएं लाशों को झुलाकर उनके गिर्द चक्कर काटकर वापस वोल्गा के पार चली जा रही थीं।

फिर इन्हीं चिरंतन हवाओं के साथ पास्तुख़ोव पीली पहाड़ियां, वोल्गा और सौ मील पार करता और कोई डेढ़ सौ साल लांघता हुआ पुगाचोव की भूमि से हमारे आज के काल में आ पहुंचा।

अब उसे एक सरपट भागते सफ़ेद घोड़े की टापें और उसके नथुनों से निकलती फुफकारें सुनायी देने लगीं। उसने देखा कि घोड़े पर, उसकी अयाल से सटा, अपनी फ़र की टोपी पीछे खिसकाये, भौंहें सिकोड़े और आंखें भींचे एक उजली मूंछोंवाला आदमी सवार है और उसके पीछे रिसाला रेजीमेंटें लहरों की तरह बढ़ी चली आ रही हैं। वह उजली मूंछोंवाला सवार पहले वलाकोवो में बढ़ई था, फिर सेना में मामूली सिपाही रहा और अब रिसाला और इंफ़ेंट्री फ़ौज का कमांडर है, जिसे उसने विद्रोही उराली कज़्ज़ाकों से क्रांति की रक्षा के लिए वोल्गा पार के मैदानों में जुटाया था। वोल्शेविकों का झंडा उठाये वह, लाल कमांडर वसीली इवानोविच, खुदपरस्त पुरानी दुनिया के लिए काल वना हुआ था, जनता के खुले और भारी हाथों उसे सज़ा दे रहा था, फांसी लटका रहा था। उसका पूर्वी सा लगनेवाला कुलनाम – चपाई, चपायेव – उराल और वोल्गा इलाकों में दूर-दूर तक फैल चुका था। स्तेपियों के जन्मजात मालिक की तरह वह एक के वाद दूसरे स्तेपियाई नगरों और कस्बों को जीतता, निरंकुश धर्मपिता की तरह उन्हें नये-नये नाम देता आगे, और-और आगे बढ़ता जा रहा था। उज़ेन नदी से लेकर उराल तक, इर्गिज़ से लेकर बेलाया नदी तक सारा विशाल इलाका उसके घोड़ों की टापों से गूंज रहा था। उसी नागदौन की तेज़ महकवाली अगस्त की गरमियों में उसने सफ़ेद गार्डों से अपना जन्मनगर निकोलायेव्स्क मुक्त करवाया था। वह न केवल अपनी पहली रेजीमेंट को पुगाचोव रेजीमेंट कहता था, वल्कि निकोलायेव्स्क की रक्षा करनेवाले चेक तोपख़ाने पर इस रेजीमेंट के हमले के दौरान उसने नगर को भी पुगाचोव्स्क नाम दे दिया और इस तरह नयी मज़दूर और किसान सरकार की ओर से पुराने नाम – ज़ार की याद दिलानेवाले नाम – को रद्द कर दिया। हमले

13-62

के लिए जब उसका रिसाला आगे बढ़ रहा था, तो आकाश "पुगाचोव! पुगाचोव!" के नाद से गूंज उठा था।

यह लड़ाई इस वसंत में, जब पास्तुख़ोव बैठा येमेल्यान पुगाचोव और वसीली इवानोविच जैसे लोगों के बारे में सोच रहा था और पुगाचोव के आज़ाद सैनिकों की चपायेव के लाल झंडेवाले सिपाहियों से तुलना कर रहा था, नौ महीने पहले हुई थी। अब वसीली इवानोविच पुगाचोव्स्क से बहुत आगे निकल गया था और काप्पेल की आफ़िसर्स कोर के छक्के छुड़ा रहा था। बहुत से नगर उसकी रिसाला फ़ौज के युद्धस्थल बने थे और बहुत से वोल्गा पार के नगरों के नाम बदलकर युद्ध के नगाड़ों जैसे गूंजने लगे थे: बुज़ुलुक, बुगुरुस्लान, बुगुल्मा, बेलेबेई।

किंतु नामों की गूंज कितनी भी क्यों न बदल गयी हो और घटना-प्रवाह कितना भी तेज क्यों न हो गया हो, पास्तुख़ोव को रह-रहकर नागदौन की गरम महक से भरी वही सम्मोहक पुकार सुनायी दे जाती थी, जो दक्षिण-पूर्वी रूस के विशाल मैदानों से आ रही थी और उन्हें काल और भावना, दोनों ही दृष्टियों से मिला रही थी। उसे लगा कि लोगों का भाग्य हमेशा इसी दक्षिण-पूर्व की नागदौन की पुकार ने तय किया है। यहीं दक्षिण-पूर्व में ही रूसी भाले की मज़बूती परखी गयी है, तलवार की ताकत आंकी गयी है और गोलियों की सनसनाहट की गूंज कज़्ज़ाकों की सीटियों में सुनायी दी है। कुलीकोवो मैदान की लड़ाई से लेकर स्तेपान राज़िन तक, पुगाचोव से लेकर वोल्गा के निचले भागों के कज़्ज़ाकों के विद्रोहों तक जनता के पराक्रम, असंतोष और रोष का इतिहास स्तेपी प्रदेश के उस भाग में हथियारों की टकराहट से विभाजित हो गया है, जहां दो बहुसलिला धाराएं – भाई और बहन – पास आती हैं, ताकि फिर दूर हो जायें। कुछ महीने पहले उसी मीठे-कड़ुए स्तेपियाई इलाके में, निचले वोल्गा प्रदेश के मुख्य नगर के पास, जिसे अभी भी त्सरीत्सिन के शाही नाम से पुकारा जाता है, रोटी, आजादी और सोवियत सत्ता के लिए पहली महान रणनीतिक लड़ाई लड़ी और जीती गयी थी। अब फिर इस वसंत में भी उन्हीं दक्षिण-पूर्वी स्तेपियों में, जहां भाई बहन की ओर हाथ बढ़ा रहा है, लड़ाई के दमघोंटू बादल फिर घिरने लगे हैं: कज़्ज़ाकों का दोन अपनी

फ़ौलादी तलवारें भांज रहा है और मज़दूरों-किसानों का वोल्गा पहाड़ियों पर तोपें चढ़ा रहा है।

दरवाज़े पर एक हल्की दस्तक ने पास्तुख़ोव को एकाएक चौंका दिया। आर्सेनी रोमानोविच ने कमरे में यों झांका, जैसे कि उसे अपनी अक्षम्य धृष्टता पर बड़ा पश्चात्ताप हो रहा हो। नहीं, नहीं, उसने विघ्न नहीं डालना चाहा था, वह तो सिर्फ़ एक सैकंड के लिए आया था और अभी चला जायेगा – सूखी मछली का सूप पकाने। बेशक वह एक खबर भी सुनाना चाहता था, लेकिन वह ठहर सकती थी।

"आइये न, यह आपका ही तो घर है! मुझे यों शर्मिंदा न करें। मैं कुछ खास काम नहीं कर रहा हूं। बस बैठा सोलोव्योव के इतिहास के पन्ने पलट रहा हूं। क्या मकान छोड़ने के बारे में कोई नयी खबर है?"

नहीं, मकान छोड़ने के बारे में कोई खबर नहीं थी। आर्सेनी रोमानोविच की शिकायत पर अभी विचार नहीं हुआ था और सैनिक विभाग भी आगे कोई कार्रवाई नहीं कर रहा था।

"अभी तो घबड़ाने की कोई बात नहीं है," दोरोगोमीलोव ने प्रसन्नभाव से कहा। "लेकिन मैं आपको कुछ दिखाना चाहता हूं।"

उसने बगल की जेब से एक अखबार निकाला और खोलकर सामने कर दिया।

"आपके बारे में छपा है," उसने आदरपूर्वक कहा।

"ओह, हां," पास्तुख़ोव ने तुरंत जवाब दिया। "मैं पढ़ चुका हूं।"

"पढ़ चुके हैं? मैं भी पढ़ चुका हूं और बहुत, बहुत खुश हूं!"

"खुश?"

"आप खुद कभी न बताते कि आप मेल्पोमीन के ही नहीं, जनता के भी सेवक हैं!"

"देखिये, बात यह है..." पास्तुख़ोव ने मानो अनर्जित सम्मान को ठुकराते हुए विरोध किया।

"मैं सिर्फ़ सोच रहा था कि किस केस में आपको फांसा गया होगा? तारीखें तो बताती हैं कि रागोज़िनवाले केस में। मेरा अनुमान ठीक है न?"

"कुछ हद तक, अगर आप यही जानना चाहते हैं तो," पास्तु-ख़ोव ने खिड़की के पास जाते हुए अनिच्छापूर्वक कहा, "लेकिन मारिये गोली इस सबको!"

"मैं समझता हूं, खूब समझता हूं," आर्सेनी रोमानोविच एक कदम आगे बढ़ते और फिर अचकचाकर पीछे हटते हुए बोला। "इस लेख में, क्या कहते हैं, आपकी नम्रता को ठेस पहुंची है, है न? माफ़ करें, मैं आपकी भावना समझ सकता हूं। आखिरकार आदमी अपने बारे में यों ढिंढोरा तो नही पीट सकता कि मैंने जनता के लिए फलां-फलां कष्ट सहा है या क्रांति के लिए फलां-फलां काम किया है। शायद उसे यह भी गवारा न हो कि कोई और उसका ढिंढोरा पीटे: देखो, यह है वह ऐतिहासिक विभूति! या ऐसा ही कुछ और। अगर मैंने भी आंदोलन की सफलता के लिए कुछ किया होता, तो मैं भी अपने बारे में एक शब्द न कहता..."

"लेकिन क्यों? अगर किया है, तो क्यों न कहते?" पास्तुख़ोव ने दृढ़तापूर्वक पूछा।

"नहीं, नहीं! आप भी क्या बात करते हैं!" आर्सेनी रोमानोविच डर से हाथ हिलाते हुए चिल्लाया। "नहीं! जानते हैं, मैं उत्तेजित क्यों हुआ? वह लेख पढ़ते ही मैं सोचने लगा कि आप भी कहीं... यानी कि आप कही उस रागोज़िनवाले मामले में तो शामिल नहीं थे? और जानते हैं, मुझे क्या सूझा? मैंने अपने को आपकी स्थिति में रखा और इस नतीजे पर पहुंचा कि शायद आप जानना चाहेंगे कि यह सब तब कैसे हुआ था?"

"क्या हुआ था?"

"मेरे कहने का मतलब है कि... लेकिन नहीं! हो सकता है, आपका उस मामले से नज़दीकी और शायद इतना नज़दीकी संबंध था कि आपको सब कुछ, सभी तफ़सीलें मालूम होंगी ही।"

"कौन सी तफ़सीलें?"

दोरोगोमीलोव ने अंगुलियों में अंगुलियां फंसाकर उन्हें सीने से सटाने हुए हाथों को अलग करने की कोशिश की। उसकी उलझी हुई सफ़ेद दाढ़ी की झालर के ऊपर गालों पर बूढ़ों जैसी ललाई दौड़ गयी थी। वह बार-बार पंजों के बल उचक रहा था, जैसे कि कहीं किसी चीज को देखने की कोशिश कर रहा हो। पास्तुख़ोव उसे ऐसी उत्कंठा से देख रहा था, जो आम तौर पर तभी पैदा होती थी, जब वह कोई बात नहीं समझ पाता था।

"मैं सोच रहा था कि अगर आपका इस मामले से संबंध था, तो आपका परिचित होने के नाते मैं आपको वे बातें क्यों न बता दूं, जो मुझे अकेले को ही मालूम हैं।"

"हां, हां, क्यों नहीं, आर्सेनी रोमानोविच! बोलिये न!"

"लेकिन आप यह न समझ बैठें–और मैं आपसे वचन देने की प्रार्थना भी करूंगा कि आप और कोई मतलब नहीं लगायेंगे–कि मैं भी अपने को इस मामले में शामिल बताना या आपके जैसा क्रांतिकारी जताना चाहता हूं। ऐसी बात नहीं है, अलेक्सांद्र व्लादीमिरोविच! बिल्कुल नहीं! मैंने सिर्फ़ किसी को इस बारे में अब तक ..."

"आर्सेनी रोमानोविच!"

"ठीक है, ठीक है!"

दोरोगोमीलोव ने अंगुलियां खोल लीं, अखबार को मेज़ पर कायदे से रखा, उसकी तहें सीधी कीं और अपनी उत्तेजना पर काबू पाकर शांत स्वर में कहना शुरू किया,

"आपको शायद मालूम न हो कि १९१० में जब पुलिस प्योत्र पेत्रोविच रागोज़िन की तलाश कर रही थी, वह सरातोव में ही था और ..."

आर्सेनी रोमानोविच ने गहरी सांस ली और कांपते हाथ से बगल के तंग से दरवाज़े की ओर इशारा किया:

"यहां छिपा हुआ था।"

"आपके फ़्लैट में?"

"हां, इसी पुस्तकालयवाले कमरे में।"

"यानी कि आप ..." पास्तुखोव ने कुछ कहना चाहा, लेकिन दोरोगोमीलोव ने उसे आगे नहीं बोलने दिया।

"मैं प्रार्थना करता हूं कि मुझे गलत न समझें। मैं अपने बारे में नहीं, सिर्फ़ प्योत्र पेत्रोविच के बारे में बताना चाहता हूं। वह मेरे घर में छिपने इसलिए नहीं आया कि आपकी तरह मैं भी उसके कामों में हिस्सा लेता था, बल्कि, सिर्फ़ इसलिए कि मेरा उन सब कामों से कोई संबंध न था। जब पार्टी की अंडरग्राउंड कमेटी को मालूम हुआ कि बड़े पैमाने पर गिरफ़्तारियां होनेवाली हैं, मेरी जान-पहचान का एक आदमी, जो कमेटी में काम करता था, मेरे पास आया और बोला कि

एक भले आदमी को छिपाना है और इसके लिए सबसे बढ़िया जगह मेरा फ्लैट है, क्योंकि सभी मुझे ..." यहां आर्सेनी रोमानोविच के चेहरे पर बच्चों जैसी, लेकिन चालाकीभरी मुस्कान उभर आयी। फिर बिना कुछ छिपाये उसने कह ही डाला: "खैर, आपसे क्या छिपाऊं, सभी लोग मुझे गोबर-गणेश समझते हैं। बेशक उसने मुझे यह इतने साफ़-साफ़ नहीं कहा था, लेकिन मैं समझ गया और राज़ी हो गया। हां, हां, राजी हो गया – अब इसे क्या छिपाना, क्योंकि, भगवान गवाह है, बात ऐसी ही थी। बाद में वह भला आदमी आया और मैंने उसे वहां ..."

वह दौड़कर पुस्तकालय के पास गया, हाथ से आलमारियों के पीछे की ओर इशारा किया और फिर वैसी ही तेज़ी से वापस आकर जहां-तहां से घिसे हुए चमड़े के कवरवाले पुराने सोफ़े को दोनों हथेलियों से दबाते हुए गंभीर स्वर में अपनी बात खत्म की,

"यह सोफ़ा तब वहां, आलमारियों के पीछे हुआ करता था। वहीं मैंने प्योत्र पेत्रोविच को छिपाया।"

आर्सेनी रोमानोविच ने एक खास शान के साथ अपने बाल पीछे झटके, कोट को ठीक किया और प्रतीक्षा करने लगा कि पास्तुख़ोव क्या कहता है।

अलेक्सांद्र व्लादीमिरोविच किताबोंवाले कमरे में गया, आलमारियों के सामने खड़ा रहा, फिर धीरे-धीरे वापस आकर सोफ़े पर बैठ गया और उसकी ठंडी, पालिशदार पीठ पर हल्के से हाथ फेरने लगा। बाद में उसने अपना सिगरेट केस निकाला और एक सिगरेट लेकर सुलगाने से पहले अंगुलियों के बीच घुमाता रहा।

"क्या वह वहां आलमारियों के पीछे बहुत दिन रहा था?"

"सत्ताईस दिन," दोरोगोमीलोव ने झट से जवाब दिया।

"बाहर निकले बिना?"

"बाहर निकले बिना।"

"इतने दिन तक कैसे ..."

"मैं जरूरत की हर चीज़ पहुंचा दिया करता था।"

"फिर भी वह पूरे महीने क्या करता रहा?"

"पढ़ता था।"

"पढ़ता था ?"

"हां। आजकल आप क्या पढ़ रहे हैं ? सोलोव्योव की किताव ? उसने इसे भी पढ़ा था। वहुत सी किताबों के हाशियों पर आप उसकी लिखी टिप्पणियां देख सकते हैं।"

दोरोगोमीलोव ने मेज़ पर से किताब उठायी और जल्दी-जल्दी उसके पन्ने पलटने लगा।

"मिसाल के लिए, यही देखिये ..."

पास्तुख़ोव को रेखांकित की हुई पंक्तियों के सामने हाशिये पर लगभग अस्पष्ट सी लिखावट में कुछ लिखा हुआ दिखायी दिया। रेखांकित जगह को उसने एक ही निगाह में पढ़ लिया। यह पुगाचोव का एक फ़रमान था, जिसमें उसने अपनी शाही अनुकंपा का प्रदर्शन करते हुए अपने अनुयायियों को "भूमि और खेत, सागर और वन, धन और रसद, सीसा और वारूद और चिर, स्वतंत्रता ..." प्रदान किये थे।

"आप पढ़ सकते हैं, हाशिये पर क्या लिखा हुआ है ?"

"हां," दोरोगोमीलोव ने कहा और पढ़ा : "'ऐसा ही होगा भी'।"

"यह क्या रागोज़िन ने लिखा था। ?"

"हां ,यह प्योत्र पेत्रोविच की लिखावट है।"

सिगरेट के धूएं के लच्छों से घिरा पास्तुख़ोव उठा और देर तक निश्चल खड़ा रहा। आर्सेनी रोमानोविच भी उसके आगे कुछ कहने की चुपचाप प्रतीक्षा करता रहा।

"हम्म। यानी कि उत्तराधिकारी हैं।"

"किस अर्थ में ?" दोरोगोमीलोव नहीं समभ पाया।

"आपके आने से पहले मैं पुगाचोव के वारे में पढ रहा था और आज वोल्गा के पार, दोन के इलाक़े में, सारे रूस में जो हो रहा है, उसके वारे में सोच रहा था। तव जो पलीता लगाया गया था, उसका धमाका अब हो रहा है। ये उन आज़ाद कज़्ज़ाकों के परपोते ही हैं, जो आजकल स्तेपियों में तहलका मचाये हुए हैं।"

"हां भी और नहीं भी," दोरोगोमीलोव ने जल्दवाज़ी दिखाते हुए कहा। "यह ठीक है कि जनता का जो न्याय तव ताकत के वल पर रोक़ दिया गया था और उसके वाद भी न जाने कितनी वार शुरू

हुआ और रोक दिया गया, वह आज फिर जारी है। लेकिन आज लक्ष्य न्याय और दंड ही तो नहीं हैं! आज लक्ष्य नये समाज का निर्माण करना भी है। आप मानते हैं न?"

"लेकिन आपने खुद देखा कि रागोज़िन पुगाचोव के वायदों से सहमत है। इसे आप क्या कहेंगे?"

"पुगाचोव के स्वप्नों से, उसकी उदात्त आकांक्षाओं से! न कि आजाद कज़्ज़ाक गिरोहों की अराजकता से! रागोज़िन ने पुगाचोव के वायदों में जिस भविष्य की झलक मिलती है, उससे अपनी सहमति जतायी है, न कि अतीत से।"

"लेकिन आपको नहीं लगता, प्रिय आर्सेनी रोमानोविच, कि जनता अपने न्याय में निहित हिंसा से, अपने आवेगों की अनियंत्रितता से उस अतीत की जड़ें और मजबूत कर देगी, जिसे वह इस समय उखाड़ फेंकना चाहती है?"

"नहीं, अलेक्सांद्र व्लादीमिरोविच, कतई नहीं। मैं यह जानता हूं, क्योंकि वह पुराने को उखाड़ने के साथ-साथ नये का रोपण भी कर रही है।"

"काश, मैं भी ऐसा ही सोच पाता! लेकिन प्रतिशोध की यह बाढ़ क्या उन सुकुमार अंकुरों को बहा नहीं ले जायेगी, जो उसके वर्तमान जलावर्त्त में अभी मुश्किल से ही दिखायी पड़ रहे हैं?"

"सुकुमार? आप उन्हें सुकुमार कहते हैं? लेकिन यह बाढ़ खुद भी एक ऐसे ही सुकुमार अंकुर – जनाधार पर स्थापित राज्य के महान विचार – की बदौलत शुरू हुई है। यही नया राज्य इस सर्वविनाशकारी बाढ़ की दिशा निर्धारित कर रहा है। और आप इसे सुकुमार अंकुर कहते हैं!"

"लेकिन हमारे इन दूर-दराज के इलाकों में जो यह रिसालों का युद्धनाद है, उसमें आपको अंधी, स्वतःस्फूर्त शक्तियों का गर्जन नहीं सुनायी देता?"

"हर बड़ी चीज को तो अंधी, स्वतःस्फूर्त शक्ति नहीं कहा जा सकता! फिर यह युद्धनाद इन दूर-दराज के इलाकों में ही नहीं हो रहा है! मैं कुछ और सुन रहा हूं। आज एक अमर नारा दिया गया है: सारी सत्ता मेहनतकशों को! और यह नारा सभी इलाकों को, यहां तक

कि जो बहुत दूर हैं, उन्हें भी एक बड़ी इकाई में एकताबद्ध कर देगा।"

"जो अविभाज्य होगी?"

"बेशक।"

"लेकिन इस तरह की बातें तो दोन इलाके में भी कही जा रही हैं, आर्सेनी रोमानोविच..."

दोरोगोमीलोव जिस गंभीरता से अपने विचार व्यक्त कर रहा था, उसका आनंद लेते हुए पास्तुख़ोव मानो उसे चिढ़ा रहा था। लेकिन उसके खेल ने उसे इस बूढ़े, झबरैले सफ़ेद बालोंवाले आदमी के अदम्य विश्वास की ऊष्मा से आकृष्ट होने से नही रोका और उसे लगा कि उनकी बहस उन्हें उस सबसे महत्त्वपूर्ण प्रश्न की ओर ले जा रही है, जिसके बारे में वह दिन प्रतिदिन और-और ज़्यादा सोचता जा रहा था, यानी वर्तमान घटनाओं में अपनी जगह का प्रश्न।

"दोन इलाके में?" दोरोगोमीलोव ने गुस्सा होते हुए कहा और मुंह भी फेर लिया, मानो दिखाना चाहता हो कि ऐसी बात की वह कल्पना भी नहीं कर सकता। "वहां अतीत के अविभाज्य रूस की बात की जा रही है, जबकि यहां लोग सारे अतीत को इस हद तक जड़ से उखाड फेंक रहे हैं कि..."

एकाएक उसने पास्तुख़ोव के कोट का कालर पकड़ लिया और हर शब्द के साथ उसे झटका देते हुए एक गंभीर से उल्लास के साथ उद्घोषणा करने लगा:

"लोग अपना भाग्यविधाता स्वयं बनंने को बाध्य हो जायेंगे और अनिवार्यतः अपने सर्वथा नये विश्व का निर्माण करेंगे – जैसा कि उनके गीत में कहा गया है! और यह एक महान कारनामा होगा!"

किंतु तभी उसे अपने इस भावातिरेक पर लज्जा आ गयी और बोलना खत्म करते ही वह उछलकर तुरंत पीछे हट गया।

उसकी बातों ने पास्तुख़ोव को स्तंभित कर दिया। "अनिवार्यतः" शब्द जिस निश्चयात्मकता के साथ कहा गया था, उसमें अपरिहार्यता और पूर्वनियति का वास्तविक अर्थ – यह कि नये विश्व के सामने जन्म लेने के अलावा और कोई चारा नहीं है – मानो पहली बार गूंजा था। फिर यह शब्द चूंकि एक बूढ़े के मुंह से निकला था और वह भी भयवश

या भविष्य की आशंका के कारण नहीं, बल्कि किशोरों जैसी निश्छल उमंग से, इसलिए उसमें एक प्रकार की भविष्यकथन जैसी शक्ति थी। अन्य सभी शक्तियों की भांति इस शक्ति ने भी अपना प्रभाव डाला – पास्तुखोव को लगा कि उसे अपने को इस शक्ति के सामने समर्पण कर देना चाहिए। लेकिन वह हर नयी बात पर पहले आपत्ति करने का आदी था, इसलिए तुरंत समझ गया कि उसकी यह इच्छा बिल्कुल बेतुकी है: सचमुच क्या यह हंसी की बात न होगी कि जो पास्तुखोव अब तक किसी पीर-पैगंबर के झांसे में नही आया था, वह एकाएक इस बेढंगे कोटवाले सनकी के झांसे में आ जाये और उसे सच्चा पैगंबर मान बैठे? अत: जब आर्सेनी रोमानोविच की भावनाओं के साथ अपनी भावनाओं को एकाकार करने की उसकी सहसा जगी इच्छा पूरी तरह शांत हो गयी, तभी वह बोला,

"आपको पक्का यकीन है कि रोष और क्रोध की भावनाओं के घटनाक्रम पर हावी होने से पहले ही विवेक उनपर विजय पा लेगा?"

"विवेक को इन भावनाओं से जूझने की ज़रूरत नहीं है, क्योंकि यह उसके लिए घातक होगा। वह तो उन्हें केवल आवश्यक दिशा में मोड़ना है।"

"रागोज़िन के कुतुबनुमा से?"

"आपको क्या शक है? आपके कुतुबनुमा से भी, अगर आपने उसे तब से खो नहीं दिया है, जब आप और रागोज़िन साथ हुआ करते थे।"

दोरोगोमीलोव की सारी उत्तेजना एकाएक शांत हो गयी थी और वह ठंडी और निष्ठुर निगाहों से पास्तुखोव को यों देख रहा था, जैसे कि उसकी सहनशक्ति को परख रहा हो। उसकी आवाज़ में अब न कोई आदरभाव था, न इस बात का भय कि पास्तुखोव की नम्रता को ठेस पहुंच सकती है। वह अब केवल एक कठोर परीक्षक था और सीधे जवाब देने से कतरानेवाले विद्यार्थी के साथ कड़ाई से पेश आनेवाले परीक्षक की तरह ही उसने बिना किसी लाग-लपेट के पूछा,

"लेकिन हो सकता है कि इन वर्षों में आपने रागोजिन के विचारों से नाता तोड़ लिया है और अब किसी दूसरी पार्टी में शामिल हो गये हैं? क्या ऐसी बात है?"

राजनीतिक पार्टियों के बारे में चल रही इस बातचीत की अत्यंत सामान्यता के बावजूद यह सवाल पास्तुख़ोव को विचित्र लगा और एक सैकंड के लिए उसे परेशानी में डालनेवाला और अपमानजनक भी प्रतीत हुआ। उसे नहीं भाया कि दोरोगोमीलोव यों परीक्षक की तरह उसे सीधा जवाब देने को मजबूर कर रहा है। इसके अलावा, वह खुद प्रेक्षक न रहकर प्रेक्षण की वस्तु बन गया था और यह उसके लिए बड़ी हेठी की बात थी। लेकिन बुरा मानने का मतलब होता कि वह कायर है, अतः जैसा कि वह इस प्रकार के क्षणों में किया करता था, चेहरा पोंछने का नाटक करने लग गया। फिर आंखें भपभपायीं और राहत सी महसूस करते हुए हंस दिया।

"प्रिय आर्सेनी रोमानोविच, आप बड़े भ्रम में हैं। मैं न कभी किसी पार्टी में था, न अब शामिल होने का ही कोई इरादा रखता हूं। रागोज़िनवाले मामले के दौरान मेरे साथ जो किस्सा घटा था, उसे मैं फिर कभी बताऊंगा। फिलहाल आप सुनाइये कि रागोज़िन जब यहां आपके घर में छिपा हुआ था, तब आगे क्या हुआ।

"अरे हां," दोरोगोमीलोव ने अचानक फिर पहले जैसा बेचैनीभरा सौहार्द दिखाते हुए तुरंत कहा। "मज़े की बात तो यह है कि तब मुझे मालूम भी न था कि मेरे यहां कौन छिपा हुआ है!"

"सचमुच?"

"मैं जानता था कि पूछने पर उत्तर तो मिल जायेगा, पर वह बेकार होगा, क्योंकि असली नाम फिर भी नहीं बतायेंगे। इसलिए मैंने पूछा ही नहीं। सालभर बाद जाकर ही मुझे मालूम हो पाया कि यह भला आदमी कौन था। जानते हैं, हालांकि लगभग पूरा साल बीत चुका था, फिर भी उस समय मैं बेहद डर गया था!"

आर्सेनी रोमानोविच खुशी से मुस्करा पड़ा।

"डर गये? पूरा साल गुज़र जाने के बाद भी?" पास्तुख़ोव फिर हंसा।

"और क्या! शहर में उसके नाम को लेकर बड़ा शोर मचा हुआ था। आपको याद नहीं?"

"खैर, किस्सा खत्म कैसे हुआ?"

"बस ऐसे ही। सत्ताईसवें दिन मैं प्योत्र पेत्रोविच को नदी के किनारे

पर ले गया। वहां एक नाव पहले से ही तैयार थी और वह अकेला ही उसमें बैठकर नीचे गैबुस्की गांव के लिए रवाना हो गया, जहां, जैसा कि उसने मुझे बताया था, उसे स्टीमबोट पकड़नी थी। शायद ऐसा ही हुआ भी। मैंने उससे पूछा भी नहीं कि वह स्टीमबोट से उत्तर की ओर जायेगा या दक्षिण की ओर, लेकिन इतना तय था कि नाव को वह गैबुस्की में ही छोड़ देगा। उस रात के बाद से मुझे उसके दर्शन सिर्फ तब हो सके, जब वह क्रांति के बाद यहां लौटा और मैं एक मीटिंग में उसका भाषण सुनने गया।"

"वह यहीं है?" पास्तुखोव ने आश्चर्य से पूछा।

"आपको नहीं मालूम क्या?" दोरोगोमीलोव को भी आश्चर्य हुआ।

"आप उससे मिलते हैं?"

"नहीं।"

"कमाल है!" अलेक्सांद्र व्लादीमिरोविच ने हाथ यों फैला दिये, जैसे उसके आश्चर्य की कोई सीमा न रही हो। "क्या जरूरत थी आपको बेदखली रुकवाने के लिए इतना परेशान होने की, आवास विभाग और दूसरी जगहों पर मिन्नतें करते फिरने की, जबकि आप सीधे रागोजिन के पास जा सकते थे और वह बाजे-गाजे के साथ आपको किसी महल में बसा देता?"

"क्यों बसा देता?" दोरोगोमीलोव ने सिर को एक ओर झुकाते हुए पूछा।

"क्या मतलब—क्यों? अजीब आदमी हैं आप! आपने उसकी जान जो बचायी थी!"

दोरोगोमीलोव के रोंगटे खड़े हो गये, जैसे कि एकाएक झुरझुरी लगने लगी हो। अपने मन की पीड़ा को दबाते हुए उसने कहा,

"मैं शर्म से डूब मरूंगा, मगर ऐसा कभी नहीं करूंगा।"

तभी गलियारे से नारी-स्वर और उसके बाद किसी पुरुष का गूंजता हुआ, चिकना सा, उतार-चढ़ाव से भरपूर स्वर सुनायी दिये। आवाजें निकट आती जा रही थीं। पास्तुखोव, जो अपमानित आर्सेनी रोमानोविच की उपस्थिति में अटपटा सा महसूस कर रहा था, इस अप्रत्याशित सहायता

को पाकर खुश हो गया। एक क्षण तक वह सुनता रहा और फिर एकाएक पुरुष-स्वर को पहचान गया।

"त्स्वेतुख़िन! त्स्वेतुख़िन आया है!" वह चिल्लाया और दरवाज़े की ओर लपका।

१२

जब येगोर पावलोविच ने अपनी मूंछें काटीं, तो पता चला कि उसकी नाक थोड़ी सी उठी हुई और निचला होंठ उसके शब्दों पर अंत में मुहर लगाता हुआ सा आगे निकला है। जैसे यह संभव था कि उसने इस दोष को छिपाने के लिए मूंछें रखी थीं, वैसे ही यह भी संभव था कि अब उन्हें इसलिए काट डाला है कि चेहरे पर समय की छापें इतनी न दिखायी दें।

लेकिन इस अनजाने होंठ और झुर्रियों के बावजूद पास्तुख़ोव पहले के त्स्वेतुख़िन – किसी ज़माने में रसिया, हवाई किले बनाने के शौकीन, रंगमंचप्रेमियों के चहेते और अपने सांवले सौंदर्य पर इतरानेवाले त्स्वेतुख़िन – को तुरंत पहचान गया। एक क्षण के लिए वह द्रवीभूत हो गया। गले मिलते हुए दोनों को लगा कि अतीत में उनके बीच जो यौवनसुलभ घनिष्ठता थी, वह उन्हें आप्लावित किये दे रही है।

किंतु येगोर पावलोविच तुरंत ऐसे विनोदपूर्ण और यहां तक कि व्यंग्यभरे अंदाज़ में बातें करने लगा, जिसे स्वतंत्र स्वभाववाले लोग यह दिखाने के लिए अपना लिया करते हैं कि अगर किसी ने अपने बड़प्पन का प्रदर्शन करके उनकी समानता की भावना को ठेस पहुंचाने की कोशिश की, तो वे अपना बचाव खुद कर सकते हैं। यह एक ऐसी पीड़ादायी फांस है, जो प्रांतीय शहरों के अति सुसंस्कृत लोगों को भी "राजधानी की चिड़ियाओं" से सहज संबंध नहीं बनाये रखने देती : अपने गर्व को ठेस पहुंचने का भय इन लोगों को प्राय: इस बात का पता नहीं चलने देता कि वे इन "चिड़ियाओं" से उत्कृष्ट भी हो सकते हैं।

वैसे अगर दोनों मित्र अकेले होते, तो यह मुलाकात बिल्कुल भिन्न भी हो सकती थी। लेकिन यहां तो त्स्वेतुख़िन पर एक साथ दो और लोगों की नज़रें भी टिकी हुई थीं : अनास्तासिया गेर्मानोव्ना, जो उससे

लगभग कलाकारों जैसी सौजन्यता से मिली थी, और उत्तेजित दोरोगोमीलोव, जिसके बारे में येगोर पावलोविच ने सुना था कि वह उसकी प्रतिभा का पक्का भक्त है। फिर मुलाकात एक ऐसी हास्यजनक परिस्थिति में हुई थी, जिसने पास्तुख़ोव को और भी मज़ाकिया बना दिया था और इस तरह आशा के विपरीत शुरू से ही सब कुछ ने एक गलत सा मोड़ ले लिया था।

त्स्वेतुख़िन के साथ एक लड़की भी आयी थी, जिसका परिचय देते हुए उसने सिर्फ़ इतना कहा था: "आनोचका, मेरी शिष्या।" वह दोरोगोमीलोव की भी परिचित निकली, लेकिन इसके बावजूद वह शुरू में ही यों शर्मा गयी, जैसे कि न मालूम कहां आ टपकी हो, और इसलिए तुरंत एक आलमारी की आड़ में चली गयी और ऐसी विनम्र, याचनाभरी आंखों से देखने लगी कि जैसे कह रही हो: आप लोग मेरी उपस्थिति पर ध्यान न दें। वहां से वह सब कुछ, ख़ास तौर से पास्तुख़ोव पर नज़रें गड़ाये हुए थी।

"सुनाओ, पुराने क्रांतिकारी!" अभिवादन की औपचारिकता समाप्त होते ही त्स्वेतुख़िन के मुंह से जो पहली बात निकली, वह लगभग यही थी। "लड़ने आये हो?"

वह मज़े से हाथ मल रहा था, मानो कहना चाहता हो कि आओ, हो जायें दो-दो हाथ!

"मैंने तो सुना है कि लड़ाई तुम कर रहे हो," पास्तुख़ोव ने खिसियानी हंसी हंसते हुए कहा। "थियेटर को उड़ाने की सोची हुई है?"

"अरे, हमारी ऐसी औक़ात कहां! हम तो सिर्फ़ थियेटर के दर्ज़ी की तरह पलटने का काम कर रहे हैं। टाट से कमखाब बना रहे हैं। पर तुम तो सीधे आसमान पर ही चढ़ गये हो। पहुंच से बिल्कुल बाहर। क्रांति कर दी। ज़ार की पुलिस के हाथों ज़ुल्म सहे!"

त्स्वेतुख़िन ने धूर्तता से एक आंख सिकोड़ी, मगर सिर्फ़ इतनी कि वह आंख मारना न लगे।

"मेरा इससे क्या लेना-देना?" पास्तुख़ोव ने और भी खिसियाते हुए कहा। "यह सब आपके मेर्त्सालोव की कारस्तानी है।"

"मेर्त्सालोव हमारा है या तुम्हारा, मेर्त्सालोव ही है या कोई और, इससे फ़र्क नहीं पड़ता। बात तो यह है कि अब सारे शहर को

अलेक्सांद्र पास्तुखोव की क्र्र्रांतिकारी कार्रवाइयों का पता लग गया है।"

"इसमें बुरा क्या है?" अनास्तासिया गेर्मानोव्ना ने चौंकते हुए, मगर मोहक अदा के साथ पूछा।

"बेशक कुछ नहीं!" त्स्वेतुख़िन ने जवाब दिया और फिर तुरंत तर्जनी मुंह पर रखते हुए सरगोशी के अंदाज़ में बोला, "बल्कि ठीक है, बहुत ठीक है! और चूंकि यहां सब अपने ही लोग हैं, मैं तो कहूंगा कि वक्त भी बिल्कुल ठीक चुना है!"

वह ठहाका लगाकर हंस पड़ा और आंख फिर सिकोड़ ली।

"तुम्हें पेशी-ऐंठन का रोग है क्या?"

त्स्वेतुख़िन ने अपने चेहरे पर हाथ फेरा और एकाएक बहुत चिंतित हो गया।

"पेशी-ऐंठन का रोग? क्यों? तुमने कुछ देखा है? मैं तो कहीं का न रह जाऊंगा! आनोचका, यह ठीक कह रहा है?"

"तुम्हारी एक आंख बार-बार भिंच रही है," पास्तुखोव ने बताया।

"ओह, आंख!" त्स्वेतुख़िन फिर हंस पड़ा। "यह तो तुम जैसे वीर क्रांतिकारी को देखकर चुंधिया गयी है!"

"अच्छा अब रहने भी दो! कम से कम उस उदात्त, महान मार्ग पर तुम भी मेरे साथ थे।"

"तुम्हें यकीन है?" त्स्वेतुख़िन ने शांत, गंभीर स्वर में पूछा।

"यकीन की तो कह नहीं सकता, पर याद ज़रूर है कि पुलिस का नाम सुनते ही तुम्हारी घिग्घी बंध जाती थी।"

त्स्वेतुख़िन की आंखें लगा कि कहीं दूर खो गयी हैं।

"यह अच्छी बात है कि तुम्हें पूरा यकीन नहीं है," उसने वैसे ही खोये-खोये कहा और फिर कुछ रुककर और भी गंभीरता से पूछा, "तुम नहीं सोचते कि यह मेरी एक चाल थी?"

"चाल?"

"हां, हां, चाल!"

"किसकी आंख में धूल झोंकने के लिए?"

"तुम्हारी।"

दोनों एक क्षण तक एक दूसरे को खामोशी से देखते रहे – त्स्वेतुख़िन

किसी गूढ़ रहस्यभरी दृष्टि से और पास्तुख़ोव बार-बार और हल्के-हल्के पलकें झपकते हुए।

एकाएक त्स्वेतुख़िन ठहाका लगाते हुए पास्तुख़ोव पर लुढ़क पड़ा और उसकी मोटी कमर में हाथ डालकर पीठ थपथपाते हुए, जैसा कि ठंड में खड़े लोग अपने को गरमाने के लिए किया करते हैं, और ठहाके लगाने लगा :

"आ गये मियां फांसे में! आ गये!.."

दूसरे लोग भी हंसने लगे और पास्तुख़ोव अपने को दोस्त की गिरफ़्त से छुड़ाते हुए बुदबुदाया,

"भाड़ में जाओ, शैतान, मसखरा कहीं का!"

"ठहरो भी, हम तुम्हारे जीवन-पुराण पर अभी फिर लौटेंगे। फिलहाल दो सवाल हैं। पहला, कुछ चलेगा?"

"तुम्हारे पास है?" पास्तुख़ोव ने अविश्वास से पूछा।

त्स्वेतुख़िन ने कोट का पल्लू उठाकर पेंट की फूली हुई जेब दिखा दी।

"विश्वास नहीं," पास्तुख़ोव गुर्राया।

त्स्वेतुख़िन ने धीरे से जेब से एक बोतल निकाली जिसमें कोई कत्थई सी चीज़ भरी हुई थी।

"विश्वास नहीं," पास्तुख़ोव ने ठंडे स्वर में दोहराया।

त्स्वेतुख़िन ने कमरे में इधर-उधर नज़रें दौड़ायीं और कोई देवप्रतिमा न पाकर खिड़की की ओर देखते हुए ही सलीब का निशान बना दिया।

"फिर भी नहीं मानता। क्या है यह?"

त्स्वेतुख़िन ने आंखें भींचकर सिर हिलाया।

"अरे मसखरे, मैं पूछ रहा हूं कि यह क्या काढ़ा है?"

"असली ठर्रा!" त्स्वेतुख़िन भौंहों को पूरा उठाते हुए नाटकीय अंदाज में फुसफुसाया।

"नहीं हो सकता!" पास्तुख़ोव यों बोला, जैसे उसके आश्चर्य की कोई सीमा न रही हो। अकल्पनीय! असंभव! मार डालूंगा, येगोर, अगर झूठ निकला!"

"आनोचका, पुष्टि कर दो!" त्स्वेतुख़िन ने याचना की।

"यह पागल आदमी जो कह रहा है, उसमें लेशमात्र भी सचाई है?" अलेक्सांद्र व्लादीमिरोविच ने भी आनोचका की ओर मुड़ते हुए

कड़ाई से पूछा। "इस कमबख्त बोतल में क्या एक बूंद भी अल्कोहल है?"

"अफ़सोस है कि है," आनोचका ने मुस्कराते हुए अपनी जगह से ही कहा।

पास्तुख़ोव ने येगोर पावलोविच के हाथ से बोतल ली, उजाले के सामने कोई एक मिनट उसके तरल की जांच की और एकाएक चिल्लाया,

"आस्या! मांस की जेली तुरंत मेज़ पर!"

"ओह, कितना शोर है!" आस्या ने डरने का नाटक करते हुए कहा और साथ ही आनोचका की ओर मैत्री से देखकर मुस्करा दी।

"और सूखी मछली भी!" सहसा ऊंची आवाज़ में दोरोगोमीलोव भी बोल पड़ा। "मेरे पास है! ठेठ अस्त्राख़ानी!"

मेहमानों के आने के बाद से अब तक वह एक भी शब्द नहीं बोला था, शुरू में तो न समझ पाने की वजह से कि दोस्त झगड़ रहे हैं या मज़ाक कर रहे हैं, और बाद में इसलिए कि त्स्वेतुख़िन के आशु अभिनय के प्रवाह और उतार-चढ़ाव ने उसे सम्मोहित कर दिया था। पहले येगोर पावलोविच उसकी हृद्‌तंत्रियों को झकझोर डाला करता था। अभिनेता की कला उनके बीच बहुत बड़ी खाई बनी हुई थी: त्स्वेतुख़िन अभिनय करता था और दोरोगोमीलोव देखता था। लेकिन अब तो कोई भी खाई न थी। स्वयं कला उसके, दोरोगोमीलोव के घर में आ गयी थी और उसे दर्शक न बने रहकर खेल में खुद भी भाग लेने को पुकार रही थी। यह अकल्पनीय था: दोरोगोमीलोव मानो स्टेज पर त्स्वेतुख़िन के साथ एक ही खेल में अभिनय कर रहा था!

लेकिन मछली के बारे में चिल्लाने के बाद आर्सेनी रोमानोविच तुरंत शरमा भी गया, क्योंकि सबकी नज़रें उसपर यह देखने के लिए टिक गयी थीं कि वह आगे क्या करेगा। उसे लगा कि अब कुछ न कुछ तो करना ही होगा। पास्तुख़ोव उसकी झूलती हुई भूरी लटों को ऐसे आश्चर्य से ताक रहा था, मानो नाई की दूकान की धूलभरी खिड़की में रखे पुतले के सिर के बाल एकाएक सजीव हो उठे हों। दोरोगोमीलोव बुत सा बन गया। पास्तुख़ोव ने पास आकर उसकी कोहनी को हौले से स्पर्श किया और थोड़े से नकिया स्वर में और चेहरे पर तकलीफ़ और मज़ा, दोनों का भाव लाते हुए बोला,

"पीटिये, प्रिय आर्सेनी रोमानोविच, कसकर पीटिये! वहां, चूल्हे के कोने पर! खूब जोर-जोर से! जब तक रस न छूटने लगे! फिर छीलिये और पीठ से, रीढ़ से गोश्त के लच्छे, पूंछ से सिर तक लंबे-लंबे लच्छे खींचिये!"

त्स्वेतुखिन ने अपनी आंखें कसकर बंद कर ली थीं।

"पतले-पतले, लंबे-लंबे लच्छे!" अपने वर्णन के रस से विभोर होता हुआ पास्तुखोव कहे जा रहा था। उसने भी आंखें भींच ली थीं।

"अहा, मैं देखता हूं कि आप हमारे असली हमवतन हैं! आपकी भावनाएं मैं अच्छी तरह समझ सकता हूं!" दोरोगोमीलोव फिर चिल्लाया और सभी पार्टी का जल्दी-जल्दी इंतज़ाम करने के लिए एक साथ उठ गये।

लेकिन येगोर पावलोविच ने संगीत-निर्देशक जैसे हल्के से इशारे से उन्हें रोक दिया। फिर नर्म चाल से आनोचका के पास जाकर उसका हाथ पकड़ा, जिसे वह नही देना चाहती थी, और उसे खींचकर कमरे के बीच ले आया।

"इससे पहले कि हम अपने पुनर्मिलन की खुशी में जाम उठायें, हमें एक तकनीकी समस्या हल करनी है, जिसे और नहीं टाला जा सकता," उसने गंभीरतापूर्वक कहा। "एक दुर्घटना ने इस युवा परिंदे के पर काट डाले हैं..."

"येगोर पावलोविच, नहीं! मैं प्रार्थना करती हूं, नहीं!" आनोचका ने विरोध किया। उसके चेहरे पर ललाई दौड़ गयी थी और वह अपना हाथ छुड़ाते हुए फिर वापस अपनी जगह पर जाने की अटपटी सी कोशिश कर रही थी। "मैं बिल्कुल ठीक हूं!"

"आप शरमायें नहीं," अनास्तासिया गेर्मानोव्ना ने उसका हौसला बढ़ाया और औरतों की सूझ का परिचय देते हुए पूछा,

"आपकी जूती की एड़ी टूट गयी है, है न?"

"बेचारी कील पर खड़ी है!" येगोर पावलोविच ने उत्तेजित स्वर में बताया। "इसमें कोई शक नहीं कि कसूर मेरा है। हम ट्राम की पटरी पार कर रहे थे कि आनोचका की जूती की एड़ी उसमें फंस गयी और... मैं उसकी मदद को भागा, वहीं कहीं पड़ा एक पत्थर उठाकर एड़ी ठोंकने-पीटने लगा। नतीजा, जानते हैं, क्या निकला? पैताबे के नीचे से एक इतनी लंबी कील निकल आयी! मेरे

तो रोंगटे खड़े हो गये। मगर मैं कुछ न कर सकता था। यहां हम कैसे पहुंचे, मैं नहीं जानता!"

"हां, तुम कैसे पहुंचे?" पास्तुख़ोव ने व्यंग्य से और 'तुम' पर ज़ोर देते हुए पूछा।

"हम कैसे पहुंचे?" त्स्वेतुखिन ने व्यंग्य को न संमझते हुए दोहराया। फिर यह भांपते हुए कि सवाल के पीछे कोई खास मतलब है, कहा, "तुम क्यों पूछ रहे हो?"

"यों ही। मैं सिर्फ़ जानना चाहता था कि कील आनोचका की जूती में थी या तुम्हारी?"

"बेशक आनोचका की जूती में। लेकिन मेरा दिल पत्थर तो नहीं है!"

"सचमुच नहीं है," पास्तुख़ोव ने हामी भरी।

"आप जूती उतार दें," अनास्तासिया गेर्मानोव्ना ने ऐसे स्नेह और सहानुभूति के साथ कहा, जैसे कि किसी बड़े गुप्त मसले पर सलाह दे रही हो।

येगोर पावलोविच ने आनोचका के सामने एक कुर्सी रख दी। वह बैठ गयी। येगोर पावलोविच ने झुककर घुटने के बल बैठते हुए जूती उतारने में मदद करनी चाही, किंतु आनोचका उछलकर लंगड़ाती हुई दौड़ती वापस अपनी पहलेवाली जगह पर चली गयी और झटके से जूती उतारकर फेंकते हुए नंगा पांव सारस की तरह उठाये एक ही पांव पर खड़ी हो गयी। उसका सारा संकोच जाता रहा था और वह सबको, येगोर पावलोविच द्वारा उसकी वजह से खड़े किये गये तमाशे को लुत्फ़ लेते हुए देखने लगी।

दोरोगोमीलोव अपनी लिखने की मेज़ की दराज़ों की चीज़ें उलटता-पलटता, फेंकता-पटकता, अरसे से जमी धूल के गुबार उड़ाता, छींकता-खांसता और अपने छोकड़े साथियों पर झींखता-झल्लाता, जो चीज़ों को कायदे से रखने की उसकी आदत की हमेशा परीक्षा लेते रहते थे, अपने घर की कल्पनातीत अव्यवस्था में आवश्यक औज़ार खोजने में जुट गया। आखिरकार एक छोटी संड़सी, निकेल की निहाई और चीनी के डले काटने का सरौता मिल ही गये। लेकिन हथौड़ी फिर भी नहीं मिली।

अलेक्सांद्र व्लादीमिरोविच होंठों पर व्यंग्यभरी मुस्कान लिये त्स्वेतु-

ख़्विन को देखे जा रहा था। येगोर पावलोविच आनोचका की जूती कभी सीने से लगाये, तो कभी उसमें अंदर झांककर घोर निराशा से कील को अंगुली से छूते हुए एक जगह नहीं टिक पा रहा था। पास्तुख़ोव के लिए अब मानो कुछ भी पहेली नहीं रह गया था और वह इस पुरमज़ाक दृश्य को देख-देखकर खुश हो रहा था। आखिरकार जब हथौड़ी मिल गयी और त्स्वेतुख़िन ने झपट्टे से उसे आर्सेनी रोमानोविच के हाथ से छीन लिया, पास्तुख़ोव बोला,

"क्षमा कीजिये, देवी जी, इन तीन सूरमाओं में से किसे आप अपना मोची बना देखना चाहेंगी?"

पहले की तरह ही फ़ैशन के मुताबिक त्वचा के रंग के मोज़ेवाले एक पांव का घुटना अपनी छोटी स्कर्ट के नीचे समेटे और दूसरे पांव पर खड़ी आनोचका ने अलेक्सांद्र व्लादीमिरोविच को एक पल ध्यान से देखा और फिर बोली,

"मेरा नाम आन्ना या आनोचका है। मैं किसी का भी आभार मानने को तैयार हूं, अगर जूती की एड़ी ठीक से ठुक जाये।"

पास्तुख़ोव को लगा कि यह वह लड़की कतई नहीं है, जो कमरे में घुसते ही एक नन्हे से जंगली जानवर की तरह कोने में दुबक गयी थी। उसकी आवाज़ में एकाएक दृढ़ नारी स्वर पाकर वह बहुत ही चकित रह गया।

"आनोचका, घबड़ाओ नहीं, मैं अभी सब ठीक किये देता हूं!" येगोर पावलोविच खिड़की के दासे पर जूती के ऊपर झुका और कुछ ठोंकता-पीटता कह रहा था। "अलेक्सांद्र, तुम, लगता है, भूल गये हो, पर मैं और आनोचका अभी-अभी याद कर रहे थे कि तुमने कभी उसकी तुलना यूनानी पुराण-कथाओं की परी साइरीन से की थी। तब वह नन्हीं सी बच्ची थी – बड़ी-बड़ी आंखें और लंबी-लंबी चुटियाएं। याद आया?"

"हां, कुछ-कुछ तो..." पास्तुख़ोव ने सुस्ती से जवाब दिया और कील से जूझते त्स्वेतुख़िन को फिर देखने लग गया।

इधर जूती ठीक की जा रही थी, उधर अनास्तासिया गेर्मानोव्ना मेज को सजाने में जुट गयी थीं और आर्सेनी रोमानोविच पास्तुख़ोव की सलाह का कड़ाई से पालन कर रहा था: गरमियों की रसोई से लोहे के

चूल्हे पर सूखी मछली पीटे-पटके जाने की आवाज़ आ रही थी। ऐसा लग रहा था कि जैसे यह त्स्वेतुखिन के कील ठोंकने की ठक-ठक की ही गूंज हो।

आखिरकार सब तैयारी खत्म हो गयी और लोग मेज़ के गिर्द जैसे-तैसे बैठने लगे, क्योंकि बाहर निकली हुई दराज़ें आड़े आ रही थीं। पुरुष एक ओर बैठे और आनोचका व अनास्तासिया गेर्मानोव्ना दूसरी ओर।

तीन पेग ढाले गये (महिलाओं ने हंसते हुए, मगर दृढ़तापूर्वक पीने से इन्कार कर दिया था) और जब येगोर पावलोविच ने अपना पेग उठाना चाहा और पहला जाम पेश करने के लिए मुंह खोला, पास्तुख़ोव ने उसे रोक दिया,

"एक मिनट। मुझे नहीं मालूम, तुम क्या लाये हो। सकता है कि यह तिलचटे मारने की दवा हो। आखिर महिला वर्ग ने उसे पीने से इन्कार ऐसे ही थोड़े किया है! लेकिन मैं आपको बता देना चाहता हूं कि अपने प्यारे मेहमानों का स्वागत मैं किस व्यंजन से कर रहा हूं। यह आप लोगों के सामने रखा चमचमाता व्यंजन नवाबी जेली कहलाता है।"

"हम तो इसे सूअर के टखनों की जेली कहते हैं," त्स्वेतुखिन ने उसकी बात काटते हुए कहा।

"तुम जो चाहो, कह सकते हो। लेकिन मैं तुम्हें बता रहा हूं कि इसे ढाबों में क्या कहा जाता है, जहां से इसकी इतनी शोहरत फैली है। असली जेली सूअर या बछड़े या ऐसे किसी और के टखनों से नहीं बनायी जाती। वह सिर्फ़ गाय के टखनों से, सिर्फ़ टखनों से बनती है। हां, चाहें, तो थोड़ा सा थूथन का टुकड़ा भी डाला जा सकता है। इन्हें पकाकर जो काढ़ा बने, वह इतना गाढ़ा होना चाहिए कि उसके ठंडा होने से पहले भी चम्मच उसमें डूब न सके। उसे चूंकि हल्की आंच पर और देर तक पकाया जाता है, इसलिए खुला चूल्हा उसके लिए बिल्कुल अनुपयुक्त है। उसे रूसी भट्ठी में ही पकाया जाना चाहिए।"

"हे प्रभु!" येगोर पावलोविच से और सब्र नहीं हो पा रहा था।

"जब जेली ठंडी हो जाये, उसे रबड़ जैसा लचीला और परीकथाओं के अलातिर, यानी कहरुबे जैसा पारदर्शी होना चाहिए और ऊपर जमी

चर्बी से भुने हुए खुर की हल्की महक आनी चाहिए। पुराने रूस के बो-यर–नवाब–ऐसी ही जेली खाया करते थे, इसलिए इसका नाम नवाबी जेली पड़ा। गाय के टखने बाज़ार से खरीदकर मैं खुद लाया था। हमारे साथ रहनेवाली मैडम ओल्गा आदमोव्ना ने शैतान को कोसते हुए उन्हें मेरी निजी देखरेख में भूना। फिर आस्या ने एक पड़ोसी के यहां, जो हमपर आदरणीय आर्सेनी रोमानोविच का बरदहस्त होने के कारण मना न कर सका, भट्ठी सुलगायी और बड़ी संड़सी से लोहे का भारी बरतन उठाकर उसमें रखा। फिर जब काढ़ा तैयार हो गया, तो उस सांचों में डालकर दूसरे पड़ोसी के तहखाने में ठंडा करने के लिए रखा गया। इस तरह आखिरकार वह चमत्कार तैयार हुआ, जो इस समय आप लोगों के सामने तश्तरियों में पेश है। तो यह सब देखते हुए मैं पहला जाम आस्या की सेहत के लिए उठाना चाहूंगा।"

वह पेग उठाकर मुंह के पास ले गया, लेकिन फिर एकाएक होंठ बिचका दिये।

"क्या है यह?" उसने मौत से भयभीत आदमी जैसी निगाहों से सबको देखा।

"आ-हा!" त्स्वेतुख़िन ने खुश होते हुए कहा। "अब तुम ठहरो! तुम सोचते हो कि मैं तुम्हारे सूअर के टखनों के सामने हार मान जाऊंगा! यह (उसने बोतल को अंगुली के नाखून से बजाया) जनता की, ठेठ जनता की चीज़ है! बेशक एक इससे बढ़िया चीज़ भी होती है, लेकिन उसे केवल हवाई जहाज़ इस्तेमाल करते है। आजकल चूंकि पेट्रोल कम है और हमारे 'न्यूपोर्त' शुद्ध अल्कोहल से उड़ रहे हैं, इसलिए उनके चालक अनचढ़ी ऊंचाइयों तक भी पहुंच सकते हैं। लेकिन हम सिविलियन लोग तो इससे ऊंचा नहीं उड़ सकते। आप जो चीज़ अपने सामने देख रहे हैं, वह 'जंगल की दास्तान' है। इसका जन्म जंगल के बहुत अंदर एक खाई के तले में हुआ और रूसी भट्ठी जितनी बड़ी एक मिट्टी की भट्ठी में इसे खींचा गया। ऐसी भट्ठी में जलनेवाली हर आग किसी अज्ञात देवता के सम्मान में जलायी हुई आग जैसी होती है। पेड़ों की घनी शाखों और पत्तियों के बीच हल्का-हल्का धुआं उठता रहता है और फिर जब मार्च में बर्फ़ गलने लगती है, भबके से बाल्टी में गरम तरल अपनी टप-टप की आवाज से जंगल की दास्तान सुनाते हुए बूंद-बूंद करके

टपकने लगता है। इस दास्तान की पहली बोतल 'पेरवाच', यानी शुद्ध ठर्रा, कहलाती है। अगर शराब अनाज की न होकर तरबूज़ की हो, तो उसे 'नरद्याक' कहा जाता है। और अगर..."

"बहुत सुंदर," पास्तुख़ोव ने कहा, "लेकिन बहुत उबाऊ भी।"

येगोर पावलोविच ने झुंझलाते हुए आनोचका पर एक नज़र डाली। वह उदास दिख रही थी और बिना किसी रुचि के दोनों चटोरों की वाग्प्रतियोगिता सुन रही थी।

"एक मिनट ठहरो," त्स्वेतुख़िन ने हार न मानते हुए कहा।

"आगे कोशिश बेकार है," पास्तुख़ोव ने एतराज़ किया। "तुम तारीफ़ों के कितने भी पुल क्यों न बांध लो, मुझे सांप के पेट से निचोड़-कर निकाला हुआ यह पीला ज़हर पीने को राज़ी नहीं कर सकते। मुझे विश्वास है कि डाक्टर भी इसकी मनाही करेंगे ।"

"डाक्टर तो बेवकूफ़ हैं!" येगोर पावलोविच ने और भी झल्लाकर कहा। "अगर डाक्टर हज़रत नूह के ज़माने से सिद्ध हो चुके इस सत्य को मान लेते कि शराब सेहत के लिए फ़ायदेमंद है, तो उन्हें भीड़ के बीच मालाएं पहनायी जातीं, बच्चे क्रिसमस के पेड़ की तरह उनके गिर्द नाचते और यूनिवर्सिटीवाली पैंट के घिसने से पहले ही उन्हें पेंशन मिलने लग जाती। लेकिन मैं डंके की चोट पर कहता हूं कि उन्हें देर-सबेर यह सत्य मानना ही होगा! देखना, तब वे कैसे अपने मरीज़ों को थोड़ी-बहुत शराब पीने की भी सलाह दिया करेंगे! और कैसे रातोंरात माला-माल व मशहूर बन जायेंगे! और अपनी दवाई की पेटियां हमेशा-हमेशा के लिए बंद कर देंगे!"

"आमीन!" पास्तुख़ोव बोला।

उसने येगोर पावलोविच के कंधे पर झुकते हुए आस्या को आंख मारी और पेग उठाकर ढिठाई से कहा,

"सुनहरी जूती के लिए!"

फिर शैतान जैसी चमकती आंखों से आनोचका को देखते हुए अंगु-लियों से नाक दबाकर पेग खाली कर दिया और मुंह बनाते हुए बड़बड़ाया,

"पक्के पादरी हो तुम, येगोर।"

"लगता है, तुम्हें यकीन दिलाने के लिए बोलने की कला दिखाने की ज़रूरत नहीं है," अनास्तासिया गेर्मानोव्ना ने प्यार से कहा।

"आस्या, तुम तो मेरे सब भेद जान गयी हो," पास्तुख़ोव ने उत्तर दिया और पेग फिर भर दिये।

पहला पेग पीने तक इस अनियोजित दावत को शुरू होने में जितनी देर लगी थी, उतनी देर अब उसे अपनी पूरी रफ़्तार पर पहुंचने में न लगी।

"येगोर," जब बोतल आधी खाली हो गयी, अलेक्सांद्र व्लादीमिरोविच ने पूछा, "तुम्हें यह आला चेरी ब्रैंडी कहां से मिलती है?"

"इसे पाना इतना आसान नहीं है। लेकिन मेरे दो जिगरी दोस्त हैं, जो ज़रूरत में हमेशा काम आते हैं। तुम्हें मेफ़ोदी सीलिच याद है, कला की देवियों का भक्त और मेरा सहपाठी? नहीं? ओह, तुम पीटर्सबर्ग के लोग! कुछ याद नहीं रखते!"

"छोड़ो भी। पहले तो मुझे सब कुछ याद है। दूसरे, तुम यह क्या पीटर्सबर्गवालों से बड़े बनने की कोशिश कर रहे हो? देखो तो, अपने को धरती का खूंटा मान बैठे हैं!"

"एक संशोधन: रूसी धरती का खूंटा। लेकिन तुम तो पीटर्सबर्गी रूसियों में से हो, जिनके बारे में दोस्तोयेव्स्की ने कहा था कि वे नाश्ता नहीं, 'फ़ुहश्तुक' करते हैं।"

"तुम इसे 'फ़ुहश्तुक' कहते हो?" अलेक्सांद्र व्लादीमिरोविच ने बुरा मानते हुए कहा। "भुने खुरों की जेली और तुम्हारा मिट्टी के तेल मे भीगे कॉर्क को जलाकर बनाया हुआ सोडावाटर–तुम्हे ही मुबारक हो ऐसा 'फ़ुहश्तुक'!"

"शुक्रिया। मुझे कोई आपत्ति नहीं। लेकिन तुम्हारे चिढ़ने की वजह 'फ़ुहश्तुक' नहीं, बल्कि मेफ़ोदी को भूल जाना है। शायद तुम आनोच्का के पिता तीख़ोन प्लातोनोविच पाराबुकिन को भी भूल गये हो? अगर ऐसा है, तो बड़े शर्म की बात है! उसकी वजह से ही तो तुम्हें क्रांति के लिए 'शहीद' होना पड़ा था। क्यो, नही?"

पास्तुख़ोव खड़ा हुआ, कुर्सी खिसकाकर भारी कदमों से चलता हुआ खिड़की के पास गया और फिर वापस लौट आया।

"सुनो, येगोर, मुझे तुम्हारा कहने का ढंग पसंद नहीं। तुम कहना क्या चाहते हो? यह कि मैंने ख़ुद वह बेवकूफ़ीभरा लेख छपवाया है?"

"पागल हो गये हो क्या?" त्स्वेतुख़िन झटके से खड़ा हो गया।

"नहीं, ठहरो। मैं पूरी गंभीरता से कह रहा हूं। आज ऐसे लोगों की कमी नहीं, जिनका दावा है कि उन्होंने भी किसी वक्त क्रांति के लिए काम किया था। हो सकता है कि यह ओछापन हो, पर मैं इसे स्वाभाविक मानता हूं। जैसा कि तुमने कहा था, ठीक मौके पर। लेकिन तुम मुझसे क्या चाहते हो? कि दौड़ा-दौड़ा जाऊं और कहूं कि क्रांति के लिए मैंने कुछ नहीं किया था? तुम जानते हो, इससे मेरी हंसी ही उड़ेगी। तुम खुद सोचो: किसी बेवकूफ़ मेर्त्सालोव ने लिख मारा कि मैंने ज़ारशाही के खिलाफ़ प्रचार करने में हिस्सा लिया था। मैं संपादक के पास जाता हूं और कहता हूं... क्या? क्या कहता हूं? कि मुझे बदनाम किया गया है? कि लेख में झूठ कहा गया है? मुझे जवाब मिलेगा: संपादक को अति खेद है कि उसके माननीय संवाददाता का समाचार गलत निकला, पर अब किया क्या जाये? प्रतिवाद छापा जाये? लेकिन किन शब्दों में? क्या इन शब्दों में कि अलेक्सांद्र पास्तुख़ोव ने ज़ारशाही के खिलाफ़ कभी कोई काम नहीं किया था? इसका क्या मतलब होगा? यही न कि वह, पास्तुख़ोव, क्रांति के विरुद्ध था? नहीं, आपका बहुत-बहुत शुक्रिया! यह समयानुकूल शायद ही हो। फिर मैं मेर्त्सालोव पर बदनामी का आरोप क्यों लगाऊं? वह मेरा भला करना चाहता था, मेरे लिए आगे का रास्ता खोलना चाहता था। उसने मेरे लिए वह लिखा, जिसके लिए आज हज़ारों लोग अपनी आत्मा तक बेचने के लिए तैयार बैठे हैं, ताकि परिस्थितियों की कठिन मार से अपने को किसी तरह बचा सकें। वह इस नये वातावरण में अपने लिए जगह बनाने में मेरी मदद करना चाहता था। तो मैं उसे सज़ा क्यों दूं? आखिरकार यह भी तो हो सकता है कि इस भलेमानस को अपनी लिखी हुई बातों का सचमुच विश्वास हो। इससे तो इंकार नहीं किया जा सकता कि उसने प्रोसीक्यूटर के सामने मेरे पक्ष में सफ़ाई दी थी। पुलिस मेरे पीछे सचमुच पड़ी हुई थी। उसने मुझसे शहर न छोड़ने का मुचलका सचमुच लिखवाया था। और अगर यह सब सच है, तो मेर्त्सालोव को ज़्यादा से ज़्यादा इसी का दोषी ठहराया जा सकता है कि उसने नमक-मिर्च लगाकर लिखा। इसके लिए कोई किसी पर मुकदमा नहीं चला सकता। बल्कि मौका पड़े, तो लोग इस नमक-मिर्च के लिए रिश्वत तक देने को तैयार रहते हैं। इसलिए बेहतर तो यह है कि मैं संपादक को

प्रतिवाद भेजने के बजाय मेत्सॉलोव को आभार-पत्र लिखूं कि आपका विनीत सेवक आपका बहुत आभारी है, वगैरह-वगैरह ... थू!"

अलेक्सांद्र व्लादीमिरोविच ने सचमुच थूका और फिर खिड़की के पास चला गया, जहां उसने चौखट से सूखी हुई पुटीन का एक टुकड़ा तोड़ा और फ़र्श पर फेंक दिया।

"यानी कि यह अंडरग्राउंड संगठन, परचे, वगैरह, सब गप्प है?" अनास्तासिया गेर्मानोव्ना ने निराश सी होते हुए पूछा।

"कोरा मज़ाक है!" उसने उपेक्षा से हाथ हिला दिया।

"तब तुम भी इसे मज़ाक की तरह लो," अनास्तासिया गेर्मा-नोव्ना ने चमकती और भोली निगाहों से सबको देखते हुए कहा।

"लेकिन तुम चार ही जानते हो कि यह मज़ाक है!" पास्तुख़ोव खिड़की से एकाएक मुड़ते हुए चिल्लाया। "अखबार में तो यह नही छपा कि यह मज़ाक है! जो भी पढ़ेगा, सच मान बैठेगा!"

"मान लें," अनास्तासिया गेर्मानोव्ना ने और भी भोलेपन का प्रदर्शन करते और बिल्कुल धीमी आवाज़ से बोलते हुए उसे सांत्वना देनी चाही। "इससे तुम्हें क्या?"

"तुम नहीं समझती। अगर बाद में मालूम हो गया कि यह गप्प है, तो सब सोचेंगे कि यह मेरी ही करतूत थी, कि मैं चापलूस हूं, कि मैं उनकी नज़र में ऊंचा उठना चाहता हूं, कि मैं झूठा हूं! देखो तो, मेरे दोस्त मुझे किन निगाहों से देख रहे हैं। आर्सेनी रोमानोविच को देखो! येगोर को देखो, जिसने मुझपर न जाने क्या-क्या शक नहीं किया है!"

"कोई शक नहीं किया है। अगर तुम सोचते हो कि मैं तुम्हारे बारे में बुरी राय रखता हूं, तो लगता है, तुम मुझे भूल गये हो," सहसा त्स्वेतुख़िन ने कटुतापूर्वक कहा।

आवाज के इस अप्रत्याशित परिवर्तन से पास्तुख़ोव मानो होश में आ गया। वह अपनी जगह पर बैठ गया और सूखी मछली के गोश्त की लच्छी मुंह में डालकर उसे धीरे-धीरे जीभ पर यों घुमाने लगा, जैसे तृप्त घोड़ा घास का तिनका चबाया करता है। कुछ क्षण चुप रहकर वह खिसियाये हुए सा हंस पड़ा और बोला,

"आप इतने चुप क्यों हैं, आर्सेनी रोमानोविच?"

दोरोगोमीलोव ने सिर को झटका दिया और दाढ़ी सहलायी, जैसे कि ज़ोरदार भाषण करने जा रहा हो। लेकिन अटक-अटककर सिर्फ़ इतना कहा,

"असल में... कठिनाई, जानते हैं... यह है कि..."

वह थोड़ा सा खांसा और फिर उसने शायद चुप हो जाना ही अधिक उचित समझा।

"कठिनाई मुझे समझने में है?" पास्तुख़ोव ने पूछा।

"नहीं, इस लेख के संबंध में... इस दृष्टि से कि आपको अच्छा नहीं लग रहा है कि... लोगों में भ्रम उत्पन्न हो... यानी कि आपकी विशेष सेवाओं के बारे में। बेशक... सेवाएं तो थीं, लेकिन..."

अपने अप्रिय विचारों से बचने की कोशिश में वह सकपका गया। अनास्तासिया गेर्मानोव्ना अपनी कठिनाइयां सुलझानेवाली मुस्कान के साथ उसकी मदद के लिए आयी:

"क्या यह ज़रूरी है कि हर किसी की विशेष सेवाएं हों? हम इंजीनियर से तो मांग नहीं करते कि वह अपनी इंजीनियरी के अलावा भी कोई और सेवाएं करे। हो सकता है कि इंजीनियरी में भी उसकी कोई सेवाएं न हों। लेकिन इतना काफ़ी है कि वह इंजीनियर है।"

"जैसा कि मैं समझा हूं, अलेक्सांद्र व्लादीमिरोविच को असली चिंता इस बात की है कि इन सेवाओं का श्रेय उन्हें गलत दिया गया है," दोरोगोमीलोव ने लगभग कड़ाई के साथ कहा और स्पष्टतः ज़र्द पड़ते हुए सीधे पास्तुख़ोव के चेहरे पर देखा। "मुझे तो यह भी लगता है कि आपको अख़बार में छपा झूठ इतना नापसंद नहीं, जितना कि आपको क्रांति का हिमायती बताया जाना—यह कि आपका नाम क्रांति के साथ जोड़ा गया है।"

अलेक्सांद्र व्लादीमिरोविच देर तक आंखें झपकता रहा, जैसे कि अपनी दृष्टि दोरोगोमीलोव पर केंद्रित करना चाहता हो, लेकिन फिर मुड़कर अपनी पत्नी को सवालिया निगाहों से देखा। बाद में धीरे से बोला,

"देखा, आस्या, मैं सही था: मैं सबकी घृणा का पात्र बन सकता हूं।"

आनोचका ने, जो अब तक निश्चल बैठी हुई थी, झुककर अपनी

कोहनियां घुटनों पर टिका दी और एक हाथ से चेहरा छिपा लिया।

"शायद मुझ जैसे को देखना भी कोई गवारा नहीं करेगा," पान्तुख़ोव ने बुदबुदाते होंठों से आगे कहा। "यही देखो, जवान पीढ़ी मुझे अभी से सहन नहीं कर पा रही है।"

"नहीं, नही!" आनोचका ने प्रतिवाद किया और तनकर बैठ गयी। "आप मुझपर ध्यान न दें। मैं अपने ही विचारों में..."

"आनोचका के घर में..." त्स्वेतुख़िन कुछ कहना चाहता था, लेकिन आनोचका ने उसे बीच ही में रोक दिया।

"मुझे खेद है कि येगोर पावलोविच ने ऐसी अजीब बातचीत छेड़ दी। जैसे कि वह किसी बात में खास तौर से सही हों। लेकिन मुझे लगता है कि इस गलती के लिए अलेक्सांद्र व्लादीमिरोविच कतई ज़िम्मेदार नहीं हैं। बेशक अगर यह गलती है। क्यों, गलती ही न, अलेक्सांद्र व्लादीमिरोविच?" उसने चुनौतीभरी गंभीरता से पूछा।

वह एक क्षण तक चुप्पी साधे उसे देखता रहा, मानो विश्वास न हो पा रहा हो कि यह बित्तेभर की लड़की भी ऐसा साहसिक प्रश्न पूछ सकती है।

"हां," उसने विश्वासोत्पादक कठोरता के साथ कहा।

और फिर तुरंत अपनी सारी गंभीरता भूलकर येगोर पावलोविच को कोहनी से टहोका दिया और जोर से फुसफुसाते हुए बोला, ताकि सब सुन लें:

"अहा! सुनहरी जूती ठीक हो गयी!"

"कृपया यह न सोचें कि मैं अलेक्सांद्र व्लादीमिरोविच को दोष दे रहा हूं," आर्सेनी रोमानोविच ने फिर घबड़ाते हुए कहा।

"मैं भी तुम्हें ठेस नहीं पहुंचाना चाहता था, अलेक्सांद्र," त्स्वेतु-ख़िन भी बोला।

"भगवान का शुक्र है! आनोचका, तुमने सबको पिघला दिया," अनास्तासिया गेर्मानोव्ना ने संतोष की सांस ली। "दोस्तो, आप अपने इस आदिम पेय को भूल गये क्या, जिसकी तारीफ़ के अब तक इतने पुल बांधे जा रहे थे?"

उसने अपने मुलायम हाथ की एक हल्की सी नाजुक और मोहक अदा के साथ बोतल उठा ली।

"सचमुच," पास्तुख़ोव ने सूखी मछली के गोश्त की लच्छी मुंह में डालते हुए कहा, "बुरा मानने में कोई तुक भी नहीं है। ऐसी वारदात तुम्हारे साथ भी घट सकती थी, येगोर। बिन बात हुए बदनाम! और तब तुम्हें भी सिद्ध करते फिरना पड़ता कि तुम क्रांतिकारी नहीं थे।"

"मैं कभी न करता!" त्स्वेतुख़िन खुशी से चिल्लाया।

"क्यों? तुम बोल्शेविक हो क्या?" पास्तुख़ोव ने जैसे यों ही पूछा।

"नहीं। लेकिन मैं बोल्शेविकी करने को तैयार हूं।"

"अपने थियेटर में?"

"थियेटर तो अभी मेरे पास नहीं है। लेकिन होगा। मैं तुमसे अपनी योजनाओं के बारे में बातें करना चाहता हूं। हां, हां, तुमसे। और चाहता हूं कि तुम भी भाग लो।"

"किसमें?"

"मैंने एक मंडली बनायी है। चाहो, तो उसे स्टूडियो कह लो। दो-तीन पेशेवर अभिनेता और बाकी ज़्यादातर नौजवान लोग। कुछ स्कूली नाटकों में खेल चुके हैं, पर अधिकांश ने मंच पर कभी पैर भी नहीं रखा है। काश, तुम्हें मालूम होता कि वे कितने होनहार हैं! कितनी लगन रखते हैं! और सबसे बड़ी चीज़ तो है उनका विश्वास! हम प्रायः भविष्य के थियेटर के बारे में बातें किया करते हैं। मेरा मतलब क्रांतिकारी थियेटर और बेशक सबसे पहले अपने थियेटर से है। काश, तुम हमें सुन पाते!"

"मैं सुन रहा हूं," पास्तुख़ोव ने सरसरी तौर पर कहा।

"मुझे नहीं। मेरा मतलब हमारी मंडली के नौजवानों से है।"

"बच्चे बच्चे ही रहेंगे। मगर तुम तो बच्चे नहीं हो। मेरी दिलचस्पी यह जानने में है कि खुद तुम क्या चाहते हो?"

"जानते हो, मोटे तौर पर यह सब अभी खोज है, स्वप्न है। लेकिन हम इस स्वप्न को साकार बनाने की दिशा में पहला कदम उठाने को तैयार हैं। हम सोचते हैं कि यह, सबसे पहले, ऐसा थियेटर होगा, जो किसी भी तरह की परिस्थितियों में नाटक पेश कर सकता है। हमें अपना सारा साज़-सामान ऐसा बनाना होगा कि घोड़ों के बिना भी एक जगह से दूसरी जगह ले जा सकें। और अभिनेताओं के लिए जरूरी होगा कि वे हर कहीं अपने को मंच पर जैसा अनुभव करें।

"हर कहीं, यानी स्वर्ग में भी," पास्तुखोव ने सुझाया।

"हां, यह स्वर्ग ही होगा – अभिनेता और दर्शक का स्वर्ग। दर्शक हमें वहां पायेगा, जहां पाने की उसने कभी कल्पना भी नहीं की थी। अपने काम की जगह पर। घर में। गांव में। खेत मे। बाज़ार में। शहर के चौक में। अगर लड़ाई चल रही है, तो लड़ाई के मैंदान में। अगर शांति का ज़माना है, तो मनोरंजन स्थलों में। संक्षेप में..."

"संक्षेप में" कहकर वह एकाएक चुप हो गया। अंगुलियां फैलाकर उसने अपनी घनी लटों में फेरी और फिर मुड़ी हुई हथेली को पीछे गरदन पर ज्यों का त्यों ही टिके रहने दिया। बाल इतने खिचड़ी हो चुके थे कि पास्तुख़ोव को लगा कि उन्होंने सिर को एक बैंजनी आभा प्रदान कर दी है।

जब से येगोर पावलोविच थियेटर के बारे में बातें करने लगा था, उसके बोलने का अंदाज़ अपना कंटीला खुरदरापन, जो स्पष्टतः खुद उसे भी अच्छा नहीं लग रहा था, खो बैठा था। उसकी हरकतें कहीं महज बन गयी थीं, शरीर तानवहीन हो गया था और वह पहले से बड़ा लगने लगा था। आनोचका एकटक और साथ ही कठोर व आग्रहपूर्ण दृष्टि मे उसे देखे जा रही थी, जैसे कि कह रही हो: बोलो, बोलो, और खुलकर, बेहिचक बोलो! दोरोगोमीलोव यों देख रहा था, जैसे कि थियेटर में किसी बहुत ही ऊंचे आदमी के पीछे बैठा हो: एक ओर झुका हुआ और सिर पीछे को कुछ इस तरह किये हुए कि दाढ़ी कटार की भांति आगे को निकली हुई थी। अनास्तासिया गेर्मानोव्ना अपना सुंदर मुंह थोड़ा सा खोले बैठी थीं। सभी त्स्वेतुख़िन को तन्मयतापूर्वक सुन रहे थे। उसकी आवाज़, उसके भाषण ने पास्तुख़ोव को मानो पृष्ठ-भूमि में डाल दिया था। चुप्पी काफ़ी लंबी खिंची।

"संक्षेप में," त्स्वेतुख़िन ने अपनी गंभीर, आकर्षक आवाज़ में दोहराया, "हमारी कला दर्शकों के जीवन में पैठेगी और दर्शक हमारी कला में घुलमिल जायेंगे। उसका हिस्सा बनकर बाद में वे खुद भी उसका सृजन करने लगेंगे।"

पास्तुख़ोव मन ही मन हंस पड़ा।

"बेहतर है, तुम अपने को भविष्य के लिए बचाकर रखो। अभी

तो तुम्हारे थियेटर के टिकट भी कोई नहीं खरीद रहा है। खैर, यह तो बताओ कि तुम क्या खेलने जा रहे हो?"

"हमने शिलर से शुरू किया है। तुम खुद देख लोगे कि यह क्या है!"

"'छल और प्रेम' शायद?"

"हां।"

पास्तुख़ोव ने तेज़ी से एक निगाह आनोचका पर डाली,

"लुईज़ा बेशक आप होंगी, है न?"

वह शरमा गयी। उसने बच्चों जैसे आश्चर्य के साथ पूछा,

"आपने कैसे अनुमान लगाया?"

"कैसे?" पास्तुख़ोव ने मुस्कराते और सिर हिलाते हुए जवाब दिया। "यह मुश्किल था। सचमुच बहुत ही मुश्किल।"

फिर दांतों से अंगूठे का सिरा पकड़ते हुए उसने कनखियों से त्स्वेतुख़िन की ओर देखा।

"लेकिन इससे भी मुश्किल यह मालूम करना है कि फ़र्डिनांड कौन बनेगा।"

"तुम सही हो," येगोर पावलोविच ने चुनौतीभरे स्वर में कहा। "फ़र्डिनांड का रोल मैं अदा कर रहा हूं।"

"तुम चालीसवां पार कर चुके हो, है न? तो मेरे दोस्त, समय आ गया है कि तुम बूढ़ों के रोल अदा करो।"

"आप क्या बात करते हैं! येगोर पावलोविच फ़र्डिनांड के रोल में बहुत जंचते हैं!" आनोचका बुरा मानते हुए चिल्लायी और पहले से भी ज़्यादा शरमा गयी।

उसकी बातों की परवाह न करते हुए अलेक्सांद्र व्लादीमिरोविच ने निराश स्वर में कहा,

"स्पष्ट है कि तुम मंच के बिना ही काम चलाओगे। मैं ठीक कह रहा हूं न?"

"हां, अगर ज़रूरत पड़ी। लेकिन महत्त्वपूर्ण यह नहीं है। फिलहाल हमारे थियेटर में परदा भी होगा और मंचसज्जा भी।"

"जानते हो, दोस्त मेरे, मैं लिखने को पेड़ की छाल, पत्थर या चूल्हे पर भी लिख सकता हूं। पर यह किताब तो न होगी। तुम्हारा

थियेटर कितना भी क्रांतिकारी क्यों न हो, मंच के विना काम शायद ही चल सकेगा।"

"प्राचीन यूनान में क्या होता था? चमत्कार नाटकों में क्या होता था?"

पास्तुख़ोव ने इसे भी अनसुना कर दिया। उसके बोलने का अंदाज़ और भारी हो गया था और यह नहीं मालूम किया जा सकता था कि वह कोई महत्त्वपूर्ण बात कहने के लिए अपने विचारों को एकाग्र कर रहा है या ऊब गया है। एकाएक वह लापरवाही से बुदबुदाया,

"इसमें नया कुछ नहीं है। सचल थियेटर की बात पीटर्सबर्ग में भी उठी थी।"

"मैं थियेटर को नाम से ही सचल नहीं बनाना चाहता।"

"तो क्या वह घुमंतू थियेटर होगा?"

"हां, अगर उसे जनता तक पहुंचाने के लिए इसकी ज़रूरत पड़ी। जैसा कि शेक्सपियर के जमाने में होता था।"

"शेक्सपियर शिलर के नाटक नहीं खेलता था। बहुत अस्पष्ट है, मेरे मित्र।"

"हर नया विचार आरंभ में अस्पष्ट होता है। लेकिन जब हम उसके मुताबिक काम करने लगते हैं, वह अधिकाधिक स्पष्ट होता जाता है। फिर एक दिन हम पाते हैं कि हर चीज़ बिल्कुल कांच की तरह साफ़ है।"

"हुंह, कांच की तरह साफ़! खैर, तब, बेशक... ओह स्वप्न-द्रष्टा, स्वप्नद्रष्टा! लेकिन पहले तुम अधिक व्यावहारिक हुआ करते थे।"

"व्यावहारिक नहीं, संयत। अब मुझे पंख मिल गये हैं, जिन्हें मैं जिंदगीभर खोजता रहा था।"

"मुझे तुम्हारे कागजी उड़नखटोले याद हैं। अरे उड़ाके, अगर तुम अपनी गर्दन तोड़ बैठो, तो तुम्हारे अलावा और किसी को कुछ न होगा। लेकिन जब तुम्हें मालूम भी नहीं कि तुम्हारा उड़नखटोला कितना भार उठा सकता है, इन मासूम सी जानों को अपने साथ क्यों बिठा रहे हो?"

पास्तुख़ोव ने आनोचका की ओर सिर से इशारा किया। वह तनाव

की हालत में, किंतु अपनी उत्तेजना पर काबू पाने की कोशिश करती हुई पलकें झुकाये सुन रही थी और कभी मेजपोश पर अंगुलियां फैला लेती थी, तो कभी अल्योशा के हड्डी के हैंडलवाले कांटे से खेलने लग जाती थी, जो सबसे छोटी होने के कारण उसके सामने रखा गया था।

"नहीं, कला के क्षेत्र में वहकाने से वड़ा अपराध और कोई नहीं है," पास्तुखोव ने नाराज़गी से कहा। "तुम अपने साथ जवान लड़के-लड़कियों को भी खींच रहे हो, लेकिन खुद नहीं जानते हो कि यह राह कहां ले जायेगी। तुम उसे भव्य और आकर्षक वता रहे हो, लेकिन तुम्हें मालूम है कि कला का भविष्य कैसा होगा? तुम्हारे और दूसरों के अजीबोगरीव प्रयोगों से वह क्या वन जायेगी? हो सकता है कि तुम जिन्हें अपना अनुयायी वना रहे हो, उनमें से हर किसी के लिए वह अंततः घोर दुख का कारण वन जाये। मेरे वस की वात होती, तो मैं नावालिगों को वहकाने से संवंधित कानून उनपर भी लागू कर देता, जो कला के क्षेत्र में युवकों को वहकाते हैं, जो..."

"ऐसे तो भविष्य कभी नहीं वनाया जा सकता!" येगोर पावलोविच ने उसे बीच ही में टोक दिया। "ऐसे विचार के रहते किसी उत्कृष्टतर चीज की आकांक्षा भी नहीं की जा सकती। समझे?"

"हां, नही की जा सकती!" आर्सेनी रोमानोविच ने भी सहसा पुष्टि की और ताकत लगाकर आगे झुका, जैसे कि उठने जा रहा हो, लेकिन फिर जहां का तहां बैठ गया और चुप हो गया।

आनोचका ने नज़र उठाकर पास्तुखोव को देखा।

"वहकाने का सवाल कहां से उठता है?" उसने पूछा। "बेशक मुझे नहीं मालूम कि कला का भविष्य कैसा होगा, लेकिन इस समय वह हमारे जीवन का अंग है। मैं जीवनधारी हूं और वह काम चुनने को स्वतंत्र हूं, जिसे अपना जीवन अर्पित करना चाहूंगी। अगर मुझमें शक्ति होगी, प्रतिभा होगी, मेरा चुनाव गलत न निकलेगा। वैसे गलती किससे और कहां नहीं होती! पिछले साल मेरी एक सहेली एक दंतचिकित्सा विद्यालय में भरती हुई। वे उसे यह दिखाने शरीर-रचना विभाग में ले गये कि लाशों के दांत कैसे उखाड़े जाते हैं। वह वेहोश हो गयी और तवसे विद्यालय जाना भी छोड़ दिया। इसके वाद वह संगीत सीखने लगी। अव अगर मैं मंच पर वेहोश हो गयी, तो

कौन जाने मैं थियेटर छोड़कर शरीर-रचना विभाग मे काम करने चली जाऊं। मैं अपनी पसंद के मुताबिक रहना चाहती हूं और आपको विश्वास दिलाती हूं कि कोई भी मुझे बहका नही रहा है।"

"बड़ी अच्छी बात है," अलेक्सांद्र व्लादीमिरोविच ने सहसा मुलायम पड़ते हुए कहा। "लेकिन दुर्भाग्यवश, चीज़ें इतनी सीधी-सरल आकारपरक तर्कशास्त्र में ही होती हैं। कभी पढ़ा है यह विषय? कला जीवन का अंग है, मैं जीवनधारी हूं, मैं स्वतंत्र हूं, इसलिए ... वगैरह-वगैरह। किंतु और कहीं लोग इतनी आसानी से घोर दुखी नही बनते, जैसे कि कला के क्षेत्र में। इसके लिए ज़्यादा कुछ नही चाहिए। अगर आप महत्त्वाकांक्षी है और महत्त्वाकांक्षा पूरी नही हुई, आपको दुखी बनते देर न लगेगी। यहां बेहोश होने की कोई ज़रूरत नही है।"

"लेकिन मेरी महत्त्वाकांक्षा पूरी होकर रहेगी," आनोचका ने गहन विश्वास के साथ जवाब दिया और पहले बच्चों की तरह सिर पीछे झटका और फिर मानो याद करके कि वह कहां है, शरमाते हुए सिर झुका लिया और अपने बालों को ठीक करने लगी। हर कोई हंस पड़ा और वह भी घबड़ाकर मुस्करा दी।

"बेशक पूरी होगी," येगोर पावलोविच ने खुशी से हां में हां मिलाते हुए कहा। "और तुम, अलेक्सांद्र, नाहक आनोचका को डराओ नही।"

"मैं देख रहा हूं कि वह डरनेवालो में से नहीं है। लेकिन मैं थियेटर के जीवन को अच्छी तरह जानता हूं और इसलिए सच को छिपा नही सकता। मिसाल के लिए ईर्ष्या को ही लें, जो आदमी को तपेदिक की तरह भीतर ही भीतर से खोखला बनाती रहती है ..."

उसने अपनी बात पूरी नही की और त्स्वेतुखिन के और करीब सट गया।

"जानते हो, बुरे और अच्छे अभिनेता में क्या अंतर है?"

"क्या?"

"बुरे को सफलता से ईर्ष्या होती है और अच्छे को प्रतिभा से।"

"कितना सही कहा है!" त्स्वेतुखिन चिल्लाया। "यह है मापदंड! मापदंड, जिससे प्रतिभा को हमेशा पहचाना, चुना जा सकता है! ठीक है न, आनोचका? तुम्हारा कहने का ढंग कितना सुंदर है, मेरे लाजवाब दोस्त!"

येगोर पावलोविच ने सहज प्रेरणावश पास्तुख़ोव का सिर अपने हाथों लेकर होंठों पर एक ज़ोरदार चुंबन जड़ दिया।

"मुझे विश्वास है कि तुम और मैं ज़रूर एक हो जायेंगे! हम दोनों ही नवान्वेषी हैं, इसीलिए अतिरंजना कर बैठते हैं। सत्य अतिरंजनाओं के बीच ही कहीं है। अतिरंजना शायद मैं भी करता हूं। तो यह रहा मेरा हाथ–तुम ज़रूर हमारे साथ होगे!"

"किस भूमिका में? लाल पतलून वाले मसखरे के रूप में?"

"मज़ाक न करो! तुम हमारे प्रमुख नाटककार होंगे।"

"मेरा कौन सा नाटक तुम खेलोगे?"

"तुम हमारे लिए नया नाटक लिखोगे।"

"अच्छा, ऐसी बात है!"

अलेक्सांद्र व्लादीमिरोविच फिर खड़ा होकर चहलकदमी करने लगा। अपनी बुझी हुई सिगरेट जलाकर वह अनुकंपा सी दिखाते हुए हंसा और यों बोलने लगा, जैसे कि उसने शब्द पहले से ही चुन रखे हों,

"हमारे पीटर्सबर्ग से रवाना होने से कुछ दिन पहले की बात है। एक अनजान आदमी मुझसे मिलने की बड़ी कोशिश कर रहा था। आख़िरकार आस्या को उसकी ज़िद्द के सामने हार माननी पड़ी और वह किले को भेदने में सफल हो ही गया। तो यह भीमकाय शरीर और गाड़ीवानों सरीखी व मिमोसा के झाड़ जैसी पीली दाढ़ीवाला आदमी मेरे अध्ययनकक्ष में आता है, सोफ़े पर बैठता है और पूरे आधे घंटे तक ऐतिहासिक क्षण की समस्याओं के बारे में भाषण झाड़ता है। मुझे लगता है कि वह अपनी शब्द-वर्षा से मुझे डुबो देगा और मैं हताश होकर मिमियाता हूं कि क्षण के लिए वह बहुत ही अधिक समय व्यय कर रहा है। वह नहीं समझ पाता और गरजता जाता है। हार मानकर मैं आत्मसमर्पण कर देता हूं और पूछता हूं कि मुझे आख़िरकार करना क्या है। वह होश में आ जाता है और एकाएक मांग करता है कि मैं अहातों, विशेषत: कूड़ा-स्थलों को साफ़ रखने के अभियान के बारे में तुरंत एक नाटक लिख दूं। पता चलता है कि वह औषधि-विक्रेता है और स्वच्छता शिक्षा समिति के महामारीविरोधी अभियान में भाग ले रहा है।"

अलेक्सांद्र ब्लादीमिरोविच धैर्यपूर्वक प्रतीक्षा करता रहा कि श्रोता हंसें। लेकिन कोई न हंसा।

अनास्तासिया गेर्मानोव्ना गंभीर प्रशंसा का भाव दिखाते हुए बोली, "मिमोसा के झाड़ जैसी दाढ़ी – कितना सुंदर कहा है!"

"लेकिन तुम मेरी इस मिमोसा से तुलना करके जल्दबाजी नहीं कर रहे हो?" येगोर पावलोविच ने आपत्ति की। "तुम्हें अभी मालूम भी नहीं है कि मैं तुमसे क्या लिखवाना चाहता हूं।"

"और तुमने मुझसे पूछा कि मैं किस बारे में लिखना चाहता हूं?" एकाएक पास्तुखोव उबल पड़ा। "फिर इस समय कुछ लिखा भी जा सकता है? मैं जब से यहां आया हूं, अपने से एक भी पंक्ति नहीं निचोड़ पाया हूं! तुमने अभी-अभी दोस्तोयेव्स्की को उद्धृत किया। इजाजत हो, तो मैं लोमोनोसोव को उद्धृत करूं। उसने कहा था: कला-देवियां पतुरिया नहीं हैं कि जब चाहो, दबोच लो! यह उसने अपने प्रोत्साहनदाता को लिखा था।"

"तुम सोचते हो कि मैं तुमसे अपनी कला-देवी को दबोचने को कह रहा हूं?" त्स्वेतुखिन ने बुरा मानते हुए कहा।

"जब हम आपके यहां आ रहे थे," आनोचका ने बीच में बोलते हुए कहा, "येगोर पावलोविच ने बताया कि आप कितने गहरे दोस्त थे! तो अब क्यों आप लोग हमेशा लड़ रहे हैं?"

उसने फिर भेदती और उलाहनाभरी नजरों से पास्तुखोव की ओर देखा।

"लड़ेंगे, लड़ेंगे, फिर गले मिल जायेंगे," अनास्तासिया गेर्मानोव्ना ने मुस्कराते हुए आनोचका की अंगुलियां अपनी नाजुक मुट्ठी में ले लीं। "आप अभी ऐसी बातों की आदी नहीं हैं। हमारे यहां जब भी कला के बारे में बातें होती हैं, झगड़ा जरूर होता है।"

पास्तुखोव चुप रहा। पिछले वर्षों में कला-संबंधी बहसें उसे थकाने लग गयी थीं। उसे लगता था कि कला का सार वह दूसरों की अपेक्षा बेहतर जान चुका है। क्रांति ने थियेटर के बारे में जो बहसें भड़कायी थीं, वे उसे देहाती बंगलों में गरमियों की छुट्टियां बितानेवाले गैर-पेशेवर लोगों की खुले आसमान तले नाटक खेलने के महत्त्व से संबंधित जोशीली बहसों की याद दिलाती थीं। विभिन्न कला शैलियों और परिपाटियों से

वह अरसे से ऊव चुका था। उसका दृढ़ विश्वास था कि कला में जो कुछ भी मूल्यवान है, उसका सृजन परिपाटियों की उपेक्षा करके ही होता है और सभी घोषित परिपाटियों के लिए अधिक महत्त्व इस बात का है कि तुम अपने को उनका अनुयायी बताओ, चाहे उनमें सक्रिय भाग लो या नहीं। वे राजनीतिक पार्टियों की तरह हैं, जिन्हें मत जुटाने से ही मतलब रहता है। वह ढोंग नहीं करना चाहता था और असल में उन सबसे नफ़रत करता था। यही उसका उसूल था। यदि उसे बहस में खींच भी लेते, तो उसकी अंतिम घोषणा यही होती थी कि उसे असली भावावेश, असली विचार और हाड़-मांसवाला असली आदमी पसंद है और इसलिए अपने को गिने-चुने असली यथार्थवादियों में गिनता है। चूंकि उसके नाटक प्रायः खेले जाते थे, इसलिए उसे विश्वास था कि वह गलत नहीं हो सकता। अपने मन में वह हमेशा के लिए इस निष्कर्ष पर पहुंच चुका था कि अव पागलपन का ज़माना आ गया है, क्योंकि अब उस क्षेत्र में भी तर्क-विवेक से काम लेने की कोशिशें की जा रही हैं, जो नृत्य की भांति किसी तर्क-विवेक को स्वीकार नहीं करता। वह सोचता था कि अब वह अपनी रुचियां, दृष्टिकोण कभी नहीं बदल सकता और इससे उसे एक गर्वभरा, हालांकि थोड़ा सा कटु भी, संतोष प्राप्त होता था।

त्स्वेतुख़िन जैसी बातें कर रहा था, वैसी बातें पीटर्सबर्ग के हल्कों में भी सुनी जा सकती थीं। वहां भी लोग किसी अभूतपूर्व, अद्वितीय के सृजन की मांग कर रहे थे। लेकिन पास्तुख़ोव को स्वप्नों-आकांक्षाओं की मौलिकता में भोले विश्वास से चिढ़ थी। वह इस आदर्शवाद को प्रांतीय कहता था। इसके अलावा वह अच्छी तरह देख रहा था कि त्स्वेतुख़िन के साथ क्या घट रहा है: आदमी जब किसी से प्यार करने लगता है, तो उसे चांद भी नयी चीज़ प्रतीत होता है।

वह अपनी चरमराती आरामकुर्सी पर पसरकर बैठा हुआ था और इंतज़ार कर रहा था कि बातचीत क्या मोड़ लेती है। खुद उसे बातचीत को कोई मोड़ देने में आलस्य लग रहा था।

आर्सेनी रोमानोविच ने कुछ सोचते हुए कहा,

"यह आदमी... ऐसी दाढ़ीवाला..." (उसे बताते हुए संकोच हुआ कि कैसी दाढ़ीवाला और यहां तक कि उसने हथेली से अपनी

बातों पर आह भी भर ली, हालांकि वह मिमोसा के झाड़ जैसी कतई नहीं थी।) "हो सकता है कि उसमें इतना शऊर न था, लेकिन जहां तक ऐतिहासिक क्षण की समस्याओं का सवाल है, उनके बारे में न सोचना बेशक उचित न होगा..."

"मैं भी यही कहना चाहता था, अलेक्सांद्र, कि अगर तुम्हारा अगला नाटक इतिहास की भावना से, जिस रूप में वह हमारे इन आश्चर्यजनक दिनों में व्यक्त हो रही है, उससे ओतप्रोत हो..."

"इतिहास की भावना! आश्चर्यजनक दिन!" पास्तुखोव ने त्स्वेतुखिन की बात बीच ही में काट दी। "तुम आडंबरपूर्ण शब्द पसंद करने लगे हो, येगोर। यह तो रूसी परम्परा नहीं है! हम हमेशा अपनी विनम्रता के लिए प्रसिद्ध रहे हैं। यह नया रोग कहां से लगा है?.. इतिहास! एक बार कहीं मैं पेरिस की घटनाओं, शायद पंद्रहवीं सदी के आरम्भ की घटनाओं के बारे में पढ़ रहा था। वहां एक वाक्य था: 'काबोशियों ने बर्गिनियों के साथ संधि कर ली, पर अर्मानियाकों के हाथों पराजित हो गये...' यह वाक्य मैं भूल नहीं पा रहा हूं। तो क्या घटनाओं को इतनी गंभीरता से लेने की जरूरत है, अगर दो-तीन सौ साल बाद कहीं कोई हमारे बारे में भी कहेगा कि काबोशियों ने... वगैरह, वगैरह?"

"अभी-अभी, उस सोफ़े पर, आप इतिहास के बारे में कुछ और ही ढंग से बात कर रहे थे!" आर्सेनी रोमानोविच ने कहा। "क्या इन, भगवान जाने, कब के मरे हुए शब्दों के पीछे आपको जिंदा लोगों की कराहें और हर्षभरी चीखें नहीं सुनायी देतीं? आखिर आप सोलोव्योव को मजाक के लिए तो नहीं पढ़ रहे थे!"

आलोचक एकाएक फिर बीच में बोल पड़ी, लेकिन इस बार भोली और भर्त्सनापूर्ण कठोरता से नहीं, बल्कि किसी अप्रत्याशित खोज की खुशी से।

"अलेक्सांद्र ब्लादीमिरोविच, मुझे लगता है कि आप यह सब इसलिए नहीं कह रहे कि आप वैसा सोचते हैं। वजह शायद कोई और ही है। क्यों, ठीक है न?"

"यह सब यानी क्या?" पास्तुखोव ने खीझते हुए उसकी ओर देखकर पूछा।

"कृपया, नाराज़ न हों। आपने उस औषधि विक्रेता की खिल्ली उड़ायी, हालांकि आप मन ही मन खुश हुए थे कि उसे आपकी कला में इतना विश्वास है, उसे इतना प्रभावशाली मानता है कि जैसे आपके लिखने की देर है और लोग तुरंत अहाते साफ़ करने लग जायेंगे और शायद उन अहातों में बिल्कुल नये ढंग से भी रहने लगें। सचमुच आपकी लेखनी कितनी जानें वचा लेती... मेरा मतलब है कि कितने लोग छूत की बीमारियों से बच जाते, मौत के मुंह में न पहुंचते। बेशक अगर आप तैयार हो जाते और नाटक लिख देते। यह सच नहीं है क्या? आप जानते हैं कि सच है।"

उसकी आंखें चमक रही थीं, मानो इस बात ने उसे द्रवित कर दिया हो कि वह इतनी आसानी और सरलता से बातों के मर्म में पैठ सकती है।

"बेचारा साशा! हर कोई उसी पर वार कर रहा है!" अनास्तासिया गेर्मानोव्ना हंस पड़ी।

पास्तुख़ोव ने कंधे उचका दिये।

"माननीय देवी जी," वह बोला, "आप क्या सचमुच सोचती हैं कि कविता की मदद से घंटे को ऊपर बुर्ज पर चढ़ाया जा सकता है? आप और मैं एक ही बात की चर्चा कर रहे हैं, लेकिन हमारे सोचने का ढंग अलग-अलग है।"

"तो बताइये न कि येगोर पावलोविच ने जो बात कही है, उसके बारे में आप क्या सोचते हैं।"

"सबसे पहले तो मैं यह सोचता हूं कि मुझे मुजरिम के कठघरे में खड़ा न करें। मुझे आपत्ति शब्दों या विचारों पर नहीं है। लेकिन घटनाओं ने आपकी कल्पना को ज़रूरत से ज़्यादा उर्वर बना दिया है। आप लोग जिस मनःस्थिति में हैं, मैं उसके खिलाफ़ हूं।"

"क्योंकि तुम्हारी मनःस्थिति दूसरी है, ठीक है न?" त्स्वेतुख़िन ने कहा। "मैं तो सोचता था कि तुममें अभी यौवन बाकी है।"

"यौवन का इससे क्या संबंध?"

"क्रांति यौवन का ही दूसरा नाम है।"

"जब तुम मरोगे, मैं तुम्हारी कब्र पर ये शब्द खुदवा दूंगा। अफ़सोस की बात तो यह है कि यौवन कला के मामले में भोला होता

है। लेकिन शायद यह ठीक नहीं। यौवन कला में बाधक होता है।"

"मैं नहीं समझी," आनोचका ने कबूल किया। "अगर यौवन और क्रांति एक ही चीज़ हैं..." (यहां वह थोड़ा सा हिचकी). "तो क्रांति आपके लेखन में बाधा कैसे बन सकती है?"

"वह अपने खिलाफ़ लिखने में बाधक बनती है," त्स्वेतुखिन ने उदासी से कहा। लेकिन फिर तुरंत सिर को पीछे झटकते हुए बोला, "खैर, मैं नहीं जानता! मुझे तो ऐसा लगता है कि हम तूफ़ान में किसी बाग से गुज़र रहे हैं – सब कुछ डोल रहा है, हवा सांय-सांय कर रही है और हृदय में ऐसी हलचल, ऐसा विक्षोभ है कि..."

"ओहो!" पास्तुखोव उबल पड़ा। "आखिर नहीं रहा गया! विक्षोभ! मुझे इस शब्द से ही घृणा है! ठेठ अभिनेताओं का शब्द! गढ़ा हुआ, हवाई, भाषा की टांग तोड़नेवाला... जैसे कि कोई बेकार का मुखौटा हो, आदमियों की भाषा का शब्द न हो!.. और तुम्हारा नकलीपन, येगोर! जब मैं इन जोशभरे विस्मयबोधक चिह्नों को सुनता हूं, मुझे लगता है कि कोई मुस्टंडा नंग-धड़ंग मेरे सामने चक्कर काट रहा है और अपनी मांसपेशियों की नुमायश कर रहा है!"

वह रुका, जैसे कि फेफड़ों में खूब हवा भर लेना चाहता हो, ताकि फिर बोलता जाये, बोलता जाये। वह क्षण आ गया था, जब वह अपने सामने खड़ी दीवार में दरार डाल सकता था। लेकिन अचानक वह चुप हो गया।

आनोचका धीरे से खड़े होकर भयभीत नज़रों से अधखुले दरवाज़े की ओर देख रही थी।

पावलिक अंदर आकर अंगुली के इशारे से बहन को बुला रहा था। उसके हांफने से साफ़ था कि वह एक पल भी दम दिये बिना भागता आया है।

आनोचका स्कूली लड़की की तरह कुर्सी लांघकर भाई की ओर दौड़ी। भाई ने उसे नीचे अपनी ओर खींचा और जल्दी-जल्दी कान में कुछ कहा।

आर्सेनी रोमानोविच चौंककर उछल पड़ा।

"मां को कुछ हो गया है?" उसने सहमते-सहमते पूछा।

येगोर पावलोविच भी खड़ा हो गया था। वह पीला पड़ गया था

तथा भयभीत नज़रों से आनोचका को देख रहा था। वह सब से विदा लेने लगी।

"मैं तुम्हें छोड़ आता हूं," त्स्वेतुख़िन ने कहा।

"नहीं, रहने दीजिये।"

उसने पावलिक का कंधा पकड़ा और दोनों कमरे से बाहर लपके। पावलिक जाते-जाते कह गया,

"आर्सेनी रोमानोविच, मैं बाद में आऊंगा!"

त्स्वेतुख़िन भी जाने को तुरंत तैयार हो गया। उसने पास्तुख़ोव से विदा लेने के लिए हाथ बढ़ाया, मगर हाथ कांप रहा था।

"तुम कहां? ठहरो भी न! क्या अपनी सुनहरी जूती के बिना एक मिनट भी नहीं रह सकते?"

"रहने दो ये बातें!" त्स्वेतुख़िन ने तीखेपन से कहा। "तुम अनुमान नहीं लगा सकते कि आनोचका के लिए उसकी मां कितना मानी रखती है!"

"वह मौत के कगार पर खड़ी है," आर्सेनी रोमानोविच ने बताया।

"मुझे कहां से मालूम हो सकता था ..." पास्तुख़ोव अचकचा गया। उसने त्स्वेतुख़िन को गलियारे तक छोड़ा और फिर अपने कमरे में चला गया।

अनास्तासिया गेर्मानोव्ना ने खिड़की खोल दी थी। पश्चिम में आसमान लाल हो गया था, लेकिन हवा में घुटन फिर भी बहुत थी। दोनों पास-पास बैठ गये। सब-कुछ इतनी तेज़ी से बदल गया था कि दोनों चुप बैठे अपने विचारों में खो गये। कुछ समय बाद अनास्तासिया गेर्मानोव्ना पति के घुटने पर हाथ रखते हुए धीरे से बोली,

"तुम्हें पीलातुस की कहानी याद है न? बूढ़ा, मोटा, थुलथुल पोंतियस पीलातुस धूप में समुद्र तट पर आंखें बंद किये लेटा अपनी गठियाग्रस्त हड्डियां सेंक रहा है और एक दूसरे बूढ़े पेट्रीशियन की बातें सुन रहा है। दोनों का सारा जीवन अतीत की बात, शानदार, सुखमय, सुदूर अतीत की बात बन चुका है। बूढ़ा पेट्रीशियन पीलातुस से पूछता है, 'याद है, जब तुम जूडिया के गवर्नर हुआ करते थे? याद है, तब एक ठिगना सा, लाल बालोंवाला पैगंबर हुआ करता था, जो अपने को यहूदियों का राजा कहता था? जहां तक मुझे याद है, यह

विद्रोह से पहले की बात है। धर्मपंडितों ने मांग की थी कि उसे फांसी चढ़ाया जाये और तुमने उसे उन्हें सौंप दिया था और उन्होंने उसे यरूशलम में सलीब पर चढ़ा दिया था। याद है न? उसका नाम ईसा था' पीलातुस करवट बदलता है और आंखें खोले बिना ही सुस्ती से जवाब देता है, 'नहीं, याद नहीं...'"

"मुझे यह ईश्वरनिंदा क्यों सुना रही हो?" पास्तुखोव ने पूछा।

"त्स्वेतुखिन जब तुम्हें उलाहना दे रहा था कि तुम उसके साथियों को भूल गये हो और तुम्हें स्वीकार करते संकोच हो रहा था कि हां, भूल गये हो, मुझे यह कहानी एकाएक याद हो आयी। सचमुच, तुम उन्हें याद भी क्यों रखो?"

"तुम्हारा कहना है कि मैं पीलातुस हूं?"

"नहीं, नहीं! मैं यही कह रही थी: वे तुम्हारे कौन होते हैं, जो तुम उन्हें याद रखो? क्या तुम्हें उन्हें भुलाने का हक नहीं है?"

उसने पति के सीने पर अपना सिर रख दिया।

"तुम बड़े हो। ताकतवर हो। तुम्हें सबसे पहले अपने जीवन ध्येय के बारे में सोचना चाहिए।"

कुछ क्षण रुककर पास्तुखोव ने अनिश्चय से उत्तर दिया,

"नहीं, आस्या। मैं सबसे साधारण आदमी हूं। कमजोर। दूसरों से भी कमजोर।"

यह कहते ही उसके मन पर से एक बोझ सा उतर गया। उसे खुशी हुई कि वह यों खुलकर बोला है, कि आस्या उसे ताकतवर समझती है और वह जानता है कि वह अभी आपत्ति करेगी – नहीं, नहीं! तुम गलत हो! – और उसे चूम लेगी।

आस्या ने सचमुच आपत्ति की:

"नहीं, तुम ताकतवर हो!" और उसके चूमने के लिए अपने होठ बढ़ा दिये।

एक मिनट बाद पास्तुखोव ने अनिश्चय से कहा,

"आस्या, मैं फिर भी सोचता हूं कि हमें यहां से और कहीं चले जाना चाहिये।"

"चले जाना नहीं, भाग जाना चाहिये," आस्या ने मुश्किल से

सुनायी देनेवाली खुसफुसाहट में कहा और भावावेश तथा हताशा से अपने पति की आंखों में झांका।

१३

ओल्गा इवानोव्ना अंतिम सांसें गिन रही थी।

लेकिन प्राण थे कि कहीं अटके हुए थे। रात आधी से ज़्यादा गुज़र चुकी थी। आनोचका पैर नीचे लटकाये, हथेलियां दीवार पर टिके सिर के नीचे रखे और अधमुंदी आंखों से टकटकी लगाकर छत को देखती अपनी चारपाई पर आड़े लेटी हुई थी। पावलिक और पिता बगल के कमरे में मां के पास बैठे थे।

आनोचका मां के सांस लेने की रुक-रुककर, कहीं दूर गहराई से, मानो फ़र्श के नीचे से आती घरघराहट सुन रही थी। उसकी मां, ओल्गा इवानोव्ना, के लिए ऐसे सांस लेना बिल्कुल अस्वाभाविक था। फिर वह आवाज़ आदमी के सांस लेने की आवाज़ जैसी भी तो नहीं थी। दीवार घड़ी तीन बजा चुकी थी और ताज़े भुने सूरजमुखी के बीज कुड़कने की आवाज़ जैसे टक-टक पेंडुलम हिलाती आगे दौड़ी जा रही थी। आनोचका के कान जैसे कि और कुछ नहीं सुन रहे थे। उसे विश्वास था कि वह जगी हुई है, कि वह बिस्तर पर कमज़ोरी या सोने की ज़रूरत के कारण नहीं, बल्कि इसलिए पड़ी हुई है कि मां की मृत्युपूर्व यातना को नहीं देखना चाहती। लेकिन उस समय उसके चेतना-पटल पर जो दृश्य गुज़र रहे थे, वे बीच-बीच में जग जाने से टूटे हुए छोटे स्वप्नों जैसे थे। कभी पिता दिखायी दे जाते, तो कभी जान-पहचानवालों में से कोई और कभी वह खुद ही। लेकिन सबसे ज़्यादा और लगभग लगातार मां ही दिखायी दे रही थी, पत्तियों के झीने परदे जैसी दूसरे लोगों की आकृतियों के पीछे से।

लघुकाय, तेज़, फुर्तीली, अकालवृद्धा ओल्गा इवानोव्ना सिले कपड़ों की गठरी कांख में दाबे सड़क पर हड़बड़ाती भागी जा रही है, ताकि ग्राहक को उसकी पोशाक समय पर पहुंचा सके... या बाज़ार की धका-पेल में किसी तरह आगे बढ़कर, पत्तागोभी के एक ठेले के पास पहुंचकर, एक कल्ला उठाकर उसे दबा-बजा रही है, ताकि एक

भी कोपेक दाम ज्यादा न देना पड़े ... या घर के कोने में मेज़ पर झुकी कपड़े की कटिंग कर रही है और फिर सिलाई मशीन की घर्राती महीन सूई के नीचे अपनी दुबली अंगुलियों से उसे ठेलती हुई सिलाई कर रही है। अपनी भाग-दौड़, अथक मेहनत से इस एक मिनट भी चैन से न बैठनेवाली औरत ने न जाने कितनी बार परिवार को उस गढ़े में गिरने से बचाया था, जिसमें घर का मुखिया तीख़ोन पाराबुकिन अपनी शराब की लत की वजह से उसे लगातार धकेले जा रहा था। घर का मुखिया असल में वह नहीं, ओल्गा इवानोव्ना ही थी। बच्चों ही नहीं, पति का भी, जिसकी हालत कभी-कभी दुधमुंहे बच्चे से भी बदतर हो जाती थी, सारा बोझ वही संभाले हुए थी। उसी ने सभी कष्टों और तकलीफों को सहते हुए और इस दृढ़ संकल्प के साथ आनोच-का और पावलिक को बड़ा किया था कि जीवन में अभावों और अपमान के जो कड़वे घूंट उसे पीने पड़े थे, वे उन्हें भी न पीने पड़ें। आनोचका को शिक्षा देने में इज़्वेकोवा ने उसकी मदद की। वेरा निकान्द्रोव्ना ने ख़ुद आनोचका को लिखना-पढ़ना सिखाया, फिर जिम्नाज़ियम में उसके आगे पढ़ने का इंतजाम करवाया और गरीब विद्यार्थी सहायता समाज से वज़ीफ़ा भी दिलवाया। संक्षेप में, जब भी जरूरत होती, वह मदद करने को सदा तैयार रहती थी। एक बार उसने एक सिलाई मशीन भी भेंट की, जिसके लिए ओल्गा इवानोव्ना उसे सुबह-शाम दुआएं देती रहतीं थीं। फिर भी घर की गाड़ी खिंचते रहने में इतना हाथ बाहरी मदद का नहीं था, जितना कि मां की कमरतोड़ मेहनत का। पाराबुकिन ने कई बार पत्नी का बोझ हल्का करने की कोशिश की थी। वह कोई नौकरी खोज लेता और ख़ुशी से उछलता पहली तनख्वाह लाकर पत्नी को सौंप देता। लेकिन शीघ्र ही वह इस कमाई से कहीं ज्यादा उड़ाने भी लग जाता। बच्चों को, विशेषतः आनोचका को वह भी प्यार करता था, लेकिन इस प्यार में कसूर की भावना थी, जबकि ओल्गा इवानोव्ना का प्यार पूर्ण आत्मत्याग पर आधारित था और उसे रंचमात्र भी संदेह न था कि उसका यह प्यार विजयी होगा और वांछित फल देगा।

आनोचका के उनींदे दिमाग में यह सारा अतीत विचारों के नहीं, बल्कि रह-रहकर उभरनेवाले बिंबों के रूप में प्रकट हो रहा था और विचित्र बात तो यह थी कि उसके लिए यह सब अतीत उस क्षण में

वना था, जब उसे अपनी मां की गोल, वड़ी-वड़ी आंखों में मौत की झलक दिखायी दी थी। आनोचका चारपाई पर यों पड़ी थी, जैसे कि उसे वांध दिया गया हो और हाथ-पैर सुन्न हो गये हों। अपने सभी अर्ध-स्वप्नों के वीच भी वह डरी हुई मन में वार-वार दोहराती जा रही थी कि मां की मृत्यु से परिवार में एक आदमी ही कम नहीं हो जायेगा, वल्कि परिवार, घर भी नहीं रह जायेगा।

उसे लगा कि कमरे में जो आवाज़ें पहले थीं, वे वदल गयी हैं। घड़ी का पेंडुलम पहले की तरह ही चल रहा था। लेकिन उसकी टक-टक के अलावा अव और कुछ नहीं सुनायी दे रहा था। झटके मे मुड़कर वह कोहनियों के वल लेट गयी और अंगुलियों तथा घुटनों में खून का वहाव एकाएक तेज़ हो जाने से ठंडक सी महसूस करने लगी। एक भारी, लंवी घरघराहट मानो सारी दुनिया में गूंज गयी। वाद में देर तक सव शांत रहा। वाद में वैसी ही आवाज़ फिर हुई और वैसी ही शांति फिर छा गयी।

तो क्या यह अंत था? ऐसा क्योंकर हुआ? क्या हमेशा ऐसे ही होता है? अभी कुछ ही समय पहले तक, कल ही, जव डाक्टर ने कहा था कि उम्मीद कम है, आनोचका को विश्वास था कि मां को कुछ नहीं होगा। आज सुबह ही ओल्गा इवानोव्ना एकाएक अपने को वेहतर महसूस करने लगी थी और आनोचका ने तब अपने से कहा था कि संकट का मतलव बीमारी का अंत होता है, न कि मृत्यु। आखिर पहली वीमारी – भयंकर टाइफ़स – भी तो गुज़र गयी थी, जिसने ओल्गा इवानोव्ना को इतना कमज़ोर, इतना दुवला बना डाला था कि आनोचका उसे बच्चे की तरह हाथों में उठाकर ले जाती थी। फिर वह चंगी होने लगी थी और कुछ दिनों वाद तो अपना सिलाई का काम फिर शुरू करने की भी सोचने लगी थी। तो अब फेफड़े की इस कमवख्त सूजन का अंत मौत में ही क्यों हो? नहीं, यह भी संकट है, संकट का अंत है, उसका चरमविंदु है। ओल्गा इवानोव्ना इसे भी लांघ जायेगी, एक गहरी सांस लेगी, गहरी सांस, और...

उसने गहरी सांस क्यों नहीं ली? पर नहीं, ले तो रही है! फिर वही घरघराहट, और भी भयावह, और भी अप्राकृतिक। भला क्या आदमी के सीने, मां के हड़ियल, तंग सीने से भी ऐसी आवाज़ निकल

सकती है? फिर वही खामोशी। नहीं, फिर वही घरघराहट। नहीं, कानों ने गलत सुना है। क्या यही अंत है? क्या यही आखिरी सांस थी? नहीं, ऐसा नहीं हो सकता! अगर आलोचका को मालूम होता कि यह आखिरी है, तो वह दूसरे ही ढंग से, और ही तरह सुनती ...

वह घरघराहट फिर क्यों नहीं आ रही? निश्चय ही फिर आयेगी। हो सकता है कि वह अंतिम हो, क्योंकि बहुत देर से नहीं सुनायी दी है, बहुत देर से खामोशी छायी हुई है और कमरे इंतजार कर रहे हैं .. देखो, देखो वह शुरू हो ही गयी है। लेकिन बिल्कुल अप्रत्याशित और दूसरे ढंग से शुरू हुई है, हल्के-हल्के झटकों के साथ। यह क्या है?

"यह क्या है?" आलोचका ने कांपती आवाज में पूछा और उसी क्षण, मानो होश में आ गयी हो, समझ गयी कि अधखुले दरवाज़े से मां की घरघराहट के बजाय यह किसी के उत्तरोत्तर ऊंचे स्वर में हताशाभरी सुबकियां लेने की आवाज आ रही है। यह लोहे की चारपाई पर किसी चीज से थप्प-थप्प करता उसका पिता रो रहा था।

"यह क्या है?" आलोचका चिल्लायी।

उसने खड़ा होना चाहा, लेकिन पांव मानो सीसे के बन गये थे। उसके लचीले और आज्ञाकारी शरीर के साथ ऐसा पहली बार हुआ था। वह ज्यों की त्यों निश्चल पड़ी रही।

तभी अस्त-व्यस्त बालोंवाला पावलिक कमरे से निकला और एक कुर्सी खिसकाकर घड़ी के पास लाया, उसपर चढ़ा और पेंडुलम को रोक दिया।

"क्यों?" आलोचका ने पूछा और बिस्तर पर बैठ गयी।

पावलिक ने कोई जवाब नहीं दिया। वह सिर्फ़ इतना देख पायी कि उसकी सुनहरी, दहकती आंखें मानो उसे किसी बात के लिए उलाहना दे रही हैं शायद उसके लिए उसे यह बता पाना कठिन था कि उसने किसी बहुत बढ़िया किताब में पढ़ा है कि घर में जब किसी की मौत हो जाती है, तो घड़ियां रोक देनी चाहिए।

पौ फट गयी थी, हालांकि कोई चीज अभी साफ़-साफ़ नहीं दिख रही थी। आलोचका डरती-डरती मां के कमरे में दाखिल हुई। उसका पिता लंबा और दुबला, अपने साइज से छोटी तोल्स्तोयी कमीज पहने, चारपाई की लोहे की रेलिंग पर कोहनियां और सिर टिकाये खड़ा था।

सुबकियां लेते हुए उसका सिर बार-बार हाथों से टकरा रहा था।

मां तो पहचानी ही नहीं जा रही थी। आनोचका ने डरकर मुंह फेर लिया। सहारे की खोज में वह दीवार के बिल्कुल कोने में जा खड़ी हुई और यह महसूस करके कि अभी रुलाई फूट पड़ेगी, उसने हथेलियों से आंखें ढक लेनी चाहीं और ऐसा करते हुए हाथ दीवार पर टंगी छोटी आलमारी से ऐसे टकराये कि उसमें रखा पैप्ये-माशे का खाली फूलदान, जो घर में सजावट की एकमात्र वस्तु था और जिसपर चटकीले फूल बने हुए थे, लुढ़ककर फ़र्श पर आ गिरा।

गत्ते पर उंगली से मारने जैसी इस आवाज़ से चौंककर पिता सीधा हो गया और ऐंठते हुए चादर को मुट्ठी में पकड़कर उसे मृतक के ऊपर से झटके से खींच लिया। फिर घुटनों पर गिरकर वह कराहते हुए ज़ोर-ज़ोर से और बार-बार ओल्गा इवानोव्ना की दुबली टांगों को चूमने लगा।

आनोचका ने फूलदान को फ़र्श से उठाकर पुरानी जगह पर वापस रखा और फिर एकाएक कमरे से बाहर भागी और जाकर अपने बिस्तर पर औंधी गिर गयी।

अगले दो दिन तक घर में तरह-तरह के चेहरों का तांता लगा रहा। पड़ोसी, जान-पहचानवाले, मित्र-दोस्त आते, सलाहें, सांत्वनाएं देते और चले जाते। ओल्गा इवानोव्ना अपने जीवन में कभी किसी के लिए जगह की तंगी या रुकावट का कारण नहीं बनी थी, लेकिन अब जब उसे मेज़ पर लिटाया गया, वह बहुत जगह घेर रही थी और घर और भी छोटा लगने लगा था। आनोचका हर आगंतुक से दो-चार बातें करती, फिर तुरंत भूल जाती कि वह कौन था और पूछती कि फलां क्यों नहीं आया, हालांकि कुछ समय पहले वह उससे ही बातें कर रही थी।

सबसे ज़्यादा बार आनेवालों में पाराबुकिन का एक जिगरी दोस्त और शराब पीने में साथी मेफ़ोदी सीलिच था। वह विधुर का मन बहलाये रखने को अपना धर्म समझता था, जिसकी वजह से दोनों दोस्त जब-तब गलियारे में चले जाते या अहाते में पुराने अकासिया के पेड़ के नीचे बैठ जाते और मेफ़ोदी जेब में जो बोतल छिपाकर लाया होता, उसे देखते ही देखते खाली कर डालते।

त्स्वेतुखिन भी आया। उसने ओल्गा इवानोव्ना के पैरों पर लिलैक के फूलों का गुच्छा चढ़ाया। क्षणभर में ही सारा कमरा फूलों की दमघोंटू महक से भर गया, जिससे घर में मृतक की उपस्थिति का अहसास बोझिल और असह्य बन बैठा। येगोर पावलोविच ने आनो-चका से थोड़ी देर के लिए टहलने निकलने का आग्रह किया। वह राज़ी हो गयी, लेकिन ज्यों ही वे फाटक से बाहर निकले और येगोर पावलोविच ने उसका ध्यान बंटाने के लिए इधर-उधर की बातें शुरू कीं, त्यों ही उसे अपने फ़ैसले पर अफ़सोस होने लगा और वह वापस दौड़ गयी।

वेरा निकान्द्रोव्ना भी पहुची। वह एक कढ़ा हुआ रेशमी रूमाल लायी, जिसे ओल्गा इवानोव्ना के सिर पर बांधा गया और झालरदार किनारियों से हाथ ढक दिये गये। रेशम के इस जगमगाते चौखटे में ओल्गा इवानोव्ना इतनी श्वेत व पवित्र लगने लगी कि आनोचका अपने को रोक न सकी और किसी अप्रत्याशित चीज़ से डरे हुए बच्चे की तरह घुटनों के बल बैठकर उसने अपना चेहरा वेरा निकान्द्रोव्ना की गोद में छिपा लिया और वह देर तक उसके कटे बालों को सहलाती हुई उसे ढाढस बंधाती रही।

घर में सबसे अधिक दौड़-धूप पावलिक को करनी पड़ रही थी। उसकी चुस्त टांगें इतने काम और कभी नहीं आयी होंगी, जितना कि शोक के इन दिनों में। उसी ने ज़रूरी पते मालूम किये, वही पिता को ताबूतसाज़ के यहां ले गया और बाद में कब्रिस्तान भी गया। वह देख रहा था कि घर में उसकी अहमियत कितनी ज़्यादा हो गयी है। वीत्या को अपनी मां की मौत की खबर देने के लिए मेश्कोव के यहां जाने के बाद से तो उसे अपने पर और भी गर्व होने लगा। बीमार येलिज़ावेता मेरकूर्येव्ना इतनी विचलित हो गयी थी कि वह ओल्गा इवानोव्ना से अंतिम विदा लेने के लिए खुद ही जाना चाहती थी, लेकिन उसे बिस्तर से न उठने के लिए किसी तरह राजी कर लिया गया। फिर भी उसने पावलिक से तफ़सील से पूछा कि ओल्गा इवानोव्ना की मृत्यु कैसे हुई थी और कहा कि वह तुरंत अपने घर जाकर मालूम करे कि पैसों की ज़रूरत तो नहीं है।

घर में परिवार की बैठक हुई, जिसमें पावलिक ने पिता और बहन

के साथ बराबरी की हैसियत से हिस्सा लिया। पाराबुकिन ने घोषणा की कि वह मेश्कोवों से कोई खैरात नहीं लेगा।

"तुम्हारी मां ने अपने जीवन में मेरकूरी के हाथों खूब तकलीफ़ें भुगती हैं। तुम भूल गयी कि जब तुम लोग छोटे ही थे, कैसे उसने सरदियों में तुम लोगों को घर से निकाल दिया था? हमें अंत्येष्टि के लिए इमदाद मिलेगी। उससे काम चल जायेगा। फिलहाल इज़्वेकोवा से कुछ ले सकते हैं।"

"वेरा निकान्द्रोव्ना ने कुछ दिया तो है, पर वह पूरा शायद ही पड़े," आनोचका बोली।

"तो अपने अभिनेता से ले लो। इनकार नहीं करेगा। आखिर उधार ही तो मांग रहे हैं," पिता ने कहा।

आनोचका ने कोई जवाब न दिया। सिर्फ़ उसके चेहरे पर दुख की लकीरें और गहरी हो गयी थीं। पाराबुकिन ओल्गा इवानोव्ना की खाली खाट में और गहरे धंस गया। उसकी आंखों में आंसू फिर उमड़ आये थे। इन दिनों में वह न जाने कितनी बार सिसकियां ले-लेकर रोया होगा। नीचे ज़मीन पर देखते हुए आनोचका कड़ुआहट से बोली,

"असल जड़ वोद्का है, पिताजी..."

"मान लिया कि जड़ वोद्का है," पिता ने दबते हुए कहा। "लेकिन क्या सब वोद्का की वजह से हुआ है? मुझमें क्या ऐसा कुछ नहीं बचा है, जिसकी जड़ में वोद्का न हो? तुम मुझे दोष देती हो। तुममें दिमाग तो है, पर नजर इतनी तेज़ नहीं। वोद्का अरसे से नहीं है। जो है, वह पेट्रोल जैसी किसी चीज़ की मिलावट है।"

पावलिक ने पिता को बीच ही में टोक दिया,

"अगर वीत्या की मां से नहीं लेना चाहते, तो ठीक है, मैं आर्सेनी रोमानोविच से मांग लेता हूं। वह दे देंगे।"

"यह हुई न काम की बात! वह दे देंगे। वह बड़े भलामानस हैं।"

"अगर पूरा नहीं पड़ा, तभी मांगेंगे," आनोचका ने अपना फ़ैसला सुनाया।

जैसा कि किसी के मरने पर होता है, धीरे-धीरे सब इंतज़ाम हो गया। रिश्तेदारों को पहले लगता है कि झंझट और मुश्किलें बहुत हैं और शोक ने उनके हाथ-पैर जकड़ दिये हैं। लेकिन बाद में सब कुछ

अपने आप होता जाता है और जैसे कि सब कुछ पीछे छूटे लोगों की मर्ज़ी के विना किया जा रहा हो, मृतक को वहां पहुंचा दिया जाता है, जहां कि अंत में हर कोई पहुंचता है।

ताबूत, रोज़िन की ताज़ी गंधवाली कच्ची लकड़ी का भारी ताबूत केवल तीसरे दिन ही लाया जा सका। वीत्या शुब्निकोव कोने में खड़ा मेज़ से शव को उठाकर ताबूत में लिटाये जाते और फिर ताबूत को मेज़ पर रखा जाते देख रहा था।

"ज़रा मदद करो," पावलिक ने वीत्या को आवाज़ दी। वीत्या ने अपने को एकांत कोना छोड़ने को मजबूर किया और दौड़कर जिस ओर ओल्गा इवानोव्ना के पैर थे, उस ओर ताबूत के नीचे हाथ डाल दिये और पूरी ताकत लगायी। उसे लगा कि उसकी अंगुलियां ताबूत के रंदा न किये हुए तख्ते पर चिपक गयी हैं और जब ताबूत जगह पर रख दिया गया, वह डरकर और देर तक अंगुलियों से रोज़िन को पोंछता रहा और जितना ही पोंछता गया, उतनी ही ज़्यादा उसकी गंध आती गयी।

अर्थी उठने तक अप्रत्याशित रूप से बहुत लोग इकट्ठे हो गये थे, लेकिन साथ में इने-गिने ही गये। अर्थी ले जाने के लिए एक गाड़ी किराये पर ले ली गयी थी।

"सब ठीक-ठाक हो रहा है," अर्थी रवाना होने पर पाराबुकिन बुदबुदाया। "ओल्गा इवानोव्ना बड़ी खुश होती और कहती, 'शुक्रिया, तीशा, शुक्रिया'।"

तभी उसे याद आया कि उसने किफ़ायत के उद्देश्य से कब्र खोदनेवालों को सिर्फ़ गढ़ा खोदने के लिए ही पैसे दिये है। इसलिए चूंकि दफ़नाने का काम खुद करना पड़ेगा, बेलचे और हथौड़े की ज़रूरत पड़ेगी। अर्थी के साथ जानेवालों का हुजूम एक चौराहे पर रुका, तो पावलिक और वीत्या को पड़ोसियों से बेलचा और हथौड़ा लेने वापस भेज दिया गया।

गरमी बहुत थी और हवा भी नहीं चल रही थी। नगर ऐसे उमस-भरे मौसम का आदी सा लग रहा था और अपनी चप्पा-चप्पा ज़मीन से नीले-सफ़ेद आसमान की गरमी को सोख रहा था। हर कोई अर्थी के पीछे खामोश खड़ा था। गंदे कत्थई चोगेवाला गाड़ीवान घोड़े को

परेशान करती मक्खियों को ज़ोर-ज़ोर से हाथ हिलाकर उड़ा रहा था।

बगल की सड़क से एक कार आती दिखायी दी। वह पूरी रफ़्तार से चढ़ाई चढ़ रही थी, लेकिन चौराहे पर पहुंचते ही तुरंत रुक गयी। अब या तो जलूस उसके लिए रास्ता छोड़ता, या फिर वह खुद ही फुटपाथ पर चढ़कर आगे निकल जाती। मगर तभी उस खुली कार में से एक आदमी ने खड़े होकर, मानो झिझकते हुए अपने सिर से टोपी उतार ली। बाद में वह दरवाज़ा खोलकर नीचे कूदा और तेज़ कदमों से चलता हुआ अर्थी के पास आया।

आनोचका किरील को पहचान गयी। वह सीधा उसी के पास आया और अपनी ओर बढ़ा उसका हाथ कसकर दबाते हुए कुछ क्षण चुप खड़ा रहा। बाद में, हाथ छोड़े बिना ही, उसने जल्दी-जल्दी, लेकिन धीमी आवाज़ में कहा,

"मैं भी साथ चलता, लेकिन फुरसत नहीं है। कुछ ज़रूरी काम हैं। आशा है कि क्षमा कर देंगी।"

आनोचका ने उसकी गरम मुट्ठी से अपना हाथ छुड़ा लिया,

"धन्यवाद।"

किरील की ओर नज़रें उठाये बिना ही उसने देख लिया था कि सभी लोग उसे ही ताक रहे हैं। वेरा निकान्द्रोव्ना की निगाहों में समर्थन का भाव था। दोरोगोमीलोव किरील को एकटक देखे जा रहा था: वह उसे बच्चे के रूप में ही याद था और तब से फिर कभी नहीं मिला था। पाराबुकिन मानो नहीं समझ पा रहा था कि कार में आया यह आदमी कौन हो सकता है। वह इसी फ़िक्र में डूबा हुआ था कि पावलिक और वीत्या अब तक क्यों नहीं लौटे। त्स्वेतुखिन ने किरील का अभिवादन यों किया, जैसे कि उससे पुरानी जान-पहचान हो। वह उससे किसी ज़रूरी काम से मिलने के लिए वक्त मांगना चाहता था, लेकिन इज़्वेकोव ने अभिवादन का बहुत ही सरसरी तौर पर जवाब दिया, जिससे येगोर पावलोविच सकपका सा गया। फिर कुछ झिझकते हुए उसने मेफ़ोदी सीलिच को एक ओर बुलाया, ताकि उसकी राय मालूम कर सके कि इस वक्त काम के बारे में बातें करना ठीक होगा या नहीं।

"क्यों नहीं?" मेफ़ोदी ने कंधे उचकाते हुए जवाब दिया और

फिर नाटकीय अंदाज़ में बोला, "मृतक, तुम्हें चिरशांति मिले, जीवित, तुम जीवन उपभोग करो!"

लेकिन त्स्वेतुख़िन देर कर बैठा: लड़के वेलचा और हथौड़ा लेकर लौट आये थे और अर्थी-गाड़ी फिर चल पड़ी थी।

किरील ने आनोचका से विदा ली।

"किसी मदद की ज़रूरत हो, तो मां को बता दीजियेगा। मुझे मालूम हो जायेगा," उसने कहा। फिर अचकचाते हुए उसके और क़रीब जाकर, जैसे डर रहा हो कि कहीं दूसरे लोग न सुन लें, यह और कहा, "मैं आपसे अनुरोध करता हूं।"

आनोचका ने सिर झुका लिया।

किरील कुछ कदम उसके साथ चला, फिर तेज़ी से वापस लौट गया। ड्राइवर से उसने कार चौराहे तक ले जाने और वहां रुकने को कहा और खुद सीट पर घुटना टेके, नंगे सिर खड़ा जलूस को देखता रहा। एकाएक उसने देखा कि आनोचका ने एक क्षण के लिए पीछे झांका है। धूप की चमक में उसने आनोचका की इस निगाह को पकड़ लिया। एक सेकंड वह और देखता रहा, फिर बैठ गया और ड्राइवर से चलने को कहा।

"जल्दी। देर हो रही है।"

उसने जेब से घड़ी निकाली, देर तक उसे देखता रहा, लेकिन कार के झटकों से हाथ हिलते जाने के कारण ठीक से न देख ही सका और न समझ ही पाया कि कितना बजा है।

कब्रिस्तान में खुली कब्र के सामने पारावुकिन फिर परेशान नजर आने लगा। वह बारी-बारी से हर किसी के पास जाता, जैसे कि कुछ पूछना चाहता हो, लेकिन चेहरे पर देख करके ही वापस लौट जाता। तभी मेफ़ोदी ने उसकी कोहनी पकड़ते हुए पूछा,

"क्या बात है?"

"वह भगवान में विश्वास करती थी," पारावुकिन ने कान में बताया।

"प्रार्थना पढ़नी है क्या?" मेफ़ोदी ने ऊंची आवाज़ में पूछा, ताकि सभी लोग सुन लें।

"सब फिजूल है, बेकार है," पारावुकिन यों बोला, जैसे होश में

न हो। "लेकिन उसकी भावनाओं की कद्र तो करनी ही चाहिए, है न?"

उसने डरते-डरते बेटी की ओर देखा। आनोचका ने वेरा निकान्द्रोव्ना से सलाह-मशविरा किया और दोनों इस नतीजे पर पहुंचीं कि पिता को अपनी इच्छा पूरी करने देना चाहिए।

पाराबुकिन तुरंत सलीबों के जंगल में खो गया और कोई एक मिनट बाद एक पादरी के साथ लौटा। ताबूत का ढक्कन हटाया गया और सब नज़दीक आकर खड़े हो गये। पादरी खाली धूपदान हिलाता हुआ स्तुतिमाला पढ़ने लगा। उसकी आवाज़ ऊंची थी और ऐसा लगता था कि कहीं ऊपर से आ रही है। बाड़ से थोड़ी दूर उगे मेपल के पेड़ पर बैठी चिड़ियों की चहचहाहट और तेज़ हो गयी और धूपदान की घंटियां भी उसी स्वर में चहचहाहट का जवाब देने लगीं।

दोरोगोमीलोव पावलिक और वीत्या के बीच में खड़ा हुआ था। वह चेहरा यों ऊपर उठाये था, जैसे कहीं दूर, बहुत दूर, अनंत में देख रहा हो। मेफ़ोदी इतना भावावेश में आ गया था कि कभी-कभी पादरी के साथ वह भी अपने मंद्र स्वर में गाने लग जाता।

जब सभी मृतक से विदा लेने लगे, पादरी ने कढ़े हुए रूमाल को ललचायी आंखों से देखते हुए पूछा,

"यह भी उसके साथ दफ़नाया जायेगा?"

"हां," आनोचका ने झट से जवाब दिया और ताबूत और पादरी के बीच में आकर खड़ी हो गयी।

"सब कुछ उसके साथ जायेगा... सब कुछ..." पाराबुकिन बुदबुदाया और एक ईर्ष्याजनित झटके से उसने रूमाल के कोने से पत्नी का चेहरा ढांप दिया।

यही अंतिम अवसर था, जब आनोचका ने अपनी मां का चेहरा देखा। उसे उस क्षण वह बहुत ही पवित्र, सुखी और किसी अज्ञात शक्ति से अपनी ओर आकृष्ट करती लगी। एकाएक वह आगे लपकी, ताबूत के पास घुटनों के बल बैठी और रूमाल हटाकर मां के हाथ चूमने लगी। धूप में तब तक वे मुलायम और कुछ गर्म हो चुके थे। उसने अंगुलियां उठायीं और होंठों से उनकी पोरों की बेइंतहा बिंधी हुई, मानो अभी भी प्राणवान भीतरी सतह को स्पर्श किया। ये खुरदरी,

मेहनत से जर्जर अंगुलियां हाल ही तक उसके चेहरे को जिस स्नेह और दुलार से सहलाया करती थीं, उसे उसने इतनी तीव्रता से अनुभव किया कि मानो उसमें कोई व्यवधान पड़ा ही न था। वह अपने को उन अंगुलियों से जुदा न कर सकी और उन्हें आंसुओं से भिगोते हुए चूमती गयी, चूमती गयी।

लोगों ने उसे उठाने की कोशिश की। त्स्वेतुख़िन भी झुका। लेकिन सहसा, झटके से वह खुद ही खड़ी हो गयी और ताबूत के पास से हटकर अपने पीड़ा से ऐंठते और मानो सिकुड़े हुए चेहरे को पोंछने लगी।

कब्रिस्तान में प्रायः आनेवाली किसी बुढ़िया ने लोगों को ठेलते हुए आनोचका के पास आकर पूछा,

"तुम्हारी बहन थी क्या?" लेकिन जब मालूम हुआ कि बहन नहीं, मा थी, वह ज़ोर-ज़ोर से बिलख पड़ी: "हाय रे भाग्य! कौन कहता है कि वह मां है! वह तो नवेली दुल्हन से भी सुंदर है! कबूतरनी सी भोली, मासूम है! भगवान उसकी आत्मा को शांति दे!"

पाराबुकिन ने ताबूत ढक दिया और हथौड़े से यों ज़ोर-ज़ोर से कीलें ठोकने लगा कि ठक-ठक सारे कब्रिस्तान के सलीबों के बीच मानो शोखी से गूंज उठी। बाद में एक कब्र खोदनेवाले ने, जो कुछ दूर खड़ा उदासी से यह सब देख रहा था, ज़मीन पर एक रस्से का छल्ला फेंका। उसे खोलकर ताबूत के नीचे डाला गया और फिर ताबूत को कब्र के गढ़े से निकाली हुई ताज़ा मिट्टी के ढेर के ऊपर खींचा जाने लगा।

सहसा मेफ़ोदी सीलिच मज़दूरों जैसे ज़ोर से चिल्लाया,

"दूसरी तरफ़ घुमाओ, दूसरी तरफ़!"

"क्यों?" पाराबुकिन नहीं समझ पाया।

"सलीब किधर होगा? पैरों की तरफ़!"

"क्या मतलब? सलीब सिर की तरफ़ होता है।"

"तुम किसे सिखा रहे हो? मृतोत्थान के दिन जब मुर्दे अपनी कब्रों से खड़े होंगे, तो मुंह सलीब की ओर, पूर्व की ओर होगा। समझे? इसलिए पैरोंवाला हिस्सा सलीब की तरफ़ करो।"

पाराबुकिन ने आपत्ति की। कुछ देर तक वह ज़ोर-ज़ोर से बहस करता रहा। तब मेफ़ोदी ने इधर-उधर नज़र दौड़ायी। लेकिन चूंकि पादरी जा चुका था, इसलिए उसने कब्र खोदनेवाले को ही आवाज़ दी।

"तुम चुप क्यों हो?"

"घुमाओ," कब्र खोदनेवाले ने अनिच्छा से कहा, क्योंकि वह जानता था कि उसकी राय की अहमियत के बावजूद उसे अतिरिक्त कुछ भी नहीं दिया जायेगा।

जब तावूत गढ़े में उतार दिया गया, पाराबुकिन ने पावलिक से बेलचा छीना और इससे पहले कि एकत्र लोग विदास्वरूप एक-एक मुट्ठी मिट्टी कब्र में फेंकें, इतनी तेज़ी और जोश से गढ़े में मिट्टी भरने लगा कि लाल धूल का गुवार उठ गया। वह पागलों की तरह बेलचा चला रहा था। उसके लटके हुए गाल जल्दी ही पीले पड़ गये, छितरी सफ़ेद लटें धूप में और भी सफ़ेद लगने लगीं और माथे से पसीने की धार वह चली।

"अब लाओ, मुझे दो," मेफ़ोदी ने उससे बेलचा लेने की कोशिश करते हुए कहा।

लेकिन पारावुकिन ने बेलचा नहीं छोड़ा। उसकी अंगुलियां मानो ऐंठन से जकड़ गयी थीं और जैसे कि वह किसी से मुकाबला हो रहा हो, और-और तेज़ी से मिट्टी उठाता व फेंकता चला गया। आखिरकार, बेलचा खाली ही चलने लगा और थकावट के मारे पारावुकिन के पैर लड़खड़ाने लग गये।

आनोचका ने आकर उसकी गिरफ़्त से बेलचा छुड़ाया और फिर उसे एक ओर ले गयी, जहां वह एकदम ही ज़मीन पर ढेर हो गया। उसका सिर कब्र के टीले पर टिका हुआ था, सांस जल्दी-जल्दी चल रही थी और सीने से चिपकी गीली कमीज़ के नीचे दिल ज़ोर-ज़ोर से धड़कता दिखायी दे रहा था। निढाल बांहों और भारी, फैले हुए पैरों से भी स्पष्ट था कि वह बुरी तरह थक गया है। सीटी की आवाज़ जैसी सांसों के बीच वह बुदबुदाता जा रहा था,

"अपनी प्यारी ... ओल्गा इवानोव्ना को ... मैंने अपने ही हाथों ..."

आनोचका उसके पास से हटी नहीं। मेपल के निश्चल पत्तों के पार आंखें टिकाये वह लोगों को बारी-बारी से कब्र में मिट्टी भरते देख रही थी। न जाने उसे क्यों ऐसा लगा कि जैसे वह किसी उल्टी दूरवीन से देख रही है और सब कुछ दूर, कहीं दूर घट रहा है... पावलिक के हाथों से बेलचा अब येगोर पावलोविच ने ले लिया है। फिर उसकी

जगह आर्सेनी रोमानोविच आ गया है, जिसकी लंबी, झबरैली लटें माथे पर झूली जा रही हैं। आखिर सबने मिलकर सलीब उठा लिया है और उसका एक सिरा ज़मीन में गाड़ दिया है, जिससे वह छोटा दिखने लगा है। अब फिर सब मिट्टी फेंकने लगे हैं। मेफ़ोदी सीलिच का सिर कभी झुक रहा है, कभी उठ रहा है और चपटी नाक और भी बदसूरत लगने लगी है। गढ़ा अब भर चुका है और उसपर टीला बनाया जाने लगा है। वह धीरे-धीरे, असमान रूप से उठता जा रहा है। एकाएक पेड़ों पर पक्षियों का कोलाहल बढ़ जाता है और पत्तियां हिल उठती हैं, जिससे कब्र कभी छिप जाती है, कभी फिर दिखने लगती है। लोग खोदते जा रहे हैं, लेकिन चूंकि नीचे की मिट्टी गीली है, इसलिए धूल नहीं उठ रही है और सब कुछ चमकीला बन गया है।

पारावुकिन दम ले चुका था। खड़ा होते हुए उसने कहा,

"मैं जा रहा हूं।"

आनोचका ने उसे रोकना चाहा, लेकिन वह बोला,

"नहीं देखना चाहता। बाद में फिर कभी।"

आनोचका नहीं देख पायी कि मेफ़ोदी भी उसके पिता के साथ कहीं गायब हो गया था।

येगोर पावलोविच ने मुरझाये हुए लिलैक कब्र पर चढ़ा दिये। उनसे अभी भी मौत की गंध आ रही थी।

बाद में सब खामोशी से कब्रिस्तान के फाटक की ओर चल पड़े।

ट्राम के स्टाप पर पावलिक ने बहन को बताया कि वह वीत्या के साथ वोल्गा की रेती पर जा रहा है। आनोचका ने जवाब दिया कि नहीं, वह घर चले। तब वीत्या ने कहा कि आर्सेनी रोमानोविच के यहां जायेगा। नहीं, पहले घर जाना है। बेलचा और हथौड़ा कौन लौटायेगा? ठीक है, तो वह सिर्फ़ वीत्या से मिलकर लौट आयेगा। नहीं, पहले घर जाना है, बहन अपनी बात पर अड़ी रही। पावलिक परेशानी में पड़ गया। बहन का कहना तो मानना ही होगा। सबसे पहले उसी ने उसे लिखना-पढ़ना सिखाया था। घर में महत्त्वपूर्ण मसले प्रायः वही हल करती थी। शायद अब वह घर का ज़िम्मा संभाल लेगी? संभवतः, नहीं। बहुत करके वह अपने उस येगोर पावलोविच के साथ थियेटर चलाना चाहेगी और तब उसके पास घर के लिए वक्त थोड़े ही रहेगा!

"घर में अब क्या करना है?"

वही, जो पहले करता था, लेकिन बेहतर ढंग से," बहन ने जवाब दिया।

"मैं कुछ नहीं करूंगा। तुम्हें नहीं मालूम कि जीवन क्या होता है," उसने खीझकर कहा।

आनोचका हौले से मुस्करा दी।

ट्राम जैसे-तैसे चल रही थी। धीरे-धीरे अगले स्टापों पर जान-पहचानवाले उतरते गये। कोई जाते हुए पावलिक से हाथ मिलाता, तो कोई पीठ थपथपाता और कोई अपने से सटाकर बालों को सहला देता। येगोर पावलोविच ने उसकी ठोढ़ी उठाकर हाथ में ली। वेरा निकान्द्रोव्ना ने गाल चूम दिया।

"जैसे कि इसी की कमी थी!" पावलिक ने सोचा।

घर में अहाते में आनोचका की मेफ़ोदी सीलिच और पिता पर नज़र पड़ी। वे अकासिया के पेड़ के नीचे सिर से सिर सटाये बैठे थे और शायद हमेशा की तरह अपनी दार्शनिकता बघार रहे थे। उसने उन्हें अनदेखा कर दिया।

घर में सफ़ाई, वगैरह करनी थी। छोटे कमरे एकाएक काफ़ी खुले-खुले लगने लगे थे। जीवन में पहली बार लगा कि घर में बहुत सी चीज़ें फालतू हैं। उनके लिए नयी जगह ढूंढ़ना ज़रूरी था। लेकिन साथ ही वह उनकी जगह बदल भी नहीं सकती थी। यह कल्पना करना ही कठिन था कि मां की चारपाई को हटा दिया जाये, या जिस कुर्सी पर बैठकर वह सिलाई किया करती थी, उसे कहीं और रखा जाये।

बहुत ही साधारण चीज़ें भी मौत से जुड़कर महत्त्वपूर्ण बन जाती हैं। आनोचका ने अपने को काम में लगाये रखने की कोशिश की, पर हाथ-पैर बार-बार जवाब दे जाते। यादें उसकी संकल्पशक्ति छीन लेतीं। सहसा उसने पाया कि वह हाथ में लाल-लाल बुंदियोंवाली एक कतरन पकड़े है। यह उन अनगिनत कतरनों में से थी, जो कटिंग के बाद बाकी रह जाती थीं। आनोचका उस कतरन को पकड़े, निश्चल खड़ी, खिड़की से बाहर देखने लगी। उसे याद आया कि उसी कपड़े की दूसरी कतस उसने मां के अंगूठे पर बांधी थी, जो सूई चुभने से पक गया था। ओल्गा इवानोव्ना का यह अंगूठा बहुत दिनों तक ठीक नहीं हो पाया था। वह

किस हाथ का था? दायें हाथ का? नहीं, बायें हाथ का। मां के लिए तब मशीन पर सूई के नीचे कपड़ा दबाये रखना भी मुश्किल हो गया था। आनोचका उस कतरन को कूड़े में न फेंक सकी। उसने उसे एक किताब में रख लिया। फिर उसकी नज़र दीवार पर टंगे एक चित्र पर पड़ी, जिसका रंग अब हल्की गुलाबी राख जैसा हो गया था और जिसे वह बचपन से ही देखती आयी थी। यह चित्र उसे हमेशा चकित किया करता था। मां कुर्सी पर बैठी हुई थी। उसने फ़र्श तक झूलती चौड़ी स्कर्ट पहनी हुई थी और गोद में टेढ़े पांवोंवाली एक नन्हीं बच्ची को बिठाया हुआ था। यह आनोचका की बहन थी, जो बचपन में ही मर गयी थी। मां की बगल में छोटा कोट व चौड़ी पतलून पहने पिता खड़े थे। उन दिनों वह रेलवे इंस्पेक्टर हुआ करते थे। आनोचका उनके इस रूप से अपरिचित थी। जहां तक उसे याद था, उसने उन्हें खलासी की हथकरघे के कपड़े की कमीज़ या बाद में जब वह हल्के-फुल्के काम खोजने लगे थे, तोलस्तोयी कमीज़ में ही देखा था। चित्र में सबकी पुतलियों की जगह पर छोटे से नुक्ते बने थे, जैसे कि किसी ने उनमें पिन चुभो दी हो।

सहसा आनोचका को खयाल आया कि घर में टक-टक की चिर-परिचित आवाज़ नहीं सुनायी दे रही है। उसने ऊपर घड़ी पर झांका। वह रुकी हुई थी। सूइयां लगभग मिली हुई तीन बजकर सत्रह मिनट का समय दिखा रही थीं। उसने झिझकते हुए पूछा,

"पावलिक, हो सकता है, फिर से चला दें?"

वह शायद ऐसा सवाल पूछे जाने को तैयार न था, इसलिए तुरंत उत्तर न दे पाया। उसने इतना ही पढ़ा था कि घर में अगर किसी की मौत हो जाये, तो घड़ी रोक देनी चाहिए। फिर कब चालू दिया जाये, इस बारे में किताब में कुछ नहीं कहा हुआ था। शायद हमेशा के लिए ही रोक दिया जाता है। आखिर आदमी भी तो हमेशा के लिए मर जाता है!

"कुछ भी हो, यह समय तो हम कभी भूलेंगे नहीं," आनोचका ने सूइयों पर देखते हुए कहा।

पावलिक फिर भी कुछ न बोला।

"जा, मालूम कर कि कितना बजा है," बहन ने हुक्म दिया।

वह पड़ोसियों के पास भागा। आनोचका ने उसकी अनुपस्थिति में ही पेंडुलम चला दिया।

लेकिन फिर भी वह सब कुछ अकेले ही तय नहीं कर सकती थी। वह पिता के पास गयी।

पाराबुकिन एक पुराने ठूंठ पर ठुके हुए तख्ते पर बैठा था। पास ही मेफ़ोदी सीलिच खड़ा हुआ था। शायद दोनों में बहस हो गयी थी। दोनों की एक दूसरे को ऊट-पटांग, चक्कर में डालनेवाले सवालों से परेशान करने की आदत थी, लेकिन वे झगड़ते कभी नहीं थे और एक दूसरे के बिना नहीं रह सकते थे। कई साल पहले एक ही सीढ़ी पर उनकी मुलाकात हुई थी – मेफ़ोदी नीचे उतर रहा था और पाराबुकिन ऊपर चढ़ रहा था: एक अपनी पियक्कड़ी की वजह से बार-बार थियेटर से निकाला जा रहा था और दूसरा बीमारी के बाद से पिलाई कम करने लगा था और कभी कहीं, तो कभी कहीं नौकरी खोजकर अपनी किस्मत आज़मा रहा था। तब से दोनों जहां के तहां ही अटके हुए थे। बेशक पिछले कुछ महीनों से तीख़ोन प्लातोनोविच को रोज़गार मिला हुआ था और इससे उसकी हालत अपने दोस्त से कुछ बेहतर हो गयी थी।

उसने कुछ खिसककर बेटी को इशारा किया कि वह बैठ जाये।

लेकिन आनोचका बैठी नहीं।

"मैं सिर्फ़ यह पूछने आयी थी कि मांवाली चारपाई अगर पावलिक को दे दें, तो कैसा रहेगा। उसकी अपनी चारपाई छोटी पड़ने लगी है।"

"मैं भी यही सोच रहा था। मदद चाहिए क्या?"

"नहीं। मैं और पावलिक खुद कर लेंगे," आनोचका ने कहा और चली गयी।

पाराबुकिन उसके पीछे देखते और सिर हिलाते हुए बोला,

"अपनी मां, ओल्गा इवानोव्ना पर गयी है। वैसी ही नाज़ुक और बेचैन। बेशक थोड़ी-बहुत मुझ जैसी भी है: सब कुछ अपनी मर्ज़ी के मुताबिक चाहती है। खतरनाक खून है।"

"अगर तुम्हारे जैसी है, तो आसार अच्छे नहीं," मेफ़ोदी ने जवाब दिया। "एक सुख हाथ न लगा, तो पागल जैसे दूसरे के पीछे लपकेगी। बेशक अगर स्वाभिमान आड़े न आया। देखा अपनी मां को पादरी से कैसे दूर रखा था! दोस्त मेरे, मौत आदमी के लिए

वहुत वड़ी चोट है और कोई भी प्रार्थना इसमें मदद नहीं करती।"

"तुम मुझे उस प्रार्थना के लिए उलाहना देना चाहते हो? पादरी के सुर में सुर मिलाकर मैं गा रहा या तुम?"

"यह तो मेरी यादें थीं, मैं नहीं। मेरे रूप में मेरा अतीत गा रहा था," मेफ़ोदी ने धूर्तता का सहारा लिया।

"अपने को माफ़ कर सकते हो, पर मुझे नहीं, है न? मैंने पादरी को क्यों वुलाया था? स्वर्गीया पत्नी के सामने प्रायश्चित्त करने के लिए। उसकी याद के सम्मान में।"

"भगवान से डर गये?"

"वेकार झगड़ा क्यों करें!" पारावुकिन ने उदास स्वर में कहा। "कितनी वार हमारे वीच इस वात पर वहस हो चुकी है। तुम्हें क्या मेरे सपने मालूम नहीं?"

"ये सपने भी वही भगवान हैं!" मेफ़ोदी ने खुशी से उछलते हुए कहा और पारावुकिन की वगल में जा वैठा। "सपना कभी पहुंच के भीतर नहीं आता और अगर आ जाता है, तो सपना नहीं रहता। विल्कुल भगवान जैसे। जब तक नहीं देखा, भगवान है। देख लिया, वस कुंदा या वुत रह जायेगा।"

"तुमने ही तो कहा था कि आदमी सपनों के बिना नहीं रह सकता," पारावुकिन वुरा मान गया।

"हां, कहा था। लेकिन सपना धरती पर नहीं लाया जा सकता। ज्यों ही तुम उसे किसी चीज़ में, महसूस की जानेवाली चीज़ में वदलोगे, वह कुंदा वन जायेगा। समझे न?"

"कुंदा तुम खुद हो।"

"सही कहा। दार्शनिकों की भाषा में, एक फलीभूत सपना।"

"छोड़ो यह दार्शनिकों की भाषा! आदमी में जो कुछ भी अच्छा है, सपना है। यही कहा था न तुमने? इसलिए अगर सपने भगवान हैं, तो मुझे भगवान होना चाहिए। यानी मैं सर्वशक्तिमान हूं – नयी दुनिया वनाना चाहूं, वना सकता हूं। यही कहा था न तुमने? तो, दार्शनिक महाशय, मेरा सिर न खाओ। मेरे वच्चे हैं और मैं उनके सामने कसूरवार हूं। मुझे उनपर दया आती है। इसलिए मैं आस्तिक वने विना नहीं रह सकता।"

पारावुकिन उठा और अकासिया का तना पकड़कर उसे हिलाया, जिससे कुछ पीले फूल झड़ गये। मेफ़ोदी चुनौतीभरी अधमुंदी आंखों से उसे देख रहा था।

"अगर तुम ऐसे भगवान हो, तो क्यों ओल्गा इवानोव्ना की याद में अंत्येष्टि भोज नहीं देते? रूसी ढंग से। ठोस रूप में।"

पारावुकिन सिहर गया। फिर एकाएक घिघियाते हुए बोला,

"तुम मेरे दोस्त हो न? तो क्यों मेरा दुख हल्का नहीं करते? मेरे अंदर हर चीज़ रो रही है।"

"ठीक है। यहीं इंतज़ार करो।"

मेफ़ोदी सीलिच दृढ़ता से डग भरता कहीं चला गया और पारावुकिन, जो अब अकेला रह गया था, हाथों से मुंह ढांपे फिर तख्ते पर वैठ गया।

मेफ़ोदी अब जीवन में उसका गुरु था और उसकी महत्ता उसकी सेमिनरी की शिक्षा और रग-रग में घुले संशयात्मकता के उस विष पर आधारित थी, जो तेज़ाव की तरह पत्थर को भी खा जाता है। दूसरी ओर, पारावुकिन दुनिया को वड़े व्यावहारिक ढंग से वना मानता था, इतने व्यावहारिक ढंग से कि उसमें कमियां ढूंढ़ पाना हर ऐरे-गैरे के बस की वात नहीं थी। उसके अनुसार, भाग्य ने उस जैसे लोगों को जीवन की मशीन की पेचीदगियों को सुलझाने की योग्यता से वंचित किया हुआ था। ऐसे लोगों का स्प्रिंग वहुत छोटा था। लंबे स्प्रिंगवाले लोग समय की दौड़ में कभी पीछे नहीं रहते। लेकिन पारावुकिन के स्प्रिंग की चाभी वहुत जल्दी खत्म हो जाती थी: अपने सौभाग्य तक हाथ बढ़ाने के लिए वह ताकत जुटाता ही था कि चाभी खत्म हो जाती थी। क्रांति के वाद की घटनाओं से उसने यह मतलव लगाया कि जीवन की मशीन सरल वन जायेगी और छोटे स्प्रिंगवाले लोग भी जो चाहते हैं, उसे पा सकेंगे। उसे अपने को नये सिरे से ढालने की वात सूझी भी नहीं। उसका विश्वास था कि वह विना किसी हेर-फेर के ही नयी दुनिया में फिट हो जायेगा। उसे लगता था कि उसके जैसों के लिए ही सभी परिवर्तन किये जा रहे हैं। मगर वह वेशरम आदमी न था। उसकी अंतरात्मा उसे प्रायः कचोटती रहती थी।

इसलिए ज्यों ही मेफ़ोदी गया, पारावुकिन अमूर्त बातों के चक्कर

में पड़ने के वजाय दुनियादार आदमी की तरह अपनी मौजूदा स्थिति के वारे में सोचने लगा। ओल्गा इवानोव्ना की मृत्यु से उसका स्प्रिंग और छोटा हो गया था। अगर वह इस समय वेरोज़गार हो जाये, तो खाने के भी लाले पड़ जायेंगे। कहां तो वह ओल्गा इवानोव्ना पर वोझ वना हुआ था, कहां अब खुद उसपर दो वच्चों का वोझ आ पड़ा है। ठीक है कि आनोचका ने पढ़ाई पूरी कर ली है और उससे मदद की उम्मीद की जा सकती है। लेकिन पावलिक? अगर उसकी उम्र वारह साल भी होती, वह उसे पंद्रह वर्ष का बताकर कहीं, शायद अपने पुरानी चीज़ों के विभाग में ही, काम पर लगवा देता। वहां, मिसाल के लिए, लावारिस और छीनी हुई किताबों का गोदाम है, जिसमें किशोर लड़कों को अनावश्यक कितावें छांटने पर लगाया जाता है। जिल्दें जूता उद्योग को भेज दी जाती हैं, कोरे पन्ने दफ़्तरों को और छपे हुए पन्ने लिफ़ाफ़े बनाने के लिए। काम मामूली ही है, लेकिन राशन बड़े आदमी जितना मिलता है। आखिर, तीख़ोन प्लातोनोविच अपनी अकेले की तनख्वाह से उसका भी पेट कितना भर पायेगा!

ऐसी दुनियादारी की वातों ने पारावुकिन को दुखी कर दिया और मन पहले से भी भारी हो गया।

वह वड़ी मुश्किल से मेफ़ोदी का इंतज़ार कर सका। आखिरकार जव वह लौटा और पारावुकिन ने उसका थका व मायूस चेहरा देखा, तो उसके मुंह से कराह निकल गयी। उसका जिगरी दोस्त खाली हाथ लौटा था।

"अव तुम वैठो," धक्के से संभलकर पारावुकिन बोला और तेज़ी से व लंवे-लंवे डग भरता घर की ओर चल पड़ा।

आनोचका अव तक अपने ऊपर कावू पा चुकी थी और काफ़ी काम निवटा चुकी थी। खिड़कियों से आती धूप में धूल के सुनहरे कण चमक रहे थे। पावलिक चाकू से एक स्याहीदान की सूखी स्याही खुरच रहा था। दूसरे कमरे से झाड़ू देने की आवाज़ आ रही थी। ओल्गा इवानोव्ना की चारपाई खोलकर दरवाज़े की चौखट के सहारे रखी हुई थी। हर कहीं विस्तर के कपड़े विखरे हुए थे।

"मैं मदद कर देता हूं, वेटी," पारावुकिन वोला।

"ठीक है। कंवल उठाकर वाहर टांग दें। पावलिक को मालूम

है कि डोरी कहां रखी है। पर खिड़की के सामने ही टांगें, ताकि दिखायी दे सकें।"

पिता ने बाहर जाकर डोरी का एक सिरा खिड़की की नक्काशीदार चौखट से बांधा और दूसरा सिरा अहाते में खड़े एक पुराने बत्ती के खंभे से और फिर जब देखा कि ठीक से तन गयी है, पावलिक के साथ उसपर कंबल लटकाने लग गया। लेकिन जल्दी ही वह काम में टालमटोल दिखाने, बेमतलब कमरे में रुकने, कपड़े उलटने-पलटने और पावलिक को डोरी से एक चीज़ उतार लाने व दूसरी चीज़ लटकाने के लिए भेजने लगा।

एकाएक पावलिक ने, जो बाहर अहाते में था, खिड़की का कांच खटखटाते हुए बहन को आवाज़ दी:

"देख, पिताजी कुछ ले गये हैं!"

आनोचका दरवाज़े की ओर दौड़ी और देखा कि पिता मां की चारखानेदार ऊनी जैकेट में कोई चीज़ लपेटकर बगल में गठरी की तरह दबाये सीधे फाटक की ओर लपक रहे हैं। पाराबुकिन आधा अहाता पार कर चुका था, जब उसे लगा कि उसका पीछा किया जा रहा है। भारी और लंबे डग भरता वह भागा।

लेकिन आनोचका ने लगभग कोई आहट न करते हुए तेज़ी से दौड़कर उसके पहुंचने से पहले ही फाटक बंद कर दिया और उसपर पीठ टिकाकर खड़ी हो गयी।

पिता और बेटी आमने-सामने खड़े थे।

आनोचका ने झपट्टा मारकर जैकेट का पल्ला उलट दिया। जैकेट में लकड़ी के ढक्कनवाली सिलाई मशीन लिपटी हुई थी। आनोचका ने ढक्कन का हत्था अपनी ओर खींचा।

"हो गया, हो गया," पिता ने धीमी आवाज़ में कहा।

लेकिन वह हत्था खींचती जा रही थी। पाराबुकिन ने पीछे हटने की कोशिश की और घबड़ाहटभरी मुस्कान से कांपते होंठों से बुदबुदाया,

"तुम डर क्यों गयी? मैं तुम्हारा दुश्मन हूं क्या?"

अब तक पावलिक भी पहुंच चुका था और आंसूभरी आंखों से, जो धूप की चमक से सुनहरी लग रही थीं, पिता को देख रहा था।

"मैंने कुछ ही दिनों के लिए तो लिया है, जमानत के वास्ते...

बेचने की तो सोची भी न थी... मां की याद जो है," पारावुकिन ने दयनीयता से कहा।

आनोचका फिर भी न वोली और हत्थे को दोनों हाथों से पकड़े रही। वाद में दांतों के बीच भिंचे होंठ खोलते हुए सिर्फ़ इतना कहा,

"पावलिक, पिताजी का हाथ पकड़।"

"मैं खुद वापस ले जाता हूं। वह छोटा है, गिरा देगा," पारावुकिन ने मानो हार मान ली।

लेकिन आनोचका ने एक तेज़ और क्रोधभरे झटके से पिता के हाथ से मशीन छुड़ा ली। उसकी दुवली वाहें मशीन का वोझ मुश्किल से संभाल पायी।

"घर ले जा," उसने भाई से कहा। पावलिक कमान जैसे झुका हुआ और दूसरे, फैले हुए खाली हाथ को अपने छोटे-छोटे, तेज़ कदमों की लय में हिलाता हुआ, जैसे कि पानी से भरी वाल्टी ले जाते हैं, मशीन को वापस ले गया।

आनोचका ने पिता की ओर देखे विना ज़मीन से जैकेट उठायी और उसकी धूल झाड़ी।

पारावुकिन बुरा मानते हुए और साथ ही अक्खड़ता से वोला,

"तुम क्या चाहती हो? मुझे बदलना? तुम्हारी मां तो बदल नही सकी!"

"मैं कोशिश करके देखूंगी," आनोचका ने रूखा सा जवाव दिया।

उसका गुस्सा ठंडा हो गया था। धीमे और हल्के कदमों से वह वापस घर की ओर चल दी।

अकासिया की झाड़ियों के पीछे दम साधे उकड़ूं बैठा मेफ़ोदी मीलिच उसे देख रहा था।

१४

ओज़नोविशिन लीज़ा के पलंग के पास बैठा हुआ था। उसके चेहरे पर वारी-वारी से चिंता, भय, आभार और हर्ष के भाव प्रकट हो रहे थे। इनमें सबसे प्रवल हर्ष का भाव था, जिसकी वजह से वह

कभी-कभी यों बच्चों जैसे खिल उठता कि लीज़ा अपनी कमज़ोर आवाज़ में कह बैठती: "कितने हास्यजनक लग रहे हो!"

कभी वह अत्यन्त श्रद्धापूर्वक लीज़ा का कंबल ठीक कर देता, तो कभी अपने हाथ मलने लग जाता, जो मरदाना कम, ज़नाना ज़्यादा मालूम होते थे। उसे संतोष था कि उसके सिर के ऊपर और हृदय में उठे दो तूफ़ानों – उसकी गिरफ़्तारी और लीज़ा की बीमारी – के गुज़र जाने के बाद शांति छा गयी है।

जब उसे मालूम हुआ था कि लीज़ा बीमार पड़ी है, उसने सोचा था कि वह शायद ही बच पायेगी। लेकिन अब उसकी हालत सुधरती जा रही थी। वह उसकी आंखों की स्थायी चमक से यह देख सकता था। फिर सबसे खास बात तो यह थी कि वह उसे देखकर खुश हुई थी। उसे उसके एकाएक गायब हो जाने की खबर सुनकर बड़ी पीड़ा पहुंची थी और बाद में भी वह इस चिंता से घुलती गयी थी कि उस भयंकर जेल में उसपर न जाने क्या गुज़र रही होगी, जहां उसे शायद उसकी, लीज़ा की वजह से ही बंद किया गया है। लीज़ा के मुंह से यह सुनकर कि उसकी चिंता के कारण वह अपनी बीमारी भी भूल गयी थी, ओज़्नोबिशिन का हृदय द्रवित हो उठा। किसी पुरुष को लेकर नारी के यों तड़पने का मतलब भला कौन नहीं जानता? क्या यह आश्चर्य और प्रशंसा की बात न थी कि जब उसका अपना जीवन अधर में लटका हुआ था, उसकी आत्मा उस पुरुष के लिए इतना तड़प रही थी कि उसने अपना नन्हा बेटा उसे खोजने के लिए भेजा, न कि डाक्टर को बुलाने के लिए?

उस ठंडी रात में वीत्या ने अंधेरे में भटकते हुए न जाने कितने दरवाज़े खटखटाये होंगे, ताकि ओज़्नोबिशिन के घर का पता मालूम हो सके। जवाब में या तो घोर चुप्पी मिली, या फिर गालियां और फटकारें, या फिर ऐसे संदेहभरे सवाल कि वह कौन है, क्या चाहता है, वगैरह-वगैरह। ओज़्नोबिशिन को कोई नहीं जानता था, क्योंकि वह कुछ ही समय पहले उस मुहल्ले में आकर रहने लगा था।

इस तरह वीत्या एक दरवाज़े से दूसरे दरवाज़े तक, एक खिड़की से दूसरी खिड़की तक दौड़ता, अंधेरे में घंटियों की डोरियां टटोलता या बंद फाटकों को एड़ियों से पीटता रहा था। उसे ज़रा भी डर नहीं

लगा था, या कहें कि डर पीछे छूट गया था – पीछे, जहां मां बिस्तर पर पड़ी हुई थी और मुंह से खून उगल रही थी। अगर वह उसे रात में बाहर भेजते नहीं डरी, तो इसका मतलब यही हो सकता था कि ओज़्नोबिशिन ही खून का बहना रोक सकता है। वह पसीने से तर-बतर घर लौटा था और अपनी नाकामयाबी की वजह से यों थरथरा रहा था कि मां डर गयी और उससे माफ़ी मांगने लगी।

दूसरे दिन उसने वीत्या को नोटरी दफ़्तर भेजा, जहां वह खुद और अनातोली मिखाइलोविच काम करते थे। लेकिन उस रोज़ ओज़्नोबिशिन कान पर नही आया था। उसने वीत्या को दोबारा दफ़्तर भेजा कि जाकर ओज़्नोबिशिन का ठीक-ठीक पता मालूम करे और वहां से सीधे उस पते पर जाये। पर वीत्या और भी अजीब खबर लाया: अनातोली मिखाइलोविच रात घर नहीं लौटा था। तब लीज़ा ने वीत्या के हाथ अपने साथ काम करनेवाली एक औरत को पर्ची भेजी कि ओज़्नोबिशिन के रिश्तेदारों से उसका पता मालूम कर दे। लेकिन जवाब आया कि अनातोली मिखाइलोविच के रिश्तेदारों को कोई नहीं जानता।

मेरकूरी अव्देयेविच ने इस सारी खोज-पड़ताल को विद्वेष व आशंका की दृष्टि से देखा था। उसने तरह-तरह की बातें बनाकर लीज़ा को समझाने की कोशिशें कीं कि यह सारी दौड़-धूप बेकार है: ज़माना खराब है और कुछ भी हो सकता है। नाहक लड़के को शहर में दौड़ाते फिरने की क्या ज़रूरत है? एक ओर तो लीज़ा उसे बाज़ार भी नहीं भेजने देती और, दूसरी ओर, अब रात में दौड़ा रही है, जबकि खुद नहीं जानती कि कहां। और फिर यह ओज़्नोबिशिन चाहिए किसलिए? कौन लगता है वह लीज़ा का? पति? मंगेतर? उससे शादी करने का इच्छुक या...

"इसका ताल्लुक सिर्फ़ मुझसे है। वह मेरा दोस्त है," लीज़ा ने बीच ही में टोक दिया।

"अगर दोस्त है, तो खुद आ जायेगा। उसकी दोस्ती की परीक्षा भी हो जायेगी।"

"मैं प्रार्थना करती हूं कि खोजने में मदद कर दो!"

वह समझ गया कि विरोध करना बेकार है।

लेकिन यह कबूल करते ही कि उसने रात में गश्ती दल को ओज़्नोबिशिन को हिरासत में लेते देखा था, उसे स्पष्ट हो गया कि बेहतर होता अगर मुंह बंद रखता। लीज़ा तो मानो होश-हवास ही खो बैठी। उसने एलान किया कि खुद उसे खोजने जायेगी, कि अगर उसकी मदद नहीं करना चाहते, तो इसका मतलब है कि उसे सताना चाहते हैं। और सचमुच साफ़ दिखायी दे रहा था कि वह कितनी भी तकलीफ़ सह लेगी, लेकिन ओज़्नोबिशिन को खोजने की कोशिश नहीं छोड़ेगी।

बहुत ही डरते-डरते मेश्कोव पुलिस चौकियों में मालूम करने लगा कि गिरफ़्तार अनातोली मिख़ाइलोविच कहां हो सकता है। आखिर-कार उसने सावधानी से अपनी बेटी को बताया कि वह हाजत में है। हाजत का मतलब क्या है? जेल। लीज़ा को इस खबर से धक्का भी लगा और खुशी भी हुई। अंधेरे में रहना उसके लिए इस कष्टकर सत्य से कहीं ज़्यादा असह्य सिद्ध हो रहा था। उसने पिता से कहा कि वह उसे चूम लेती, अगर उसे किसी को चूमने का हक होता। यह कथन इस बात की कटु स्वीकृति था कि वह गंभीर रूप से बीमार है।

लेकिन तब उसपर नया फ़ितूर सवार हो गया – जैसे भी हो, जेल में ओज़्नोबिशिन को सहारा देना है। पता चला कि कोई हानि न होगी, अगर वीत्या घर में पड़ी पुरानी, बेकार चीज़ें बाज़ार में जाकर बेचे और बदले में चीनी और चर्बी लाये, अगर ये चीज़ें ओज़्नोबि-शिन को पहुंचाने के लिए बाद में जेल के फाटक पर लाइन में खड़ा रहे, अगर ओज़्नोबिशिन को उसकी कठिन घड़ी में ढाढ़स बंधाने के लिए और कुछ भी कर सके: वीत्या अब बड़ा हो गया है और उसे समझना चाहिए कि दूसरों की भलाई करना उसका कर्त्तव्य है।

मेश्कोव अपने आपसे बड़बड़ाता रहा कि पिता के लिए तो मामूली सा काम भी झंझट समझा जाता है, जबकि इस ओज़्नोबिशिन के लिए अपनी कोख से जन्मे बच्चे पर भी दया नहीं दिखायी जा रही। लेकिन क्या वह खुद ही उनके लिए दुआएं नहीं मांगता रहा था, जो "दूर सागरों में हैं, पराये मुल्कों की खाक छान रहे हैं, बीमार हैं या कैद में हैं"? और इसमें कोई शक नहीं था कि उसकी बेटी जिसके लिए इतनी परेशान थी, वह कैद में था। मेरकूरी अव्देयेविच को मन मारकर स्थिति से समझौता करना पड़ा।

केवल अब भावविह्वल अनातोली मिखाइलोविच को देखकर ही लीज़ा अपने उपकार के महत्त्व को पूरी तरह से आंक पायी। ओज़्नोविशिन ने बताया कि पहली बार जब उसे जेल की कोठरी में लीज़ा की भेजी चीज़ें मिली थीं, वह रो पड़ा था और उसे एकाएक लगा था कि साथ-साथ बितायी हुई वह अविस्मरणीय शाम उन दोनों के लिए ही संयोग न थी।

"वहां आपके साथ कैसी गुज़री? बताइये भी!" ओज़्नोविशिन के मन की गहराइयों में पैठने की कोशिश करते हुए लीज़ा ने पूछा।

"ओह, लीज़ा!" उसने अपने भद्दे, नीचे की ओर चौड़े धड़ को भुलाते हुए गहरी सांस ली, मानो ऐसी बातें उसके लिए तकलीफ़देह हों।

"बहुत खराब क्या?"

"ओह, लीज़ा! भगवान का शुक्र है कि सब खत्म हो गया है।"

"लेकिन क्या खत्म हो गया? बताते क्यों नहीं? मना किया हुआ है क्या?"

"नहीं, कुछ भी हो, आपको तो मैं बता ही देता। लेकिन इस ममय नहीं। फिर कभी।"

"बेचारे! कितनी तकलीफ़ झेली है!"

"तकलीफ़ तो आपकी वजह से हुई थी।"

"नहीं, नहीं, मैं कौन होती हूं! मगर आप..."

"मेरे साथ सब अच्छा गुज़रा, बहुत ही अच्छा। एक होशियार और, शायद, समझदार आदमी ने मदद कर दी। लेकिन, फिर भी... यह सोचकर ही दम निकल जाता था कि किसी भी समय तुम्हें कसूरवार ठहरा सकते हैं, सज़ा दे सकते हैं, जबकि कसूर कोई न था। कोई नहीं! आप मेरा विश्वास करती हैं न?"

"कि आप बेकसूर हैं? बेशक बेकसूर हैं! आपने किसी का क्या बिगाड़ा है?" लीज़ा ने कहा और आंखें दूसरी ओर फेर लीं, जैसे कि उससे ओज़्नोविशिन की बातें ध्यान से न सुनने का अपराध हो गया हो।

"कौन था यह आदमी? कोई बोल्शेविक?" उसने पूछा।

"शायद। उम आयोग का सदस्य, जो मेरे मामले की छानबीन

कर रहा था। मैं उसका नाम नहीं जानता। पर मालूम हो जायेगा। उसने ठीक से छानवीन की और स्वाभाविकत: कुछ नहीं पा सका।"

"वह छानवीन किस वात की कर रहा था?"

"कैसे वताऊं... मामला एक भूतपूर्व ज़ारशाही अधिकारी का था! जैसे कि मैं जानबूझकर ज़ार के ज़माने में पैदा और वड़ा हुआ था," ओज़्नोविशिन ने खिसियाते हुए कहा। "लेकिन आखिरकार विश्वास हो गया कि मैं तो छोटी सी मछली हूं। जाल डाला था वड़ी मछली के लिए, लेकिन फंसी नन्हीं सी।"

लीज़ा ने उसे हैरत से देखा, फिर हौले से मुस्करा दी।

"जाल नन्हीं मछली के लिए भी तो डाल सकते हैं।"

"अफ़सोस की वात होगी। तव सिद्ध करना होगा कि मैं कीड़ा हूं।"

वह गंभीर हो गयी। एकाएक उसके मन में ओज़्नोविशिन को वेहतर जानने की इच्छा जगी। उसे लगता था कि चूंकि उसने ओज़्नोविशिन के प्रति अपनी नवजात भावना को सहर्ष प्रोत्साहित किया है, इसलिए वह उसे अच्छी तरह जानती है और वहुत सी चीज़ों के वारे में वैसे ही सोचती है, जैसे कि वह।

ओज़्नोविशिन के साथ अपने संवंधों के इतिहास को वह दो दौरों में बांटती थी। पहला लंबा और काफ़ी हद तक घटनाहीन दौर था और दूसरा छोटा, मगर एकाएक उस कदम की ओर ले जानेवाला, जिसने, कम से कम कहने के लिए, उसके भविष्य को पूरी तरह पूर्वनिर्धारित कर दिया था।

अतीत में लीज़ा की ओज़्नोविशिन से मुलाकात कभी-कभार ही होती थी – साल में बस एक-आधा वार, किसी दुकान में, वुलवार पर या किसी चैरिटी समारोह में। आम तौर पर वह झुककर, असाधारण विनम्रता का प्रदर्शन करते हुए अभिवादन भर कर देता था। एक वार लीप्की वुलवार पर उसने देखा कि वह बड़े गौर से उसे ताक रहा है। यह उसे अच्छा नहीं लगा और शायद वह भी उसकी नाराज़गी को भांप गया, क्योंकि अगली वार उसने वहुत औपचारिक ढंग से ही अभिवादन किया। उसे यह भी अच्छा नहीं लगा और वह मन ही मन हंस पड़ी: "देखो, तो कितना नकचढ़ा है!" इसके वाद वह लंवे अरसे तक नहीं दिखायी पड़ा।

उनकी अगली मुलाकात तब हुई, जब लीज़ा अपने पति को छोड़ चुकी थी। यह मुलाकात सड़क पर और बहुत ही हास्यजनक परिस्थितियों में हुई। लीज़ा दवाइयों की दूकान से निकली ही थी कि उसके हाथ का एक बंडल एकाएक खुल गया और शीशियां, डिब्बे, पैकेट, सभी सड़क पर बिखर गये। वसन्त के उन दिनों में बर्फ़ गल रही थी, इसलिए सभी चीज़ें कीचड़ से सन गयीं। हाथ में दूसरे भी कई बंडल होने के कारण लीज़ा को गिरी हुई चीज़ों को उठाने में कठिनाई हो रही थी। तभी ओज़्नोविशिन उसकी मदद को आ गया। अखबारों के स्टाल से एक अखबार खरीदकर उसने चीज़ें उसमें लपेटीं और कहा कि अगर एतराज़ न हो, तो वह लीज़ा को घर तक पहुंचाने चल सकता है। वह उस समय बड़ी प्रसन्न मुद्रा में था और सारे रास्ते मज़ाक करता रहा कि अब तो उसे लीज़ा के सौंदर्य-श्रृंगार का रहस्य मालूम हो गया है, पता चल गया है कि वह क्या चीज़ें पसंद करती है, कि उसकी प्रिय सुगंधि को कभी नहीं भूलेगा (यूडीकोलोन की एक बोतल चिटक गयी थी और जल्दी ही सारे अख़बार से मिन्योनेट की सुगंध आने लगी थी)। शायद इसलिए कि मार्च की धूप खिली हुई थी और हवा में गलती हुई बर्फ़ की मादक गंध समायी हुई थी, लीज़ा को अनातोली मिख़ाइलोविच की बातों की विनोदकारी सादगी ही नहीं, उसके शरीर की विचित्रता भी अच्छी लगी, जो छोटी बाहों, लंबे धड़ और भारी पांवों के कारण कंगारू जैसा लगता था।

दोनों मित्रों की तरह जुदा हुए। बाद में उसने उसे क्रांति से ठीक पहले एक बार फिर देखा। शुब्निकोव से उसके तलाक का मामला लंबा खिंच रहा था। उसने ओज़्नोविशिन से कोई अच्छा वकील बताने का अनुरोध किया, क्योंकि वीक्तोर सेम्योनोविच धर्म-परिषद और अदालत में उसके हर कदम को पहले से भांपकर संबंध-विच्छेद में रुकावटें डालता जा रहा था। ओज़्नोविशिन ने कई वकीलों के नाम बताये और महानुभूतिपूर्ण व कामकाजी ढंग से खुद भी कई सलाहें दीं। क्रांति के बाद ऐसी सलाहें बेकार हो गयीं, क्योंकि अब एक पक्ष की प्रार्थना पर भी विवाह-विच्छेद हो सकते थे और स्त्रियों को स्वतंत्र व पुरुषों का समकक्ष घोषित कर दिया गया था। जो नया, अश्रुतपूर्व

कानून बना था, उसमें कहा गया था कि कानून साथ रहने या अलग होने की पति-पत्नी की इच्छा में हस्तक्षेप नहीं करता और ज्यों ही पति-पत्नी चाहेंगे, वह दोनों में से किसी भी अवस्था को कानूनी मंजूरी प्रदान कर देगा।

फिर जब गृहयुद्ध का कठिन ज़माना शुरू हुआ और दूसरे लोगों की तरह लीज़ा के लिए भी कहीं नौकरी करना ज़रूरी हो गया, उसने ओज़्नोबिशिन को बताया कि वह नौकरी की खोज में है। इस बार भी उनकी मुलाकात संयोगवशात् हुई थी। ओज़्नोबिशिन सरकारी अधिकारी की वर्दी अरसा हुए त्याग चुका था और किसी ऐसी जगह नौकरी की जुगाड़ बिठाना चाहता था, जहां उसके पब्लिक प्रोसीक्यूटर कार्यालय के फ़्रॉक कोट को कोई याद न कर सके। अस्थायी तौर पर वह सहायक नोटरी के पद पर काम कर रहा था और लीज़ा को भी उसने अपने ही दफ़्तर में नौकरी करने का सुझाव दिया। इस नौकरी में बेशक कोई रुमानियत नहीं थी, लेकिन अप्रकट और सारत: दफ़्तरी होने के कारण निरापद अवश्य थी। उसपर काम करनेवाले से कोई ऊंचे तकाज़े नहीं किये जा सकते थे: बस बैठकर शहर के छोरवर्ती या बाहरी इलाकों में स्थित मकानों के बैनामा बनाते रहो, जिनके तखमीने निजी संपत्ति के लिए सरकार द्वारा निर्धारित सीमा से ज़्यादा नहीं होने चाहिए, या फिर पतियों द्वारा पत्नियों को दिये हुए मुख्तार-नामों की तसदीक करते रहो। मेरकूरी अव्देयेविच भी सहमत था कि नोटरी दफ़्तर की नौकरी हर तरह से निरापद है। अत: लीज़ा वहीं काम करने लगी।

यहां अनातोली मिख़ाइलोविच से उसकी मुलाकात रोज़ाना होती। वह ऐसी छोटी-छोटी बातों से उसका ध्यान आकृष्ट करता, जो प्रकटत: शिष्टाचार होते हुए भी नारियों का मन आसानी से जीत लेती हैं। कभी-कभी वे काम के बाद दफ़्तर से साथ-साथ निकलते और सुनसान सड़कों पर टहलते हुए वोल्गा के किनारे तक आ जाते। मां की मृत्यु के बाद से लीज़ा और भी एकाकी महसूस करने लगी थी। सारी दुनिया में केवल बेटा ही उसका अपना रह गया था। लेकिन उसके दिल में अनजानी आकांक्षाओं के लिए इतनी अधिक जगह थी कि उसका लगातार बढ़ता मां का प्यार भी उसे नहीं भर पा रहा था।

एक जैसे अनुभव लोगों को जितनी जल्दी एक दूसरे के निकट लाते हैं, उतनी जल्दी और कोई चीज़ नहीं लाती। अनातोली मिख़ाइलोविच कुंआरा था और अकेलेपन का आदी बन चुका था। लेकिन अपनी इस आदत में उसे जीवन की नीरसता की कड़आहट का सदा अनुभव होता रहता था। वह अपने को अभागा नहीं मानता था, लेकिन जब लीज़ा ने पूछा कि क्या वह कभी सुखी था, उसने पूरी ईमानदारी से जवाब दिया कि नहीं, वह सुखी नहीं था। पूरे दस वर्ष उसने अपने कैरियर की चिंता में बिता दिये थे, यह सोचकर कि शायद तब सुख हाथ लग जायेगा। लेकिन कैरियर बनाने के लिए इतनी मेहनत करनी पड़ी कि उसने सुख का स्वप्न भी देखना छोड़ दिया। यह स्वीकारोक्ति सुनकर लीज़ा भी अपना दिल खोल बैठी। उसने बताया कि उसके अनुसार सुख खुद कभी नहीं हासिल होता, उसे शायद छीनना, जीतना, ज़बर्दस्ती लेना पड़ता है। मिसाल के लिए, उसी ने एक दिन अपना सुख, अपना रहस्य हाथ से जो जाने दिया, तो तब से नहीं जानती कि आगे का भविष्य कैसे बनाये। लीज़ा और ओज़्नोबिशिन दोनों ही अकेले थे, हालांकि अलग-अलग तरह से। दोनों ही अभागे थे, हालांकि अलग-अलग कारणों से। यह चीज़ उन्हें एक दूसरे के करीब लायी। लेकिन भावनाओं के स्तर पर तादात्म्यता दोनों में से कोई भी अनुभव नहीं कर रहा था। वे केवल परस्पर-आकर्षण और एक दूसरे में गहरी रुचि के कारण ही करीब आये थे।

लेकिन तभी लीज़ा की बीमारी ने सब कुछ बदल डाला।

वसंत के आरंभ में ही मेरकूरी अव्देयेविच गौर करने लग गया था कि वह दुबली होती जा रही है, प्रायः खांसती है और एकाएक उत्तेजित व निढाल हो जाती है। खुद लीज़ा को भी हर समय लगता था कि उसे आराम और शांति की ज़रूरत है। पिता का आग्रह था कि उसे अपने को किसी डाक्टर को दिखाना चाहिए। ओज़्नोबिशिन किसी जाने-माने विशेषज्ञ का पता भी ले आया, लेकिन समझ न सका कि लीज़ा टालती क्यों जा रही है। एक दिन लीज़ा ने उसे बता ही दिया कि बहुत समय पहले वह एक डाक्टर के पास गयी थी और उसने जो रोग बताया, वह इतना भयानक था कि घर में किसी को उसके बारे में बताने की वह हिम्मत भी नहीं कर सकी। उसे लगता

था कि उसका पहले का जीवन हमेशा-हमेशा के लिए खत्म हो गया है, बीमारी की निर्दय छाप ने उसे अस्पृश्य बना दिया है। सबसे अधिक वह वीत्या की वजह से डरती थी: उसे वीत्या को अपने से अलग कर देना चाहिए था, पर यह किया कैसे जाये? तपेदिक का सफल इलाज अमीरों के ही बस की बात है, जबकि गरीबों के जीवन से यह रोग चूहे-बिल्ली का खेल खेलता है। अतः लीज़ा ने सब कुछ भाग्य के भरोसे छोड़ दिया था।

अनातोली मिख़ाइलोविच ने लीज़ा के यों हिम्मत हारने का घोर विरोध किया। नहीं, यदि वह खुद अपने को मुट्ठी में नहीं ले सकती, तो वह अपनी देखरेख में उसका इलाज करवायेगा। यह दकियानूसी खयाल है कि तपेदिक जैसी आम और इतनी अच्छी तरह अध्ययन की हुई बीमारी का कोई इलाज नहीं है। लाखों लोगों को तपेदिक होती है और लाखों लोग ठीक हो जाते हैं। भगवान का शुक्र है कि लीज़ा विश्वविद्यालयवाले नगर में रहती है और आधुनिकतम चिकित्सा ज्ञान उसकी सेवा में हाज़िर है। आवश्यकता केवल दृढ़ संकल्प की है। यदि लीज़ा को असली बीमारी के बारे में अपने घरवालों को बताने में कठिनाई हो रही है, तो फिलहाल वह किसी और बीमारी का नाम ले सकती है। लेकिन इलाज करना ही होगा और अनातोली मिख़ाइलोविच अपना सिर कलम करवाने को तैयार है, अगर वह चंगी न हुई!

बेशक ऐसा ज़ोरदार भाषण झाड़ना ओज़्नोबिशिन के लिए इलाज में मदद देने से कहीं आसान था। कानूनदां होने के नाते उसने भाषण कला सीखी थी और चिकित्साविज्ञान में उसका विश्वास भाषण कला से अधिक शायद ही रहा होगा। इसलिए नगर के प्रसिद्ध डाक्टरों के बारे में जितना हो सकता था, मालूम कर लेने के बाद वह तपेदिक से लड़ने के बारे में जो विश्वास आम प्रचलित थे, उनपर भी कान देने लग गया और आग्रह करने लगा कि लीज़ा को लोक विवेक की उपेक्षा नहीं करनी चाहिए। ऐसा एक भी दिन न जाता, जब वह कोई न कोई नयी दवा – घीकुंआर, सूअर की चर्बी, गाय का घी, वगैरह – न लाता और पूरा-पूरा ध्यान रखता कि सभी सलाहों व निर्देशों का पालन हो। दफ़्तर में उसकी मेज़ के दराज़ में तरह-तरह

की शीशियों का ढेर जमा हो गया और खिड़की के दासे पर कंटीले, कटारीनुमा, नीले-हरे पत्तोंवाले घीकुंआर के पौधों की कतार लग गयी।

लीज़ा उसकी बातों को हल्के मज़ाक में लेती और फिर भी उनका पालन करती। वह हैरान थी कि उसकी बीमारी ओज़्नोविशिन के मन में वितृष्णा जगाने के बजाय, उल्टे, उत्तरोत्तर गहरी आत्मीयता ही पैदा कर रही है। उसकी सेहत के बारे में उसकी चिंता बढ़ने के साथ-साथ अनुराग में बदलती जा रही थी। लीज़ा उसके मन मंदिर की देवी बन गयी थी। वह सबसे अधिक उसी के बारे में सोचता था और वह समझ गयी कि अगर एकाएक वह न रहा, तो वह अपने सबसे विश्वसनीय सहारे से वंचित हो जायेगी।

उस शाम, जब वह पापलर की टहनियों का सांत्वनादायी और हृदयस्पर्शी गुच्छा लाया था और वे दोनों टहलने निकले थे, उनकी बातचीत ने यादों का रूप ले लिया था: दोनों अब तक साथ-साथ काफ़ी कुछ देख या भुगत चुके थे और दोनों एक दूसरे के सामने अपना दिल खोलकर रख देना चाहते थे।

दोनों एक बाग में बैठे, जहां आर्केस्ट्रा बज रहा था। संगीत कभी उनकी बातचीत में संगत दे रहा था, तो कभी बाधक बन रहा था। पेड़ों के बीच पगडंडियों पर घूमते लोग इतने आत्मलिप्त थे कि जैसे बताना चाहते हों कि जीवन चिंतामुक्त तथा बड़ा आकर्षक है। हवा में ठंडक थी और लीज़ा को ओज़्नोविशिन की बांह का नैकट्य अनुभव करके बड़ा संतोष मिल रहा था। फिर दोनों उठे और ऊंघती सड़कों पर तब तक घूमते रहे, जबकि सारा नगर अर्धरात्रि की नीरवता में न डूब गया। एकाएक यह महसूस करके कि लीज़ा को ठंड लग सकती है, अनातोली मिख़ाइलोविच ने अपना आधा कोट लीज़ा की पीठ पर डाल दिया और एक बांह उसके कंधे पर रख दी। जब घर बिल्कुल पास आ गया, उसने कहा,

"अगर हम ये कठिन दिन साथ-साथ निभा ले जायें, तो आसान दिन और भी आसान बन जायेंगे।"

"कभी-कभी आजकल भी किसी क्षण मुझे कठिन चीज़ें आसान लग जाती हैं।"

सहसा उसने पूछा,

"तुम मेरी पत्नी वनने को राज़ी हो सकती हो?"

लीज़ा न "तुम" शब्द के लिए तैयार थी, न "पत्नी" शब्द के लिए ही, क्योंकि उनके साथ उसके जीवन का एक गुज़रा और विसराया हुआ दौर जुड़ा हुआ था। देर तक उसने कोई जवाव नहीं दिया, फिर जो पहली वात दिमाग में आयी, उसे ही कह डाला,

"ऐसा प्रस्ताव रखने से पहले खूब सोच-विचार लेना चाहिए था।"

"मैं सोच-विचार करके ही कह रहा हूं।"

"लेकिन मुझे तो तुम चूम भी नहीं सकते!" उसने कड़ुआहटभरी ज़िंदादिली से कहा। "तुम्हें मालूम है कि मुझे छूत की बीमारी है।"

वह तुरंत रुक गया और उसका मुंह अपनी ओर मोड़कर उसे कोट के नीचे से छोड़े बिना ही चूम लिया। दोनों फिर चुपचाप चलने लगे। वह उसे कसकर अपने से सटाये हुए था। घर के फाटक के सामने उसने कोट हटा लिया। लीज़ा ने अपने चेहरे पर उसकी हथेलियों का घिराव और होंठों पर उसका दीर्घ चुंवन अनुभव किया। एकाएक वह ठंड से सिहर उठी और फाटक खोलकर अपने पीछे ज़ोर से वंद करती हुई अंधेरे अहाते में घर की ओर भाग गयी...

सभी बीमारों की तरह लीज़ा भी विस्तर पर लेटी लगभग सारे समय खयालों में खोयी रहती थी। वे विगत जीवन के एक छोर से दूसरे छोर तक फैले लंबे स्मृति-पटल पर धीमे-धीमे उड़ते वादलों जैसे थे। वह इन वादलों के रंगों और पल-पल वदलती शक्लों की तुलना करती, उनके बीच अपने को खोजती, उन्हें सीधे चलाती और जैसे हवा असली वादलों के साथ किया करती है, वैसे ही तरह-तरह से घुमाती-फिराती, उलटती-पलटती। इस तरह उसके अतीत की ऐसी कोई घटना न रही, जिसके वारे में कि उसने दसियों वार न सोचा हो।

जव ओज़्नोविशिन जेल में था, लीज़ा परिस्थितियों के अजीव खेल पर चकित हुए विना न रह सकी: कभी जेल ने किरील इज़्वेकोव को भी उससे यों ही छीना था। लीज़ा ने तव किरील के लिए क्या किया था? कुछ भी तो नहीं! उसके दिल में तव किरील के लिए

जितना प्यार था, क्या अब ओज़्नोबिशिन के लिए उससे ज़्यादा है? नहीं। लेकिन तब वह कहीं ज़्यादा असहाय थी! इस समय बेशक वह बिस्तर पकड़े हुए है, लेकिन उसकी बात में इतनी ताकत पहले कभी नहीं थी: यहां तक कि पिता को भी उसके सामने झुकना पड़ता है। पर उस सुदूर अतीत में अपनी स्वस्थता के बावजूद वह बिल्कुल शक्तिहीन थी। उसे सहारा किससे मिल सकता था? जान-पहचान की लड़कियों में उसकी कोई गहरी दोस्त न थीं और अगर होतीं भी, तो उसे क्या दे पातीं? लड़कियों जैसी जिज्ञासा से भरे सवाल ही न? वेरा निकान्द्रोव्ना उसे बिल्कुल बच्ची मानती थी। और सचमुच, उसका पहला प्यार क्या बचकाना ही नहीं था?

फिर भी इसमें कोई संदेह नहीं कि वह अनुभव बड़ा मोहक था। आज भी जब एकाएक कभी याद आ जाती है कि कैसे किरील ने अपने खुरदरे हाथ में उसकी अंगुलियां ली थीं व उन्हें चुपचाप पकड़े रखा था और उसके इस दुर्लघ्य संकोच के पीछे उसे एक ऐसी अदम्य शक्ति का अहसास हुआ था कि वह खुद भी भय और एक अनिर्वचनीय उल्लास के मारे हिल-डुल तक न पायी थी, तब लीज़ा अपने गालों में खून का बहाव तेज़ होता महसूस करने लग जाती है। जैसे स्वप्न उसने तब किरील के साथ देखे थे, वैसे स्वप्न अब कभी और किसी के साथ न देख पायेगी! एक बार उसने किरील से कहा था,

"हम हमेशा एक दूसरे को पढ़कर सुनाया करेंगे। मेरा मतलब हमारे मनपसंद लेखकों की रचनाओं से है। अगर हम कभी अभागे लोगों के बारे में पढ़ेंगे, तो अपने को और भी सौभाग्यशाली महसूस करेंगे, क्योंकि उस समय हम मन ही मन सोचेंगे: कितने सौभाग्य की बात है कि हम इनकी तरह अभागे, दुखी नहीं हैं!"

"नहीं," किरील ने जवाब दिया था। "हम पढ़ेंगे और सोचेंगे कि इन अभागे लोगों को भी सौभाग्यशाली कैसे बनाया जाये। हमारे लिए सबसे अधिक हर्ष और सौभाग्य की बात यही होगी।"

लीज़ा को किरील का यह जवाब, उसकी आंखों में उस समय उभरी चमक, जो मानो कहीं भीतर से आ रही थी, और उन चमकभरी आंखों से उसे, लीज़ा को देखना आज तक याद है। किरील का जवाब और जिस ढंग से उसने उसे देखा था, वह लीज़ा को उस समय बहुत

अच्छे लगे थे। लेकिन क्या वह अब बता सकती है कि उसकी आंखें कैसी थीं? पीली। गहरी पीली। लगभग बादामी। फिर भी ठीक-ठीक किस रंगत की? पावलिक पाराबुकिन की आंखें भी तो पीली हैं, लेकिन उन्हें किरील जैसी कतई नहीं कहा जा सकता। किरील की आंखों का रंग बदलता रहता था। कभी वे पुराने कांसे जैसी धुंधली दीखने लगती थीं, तो कभी तंबाकू के पत्ते जैसी स्वच्छ और उजली। शामों को उनका रंग इतना गाढ़ा हो जाता कि एक बार लीज़ा ने हंसते-हंसते कहा था, "यों बंजारों जैसी निगाहों से मुझे न देखा करो!"

अगर किरील वीत्या का पिता होता, तो?

शायद तब वे प्रिय आंखें हमेशा उसके सामने रहतीं और वह उनकी विस्मृति के गर्भ में खोयी रंगतें न भूल पाती। लेकिन वीत्या की आंखें तो अपनी मां जैसी हैं, लीज़ा जैसी हैं। उनमें शुब्निकोवों का कुछ नहीं है। वह उसका बेटा है, केवल उसका। हैरानी की बात तो यह है कि वह अपने पिता के बजाय किरील से अधिक मिलता-जुलता है। पर इसमें हैरानी की बात है क्या? जब वह पेट में था, लीज़ा उसके पिता के बजाय इज़्वेकोव के बारे में कहीं ज़्यादा सोचा करती थी। सभी औरतों का विश्वास है कि ऐसी चीज़ों का असर ज़रूर पड़ता है।

इज़्वेकोव के बारे में वह अब भी सोचा करती है, हालांकि इतना ज़्यादा नहीं। बस कभी-कभार ही। और यों ही। पहले जब कभी वह अपनी पुरानी यादगार की चीज़ें टटोलती थी और "ये" और "क" अक्षरों से अंकित डायरी हाथ में लेती थी, तो निर्जीव सी अंगुलियों में उसे पकड़े देर तक बैठी रहती थी। डायरी के पहले पन्ने पर किरील ने अपने हाथों से जो दो शब्द—"आज़ादी, स्वाधीनता"—लिखे थे, उनकी स्याही कतई फीकी नहीं पड़ी थी। आरंभ में ये शब्द लीज़ा के लिए इसके परिचायक थे कि भविष्य क्या लेकर आ सकता है। लेकिन बाद में वे उसके लिए किसी खोयी हुई चीज़ के प्रतीक बन गये। न जाने कितनी बार इस डायरी को हाथ में लेकर आंसू बहाये होंगे। एक बार उसने उसमें लेर्मोंतोव की 'अलविदा' कविता लिखने की सोची थी और सारा दूसरा पन्ना भर दिया था और तीसरे पन्ने पर भी लिखने लगी थी:

अलविदा, अलविदा!
ओह, यह इक शब्द
दे जाता है
कितनी निष्ठुर पीड़ाएं!
कहीं दूर, बहुत दूर
ले जाते तुम
मेरी तड़पन, मेरा जीवन,
मेरी अभिलाषाएं।

तुम्हारी अंगुलियां
इतनी दूर हैं
मेरे अधरों से
कि बस इक बार
फिर आ जाओ
और जगा दो
वक्ष में मेरे
वही ...

यहा पर आकर शब्द की जगह एक टेढ़ी सी रेखिका खिंच गयी थी: लिखना एकाएक रुक गया था, क्योंकि वीक्तोर सेम्योनोविच के कदमों की आहट सुनायी देने लगी थी। वह बहुत अच्छे मूड में था और हंसता-गाता कमरे में घुसा था। उससे नाई की दूकान और नवंबर की हवा की गंध आ रही थी। खुशी से मचलते स्वर में वह चिल्लाया था,

"तुरत तैयार हो जाओ! हम विलायती बायस्कोप देखने चल रहे है, जिसमें आवाज़ भी होती है! कहते हैं कि बड़ा मज़ेदार है! परदे पर जब प्लेट तोड़ते हैं, तो स्क्रीन के पीछे से तोड़ने की आवाज़ आती है। अगर कार चल रही हो, तो भोंपू भी सुनायी देता है! हां, हां! बिल्कुल जैसे सड़क पर! जल्दी करो, नहीं तो देर हो जायेगी! नीचे 'समोवार' तैयार है!" वीक्तोर सेम्योनोविच "समोवार" अपनी नयी कार को कहा करता था और सरातोव में वैसी कार चूंकि अभी इक्के-दुक्के के पास ही थी, इसलिए उसे उसपर बड़ा नाज था।

इस तरह कविता अधूरी ही रह गयी थी और लीज़ा उस डायरी में फिर कभी कुछ नहीं लिख पायी। लेकिन बाद में वह जब भी कभी उसे फिर उठाती, उसके होंठों से वह अनलिखा शब्द फूट पड़ता, जिसकी जगह पर उसने तब टेढ़ी सी रेखा ही खींच डाली थी:

और जगा दो
वक्ष में मेरे
वही प्रेम-ज्वाल।

हां, यह बचकाना प्रेम ही था। लीज़ा पुरानी यादगार की चीज़ें टटोलते हुए अब नहीं रोती थी। अब वह केवल उदास हो जाती थी। यह सोचभरी और दिल हल्का करनेवाली उदासी थी। हाल ही में वह अपनी स्कूल की अंतिम कक्षा का ग्रूप फ़ोटो देख रही थी। बीच में प्रधानाध्यापिका और अध्यापक-अध्यापिकाओं के चित्र थे और उनके गिर्द अंडाकार आकृति में बड़ी-बड़ी आंखों, ठोड़ी के नीचे बो-टाई और ऊंचे-ऊंचे, फूले जूड़ोंवाली लड़कियों के चित्र चिपके हुए थे। लीज़ा मेश्कोवा का चित्र धर्म के अध्यापक की बगल में चिपका हुआ था। धर्म का अध्यापक एक भयानक शक्लवाला पादरी था, जिसकी काली दाढ़ी लंबी कम, चौड़ी ज़्यादा थी और कंधों पर टिकी हुई थी। शायद इस असामान्य पड़ोसी के कारण ही लीज़ा इतनी डरी-डरी लग रही थी। अथवा शायद इस कारण कि वह अभी बहुत छोटी थी और नहीं जानती थी कि अगर बाल कृत्रिम उपाय से घुंघराले बनाये गये हों और उनमें इतनी पिनें खोंसी हुई हों कि बाल बाल न रहकर पिनों का जंगल बन जायें, तो कैमरे के सामने कैसे बैठना चाहिए।

हां-हां, यह बेशक बचकाना प्रेम था। किरील को दुष्टता और दुर्भाग्य की दुनिया ने जेल में ठूंसा था, उसका मुकाबला करने के लिए लीज़ा के पास क्या ताकत थी? शायद उसे भी निर्वासन में किरील का अनुगमन करना चाहिए था। लेकिन उसके पिता ने उसका विवाह करके उसे ऐसा करने से रोक दिया। शायद पति का घर छोड़ने के बाद उसे पिता के घर लौटने के बजाय सीधे ओलोनेत्स वनप्रदेश चला जाना चाहिए था, जहां तब किरील अपना निर्वासन काट रहा था। लेकिन विवाह

ने यह भी न होने दिया: तब वह मां बननेवाली थी। कहीं ऐसा तो नहीं कि ऐसे विचार लीज़ा के मन में कभी उठे ही न थे? नहीं, हताशा और घोर विषाद के क्षणों में मनुष्य के मस्तिष्क में ऐसे दुस्साह-सिक और उतावलीभरे न जाने कितने विचार उठते होंगे! लेकिन इस तरह के बहुत कम विचार ही मस्तिष्क की सीमाएं लांघकर व्यवहार में साकार बन पाते हैं, क्योंकि मस्तिष्क में वे वैसे ही चैन व शांति से रहते हैं, जैसे कि नेक इरादे मनुष्य के हृदय में और उसपर किसी भी प्रकार बोझ बने बिना।

नही, लीज़ा अपने अतीत को उचित नहीं ठहराती थी। वह उस अतीत में अपने को असहाय ही देखती थी। उसमें संकल्पशक्ति का अभाव था। संकल्पशक्ति उसमें केवल तभी आने लगी, जब किरील को वह पूरी तरह से खो बैठी।

कहते हैं कि दुख आदमी को प्रौढ़ बना देता है। किंतु प्रौढ़ता भी हर दुख को झेलने की ताकत नहीं दे पाती। अब भी शुब्निकोव के साथ बिताये हुए छह वर्ष लीज़ा को दु:स्वप्न जैसे लगते थे। शुब्नि-कोव के व्यस्त जीवन की अनगिनत छोटी-मोटी घटनाओं के बावजूद लीज़ा के लिए उसके साथ विवाह के ये सभी वर्ष अंधकार के वर्ष थे। बेटे की वजह से ही वह इतने वर्ष पति के साथ रही थी और बाद में भी बेटे की वजह से ही उससे जुदा हुई। वह समझती थी कि बेटे के प्रति उसका एक कर्त्तव्य है—वह यह कि उसे ही उसको पालना-पोसना व बड़ा करना है। लेकिन साथ ही वह यह भी मानती थी कि यह वह शुब्निकोव के घर में रहते नहीं कर सकती, क्योंकि वैसा करने का मतलब होता दूसरा शुब्निकोव बनाना। बेटा हर बात में पिता की नकल करता, पिता को मिसाल मानकर चलता। इसलिए उसने अपना मां का कर्त्तव्य पूरा करने के लिए वह घर छोड़ दिया, ठीक वैसे ही, जैसे पहले इसी कर्त्तव्य की गलत समझ के कारण वहां रहती आयी थी।

बेटा तब पांच वर्ष का हो चुका था। एक शाम उसने उसे सोते मे जगाया और गोद में उठाकर पिछवाड़े की सीढ़ी से वैसे ही खाली एक पोशाक में घर से निकल गयी, जैसे कोई छह साल पहले उसने

पति के घर से भागने की पहली कोशिश की थी। यह फ़ैसला करने से पहले उसने खूब सोच-विचार लिया था और अव कोई भी कमज़ोरी उसे रोक नहीं सकती थी। सहायता की प्रतीक्षा भी वह वहुत कर चुकी थी और अव उसे पक्का यकीन हो गया था कि सहायता कहीं से नहीं मिलेगी।

कभी-कभी सहायता की प्यास उसे इतना व्यग्र कर देती कि वह वहां भी सहानुभूति खोजने लगती, जहां से उसके मिलने की रत्तीभर भी उम्मीद नहीं हो सकती थी। इस तरह एक दिन वह थियेटर में, मध्यांतर के समय प्रवेश हाल में घूमते और कार्यक्रम को अंगुलियों में लपेटते हुए अचानक ही और विना सोचे-समझे त्स्वेतुखिन को सव कुछ वता वैठी थी।

सालों से येगोर पावलोविच को न देख पाने के कारण अव हर मुलाकात में उसे उसमें कुछ न कुछ नया दिखायी दे जाता था। लेकिन उसके जिस आकर्षण ने उसे कभी अभिभूत कर दिया था, वह अव उसकी नज़रों में धूमिल पड़ता जा रहा था। उसे लगता था कि वह वदल रहा है, जवकि वास्तव में वह खुद ही वदल रही थी। उसकी आंखों में वह फीका पड़ गया था, उसकी रंगीनियत उसे दिखावा लगने लगी थी और एकाएक उसे उसमें ओछापन भी दिखने लगा था, हालांकि उसे अपनी इस खोज पर तुरंत विश्वास नहीं हो पाया था। लेकिन, इस सवके वावजूद, त्स्वेतुखिन का वहुत ही उतार-चढ़ावपूर्ण स्वर उसे अव भी आंदोलित कर देता था।

यहां सुवस्त्राभूषित, सौम्य-गंभीर जोड़ों के वीच, जो नपे-तुले कदमों से प्रवेश हाल में परिक्रमा कर रहे थे और जानी-पहचानी शुब्निकोवा और जाने-पहचाने त्स्वेतुखिन के विशेषत: सुवस्त्राभूषित और विशेषत: सौम्य-गंभीर जोड़े को कनखियों से देखते जा रहे थे, लीज़ा न जाने क्यों येगोर पावलोविच को वताने लगी थी कि उसका जीवन नहीं वन पाया है, कि वह उसे वदलना चाहती है, लेकिन नहीं जानती कि इसके लिए क्या करे। वह उसे ध्यान से सुनता रहा था और जव वह चुप हो गयी, तो वोला था कि उसके दुखी जीवन का कारण शायद वह चीज़ है, जो उसे प्रकृति से मिली है।

"कौन सी चीज़?"

"पवित्रहृदयता," उसने यों जवाब दिया था, जैसे कि अफ़सोस व्यक्त कर रहा हो।

यहां तक कि उसने लीज़ा की कुंआरी मरियम से तुलना करते हुए किसी कविता की यह पंक्ति भी उद्धृत की: "पवित्रतम सौंदर्य का पवित्रतम प्रतिमान।" यह उपहास सा था और वह भी ऐसे समय, जब लीज़ा उसके सामने अपना दिल उंडेलकर रख देना चाहती थी।

"आपने एक बार मुझे मेरे बनिया-पति से आगाह किया था।"

"हां, लेकिन आपने तब मेरी बात सुनी नहीं। अब देर हो चुकी है। अब तो दूसरी ही सलाहों की ज़रूरत है।"

"कौन सी सलाहें? आपको जीवन का मुझसे ज़्यादा अनुभव है। मैं आपकी सलाह पर यकीन कर सकती हूं।"

"आप लोगों से ज़रूरत से ज़्यादा ईमानदार होने की अपेक्षा करती हैं," उसने मानो सोचते हुए और किंचित् थके स्वर में कहा। "लेकिन लोग प्रकृति से दोमुंहे हैं। भिखारी भी जब अकेला नहीं होता, किसी न किसी का अभिनय कर रहा होता है। जीवन के इस कटु सच से हम बच नहीं सकते। किंतु यह सच हितकर है।"

"मैं समझी नहीं। मैं इस सच पर आचरण कैसे करूं?"

उसकी आंखों में मेफ़िस्टोफ़ीलीस जैसी धूर्तता और व्यंग्य की चमक आ गयी। वह हौले से बोला,

"कहते हैं कि झूठ की सुगंध सच की दुर्गंध से अधिक सांत्वनादायी होती है।"

लीज़ा का मन जुगुप्सा से भर उठा। भौचक्की सी होकर उसने कुछ कदम बढ़ाये और फिर जवाब दिया,

"किसी कवि ने और भी सुंदर कहा है: 'छल, जो महिमामंडित करता है।' आप यही कहना चाहते थे न?"

"हा। लेकिन जहां तक मुझे याद है, आप कविता से डरती हैं। इसीलिए मैंने उसे गद्य की भाषा में कहा।"

"मगर आपने शुरुआत कविता से की थी और अगर आपकी आज्ञा हो, तो मैं भी कविता से ही खत्म करूं: मैं 'पवित्रतम प्रतिमान' ही रहना चाहूंगी। अब, कृपया, मुझे मेरी जगह तक पहुंचा दीजिये।"

त्स्वेतुखिन के इन इशारों और नाज़-नखरों ने उसे लीज़ा की नज़रों में एकाएक नीचे गिरा दिया, हालांकि एक समय ऐसा भी था, जब वह उसका मित्र बन सकता था, क्योंकि शुब्निकोव अपनी ज़्यादतियों से उसे मित्र खोजने के लिए उकसा रहा था।

उसे शुब्निकोव के साथ बिताये हुए दिनों की याद करना पसंद नहीं था, लेकिन बीमारी से कुछ ही दिन पहले एक क्षण ऐसा आया कि उसे सहसा अपना सारा विवाहित जीवन ऐसी-ऐसी आश्चर्यजनक तफ़सीलों के साथ याद आ गया, मानो कि यह मृत्यु से पहले की घड़ी हो, जब आदमी, जैसा कि मौत की कगार से लौटे लोगों का कहना है, न चाहते हुए भी अपने सारे जीवन पर दृष्टिपात करने लगता है।

लीज़ा उस जानी-पहचानी सड़क से गुज़र रही थी, जिसपर कभी उसके भूतपूर्व पति की मुख्य दूकान हुआ करती थी। वह अभी दूर ही थी कि उसे निठल्ले लोगों की भीड़ और दौड़ते-भागते, तिरपाली कपड़े की बदसूरत पोशाक पहने हुए कुछ मज़दूर दिखायी दिये। उसने सोचा कि कहीं आग लग गयी है, जो कि खुद ही बनायी हुई अंगीठियों का प्रचलन बढ़ जाने के कारण विरली बात नहीं थी। तभी उसे लोहे के बजने और तख़्तों के टूटने की आवाज़ें सुनायी दीं। उसने सड़क पार की और पाया कि सारी हलचल दूकान के गिर्द हो रही है। अनजाने ही उसके पांव तेज़ी से उधर बढ़ने लगे।

दमकलवालों के कांटों से मज़दूर दूकान का साइनबोर्ड उतार रहे थे। दीवार से लोहे की चादरें अध-उखड़ी लटकी हुई थीं और उसपर बने "**शुब्निकोव**" के तीन-तीन फ़ीट बड़े सुनहरे अक्षर अब पढ़े भी नहीं जा सकते थे। चादरों पर कांटे चिचिया रहे थे और अधसड़े तख़्तों के जंग लगे छेदों में से लंबी-लंबी कीलें चरमराते हुए छिटक-छिटककर गिर रही थीं। आखिरकार सारा ही साइनबोर्ड और उसके साथ लकड़ी की चौखट का कुछ हिस्सा भी वहां जमा हुए छोकड़ों के उल्लासभरे शोर के बीच भरराकर ज़मीन पर आ गिरे।

सचमुच यह केवल एक क्षण, साइनबोर्ड के डामर पर गिरने की धड़ाम की आवाज़ जितना लंबा क्षण था, जब लीज़ा ने मानो आकस्मिक मूर्च्छा में, सब कुछ जगमग कर देनेवाली कौंध में, शुब्निकोवों की दूकान के कैश कॉउंटर के पीछे अपने को, शुब्निकोव के यहां

अपने सारे अस्तित्व को देखा और पलक झपकते ही वे सभी खयाल उसके दिमाग में फिर दौड़ गये, जो पहले हर समय उसे परेशान किये रहते थे। बाद में फ़ोटोग्राफ़र की फ़्लैशलाइट के उजाले की तरह यह सब गायब हो गया और न जाने क्यों, वह अपने को ऐसे हल्का महसूस करने लगी, जैसे कि एकाएक किसी पीछा न छोड़नेवाले भय से मुक्ति पा ली हो। कांटों का झनझनाना, छोकड़ों का चिल्लाना और लोहे से अलग होते लकड़ी के चौखटे का चरचराना उसके लिए वसंतारंभ की हर्षपूर्ण किलकारियों जैसे थे। उसमें एक अपूर्व विश्वास का संचार हो गया: शुब्निकोवों का अब नामोनिशान भी बाकी नहीं रहा है! उसके लिए अब शुब्निकोवों से जुड़ी अपनी यादों को भगाना भी अनावश्यक हो गया, क्योंकि वे उसके लिए खौफ़नाक नहीं रह गयी थी।

इस तरह लीज़ा की चेतना में वे एक दूसरे से बिल्कुल भिन्न, लेकिन एक अविभाज्य क्रम में आपस में मिले हुए दूरवर्ती बादल उड़ते रहते: किरील, त्स्वेतुख़िन, शुब्निकोव। और फिर सबसे निकट का बादल – ओज़्नोबिशिन, जो आधा आकाश घेरे हुए था। लेकिन निकटता के कारण उसके रंग और आकृति को पहचान पाना मुश्किल था। इन चारों में से सबसे अधिक मानवीय सहानुभूति उसे किससे मिली है? ऐसा तो नहीं हो सकता कि उसकी बीमारी के इन कठिन दिनों में अनातोली मिख़ाइलोविच ने प्रेम की वजह से नहीं, बल्कि किसी और ही वजह से उसे सहारा दिया है, उसके प्रति सहृदयता दिखायी है!

वह सचमुच बड़ा नेक, सहृदय था, हालांकि कभी-कभी लीज़ा को उसकी आंखों में हल्की सी चालाकी भी दिख जाती थी: अनातोली मिख़ाइलोविच की स्नेहभरी निगाह में सहसा एक हल्का सा उपहास झलक आता और चेहरे से भी चालाकी टपकने लगती। लेकिन ऐसा क्षणभर के लिए ही होता और तब वह फिर पहले जैसी ही सहृदयता से हंसने लग जाता और किसी प्रकार का दुर्भाव नहीं रहने देता। नेकी के बारे में वह खुशी-खुशी बातें किया करता था और मानता था कि वक्त को आदमी को सिखाना चाहिए कि भलाई बुराई से बेहतर है।

"आदमी अगर सोचता है कि बुराई भलाई से ज़्यादा फ़ायदेमंद

है, तो उसे मामूली गणित भी नहीं आता। बुरे के मुकाबले भला आदमी हमेशा ज़्यादा सुखी होता है। भले आदमी का यकृत तो हमेशा ठीक रहता ही है, लोग भी उसकी मदद को तैयार रहते हैं, क्योंकि उन्हें उसकी भलाई पर भरोसा है। आखिरकार बुरे दिन उनके भी तो आ सकते हैं। इसलिए हरेक कहता है: मैं तुम्हारी मदद करूंगा, तुम मेरी मदद कर देना।"

लीज़ा उसे सुन रही थी। फिर कुछ सोचकर वह बोली,

"मुझे याद है कि मुझे भी हमेशा भलाई ही सिखायी गयी थी। तरह-तरह से, मगर हमेशा यही कि भला करो, भला करो। पिताजी सुबह से शाम तक दिमाग में ठूंसते रहते थे। मां भी। फिर स्कूल में भी और गिरजे में भी। भलाई, भलाई, भलाई। इसके अलावा मैंने कुछ सुना ही नहीं। मुझे प्रेम, क्षमा, भगवान से डरने, शांति-चैन से रहने की शिक्षा दी गयी। लेकिन जब बड़ी हुई, अपने इर्द-गिर्द देखा, तो पाया कि हर कहीं लड़ाई-झगड़ा है, नफ़रत और भय है, बारूद की गंध है। क्या करूं उन सब सीखों का, जो आज भी कान में गूंजती रहती हैं? अपने बच्चे को क्या सिखाऊं?"

"भलाई," ओज़्नोबिशिन ने बेहिचक जवाब दिया।

"ताकि वह भी अपनी मां की तरह असहाय हो जाये? आपका ही प्रिय आदर्श लें: वसीलसूर्स्क जैसा छोटा सा हरा-भरा कसबा, वोल्गा का तट, पास ही पहाड़ – बिल्कुल जैसे परीलोक हो! नावों में शांत बैठे मछुआरे, चारों ओर बाग, घास चरती बकरियां, जहां तक नज़र जाये हरे-भरे मैदान, पुस्तकालय में मेज़ पर 'नीवा' पत्रिका के १८९० के अंक और दीवार पर कुक्कू घड़ी – ऐसा ही तो आपने उसका वर्णन किया था न? लेकिन आपके साथ कैसा सलूक हुआ? पकड़कर जेल में बंद कर दिया। यही न?"

"यह भलाई ही थी, जिसने मुझे जेल से निकाला," ओज़्नोबिशिन ने विजयोल्लासभरे स्वर में जवाब दिया। "जब उन्हें यकीन हो गया कि मैंने किसी का बुरा नहीं किया है, उन्होंने मुझे छोड़ दिया।"

उसके चेहरे पर एक क्षण के लिए मुस्कान दौड़ गयी, लेकिन तभी पछतावा सा करते हुए वह आगे बोला,

"जब मैं पब्लिक प्रोसीक्यूटर के कार्यालय में काम करता था, मुझे पूरा विश्वास था कि जेल न्याय का ही एक नाम है। लेकिन जब मुझे खुद जेल में बैठना पड़ा, मुझे वह घोर अन्याय लगी। अजीब है न? अब मुझे न्याय मुक्ति में ही दिखता है और मुझे भलाई का जवाब भलाई से देना है। ऐसा करके ही मुझे चैन मिल पायेगा।"

लीज़ा ने और नहीं पूछा कि जेल में उसके साथ क्या हुआ था। उसके लिए यही काफ़ी था कि वह जेल से छूट गया है, जबकि ओज़्नोबिशिन के लिए उस अनुभव की याद भी बहुत दुखदायी थी।

जेल के अनुभव ने सचमुच अनातोली मिख़ाइलोविच का चैन हर लिया था। उसे अचानक ही लगने लगता कि एकांत कैद की नीरवता ने उसे फिर घेर लिया है। इसके वास्तविकता बनने का भय उसे हर समय सोचते रहने को मजबूर करता कि इस खौफ़नाक संभावना को रोकने के लिए क्या किया जाये। लोगों को उसकी भलमनसाहत में तनिक भी संदेह नहीं होना चाहिए और इसलिए उसे जल्दी से जल्दी यह सिद्ध करना होगा कि वह अपने वचन का पक्का है।

इन दिनों भूतपूर्व प्रोसीक्यूटर कार्यालय के कागज़ात नयी जगह – प्रदेश के अभिलेखागार में पहुंचाये जा रहे थे। इस इमारत के बहुत ही नीची छतवाले, नम, गुफानुमा तहखानों में कागज़ों, फ़ाइलों पर धूल की मोटी परत जम गयी थी। कुछ फ़ाइलें गट्ठर बनाकर रखी हुई थीं और कुछ यों ही फ़र्श पर बिखरी पड़ी थीं। इस अव्यवस्था में कुछ ढूंढ़ पाना कठिन था। लेकिन ओज़्नोबिशिन की किस्मत तेज़ थी: उसकी एक जान-पहचान की बुढ़िया ने, जो अरसे से अभिलेखागार में काम करती आयी थी और जिसे अदालत के लोग "विगत और विचार"* के नाम से पुकारा करते थे, उसे बताया कि १९१० के सभी कागज़ात हाल ही में एक दूर के कमरे में रखे गये हैं और इसलिए जो वह खोजना चाहता है, वहीं खोजे।

वहां ओज़्नोबिशिन ने अपने को फ़ाइलों के पहाड़ों के बीच बिल्कुल अकेला पाया। उसने खिड़की के पास थोड़ी सी जगह बना ली, ताकि फाइलों के नाम पढ़ने में दिक्कत न हो। सहसा उसे १९१० के दस्तावेजों

---

* अलेक्सांद्र हर्ज़ेन के संस्मरणों की पुस्तक का शीर्षक। – अनु०

के कई बंडल एक साथ मिल गये। फिर तो आवश्यक फ़ाइलों की टोह लगते देर न लगी और असिस्टेंट प्रोसीक्यूटर के नाम जेल कार्यालय की एक रिपोर्ट भी मिल गयी, जिसमें कहा गया था कि जांच-पड़ताल के लिए हिरासत में ली हुई और जेल के अस्पताल में बच्चे को जन्म देते समय मृत्यु को प्राप्त क्सेनिया अफ़ानास्येव्ना रागोज़िना को वोस्क्रेसे-न्स्कोये कब्रिस्तान की सामूहिक कब्र संख्या अमुक-अमुक में दफ़नाया गया है। ओज़्नोबिशिन की खुशी का ठिकाना न रहा : उसकी याददाश्त ने उसे धोखा नहीं दिया था। वह फ़ाइलों पर फ़ाइलें उलटता गया, इस आशा से कि शायद रागोज़िना के बारे में और दस्तावेज़ भी मिल जायें।

अचानक उसने देखा कि वह हाथ में खुद प्रोसीक्यूटर कार्यालय के अंदरूनी मामलों की एक फ़ाइल पकड़े हुए है। उसने उसे खोला। उसमें महामहिम के नाम कार्यालय के कर्मचारियों के तरह-तरह के प्रार्थनापत्र और पत्र नत्थी थे, जिनपर प्रोसीक्यूटर ने अपने फ़ैसले भी लिखे हुए थे।

ओज़्नोबिशिन तुरंत उस वातावरण में वापस पहुंच गया, जो बिल्कुल हाल ही तक इतना यथार्थ था और जिससे वह इतनी अच्छी तरह परिचित था कि उसे लगा कि मानो लंबी गैरहाज़िरी के बाद उसके सामने उसके अपने घर का दरवाज़ा खुल गया है। उसे लगा कि वह तबादलों, पदोन्नतियों, आन्ना और स्तानिस्लाव पदक दिये जाने, नियुक्तियों, मकान और यात्रा भत्तों, आदि की बातें करते अपने सहकर्मियों और बड़े अफ़सरों की आवाज़ें साफ़-साफ़ सुन रहा है।

सहसा इन आवाज़ों में उसे अपनी आवाज़, बिल्कुल निर्दोष लिखावट में लिखी हुई एक दरख्वास्त से उठती अपनी चापलूसी व चालाकीभरी आवाज़ सुनायी दी। वह, अनातोली मिखाइलोविच ओज़्नोबिशिन, जज के पद का उम्मीदवार, शिकायत कर रहा था कि असिस्टेंट प्रोसी-क्यूटर उसे राजद्रोह के अपराध में अभियुक्त ठहराये गये किसी प्योत्र पेत्रोविच रागोज़िन के विरुद्ध चल रही जांच-पड़ताल में भाग नहीं लेने दे रहा है। दरख्वास्त से साबित होता था कि ओज़्नोबिशिन ज़ार और पितृभूमि के काम आने को कितना उत्कंठित था। उसपर ऊपर कोने पर महामहिम ने अपने हाथ से लिखा हुआ था : "असिस्टेंट प्रोसीक्यूटर से खुद बात की है कि दरख्वास्त मंजूर कर दी जाये।"

अनातोली मिख़ाइलोविच खुली फ़ाइल हाथ में लिये जहां का तहां पत्थर बन गया। यह एक न भुलाया जानेवाला और बहुत ही ख़तरनाक दस्तावेज़ था। वह वही पुराना जीवन जिये जा रहा था, जिसके अस्तित्व को नकारने की ओज़्नोविशिन इतनी कोशिश कर रहा था। लेकिन उसे वह पुराना जीवन आज भी बरकरार रखने का कोई हक न था, जिसमें खुद ओज़्नोविशिन को वंचित कर दिया गया है। वह बताता था कि उसे लिखनेवाला ताज की खिदमत के लिए कितना बेताब था। वह उस चीज़ की तसदीक करता था, जिससे ओज़्नोविशिन को अगर जान प्यारी थी, तो हर कीमत पर इंकार करना था।

अनातोली मिख़ाइलोविच खिड़की की ओर मुड़ा। कांचों पर धूल जमी हुई थी। फिर भी उनके पार गर्मी से मुरझाये पेड़ों के समय से पहले काले पड़े पत्ते दिखायी दे ही जाते थे। ओज़्नोविशिन ने कान लगाकर सुना। अभिलेखागार के कमरे गूंगे और बहरे थे।

पसीने से नम हथेली कागज़ पर जमाकर अनातोली मिख़ाइलोविच ने हल्के से अंगुली घुमायी और पन्ना चुपचाप फ़ाइल से अलग हो गया। ओज़्नोविशिन ने उसे मोड़कर अपनी ऊपर की जेब में छिपा लिया। फ़ाइल डोरी से सिली हुई थी और पन्नों पर क्रमसंख्या भी लिखी हुई थी, लेकिन दस्तावेज़ों की चूंकि कोई सूची नहीं दी हुई थी, इसलिए किसी को पता नहीं चल सकता था कि कौन सा दस्तावेज़ गुम है। ओज़्नोविशिन ने फ़ाइल को एक अंधेरे कोने में ले जाकर कागज़ों के ढेर के नीचे कहीं दबा दिया और खिड़की के पास लौट आया। जो फ़ाइलें वह पहले देख चुका था, उन्हें कायदे से बंडलों में बांधकर उसने खिड़की के दासे पर रख दिया और फिर रूमाल से चेहरा पोंछा। उसकी अंगुलियां हल्के-हल्के कांप रही थीं।

अभिलेखागार से निकलते हुए वह कह गया कि खिड़की पर रखे बंडलों को कोई न छुए, चूंकि उनकी उसे शीघ्र ही फिर ज़रूरत पड़ सकती है।

"उनमें एक बहुत ही महत्त्वपूर्ण व्यक्ति की दिलचस्पी है," उसने अर्थपूर्ण स्वर में कहा। "उनका बड़ा ऐतिहासिक और क्रांतिकारी मूल्य है।"

अभिलेखागार के कर्मचारियों ने उसका अनुरोध ध्यान में रखने का वायदा किया। ऐसे सभी वायदे उदासीनताजनित आसानी से किये जाते थे, क्योंकि जो कुछ घट रहा था, उसमें अभिलेखागार के कर्मचारियों को मात्र अव्यवस्था या गड़बड़ी ही नहीं, प्रलय जैसी चीज़ भी दिखायी दे रही थी। ठेलेवाले आये रोज़ दस्तावेजों के नये-नये पहाड़ लगा जाते थे। सीढ़ियां और गलियारे तक कागज़ों से पटे पड़े थे और ऐसे में अगर कोई एक पूरा का पूरा ठेला दस्तावेज़ भी गायब कर देता, तो शायद ही किसी को तुरंत पता चल पाता।

अनातोली मिखाइलोविच ने सोचा कि चुराये हुए कागज़ को जला देना चाहिए। लेकिन घर पहुंचने पर उसने इरादा वदल लिया, क्योंकि पड़ोसियों को कागज़ जलने की गंध आ सकती थी और फिर राख को नष्ट करना भी मुश्किल था। उसने कागज़ के टुकड़े-टुकड़े कर डाले और कूड़े के साथ फेंक देना चाहा। लेकिन यह भी खतरनाक प्रतीत हुआ। तव एक विल्कुल नया विचार उसके दिमाग में आया। उसके कुंआरे के घर में आटे का एक पैकेट था। उसने थोड़ा सा आटा गूंधा, कागज़ के टुकड़े उसमें छिपाये और एक अखवार में लपेटकर घर से निकल पड़ा।

जब वह वोल्गा के किनारे पर पहुंचा, शाम हो गयी थी। रास्ते में उसे शहर की ओर जाते, गरमी से परेशान इक्के-दुक्के लोग ही मिले। नदी के दूसरे किनारे पर हल्की गुलावी धुंध छायी हुई थी और नदी पिघले सीसे की तरह धीरे-धीरे और चुपचाप बही जा रही थी।

ओज़्नोबिशिन ने अखवार में लिपटी हुई आटे की लोई पानी में फेंक दी, जहां वह पत्थर जैसे तुरंत डूब गयी। पानी की सतह पर दौड़ी गोल लहरें कुछ देर देखते रहने के वाद वह आगे चल दिया। काश, सारे अतीत से भी इतनी ही आसानी से छुटकारा पाया जा सकता! लेकिन वह तो ओज़्नोविशिन का पीछा करता जा रहा था और उसकी सभी आशाओं के विपरीत इस समय और भी अनिष्टकारी बन गया था। कहीं पुराने दस्तावेज़ों के उस सागर में और कोई फंसानेवाला कागज़ तो नहीं रह गया है? कहीं ओज़्नोबिशिन ने अभिलेखागार में जाकर लोगों का ध्यान अनावश्यक अपनी ओर तो नहीं खींच लिया है? कैसे मालूम हो?

सहसा, अगले रोज़, अनातोली मिख़ाइलोविच को पता चला कि जेल में उससे पूछताछ करनेवाला और कोई नहीं, खुद प्योत्र पेत्रोविच रागोज़िन ही था। क्षणभर में सब कुछ मानो ओज़्नोबिशिन के प्रतिकूल हो गया और उसके पैरों तले ज़मीन जलने लग गयी। जिस आदमी को वह अपना हितैषी मानता था और जिसके अहसान का मूल्य चुकाना चाहता था, वह समझदार और अक्लमंद ही नहीं, बेहद चालाक भी निकला। तूफ़ान अभी शांत नहीं हुआ था और अपने साथ अनातोली मिख़ाइलोविच को न जाने कहां उड़ाये लिये जा रहा था।

ओज़्नोबिशिन भागा-भागा लीज़ा के यहां पहुंचा। बहुत ही घबड़ाते-घबड़ाते उसने उसे जेलवाली घटना के बारे में बताया। लीज़ा परिस्थितियो को ऐसा असाधारण और, जैसा कि उसे लगा, खतरनाक मोड़ लेता देखकर अवाक् रह गयी। फिर ज्यों ही वे संभले और तय करने लगे कि क्या किया जाये, त्यों ही एक और अप्रत्याशित बात हो गयी।

उस रोज मेरकूरी अव्देयेविच और दिनों के मुकाबले काफ़ी पहले ही घर लौट आया। उसे जैसे कि ओज़्नोबिशिन की उपस्थिति पसंद नहीं आयी, लेकिन एक मिनट के लिए ही। बेटी के बिस्तर के पास बैठते हुए उसने ओज़्नोबिशिन को लगभग रिश्तेदार जैसे संबोधित किया,

"मैं बस कुछ मिनटों के लिए ही आया हूं। कहीं कुछ हो न जाये, इसलिए सोचा कि लीज़ा को बताता जाऊं। पर अच्छा हुआ कि आप मिल गये। आपकी सलाह इस समय मेरे बड़े काम आ सकती है।"

वह जल्दी-जल्दी सांस लेता, जैसे कि सिर पर पांव रखे भागा जा रहा हो, मिनमिना सा रहा था और चेहरे पर हवाइयां उड़ रही थीं।

"यह देखिये। मुझे काम पर दिया गया था। फ़ौरी है। तीन बजे मुझे वहां पहुंचना है..."

और उसने एक कागज़ ओज़्नोबिशिन की ओर बढ़ा दिया। नगर सोवियत के वित्त विभाग ने तलब किया था कि नागरिक मेश्कोव चालीस नंबर कमरे में साथी...

यहां पर अनातोली मिखाइलोविच के, जो तलबनामे को अब तक मन ही मन पढ़ रहा था, मुंह से अचानक ज़ोर से निकल गया,

"रागोज़िन के सामने हाज़िर होना है?"

लीज़ा ने कोहनियों के बल उठकर फुसफुसाते हुए पूछा,

"जेल में?"

"जेल में?" मेरकूरी अव्देयेविच समझ न पाया। "जेल में क्यों?"

ओज़्नोबिशिन खड़ा होकर दुविधा में दो-तीन कदम चला। कुछ मिनट तक तीनों में से कोई कुछ न बोला। मेरकूरी अव्देयेविच भयभीत निगाहों से बेटी को देख रहा था। वह तकिये पर कोहनियां टेके अधबैठी हालत में लेटी हुई थी, जिससे उसकी हंसली की हड्डियों के पास के काले गढ़े साफ़-साफ़ दिखायी दे रहे थे।

"शायद यह कोई और रागोज़िन हो," अनातोली मिखाइलोविच ने झिझकते हुए कहा।

"कहां का दूसरा!" निराशा से हाथ झटककर मेश्कोव बोला। "वही रागोज़िन है। मैं जानता हूं।"

"वही? जो जेल में था?" ओज़्नोबिशिन ने पूछा।

"हां, कभी था। पर अब वे सब बाहर हैं। मैं मालूम कर चुका हूं कि यह वही रागोज़िन है, जो मेरे मकान में किरायेदार था। यह दस साल पहले की बात है। उस समय उसे मेरे मकान से ही गिरफ़्तार किया गया था।"

"आपका मतलब प्योत्र पेत्रोविच से है?" लीज़ा बोली।

"हां, वही।"

"तब तो अच्छा है! उसे शायद आपकी याद हो।"

"मैं नहीं जानता कि बेहतर क्या है–याद रहना या भूल जाना। लेकिन यह तुमने जेल की बात क्यों की?"

अनातोली मिखाइलोविच को रागोज़िन से अपनी मुलाकात का सारा किस्सा फिर से सुनाना पड़ा। अब तीनों ही उलझी हुई गांठ को सुलझाने की कोशिश करने लगे।

"क्या मतलब है इसका?" मेश्कोव ने आश्चर्य से पूछा। "वह

जेल का भी मालिक है और वित्त विभाग का भी? यानी कि वही सबसे बड़ा है?"

"क्यों नहीं हो सकता? ज़ारशाही सरकार भी उसका कुछ न बिगाड़ सकी थी," ओज़्नोबिशिन बोला।

"कहीं ऐसा तो नहीं कि नाम तो वित्त विभाग है, लेकिन ज्यों ही वहां अदर पैर रखा, खटाक से पीछे से ताला बंद हो जाये?"

"नही, नही। यहां साफ़ कहा गया है – नगर सोवियत में," ओज़्नोबिशिन ने यों कहा, जैसे उसे खुद भी इसकी सच्चाई में विश्वास न हो।

"लेकिन कमरा नंबर चालीस?" मेश्कोव ने अर्थभरी निगाह डालते हुए पूछा।

उसने गहरी सांस ली, बटुए से कंघी निकाली और दाढ़ी में फेरने लगा, लेकिन फिर जल्दी ही यह काम छोड़कर देर तक बटुए को वापस जेब में ठूंसने की अनाड़ी कोशिश करता रहा।

"जाने का वक्त हो गया है... हे प्रभु! तो बताइये न, आप क्या सलाह देते हैं? इस कमरे नंबर चालीस में मैं कैसे पेश आऊं?"

"सच बता दीजिये, मेरकूरी अव्देयेविच, और बस। सच के सामने बुराई कुछ नहीं कर सकती।"

मेरकूरी अव्देयेविच ने ओज़्नोबिशिन पर एक भेदभरी निगाह डाली, जैसे कि उसकी इस चिकनी-चुपड़ी बात से उसे आश्चर्य हुआ हो।

"खैर, मुझे खुशी है कि तुम्हें ऐसे आदमी का संग मिला है," उसने अपनी बेटी से कहा और फिर गहरी सांस ली। "ये सारी परीक्षाएं किसलिए हैं? क्या मैंने जीवन में कम नेक काम किये हैं? उस रागोज़िन को रहने को मकान दिया, हालांकि उसपर निगरानी रखी जा रही थी। किराया भी ज़्यादा नहीं लिया। सोचते हो कि याद होगा उसे? अरे कौन याद रखता है! आज के ज़माने में नेकी किसी को याद नहीं रहती। ओह!.."

"रहती है, रहती है!" लीज़ा याचनाभरी नज़रों से अनातोली मिखाइलोविच की ओर देखते हुए चिल्लायी।

मेश्कोव ने झुककर बेटी को चूम लिया।

"आप कुछ साथ नहीं ले जायेंगे?" बेटी ने चिंतित स्वर में पूछा।

"क्या ज़रूरत है? मैं लौटकर तो आऊंगा ही, है न?" उसने कहा और चारो ओर यों नज़र दौड़ायी, जैसे कि किसी अपरिचित जगह पर हो।

फिर वह भारी कदमों से ओज़्नोविशिन के पास गया और उसे झिझकते-सहमते हुए आलिंगन में लेने के लिए एकाएक बांहें फैला दीं।

"अगर मुझे कुछ हो गया, तो मेरी लीज़ा और नाती को अनाथ न छोड़ देना।"

उसने मुड़कर बेटी को देखा।

"हो सकता है कि तुम लोगों ने पहले ही तय कर लिया है?"

और फिर सिर के स्वीकृतिसूचक इशारे से खुद ही अपने सवाल का जवाब भी दे दिया:

"भगवान का शुक्र है," उसने कहा। "तो... अगर मैं न लौट पाया... मेरा आशीर्वाद तुम्हारे साथ है।"

उसने बारी-बारी से लीज़ा और अनातोली मिखाइलोविच के सामने सलीब का निशान बनाया।

"अलविदा। वीत्या को मेरी ओर से चूम देना। कहां चला गया है वह? मैं चलूं। अलविदा।"

कमर झुकाये, बाल बिखेरे वह छोटे-छोटे कदम रखता चला गया।

लीज़ा पहले तो निश्चेष्ट पड़ी रही, फिर एकाएक मुड़कर चेहरा दीवार की ओर कर लिया।

१५

लड़कों को अल्योशा से मालूम हो गया था कि दोरोगोमीलोव को उसके मकान से बेदखल किया जा रहा है। इसके अलावा अल्योशा ने आर्सेनी रोमानोविच और ज़ुबीन्स्की की लड़ाई भी देखी थी और अपने माता-पिता की एक महत्त्वपूर्ण बातचीत भी सुनी थी। इस बातचीत का संबंध उस रहस्य से था, जिसे आर्सेनी रोमानोविच ने अल्योशा के पिता को बताया था, और इस रहस्य के सिलसिले में पिता ने

किसी रागोज़िन का नाम लिया था। रागोज़िन का कोई पीछा कर रहा था और आर्सेनी रोमानोविच ने उसे अपने यहां छिपाया था। अब रागोजिन ज़ुबीन्स्की से आर्सेनी रोमानोविच को बचा सकता है, लेकिन आर्सेनी रोमानोविच इस बारे में कुछ नहीं सुनना चाहते और सारे रहस्य की असली जड़ यही है।

पावलिक पाराबुकिन ने अल्योशा को तो अपनी ज़बान पर ताला लगाये रखने का हुक्म दिया, लेकिन खुद चुप न बैठा रहा। उसने अपने पिता से मालूम किया कि रागोजिन कौन है। अगले दिन उसने वीत्या को बताया कि वह सबसे बड़ा कमिसार है।

"सबसे बड़ा, हुंह!" वीत्या ने एतराज़ किया। "उससे भी बड़े न जाने कितने हैं।"

"नहीं हैं," पावलिक बोला। "वही सबसे बड़ा है, क्योंकि जितना भी पैसा है, सब उसके पास है। वह जो चाहे कर सकता है।"

"नहीं कर सकता, क्योंकि एक सैनिक कमिसार भी है, जो सबसे ताकतवर है, क्योंकि लड़ाई वही लड़ता है।"

"बड़े चालाक हो! सोचते हो कि हथियार मुफ़्त मिल जाते हैं? उनके लिए पैसा कौन देता है?"

बहस कुछ समय तक चलती रही। आखिरकार तय हुआ कि मिलकर रागोज़िन के पास जायें और आर्सेनी रोमानोविच की मदद करने के लिए कहें। पावलिक का कहना था कि रागोज़िन बैंक में मिल सकता है। और अगर वहां नहीं, तो फिर कहां? उसका दफ़्तर वहीं तो होगा, जहां पैसे रखे जाते हैं!

वह वीत्या को थियेटर स्क्वायर ले गया। उसके एक ओर कमर्शियल बैंकों की इमारतें थीं, जिनके अग्रभाग बदरंग हो चुके थे, क्योंकि अरसे से ध्यान उनकी रंगीन टाइलों को चमकाने या दरवाज़ों पर पालिश करने के बजाय दूसरी अधिक महत्त्वपूर्ण चीज़ों पर दिया जा रहा था।

अक्तूबर क्रांति के बाद बैंकों का राष्ट्रीयकरण हो गया था। किंतु यह प्रक्रिया धीमी थी। बैंक तोड़-फोड़ का काम कर रहे थे, सोवियत सरकार की नीति को विफल बना रहे थे, उसपर अमल करने से कतरा रहे थे और जो भी वस्तुतः मूल्यवान चीज़ें थीं, उन्हें छिपाने

और विराट मात्रा में प्रचलित कागज़ी मुद्रा को जल्दी से जल्दी अवमूल्यित करने के लिए तरह-तरह के हथकंडे अपना रहे थे।

जो भी युद्ध, रोटी और मुद्रा, इन तीन मोर्चों पर विजयी रहता, वही देश का असली मालिक वन सकता था। मुद्रा के मोर्चे पर साज़िशें चुपचाप और लगातार चल रही थीं और उनका दुष्प्रभाव नदी की वाढ़ की तरह राजधानियों के महलों और तहखानों को डुवोता, कल-कारखानों के काम को रोकता और देहाती झोंपड़ियों की नींवें दुर्वल वनाता बढ़ता जा रहा था। महत्त्वपूर्ण जीवन धमनियां अवरुद्ध, स्नायु निर्वल और जोड़ जकड़नग्रस्त होते जा रहे थे। हर तरह के संचार व विनिमय का पक्षाघात और उसके वाद हर प्रकार के कार्यकलाप की मृत्यु—यह था वह खतरा, जो ऊपर से शांत दिखनेवाला मुद्रा का मोर्चा क्रांति के लिए पैदा कर रहा था।

वित्तीय मामलों में वैंकों के पास हज़ारों साल का अनुभव था। उनके हथियार बड़े सूक्ष्म और लचीले थे। उनके विष अपना असर ज़रूरत के मुताविक तुरंत भी और धीरे-धीरे भी दिखा सकते थे। क्रांति के पहले ही क्षण से और किसी संस्था ने दयानतदारी का दिखावा इतनी सफ़ाई और सफलता के साथ नहीं किया था, जितना कि वैंकों ने। वे कहने को तो सोने और विदेशी मुद्रा की चोरवाज़ारी से लड़ते थे, लेकिन यह ढोंग जितना ही विश्वासोत्पादक होता था, उतना ही ज़्यादा चोरवाज़ारी फूलती-फलती थी।

रूस में वैंकों का वहुत वड़ा जाल था। उसमें विदेशी वैंकों के सूत्र भी घनिष्ठ रूप से गुंथे हुए थे। वैंकों के राष्ट्रीयकरण का प्रभाव विदेशनीति पर तुरंत अनुभव किया गया। वैंकों की पूंजी को राज्य की संपत्ति घोषित करना ही काफ़ी न था। उसे विदेश भेजे जाने या वेकाम पूंजी वनने से रोकना भी ज़रूरी था। इसलिए प्रांतों में और छोरवर्ती इलाकों में केंद्रीय सरकार की राष्ट्रीयकरण की कार्यनीति को हमेशा ठीक-ठीक नहीं समझा जा सका। फिर राजधानी के वैंक अधिकारी भी सारे देश में उसके क्रियान्वयन में चुपके-चुपके अड़ंगे डालने से वाज़ नहीं आ रहे थे।

वित्तीय साधनों की कमी के कारण मरातोव का दम घुटा जा रहा था। प्रदेश में कराधान के सभी स्रोत निःशेष हो चुके थे। अव

एकमात्र भरोसा छपाई मशीन पर था। खजाने ने बैंक नोट छापना इतना आसान कर दिया कि उनके और ट्राम के टिकटों के मूल्य में खास फ़र्क नहीं रह गया और लोग उन्हें उचित ही नकली पैसा कहने लगे। लेकिन छापाखाना फिर भी मांग पूरी नहीं कर पा रहा था। थियेटर स्क्वायर के बैंक पैसा जुटाने की कोशिशों में हर प्रकार से बाधाएं डालते जा रहे थे। ऐसे में आखिरकार नगर प्रशासन ने अंतिम हथियार इस्तेमाल करने का फ़ैसला किया: एक तथाकथित "पहल" आयोग बनाया गया, जिसने एकाएक सभी बैंकों के प्रबंधतंत्र पर अधिकार कर लिया। इससे सभी मोर्चों में से सबसे शांत मोर्चे पर बहुत बड़ी तो नहीं, पर सनसनीखेज़ हलचल अवश्य मच गयी। कमर्शियल बैंकों का अस्तित्व खत्म हो गया।

यह घटना सालभर पहले की थी। लेकिन अब नगर की वित्त-व्यवस्था समय के कंपनकारी आघातों को और भी प्रखरता से महसूस कर रही थी, हालांकि उसका सारा नियंत्रण एक ही हाथ में दे दिया गया था। युद्ध के लिए और नये जीवन के निर्माण के लिए साधन खोजना जितना कठिन होता, उतना ही मज़बूत इस हाथ को होना चाहिए था। इसलिए सभी निगाहें प्योत्र पेत्रोविच रागोज़िन पर टिक गयीं। सभी उसके हाथ को जानते थे और उसपर भरोसा करते थे।

जब कार्यकारिणी की बैठक में उसका नाम सुझाया गया और बताया गया कि नगर और प्रदेश घोर. वित्तीय संकट से गुज़र रहे हैं, रागोज़िन इतना ही कह सका कि वह चूंकि पैसों से संबंधित मामलों में निरक्षर है और दुमुंही इतालवी लेखाप्रणाली को संदेह की नज़रों से देखता है, इसलिए वित्तीय मामलों के कमिसार के पद से एक बार पहले भी इंकार कर चुका है। लेकिन उसकी आशंकाओं को यह कहकर शांत कर दिया गया कि वह अब कमिसार नहीं, बल्कि वित्त विभाग का प्रमुख कहलाया जायेगा। उसने मुस्कराते हुए पूछा: क्या इस पद पर काम करने के लिए पैसों के मामलों की समझ रखना ज़रूरी नहीं है? जवाब मिला: वित्त-विशेषज्ञों के मुकाबले तुममें एक खूबी यह है कि तुम्हें ईमानदारी सीखने की ज़रूरत नहीं, जबकि वित्तीय मामलों की पेचीदगियां धीरे-धीरे खुद ही सीख जाओगे। बैठक में किरील इज़्वेकोव भी मौजूद था, लेकिन वह चुप ही बैठा रहा। जब रागोज़िन

उस पद पर काम करने के लिए सहमत हो गया, किरील ने उसे तिरछी निगाहों से देखा और उसकी आंखों में घुड़की देखकर हथेली से अपनी चालाकीभरी मुस्कान छिपा ली।

रागोज़िन के लिए सहमत न होना संभव भी नहीं था। दस वर्ष से पार्टी में काम करते हुए यह बात उसकी चेतना में गहरी जड़ें जमा चुकी थी कि वह बोल्शेविक है और उस सामूहिक विवेक का अंग है, जिसने उसके समस्त अस्तित्व को सार्थकता प्रदान की है। एक बार कोई दायित्व स्वीकार कर लेने पर वह उसे कर्त्तव्य की भांति निभाता था। यह उसकी आदत थी।

लेकिन नया दायित्व संभालने के पहले घंटों में ही वह समझ गया कि आज तक उसका ऐसी किसी दुनिया से साक्षात्कार नहीं हुआ था, जो कि इतनी अव्यवस्थित और अनियंत्रणीय हो। जैसी कि उसकी आदत थी, उसने काम शुरू करने से पहले अपने लिए उसकी एक योजना बना ली, ताकि छोटी-मोटी बातों के झमेले में न पड़कर मुख्य-मुख्य कार्यों पर ही अपना सारा ध्यान केंद्रित कर सके। मुख्य कार्य तीन थे: इसकी जांच करना कि मुद्रा पूंजी की ज़ब्ती कैसे की जा रही है, फिर इसकी जांच करना कि बहुमूल्य वस्तुओं का रख-रखाव कैसे किया जा रहा है (ताकि ज़रूरत पड़ने पर, यानी अगर लड़ाई का मोर्चा नगर के बहुत निकट आ जाये, तो उन्हें तुरंत अन्यत्र हटाया जा सके) और, अंत में, उपलब्ध वित्तीय साधनों के वितरण को पूर्णतः सुव्यवस्थित बनाना।

उसने अपने कर्मचारियों से परिचित होना शुरू ही किया था कि उसपर फ़ौरी अनुदानों की मांगों की बौछार होने लग गयी। पैसा रोटी था और भूखों को रोटी देने से इंकार नहीं किया जा सकता था। लेकिन रागोज़िन के दफ़्तर के बीसों कमरों से जो एकमात्र चीज़ मुक्तहस्त दी जा सकती थी, वह था "नहीं"।

उसका सारा दिन अर्ज़ियों और मांगों का जवाब देने में ही गुज़र जाता। उसके स्वागत कक्ष में हर समय मामूली ऋणपत्रधारियों – छोटे-मोटे वकीलों, सरकारी कर्मचारियों, अध्यापकों, देहाती बंगलों के मालिकों, फ़ैमिली डाक्टरों, आदि – की भीड़ लगी रहती। ज़ब्त किये गये ऋणपत्रों की रकम अगर दस हज़ार रूबल से अधिक न

होती तो कानून के अनुसार उनके मालिक एवज़ में उधार पाने के हकदार थे।

कभी-कभी उसके कमरे में एकाएक कोई रोती-बिलखती अभिनेत्री तूफ़ान की तरह आ घुसती और अपनी रंगी हुई आंखें पोंछती ज़िद करने लगती कि बैंक में उसके सेफ़ डिपाज़िट बक्स में मिली चीज़ों की फ़ेहरिस्त ठीक नहीं बनायी गयी है। कान के बुंदों की दोनों जोड़ियां असली हीरे की थीं, जबकि फ़ेहरिस्त में एक को नकली हीरे की दर्ज किया गया है। वह अपने नकली हीरे कभी सेफ़ डिपाज़िट बक्स में न रखती, क्योंकि नकली गहनों की ज़रूरत उसे लगभग हर शाम स्टेज पर पड़ती है और उन्हें वह इस मोरक्को चमड़े से मढ़े बक्स में रखती है–ये रहे वे, कामरेड कमिसार, चार कंगन, दो हार, अंगूठियां और कान के बुंदे। कुल कितने हैं, उसने खुद भी नहीं गिना है। इन्हें तो वह हीरे का नहीं बता रही! लेकिन सेफ़ डिपाज़िट बक्स में जो गहने थे, वे असली, सच्चे हीरे के थे। जिस जोड़ी बुंदों की बात चल रही है, वह उसे उसके प्रशंसकों ने उसके पिछले बेनिफ़िट शो में भेंट किये थे। सारी मंडली गवाह है। उसका कसूर नहीं कि बेनिफ़िट शो बंद हो गये हैं और ऐसी भेंटें और नहीं मिल सकतीं। मगर उसे जीना तो है! सेफ़ डिपाज़िट बक्स में उसकी मेहनत की कमाई थी– फ़िज़ूलखर्ची या विलास की कोई चीज़ नहीं, बल्कि अभिनेत्री की मेहनत करके कमायी हुई चीज। हो सकता है कि बैंक में ही किसी ने बुंदों को बदल दिया है या जानबूझकर उन्हें नकली बताया है, ताकि धोखाधड़ी की जा सके। वह भोली-भाली लड़की नहीं है! उसे धोखा नहीं दे सकते! वह इस मामले की जांच के लिए विशेषज्ञों की कमेटी बिठाने की मांग करती है। वह मर जाना पसंद करेगी, पर यह मानने को तैयार न होगी कि उसे असली हीरों के बजाय कांच भेंट किये गये थे! भगवान का शुक्र है कि उसके प्रशंसक जर्मन नहीं हैं!

या फिर कभी स्वास्थ्य विभाग की प्रमुख आकर रागोज़िन को घेर लेती और उसका पूरा एक घंटा बरबाद कर डालती। वह एक सम्मानित महिला और अनुभवी डाक्टर थी। उसके तर्क अकाट्य होते और प्योत्र पेत्रोविच बड़ी मुश्किल से कोई आपत्ति कर पाता।

वह जानता था कि वह सही है, पर सही वह खुद भी तो था : डाक्टर को पैसे चाहिए थे, क्योंकि राज्य उससे लोगों को स्वस्थ रखने की मांग करता था, लेकिन रागोज़िन पैसे कहां से लाये, अगर राज्य उन्हें उतनी जल्दी और उतनी मात्रा में तैयार नहीं कर पा रहा है, जितनी जल्दी और जितनी मात्रा में कि ज़रूरत थी। बेशक छापाखाना समय के साथ कदम मिलाकर चलने की कोशिश कर रहा था। कल तक जिन नोटों पर दस की संख्या छपी थी, आज उनपर एक हजार की संख्या छापी जा रही है और अगले रोज़ इस संख्या में और तीन शून्य जुड़ जायेंगे। लेकिन बाज़ार भाव शून्यों का वैसे ही पीछा किये जा रहे थे, जैसे कि शिकारी कुत्ते खरगोश का पीछा करते हैं और कोई भी चाल या चालाकी खरगोश को नहीं बचा पाती है। रागोज़िन अपने बीस के बीस कमरों का एकस्वर से दिया हुआ उत्तर सुनता : "नहीं!"

"लेकिन आप अपने को मेरी जगह पर रखकर देखें," डाक्टर कहती। "केंद्रीय सरकार से हम कोई आशा नहीं कर सकते। हम गये थे, मगर जवाब मिला : सभी स्थायी चिकित्सा संस्थाओं का खर्च स्थानीय कोषों से पूरा किया जाये, केंद्र एक भी पाई नहीं देगा। ऐसे में आप ही बताइये : हम अपने अस्पताल कैसे चलायें? अगर हम जैसे-तैसे खींच रहे हैं, तो केवल इस बूते पर कि हमें युद्धबंदियों, सैनिक वार्डों और हैज़ा रोकथाम के नाम पर कुछ मिल जाता है। हम बीमारों को वापस कर देते हैं। हमारे पास कंबल नहीं हैं, जूते नहीं हैं। विशेष आयोग आता है, पूछता है : तकिये क्यों नहीं हैं? हम कहां से लायें? मैं खजाने की मालिक नहीं, डाक्टर हूं। मैं पैसा पैदा नहीं कर सकती। हमें कहते हैं कि हमें शरणार्थियों को मरने देने का कोई हक नहीं है। लेकिन अगर मैं एक मद का पैसा दूसरे मद में खर्च करूं—मिसाल के लिए, जो पैसा टाइफ़स के लिए भेजा गया है, उसे हैज़ा के इलाज पर लगाऊं—तो अदालत के कठघरे में खड़ा करने की धमकी मिल जाती है। किसका कसूर है कि टाइफ़स खत्म होने से पहले ही हैज़ा फूट पड़ा? अगर आप देख पाते कि हमपर क्या बीत रही है! ऊपर से आप कहते हैं कि हम, कम्युनिस्ट डाक्टर, भीतरघात कर रहे हैं!"

"ऐसी कोई बात नहीं," रागोज़िन उलाहना देता। "मैंने ऐसा कभी नहीं कहा। मैं सिर्फ़ यही कह रहा हूं कि थोड़ी कोशिश करके आपको तखमीना तैयार कर लेना चाहिए, जिसमें यह भी बताया हो कि पैसा कहां-कहां से आ सकता है।"

"तखमीनों से मुर्दों को ज़िंदा नहीं किया जा सकता। हमें पैसा चाहिए, अभी, इसी समय। शहर के बाहरी इलाकों में लोग गंदगी से परेशान हैं। चार साल पहले जब हमारे पास गंदगी ढोने के लिए चार सौ पीपे थे, तब भी हम शहर का पांचवां हिस्सा ही साफ़ कर पाते थे। लेकिन जानते हैं, पिछले साल कितने पीपे थे? सड़सठ! और आज? बीस! आपने इस बारे में कभी सोचा है?"

"पीपों के बारे में? हम्म, उनका शायद मुझसे कोई वास्ता नहीं है," रागोज़िन थोड़ा सा बुरा मानते हुए कहता।

"वास्ता पैसों से है और पैसे आप हैं। मैं ठीक कह रही हूं न? मैं सोचती हूं कि लोगों पर चिकित्सा और सफ़ाई कर लगाना चाहिए।"

"नहीं लगा सकते।"

"क्यों नहीं? पिछले साल, जब आप नहीं थे, वित्त आयोग ने अमीरों पर लेवी लगायी थी कि नहीं? बनिये-व्यापारी आपस में लड़ने-झगड़ने लगे कि कौन कितना दे। ज़्यादा पैसेवाले ज़्यादातर बोझ कम पैसेवालों पर डाल देना चाहते थे। आखिरकार झख मारकर सोवियत के सामने गिड़गिड़ाये कि वही तय करे किसको कितना देना है।"

"मारपीट भी हुई?" रागोज़िन एकाएक खुश होते हुए पूछता।

"यह तो मुझे मालूम नहीं, पर इतना अवश्य मालूम है कि रकम काफ़ी बड़ी इकट्ठी हो गयी थी और उसे लाल सेना के लोगों पर खर्च किया गया। अगर लाल सेना के लिए पैसा उगाहा जा सकता है, तो चिकित्सा और सफ़ाई के लिए क्यों नहीं?"

"अब हम लेवी नहीं लगा सकते। ऐसा कानून बन गया है," रागोजिन लगभग अफ़सोस के साथ कहता।

इस तरह वह दिन-दिनभर बोलता जाता और प्रायः निकास वहां खोजता, जहां कि वह मिल ही नहीं सकता था। उसकी हालत उस आदमी जैसी थी, जो जानता है कि अरसे से एक भी पाई नहीं बची है, पर फिर भी जो यंत्रवत् जेबें टटोलता रहता है।

विराम के क्षणों में वह थोड़ा सा पसर जाता और खिड़की के वाहर छतों के वीच नदी की सतह के छोटे से चमकते धव्वे को देखने लगता और सोचता कि अव फिर कभी रात-रात भर के मछली के शिकार पर नहीं जा सकेगा, और मुंह से आह निकल ही पाती कि दरवाज़ा खुल जाता और वताया जाता कि जन शिक्षा विभाग, या सामाजिक निर्वाह विभाग या किसी और संगठन का प्रतिनिधि उससे मिलना चाहता है। वह फिर मेज़ के पीछे कुर्सी पर बैठ जाता, मन में एकाएक उठे इस विचार पर मुस्करा देता कि वह अव मात्र आदमी नहीं, वल्कि एक तरह का जानदार बैंकनोट है, और फिर जोर से कह उठता,

"ठीक है, भेज दो।"

स्वाभाविक ही है कि थियेटर स्क्वायर में वैंक की शानदार इमारत के आगे खड़े लड़कों को न वैंकों के राष्ट्रीयकरण के इतिहास के वारे में कुछ मालूम था, न रागोज़िन के काम और परेशानियों के वारे में ही। वे देर तक तय न कर पायें कि द्वार खोलकर अंदर जायें या नहीं, जो वदरंग हो जाने के वावजूद उन्हें वहुत भव्य लग रहा था। आखिर ज़्यादा निडर पावलिक वीत्या को वगल में कोंचते हुए वोला,

"हम ठहरे क्या हैं? चलो, अंदर चले!"

उन्होंने अपने को एक चौड़े ज़ीने के सामने पाया, जिसपर घिसा हुआ मगर अभी भी शानदार, किनारियों पर धारीवाला लाल गलीचा विछा हुआ था। चारों ओर पूर्ण खामोशी थी, केवल कहीं ऊपर से गिनतारे की खटक-खटक की आवाज़ यों आ रही थी, जैसे वारिश के वाद छत से पानी टप-टप टपक रहा हो।

वगल के एक कांच के दरवाज़े से कमर तक लंवी नीली सी दाढ़ी-वाला एक वूढ़ा निकला। वह एक हाथ में टीन की केतली पकड़े था, जिसकी टोंटी से भाप के छल्ले निकल रहे थे, और दूसरे में एक खाली तश्तरी।

"तुम लोग यहां क्या कर रहे हो?"

"हम कामरेड रागोज़िन से मिलना चाहते हैं," पावलिक वोला।

"अच्छा, इसलिए आये हो!"

वूढ़े ने केतली से तश्तरी में कुछ गरम पानी उंडेला और फूंकें मारकर ठंडा करने लगा। फिर कुछ चुस्कियां लेकर पूछा,

"किसलिए मिलना चाहते हो?"

"हमें उनके पास भेजा गया है," वीत्या ने जवाब दिया।

"कहां?"

वीत्या ने पावलिक पर एक नजर डाली।

"यहां," पावलिक बोला।

बूढ़े ने तश्तरी खाली करके उसमें कुछ पानी और डाला।

"यहां वोल्गा-कामा कमर्शियल बैंक का दफ़्तर है," उसने लड़कों के पैरों पर नजर डालते हुए कहा। "ऐसी जगह जूते झाड़कर घुसना चाहिए, न कि झोंपड़ी जैसे धूल-मिट्टी, सबके साथ। यहां रागोज़िन नाम का कभी कोई आदमी नहीं था।"

"तो कहां है?" पावलिक ने पूछा।

"कौन है यह तुम्हारा रागोज़िन?"

लड़के चुप रहे।

"वह सबसे बड़ा अफ़सर है," आखिर वीत्या ने जवाब दिया।

बूढ़े ने केतली और तश्तरी पकड़े दोनों हाथ चौड़े करते हुए अपनी दढ़ियल छाती उनकी ओर घुमायी।

"अभी खौलता हुआ पानी डाल दूंगा, तो पता चल जायेगा कि नाक कहां नहीं घुसेड़नी चाहिए!"

वीत्या और पावलिक पीछे दरवाज़े की ओर हटने लगे।

"अफ़सर!" बूढ़े ने आगे बढ़ते हुए कहा। "आजकल सभी अफ़सर हैं। जाओ वहीं खोजो, जहां अफ़सर बैठते हैं।"

"कहां?" पावलिक ने दहलीज से पूछा।

"सोवियत के दफ़्तर में! अब भगो यहां से!"

"उह, कितना चिड़चिड़ा है!" जब पीछे भारी दरवाज़ा, मानो अनिच्छा से, बंद हो गया, पावलिक बोला। "खैर, मैं जानता हूं कि सोवियत कहां है।"

"मैं भी जानता हूं। दौड़ें?"

और दोनों दौड़ पड़े।

रागोज़िन हर तरह के मुलाकातियों का आदी बन चुका था, लेकिन यह तो उसने स्वप्न में भी न सोचा था कि उनमें कभी बच्चे भी हो सकते हैं। उसे यकीन था कि वे गलती से आये हैं, लेकिन उनके

हांफते, लाल चेहरे देखकर वह प्रफुल्लित हो गया। खड़े होकर, मुस्कराते और अपनी मूंछें छूते हुए वह बिना कुछ कहे कुछ देर उन्हें देखता रहा।

"आप कामरेड रागोज़िन हैं?" पावलिक ने अपनी आवाज़ को जितना हो सकता था धीमी करते हुए पूछा।

"मानो कि मैं ही हूं।"

"नही, सच बताइये, क्योंकि उस कमरे में हमें कहा गया कि आप यहां हैं।"

"मैं सचमुच यहीं हूं। तुम्हें क्या अपनी आंखों पर विश्वास नहीं?"

"पर आप कामरेड रागोज़िन हैं?"

"मैं क्या देखने में वैसा नहीं लगता?"

"हम नहीं जानते," वीत्या बोला, "क्योंकि हमने आपको पहले कभी नहीं देखा है।"

"अब तो देख लिया? लगता हूं रागोज़िन जैसा?"

पावलिक ने बड़ी गंभीरता से उसपर सिर से पैर तक नज़र दौड़ायी और फिर जैसे कि विश्वास हो गया हो, बोला,

"लगते तो हैं।"

वह थोड़ा सा पीछे हटा और वीत्या के सिर के पीछे फुसफुसाया,

"बोल न!"

"हमें, कामरेड रागोज़िन, आर्सेनी रोमानोविच ने भेजा है।"

"भेजा नहीं है," पावलिक ने फिर आगे आकर टोक दिया। "आर्सेनी रोमानोविच को तो मालूम भी नहीं कि हम आपसे मिलने जा रहे हैं।"

"हां-हां," वीत्या बोला, "आर्सेनी रोमानोविच सचमुच नहीं जानते। लेकिन हम उनके सिलसिले में..."

"कौन हैं यह आर्सेनी रोमानोविच?"

दोनों लड़कों ने आश्चर्य से रागोज़िन को देखा।

"कौन हैं वह और तुमने उनसे क्यों छिपाया कि मुझसे मिलने जा रहे हो?"

"आप क्या आर्सेनी रोमानोविच को सचमुच नहीं जानते?" वीत्या ने मुश्किल से सुनायी देनेवाली आवाज़ में पूछा।

"लेकिन कौन हैं वह?"

"आर्सेनी रोमानोविच? वह दोरोगोमीलोव हैं।"

रागोज़िन एकाएक चौंक पड़ा और कमरे के बीच में आकर खड़ा हो गया।

"दोरोगोमीलोव?" अपने गंजे माथे पर ज़ोर-ज़ोर से हाथ रगड़ते हुए उसने दोहराया। "आर्सेनी रोमानोविच दोरोगोमीलोव? वह यहीं हैं?"

"नहीं, यहां नहीं," पावलिक ने हड़बड़ाते हुए कहा, "अपने काम पर हैं। हमने उन्हें नहीं बताया, क्योंकि वह किसी भी कीमत पर आपसे मिलना नहीं चाहेंगे। इसलिए हम – वीत्या और मैं – खुद ही आ गये।"

"मुझसे मिलना नहीं चाहेंगे? उन्हें कुछ हो गया है क्या?"

"नहीं, अभी कुछ नहीं हुआ है। लेकिन हमें डर है, क्योंकि एक सैनिक अफसर आया था और उन्हें घर से निकालने की धमकी दे गया है। पुस्तकालय और दूसरी सभी चीज़ों के साथ।"

"पुस्तकालय के साथ?" रागोज़िन ने लगभग चिल्लाते हुए पूछा। "सचमुच? यानी कि वह ज़िंदा हैं? और वहीं रहते हैं – अपनी किताबों के साथ? कमाल है!"

उसने लपककर एक कुर्सी उठायी, फिर दूसरी और फिर तीसरी भी और उन्हें कतार में रखकर लड़कों का हाथ पकड़ा, उन्हें बगल की कुर्सियों पर बिठाया और खुद बीच में बैठ गया।

"हां, तो अब बताओ सब कुछ शुरू से।"

लड़कों के पास कहने को कुछ और था नहीं – सारी बात वे कह ही चुके थे। वे नहीं चाहते थे कि आर्सेनी रोमानोविच को परेशान किया जाये। बस। लेकिन चूंकि वे दोरोगोमीलोव के घर की हर ईंट, हर कील से परिचित थे, इसलिए रागोज़िन आर्सेनी रोमानोविच के बारे में जो भी जानना चाहता, वे बता सकते थे। जितना ही ज्यादा वे बताते गये, उतनी ही स्पष्टता के साथ रागोज़िन को याद आता गया कि कैसे वह किताबों की आलमारियों के बीच रखे सोफ़े पर बैठा चुपचाप किताबों के जर्जर पन्ने पलटता रहता था या फिर बिखरे हुए बालोंवाले, हमेशा थोड़े से उत्तेजित बूढ़े दोरोगोमीलोव की बरतन मांजने में मदद किया करता था। कोट पर मोमजामे का एप्रन बांधे

और हाथ में भांवां लिये आर्सेनी रोमानोविच फ़ांसीसी सामाजिक यूटोपियाओं की ऐसे जोशो-खरोश के साथ आलोचना किया करता कि जैसे वे इस धरती पर अरसे से स्थापित हो चुके हैं और उन्होंने उसका कुछ बुरा किया है। रागोज़िन की स्मृति में सुबह के गुलाबी कोहरे में नदी तट पर खड़ी, टोपी और कभी न बदला जानेवाला कोट पहनी दोरोगोमीलोव की अजीब सी आकृति साफ़-साफ़ उभर आयी। रागोज़िन नाव मे बैठा आसपास खड़ी दूसरी डोंगियों और नावों के सहारे अपनी नाव को धकेल रहा था, ताकि चुपचाप खुली नदी में निकल जाये। जब वह घाट की बल्लियों के नीचे पहुंच गया और घाट की अलकतरे से चिपचिपाती दीवार के सहारे आगे बढ़ रहा था, उसने आखिरी बार इस काली आकृति को देखा था, जो किसी जानदार निशाने जैसे टोपी हिला-हिलाकर उसे विदा कर रही थी। इसके बाद वोल्गा रागोज़िन को एक अनजानी राह पर ले गयी थी और उसका सब कुछ – उसकी प्यारी क्साना, जो जल्दी ही मां बननेवाली थी, उसके पुराने दोस्त, अर्धचंद्राकार पहाड़ियों से घिरा सोता हुआ शहर – पीछे छूट गया था।

"कमाल है! आर्सेनी रोमानोविच बिल्कुल नहीं बदले!" लड़कों की बातें सुनता वह दोहराता जा रहा था।

लड़कों के उसके कमरे में घुमते ही उसने पाया था कि उसका दिल ज़ोर-ज़ोर से धड़कने लगा है। उसे ज़्यादा आकृष्ट सुनहरे-लाल बालों, चमकती आंखों और हल्की सी उठी, संवेदनशील नाकवाले हंसमुख पावलिक ने किया था। "कमाल है!" कहते हुए रागोज़िन हर बार उसकी ओर मुड़ जाता और मन ही मन सोचता कि कहीं वह नन्हा रागोज़िन इसके जैसा ही तो नहीं है, जिसकी खोज में वह ज़रूर जुट जायेगा और ज़रूर खोज लेगा, बस काम से थोड़ा फुरसत मिल जाये।

"तुम्हारी उम्र कितनी है?" उसने पावलिक से पूछा।

"जल्दी ही ग्यारह साल पूरे हो जायेंगे। मैं वीत्या से बड़ा हूं।"

"वीत्या से बड़े," रागोज़िन बुदबुदाया, "साथ ही एक और लड़के से भी।"

"किससे?"

"एक दूसरे लड़के से... तुम्हारे ही जैसा है," रागोज़िन हंस पड़ा।

उसने पावलिक के दुबले, नुकीली हंसलीवाले कंधे पर हाथ रखकर हल्के से दबाया और चुप हो गया। बाद में खड़ा होकर दोनों लड़कों को भी खड़ा किया और कुर्सियां जहां से उठायी थीं, वापस वहीं रख दी।

"तो ठीक है, मेरे नन्हे दोस्तो। आर्सेनी रोमानोविच से कह देना कि परेशान न हों। कोई उन्हें बेदखल नही करेगा। अगर कोई कोशिश करे, तो सीधे मेरे पास आना। आर्सेनी रोमानोविच से भी आने को कहना। बोलना, मैं उनसे मिलना चाहता हूं। अगर ज़िद्द करेंगे, तो मैं खुद आ धमकूंगा।"

उसने उनके चारों हाथ अपने हाथों में लेकर इतने ज़ोर से झटके कि दोनों लड़के एकाएक हंस पड़े।

उनके चले जाने के बाद उसने दरवाज़ा बंद कर दिया और खिड़की की सिल पर बैठकर बाहर ताकने लगा। तेज़ धूप ने छतों और वृक्ष-शिखरों की रूपरेखाओं को और गहरा बना दिया था और आसमान बेरहमी से गरमी उगल रहा था।

"नहीं," उसने ज़ोर से कहा और खिड़की से हट गया। "अब शायद कभी मछली के शिकार पर नहीं जा पाऊंगा। कभी नहीं। वक्त ही कहां है!"

पावलिक गलियारे में फुर्ती से चलता हुआ कह रहा था,

"अब कोई आर्सेनी रोमानोविच को परेशान करके तो देखे!"

"हां, सचमुच," वीत्या भी उससे सहमत होते हुए कह रहा था, "परेशान करके तो देखे!"

वे सामने से आते लोगों से टकराने से बचने के लिए कभी अलग होते और कभी निकट आते हुए ज़ीने पर दौड़ रहे थे। तभी ऐन दरवाजे पर किसी को "वीत्या!" पुकारता सुनकर वे रुक गये – वे मेरकूरी अव्देयेविच से टकराते-टकराते रह गये थे।

मेरकोव ने अपने नाती की आस्तीन खींचते हुए पूछा,

"तू यहां क्या कर रहा है?"

"हम... क्या कहते हैं..." वीत्या अचकचाकर पावलिक की ओर देखते हुए बोला।

"हम... मेरा मतलव है कि आर्मेनी रोमानोविच ने हमें वहां चालीस नंवर कमरे में भेजा था," पावलिक ने निर्भीकतापूर्वक जवाव दिया और वीत्या को अपनी ओर खींचा, मानो उसे अपने संरक्षण में ले रहा हो।

"चालीस नंवर में?"

मेरकूरी अव्देयेविच ने अपना पसीने से भीगा माथा जैसे-तैसे पोंछा।

"कैसा आदमी है वह?" उसने पूछा।

"कौन?" वीत्या नहीं समझ पाया।

"चालीस नंवर में रागोज़िन ही बैठता है न? कैसा आदमी है वह? ढंग का है?" मेश्कोव ने डरते-डरते पूछा।

"ढंग का?" पावलिक आश्चर्य से वोला। "अच्छी वात कही – ढंग का!"

"गुस्सैल है?"

"उसके जैसा भला आदमी ढूंढ़े भी न मिलेगा," वीत्या ने हिम्मत करते हुए जवाव दिया।

"वह जिसे माफ़ नहीं करना है, नहीं करेगा," पावलिक वोला।

"आह, भोले वच्चो! काश, मैं तुम्हारी जगह होता!" मेरकूरी अव्देयेविच ने गहरी सांस ली। "पाशा, जहां तुम्हें जाना है, जाओ। वीत्या, तुम मेरे साथ चलोगे।"

"क्यों?"

"मुझे वह चालीस नंवर कमरा वताओगे और इंतज़ार करोगे, जव तक मैं वहां से न निकलूं... अगर निकला, तो..."

और वह वीत्या को हाथ पकड़कर ले गया।

स्वागत कक्ष में इंतज़ार करते हुए उसने अपना तिनकों का वना टोप उतार लिया, जिसका चाकलेटी रंग उड़कर अव वैंजनी सा हो गया था, और वीत्या को थमा दिया। वह अपने नाती से कुछ और सवाल पूछना चाहता था, लेकिन गला न मालूम गरमी से या न मालूम घवराहट से सूख गया था और फिर दरवाज़े से ध्यान हटा पाना भी मुमकिन न था, जो वहुत जल्दी ही उसे निगल जानेवाला था। वीत्या वैठे-वैठे ऊव गया। जव उससे और वरदाश्त न हुआ, उसने दयनीय स्वर में पूछा,

"नाना, मैं जाऊं?"

लेकिन नाना ने सिर्फ़ सिर हिला दिया और टोप पर उसकी अंगुलियां दबा दी, यह बताने के लिए कि वह टोप से खेले न।

आखिरकार किसी ने उसका नाम पुकारा, जो मेरकूरी अव्देयेविच को बहुत ही विचित्र और पराया सा लगा:

"नागरिक मेरकोव।"

वह चौंककर खड़ा हुआ और धीरे-धीरे, ढुलमुल चाल से दरवाजे की ओर बढ़ा। दहलीज़ पर रुककर उसने उधर देखते हुए, जिधर मेज़ थी, नीचे तक झुककर सलाम किया। ऐसा करने की उसने पहले से ही सोची हुई थी—आखिर इसमें कोई नुकसान तो था नहीं। अगर रागोजिन पहचान गया, तो सलाम पसंद आ सकता है: अहा, वह सोचेगा, मेरकोव देखो कैसे भीगी बिल्ली बन गया है! अगर नहीं पहचाना, तो कहेगा: ये कमबख्त बनिये फिर भी कितने सभ्य हैं!

"आइये, तशरीफ़ रखिये," उसने किसी को कहते हुए सुना और कहनेवाले की शराफ़त से दंग रह गया। कहीं उसके कानों को धोखा तो नहीं हुआ है?

रागोजिन यों बिना किसी तनाव के मेरकोव को देख रहा था, जैसे कि किन्ही अवांछित विचारों से छुटकारा पाने की कोशिश कर रहा हो। लेकिन सिकुड़ी हुई भौंहों के नीचे उसकी आंखें साफ़-साफ़ चमक रही थीं। वह जानता था कि उसके सामने कौन बैठा है। अपने बेइंतहा कामों की गुत्थी को सुलझाने की कोशिश में उसने सारा ध्यान अपनी योजना में निर्धारित तीन मुख्य दिशाओं पर ही केंद्रित किया हुआ था। वह जैसे कि ताइगा के बीहड़ वन में सड़क बना रहा था। घटनाओं को आवश्यक मोड़ देना भी उसका कर्त्तव्य था, उसकी आदत थी। वह उन लोगों में से न था, जो धारा के साथ बहते हैं—वह या तो उसे सीधे पार करता था या फिर उसके बिल्कुल विपरीत रुख लेता था। सेफ़ डिपाज़िट बक्सों के मालिकों की सूची पढते हुए उसमें उसे मेरकोव का नाम भी मिला था और उसके बहुत बड़े तो नहीं, पर काफ़ी ठोस कारोबार की याद कर उसने सबसे पहले बुलाये जानेवाले लोगों में, जिनकी भूतपूर्व दौलत की वह जांच करना चाहता था, उसे भी शामिल कर लिया था।

"नहीं, अब वह पहले जैसा कतई नहीं है," रागोज़िन ने मेश्कोव के पिचके और उपेक्षित चेहरे को देखकर सोचा और फिर बिना किसी लाग-लपेट के बोला,

"हम शायद परिचित हैं न?"

"परिचित?" मेरकूरी अव्देयेविच ने आश्चर्य से कहा।

"याद है, आपके अहातेवाले छोटे मकान में प्योत्र पेत्रोविच नाम का एक किरायेदार हुआ करता था?"

"प्योत्र पेत्रोविच? बाप रे! यह क्या सचमुच आप ही हैं?"

मेश्कोव ने हाथ यों उठाये कि दायां हाथ मेज़ के ऊपर कुछ-कुछ उस दिशा में बढ़ा, जिधर से रागोज़िन का उस समय निश्चल रखा हुआ हाथ आ सकता था, अगर वह उसे उठाना और बढ़ाना चाहता। एक क्षण के लिए मेरकूरी अव्देयेविच मंडराती हुई चिड़िया जैसी मुद्रा में जड़ीभूत हो गया और इंतज़ार करने लगा कि उसका पुराना परिचित उससे हाथ मिलाना चाहेगा या नहीं, लेकिन कोई प्रतिक्रिया न देखकर वह अचकचाते हुए अपने पंख समेटने को तैयार हुआ ही था कि रागो-ज़िन ने आगे झुककर उसकी अंगुलियों को थोड़ा सा दबा दिया। नहीं, कुछ कहो, रागोज़िन मिलनसार आदमी है! और फिर बातें भी तो कितने मोहक ढंग से करता है!

"हम्म, देखा, क्या से क्या हो गया! ज़माना बदल जाता है!"

"बिल्कुल सही है, प्योत्र पेत्रोविच। ज़माना बदल जाता है। लेकिन भगवान की कृपा है कि आप सकुशल हैं। हम तो आपके बारे में सोचा करते थे..."

"सचमुच?" रागोज़िन ने अपनी एक ओर की मूंछ को ऊपर मरोड़ते हुए हल्के से व्यंग्य से पूछा। "क्या सोचा करते थे?"

"अपनी दिवंगता पत्नी के साथ बातचीत में जब-तब आपकी चर्चा छिड़ जाती थी। 'प्योत्र पेत्रोविच को ही देखो,' हम कहते थे, 'कितना भला, कितना इंसाफ़पसंद आदमी था।'"

"आपकी पत्नी यानी कि चल बसी हैं?" रागोज़िन ने यों ही पूछा और फिर जोड़ा, "मेरी भी।"

"नहीं तो!" मेश्कोव ने आश्चर्य प्रकट किया। "कितनी नेक औरत थी! उस समय हमें कितनी फ़िक्र हुई थी!"

"फ़िक्र हुई थी?" गगोज़िन ने कड़ाई से पूछा।

"कैसे न होती? आख़िर बेचारी को वे किस हालत में ले गये थे! जल्दी ही आपको बेटा भेंट करनेवाली थी। बच्चा शायद हुआ भी था। आपको नहीं मालूम?"

"नहीं, नहीं मालूम," गगोजिन ने और भी कड़ाई से, मगर बहुत ही धीरे-धीरे जवाब दिया। लेकिन फिर एकाएक उसकी आवाज़ रूखी बन गयी, जैसे कि वह नहीं, कोई और आदमी बोल रहा हो: "मैंने आपको आपकी दौलत की जांच के सिलसिले में बुलाया है। वित्त विभाग जानना चाहता है कि आपकी संपत्ति का मूल्य कुल कितना है।"

"जानना चाहता है?" मेरकोव ने एकाएक मज़ाक सा करते हुए पूछा। "जानने को अब बचा क्या है? दौलत तो सब लुट गयी।"

"सेफ़ डिपाज़िट बक्स में आपका कुछ न था?"

"था। वोल्गा-कामा बैंक के सेफ़ डिपाज़ित बक्स में।"

"ज़ब्ती के समय आपके बक्स में कुल मिलाकर दो लाख बीस हज़ार के ऋणपत्र पाये गये थे, ठीक है न?"

"दो लाख इक्कीस हज़ार पांच सौ के।"

"और आपने गवाही दी थी कि आपके पास इतना ही पैसा है?"

"हा, सिर्फ़ इतना ही।"

"पर आपकी एक दूकान भी तो थी। लोहे, रंग, वगैरह की, ऊपरी बाज़ार में। ठीक कह रहा हूं न मैं? उन ऋणपत्रों में लगाया हुआ पैसा कहां से आया था?"

"इसी दूकान से।"

"क्या मतलब?"

"मैंने दूकान बेचकर ऋणपत्र खरीदे थे।"

मेरकोव के स्वर में निराशा भी थी और अपमानित व्यक्ति जैसी कड़ुआहट भी। बातचीत के अपने आरंभिक विषय से, जो कि उनके बीच अच्छे संबंध कायम होने में सहायक हो सकता था, हट जाने और खोयी हुई संपत्ति के प्रश्न पर आ जाने से उसे बहुत अफ़सोस हुआ था।

"कृपया बुरा न मानें कि मैं आपके मामलों में दखल दे रहा

हूं," रागोज़िन ने मानो मेरकूरी अव्देयेविच के विचारों को भांपकर मुस्कराते हुए कहा। "लेकिन आपको कुछ और तफ़सीलें देनी ही होंगी।"

"देने को अब रह ही क्या गया है? नंगा तो खड़ा हूं मैं आपके सामने!"

"इतने कठोर न बनें। यह ठीक नहीं है," रागोज़िन ने मुलायमी से कहा।

"ठीक है, प्योत्र पेत्रोविच। पूछिये जो पूछना है। मैं जवाब देने मे मना नहीं करूंगा। रहा सवाल कठोरता का, तो इसका इल्ज़ाम मुझपर नहीं लग सकता।"

"मैं ज़ानता हूं। पर आप भी जान लें कि मैंने आपको झगड़ने के लिए नहीं बुलाया है। आपकी संपत्ति किस रूप में थी – नकदी, ज़मीन-मक़ान या माल के रूप में? ठीक-ठीक जवाब दें। हर बात की जांच की जायेगी।"

"जैसा आप चाहें," मेश्कोव मान गया। "मेरे पास छिपाने को कुछ नहीं है। जैसा कि आपको याद होगा, १९१६ में व्यापार-धंधे में इतनी मंदी आ गयी थी कि उससे उबरना मुश्किल ही दिखायी दे रहा था। ऐसी हालत में मैंने अपनी दूकान बंद करने की सोची और शीघ्र ही उसे बेच भी दिया। मुझे आशा से अधिक दाम मिला – पूरे एक लाख अस्सी हज़ार रूबल। पर इसकी वजह यह थी कि पैसों की कीमत लड़ाई से पहले जितनी नहीं रह गयी थी। इससे कुछ ही पहले मैं एक बनिये को अपना रैनबसेरेवाला मकान बेच चुका था। उसके अलावा, अगर आपको याद हो, मेरे पास एक आटे और रस्सों का गोदाम था, जो बहुत ही जर्जर हालत में था। उसे मैंने लकड़ी के भाव बेच दिया। इससे पहले मेरे पास नकदी कुछ न थी। जो था, ये दूकान और मकान ही थे और इन्हें, जैसा कि आप देखते हैं, क्रांति से ठीक पहले मैंने नकदी में बदल लिया।"

"यह पैसा आपने कहां रखा? बैंक में?" रागोज़िन ने पूछा।

"हां।"

"आपके पास शहर में ज़मीन का टुकड़ा भी तो था?"

"हां, था, लेकिन वह खाली था। अब वह भी नहीं रहा, क्योंकि सारी ज़मीन राज्य की जो हो चुकी है।"

"और आपका अपना मकान?"

"क्या बात करते हैं आप, प्योत्र पेत्रोविच? उसे म्युनिमिपेलिटी ने छीन लिया है।

"आपके मेफ़ डिपाजिट बक्स में 'स्वतंत्रता ऋणपत्रों' के अलावा कुछ नहीं मिला। क्या आप यह कहना चाहते हैं कि क्रांति से पहले आपने अपनी सारी जायदाद पैसों में बदल ली थी और फिर मव पैसे एक ही ऋण में लगा दिये थे?"

"आखिरी कोपेक तक उसमें लगा दिया था," मेग्कोव ने गहरी मांम ली और अभी-अभी गरम हमाम से निकले आदमी जैसे चेहरा पोंछा।

"आप क्या इतने नादान थे कि सभी पैसे इस एक ही ऋण में लगा दिये?"

"मैं आपको बताता हूं, प्योत्र पेत्रोविच, कि ऐमा क्योंकर हुआ। मुझे इज़्ज़त ने मार डाला। मुझे ऐमी इज़्ज़त दी गयी कि मेरा मिर फिर गया। बैंक के डायरेक्टर ने मीठी-मीठी बातें बनाकर मुझे ऐसा बहकाया कि जैसे सारे शहर में असली अक्लमंद, दूरदर्शी केवल वह और मैं ही हों। क्रांति के बाद मानो जर्मनों पर विजय पा ली जानी थी और उसके बाद व्यापार-धंधों में फिर तेजी आ जानी थी। तब 'स्वतंत्रता ऋण' की बन आती और नकद पैसे तो क्या, कैसे-कैसे ऋणपत्र भी उसका मुकाबला न कर पाते। डायरेक्टर और मैं 'स्वतंत्रता ऋण' के ब्याज के सवाल पर ऐसे अड़ जाते कि... खैर, जैसा अड़े, वह आप देख ही रहे हैं।"

"यानी कि 'स्वतंत्रता' के मामले में आपसे चूक हो गयी, है न?" रागोज़िन मुस्करा पड़ा। "केरेन्स्की ने धोखा दे दिया?"

"आप बेहतर जानते हैं कि किसने धोखा दिया। मुझे राजनीति की कोई समझ नही।"

दोनों एक क्षण बिल्कुल खामोश रहे। एकाएक रागोजिन पहले से भी धीरे, मगर स्पष्टतापूर्वक बोला,

"हां, मुझे राजनीति की थोड़ी-बहुत समझ अवश्य है। आपके पास सोना नहीं था?"

वह सीधे मेग्कोव की आंखों में देख रहा था।

मेरकूरी अव्देयेविच ने कंधे उचका दिये।

"सरकार आप हैं। चाहें, तो मेरे गद्दे भी फाड़कर देख लीजिये।"

"आपके गद्दे हम क्यों फाड़ें?" रागोज़िन बोला और खड़ा हो गया। "लेकिन आपकी बैंक की किताबें हमारे पास हैं। उनसे ही पता चल जायेगा कि आपने जो कुछ बताया है, वह सच है या नहीं। फिलहाल मैं आपको छोड़े दे रहा हूं।"

मेरकूरी अव्देयेविच भी खड़ा होने को हुआ, लेकिन बीच ही में रुककर, अधखड़ी अवस्था में ही, उसने पूछा,

"और बाद में? बाद में क्या, नहीं छोड़ेंगे?"

"अगर आपने सब कुछ सही-सही बताया है, तो क्यों नहीं छोड़ूंगा?"

"प्योत्र पेत्रोविच! मैंने कुछ नहीं छिपाया है! आपसे मैं भला छिपाता भी क्या? आपको मेरे बारे में सब मालूम है – किराया, मकान, दूकान वगैरह – सब कुछ। मुझे आपको धोखे में डालकर क्या मिलेगा? आपने कभी मेरा बुरा नहीं किया और मैं भी हमेशा आपसे सहानुभूति रखता था।"

"ठीक है, ठीक है," रागोज़िन बोला।

"मैं सच कह रहा हूं। कभी आपके खिलाफ़ एक भी बात नहीं कही, जबकि आपकी वजह से मुझे पुलिस के हाथों न जाने कितने कष्ट भुगतने पड़े। मेरे घर में आपकी अंडरग्राउंड गतिविधियों का अड्डा मिला था और आप छिप गये थे..."

"कष्ट भुगतने पड़े? पुलिस के हाथों?" रागोज़िन एकाएक ठहाका लगाकर हंसते हुए बीच में बोल पड़ा। "मुझ पापी की वजह से? ओह, आप बेचारे!"

वह हंसता जा रहा था और मेज़ पर मुट्ठियां टेककर कभी अपने को पीछे ठेल रहा था, तो कभी आगे झुका जा रहा था। इतना अधिक हंसने से उसकी अधमिंची आंखों में आंसू छलक आये थे।

"यानी कि आपको मैंने भी... मैंने भी धोखा दिया है!" हंसी से वैसे ही लोट-पोट होते हुए वह आगे बोला। "अकेले केरेन्स्की ने ही नहीं!"

लगा कि मेश्कोव की आंखों में भी आंसू छलक आये हैं, लेकिन

20–62

उसके चेहरे का रंग बुरी तरह उड़ गया था। वह भौंहें ऊपर उठाये, जो अपनी प्रचंडता खो चुकी थीं, अब भी वैसे ही अधझुका खड़ा था।

तभी किसी ने दरवाज़े पर दस्तक दी।

"आइये, आइये!" रागोज़िन ने ज़ोर से कहा और पहले जैसे ही हंसता और आगे-पीछे झूलते हुए आगे बोला, "सपने में भी न सोचा था कि आपको धोखा दिया है। लेकिन अब क्या हो सकता है!"

दो पुरुषों और एक लड़की ने कमरे में प्रवेश किया। पुरुषों ने अपने कोट हाथ पर लटकाये हुए थे और टेनिस के खिलाड़ियों जैसी पतली कमरपेटियां बांधी हुई थी, जबकि लड़की सफ़ेद ब्लाउज़ और ऊंची, चारखानेदार ऊनी स्कर्ट पहने थी। पुरुषों की कमीज़ें – एक की आसमानी और दूसरे की आड़ू जैसे रंग की – इतनी उजली और आंखों को सुहानेवाली थीं और चिकने चेहरे ऐसे चमक रहे थे कि लगा मानो वे बाहर के प्रकाश और उष्मा का एक अच्छा-खासा हिस्सा अपने साथ कमरे में ले आये हैं। उसके अभिवादन करने और चलने के ढंग में आदर और आत्मविश्वास, दोनों का यथोचित मिश्रण था। "कैसे बने-ठने है!" रागोज़िन ने सोचा। उसका हंसना अभी भी बंद न हो पाया था। फिर जब हंसी शांत हो गयी, उसने मेश्कोव से कहा,

"कुछ कहिये, भगवान गवाह है कि मैंने आपको 'स्वतंत्रता ऋण' के मुकाबले कम ही धोखा दिया है। और अब बातचीत यहीं पर खत्म करें।"

मेरकूरी अव्देयेविच को मानो अपने यों छूट जाने से खुशी नहीं हुई। उसे जैसे अच्छा नहीं लगा कि आगंतुकों ने उसे रागोज़िन के साथ बातचीत को सौहार्दपूर्ण परिणति पर पहुंचाने से रोक दिया है। तभी उसने एक जानी-पहचानी, रेशम जैसी चिकनी आवाज़ सुनी: "अभिनेता त्स्वेतुख़िन," आसमानी रंग की कमीज़वाला बोल रहा था, जिसने फिर पहले आड़ू जैसे रंग की कमीज़वाले की ओर इशारा किया: "पास्तुख़ोव" और बाद में लड़की की नंगी कोहनी छूते हुए नीची आवाज़ में कहा, "मेरी शिष्या।"

"इन्हें तो मैं जानता हूं," रागोज़िन ने जवाब दिया और आगंतुकों से बैठने को कहा। उसने जिन कुर्सियों की ओर इशारा किया, उनमें

वह कुर्सी भी थी, जिसके पास मेश्कोव अभी भी खड़ा था, लेकिन जैसे कि वह कोई जगह न घेर सकता हो।

आगंतुक जब तक बैठते, सभी खामोश हो गये। मेश्कोव को पास्तुख़ोव के कुर्सी तक पहुंचने के लिए रास्ता छोड़ना पड़ा। पास्तुख़ोव जब बहुत करीब आ गया, मेरकूरी अव्देयेविच ने कुछ हिम्मत करके पूछा,

"भूल गये क्या?"

अलेक्सांद्र व्लादीमिरोविच स्पष्टवादिता के एक क्षण में बहुत पहले ही स्वीकार कर चुका था कि उसे वे लोग ही याद रहते हैं, जिनसे उसका कभी कोई मतलब पड़ सकता है। मेश्कोव को वह सचमुच भूल गया था। आंखें मिचकाते हुए क्षणभर उसे देख लेने के बाद वह रागोज़िन की ओर मुड़ा, जैसे पूछ रहा हो: इस खूसट दढ़ियल की कितनी वक़त है? रागोज़िन ने मसला चटपट हल कर दिया: उसने मेश्कोव को सिर हिलाकर इशारा करते हुए कहा,

"आप जा सकते हैं। फिर ज़रूरत पड़ेगी, तो मैं बुला लूंगा।"

मेश्कोव ने जवाब में झुककर प्योत्र पेत्रोविच को सलाम किया और सिर उठाकर भौंहों के नीचे से, जो फिर पहले जैसी प्रचंड दिखने लगी थीं, पास्तुख़ोव पर एक भेदती हुई नज़र डाली।

"अब छोटे-बड़े, सब एक बराबर हैं," उसने उलाहनाभरे स्वर में कहा। "इसलिए अपना घमंड जेब में रखिये। उनसे सीखें (उसने भौंहों से रागोज़िन की ओर दिखाया)। वे आपसे भी बड़े हैं..."

सहसा लड़की उसके पास आयी।

"नमस्ते, मेरकूरी अव्देयेविच। माफ़ करिये, मैं आपको पहले नहीं पहचान पायी। मैं आन्या पाराबुकिना हूं।"

उसने कुछ बड़बड़ाते हुए, जैसे कि आवाज़ एकाएक बैठ गयी हो, आन्या की दुबली अंगुलियां डरते-डरते अपने हाथ में लीं। त्स्वेतुख़िन ने भी उससे हाथ मिलाया और पास्तुख़ोव ने अचकचाकर मात्र सिर झुका दिया। सभी चुपचाप उसे डगमग क़दमों से दरवाज़े की ओर जाता देखते रहे।

"कामरेड रागोज़िन," जब मेश्कोव कमरे से चला गया, त्स्वेतुख़िन गंभीर स्वर में बोला, "हम आपके पास एक बड़े महत्त्वपूर्ण

20*

काम मे आये हैं। सड़क पर अलेक्सांद्र व्लादीमिरोविच मिल गये, तो अपनी वकालत के लिए मैं इन्हें भी साथ लेता आया।"

"बताइये, क्या काम है।"

"आपकी अनुमति हो, तो मैं, जैसे कि कहते हैं, सांड को सीधे सींगों से पकड़ूंगा।"

"कोशिश करके देख लीजिये," रागोज़िन ने आंखें भिंचते हुए कहा।

"यानी कि सीधे मतलब की बात पर..."

"मैं समझ गया।"

"बात यह है कि मैंने नगर में एक नाट्यकला स्टूडियो खोला है, जो..."

तभी दरवाज़ा खुला और स्वागत कक्ष से झांकते किरील इज़्वेकोव की आवाज़ सारे कमरे में गूंज गयी:

"प्योत्र पेत्रोविच, एक मिनट के लिए मेरे कमरे में आ सकते हैं?"

"आओ, आओ," रागोज़िन ने उत्तर दिया और हाथ से अपने मेहमानों की ओर दिखाते हुए आगे कहा, "देखो, मेरे यहां..."

तब तक किरील की नज़र मेहमानों पर पड़ चुकी थी और वह खुद ही अंदर चला आया था।

"अरे, यहां तो पूरा क्लब ही जमा है!" वह अंगुलियों से अपनी मुस्कान छिपाते हुए बोला और सीधे आनोचका की ओर बढ़ा।

त्स्वेतुख़िन देखता रहा कि आनोचका इज़्वेकोव से कैसे मिलती है: किसी बड़े के नज़दीक आने पर चुपचाप बैठे न रहने की स्कूली आदत से आनोचका अभी छुटकारा न पा सकी थी, लेकिन इस बार उसने अपने को रोक लिया और शायद इसी कारण थोड़ी सी अतिरंजित नारीसुलभ नज़ाकत से अपना हाथ आगे बढ़ा दिया।

त्स्वेतुख़िन ने पास्तुख़ोव को बताया,

"यह वही कामरेड इज़्वेकोव है, जो उन दिनों, याद है, लड़का ही था।"

"लड़का तो खैर नहीं था," किरील ने रागोज़िन की ओर बढ़ते हुए सरसरी तौर पर कह दिया। "क्या चर्चा चल रही है?"

प्योत्र पेत्रोविच ने मुस्कराते हुए जवाब दिया,

"शहर में शायद अफवाह फैली है कि मेरे सिर पर सींग हैं। ये लोग मुझे सींगों से पकड़ने आये हैं।"

त्स्वेतुख़िन ने इस मज़ाक को शुभ संकेत के तौर पर लिया।

"हम तीन हैं और शायद निबट ही लेंगे," वह बोला। "कामरेड इज़्वेकोव, आप भी मदद कर देंगे न? हम अपने स्टूडियो के सिलसिले में आये हैं। मैं सोचता हूं, आप समझ ही गये होंगे कि हम क्या चाहते हैं।"

"कामरेड इज़्वेकोव की तो नहीं जानता, पर मैं अंदाज़ लगा सकता हूं।"

"समझा!" त्स्वेतुख़िन मुस्कराया। "आपके पास सभी बड़ी-बड़ी मांगें लेकर आते हैं। लेकिन हम कलाकार तो थोड़े से ही संतुष्ट हो जाते हैं।"

रागोज़िन ने हाथ बढ़ाया:

"तखमीना लाये हैं?"

"वह तो हम पहली रकम मिलते ही बनाकर पेश कर देंगे। इस समय हम तय कर लेना चाहते कि कुल कितना..."

"ओ-हो, ये बात है!" रागोज़िन त्स्वेतुख़िन के अपनी बात पूरी कहने से पहले ही हंस पड़ा। "पहले पैसा हो जाये, फिर देखते रहेंगे कि कैसे खर्च करना है! आप लोगों के पास क्या तखमीना बनाने के लिए भी पैसा न था? आप लोग शायद कला विभाग के मातहत हैं न?"

"नहीं, हम अलग हैं। वैसे ठीक कहा जाये, तो हम लाल सेना क्लब, लाल सेना की स्थानीय गैरीज़न के मातहत हैं।"

"उस हालत में लाल सेना के अपने फंड हैं। आप मेरे पास किस-लिए आये?"

"बात यह है कि..." येगोर पावलोविच ने कहना शुरू किया, लेकिन प्योत्र पेत्रोविच ने फिर बीच ही में टोक दिया,

"आपका यह स्टूडियो करता क्या है?"

"यह नाट्यकला स्टूडियो है।"

"लेकिन उसका काम क्या है?"

"स्पष्ट है कि हम नाटक खेलते हैं," त्स्वेतुख़िन ने कंधे उचका दिये। उसे ऐसे सवाल पसंद नहीं आये थे।

"यह तो ठीक है। लेकिन किसके लिए? किस उद्देश्य से?"

"किसके लिए? बेशक, दर्शकों के लिए... ताकि दर्शक... मैं स्पष्ट कर देना चाहता हूं कि स्टूडियो के नाते हमारा मुख्य उद्देश्य शिक्षा है, लेकिन..."

"दर्शकों को शिक्षित बनाना, यही न?"

"बेशक। लेकिन हम भावी कलाकारों को भी सिखाते हैं, प्रशिक्षण देते हैं, तैयार करते हैं। मिसाल के लिए, हमारी एक अभिनेत्री यह..."

त्स्वेतुखिन ने आनोचका की ओर देखा, लेकिन इसका प्रदर्शन करने के लिए उतना नहीं कि वह कैसे कलाकार तैयार कर रहा है, जितना कि अपना पक्ष पेश करने में उसकी मदद लेने के लिए।

पास्तुख़ोव, जो पहले बिल्कुल असंपृक्त और बड़प्पन सा दिखाता हुआ बैठा था, अब इस नोक-झोंक में दिलचस्पी लेने लगा था और उत्कंठा से उसके परिणाम की प्रतीक्षा कर रहा था। उसका ध्यान ज़्यादातर येगोर पावलोविच पर ही केंद्रित था, जैसे कि उसे उसके मुंह की खाने से खुशी हो रही हो।

"लेकिन आपको क्लब से पैसा नहीं मिलता?" रागोज़िन ने फिर सवाल किया।

"क्लब हमें मंडली के मामूली कामों के लिए पैसा देने को तैयार है। लेकिन हमें कलाकारों को देने, दूसरे और कामों के लिए भी पैसा चाहिए।"

"जहां तक मैं समझ पाया हूं, आपके यहां सभी विद्यार्थी हैं। तो तनख्वाह किसे चाहिए? स्टूडियो चलानेवालों को?"

त्स्वेतुख़िन खड़ा हो गया। उसने तय किया कि अपनी बात सुनवाकर ही रहेगा। वह बड़ा रौबीला लग रहा था।

"लगता है कि पहले मुझे आपको अपने स्टूडियो के बुनियादी उद्देश्यों के बारे में बताना होगा। ये क्रांतिकारी उद्देश्य हैं और मुझे विश्वास है कि आप उनकी कद्र करेंगे।"

उसने पास्तुख़ोव पर एक क्रुद्ध दृष्टि डाली, जैसे कि उसकी तटस्थता की भर्त्सना कर रहा हो।

"मेरा मुख्य उद्देश्य एक क्रांतिकारी रंगमंच का निर्माण करना

है। इससे मेरा आशय क्या है? अभिनेता दर्शक का प्रतिबिंब होता है। जैसा दर्शक होगा, वैसा ही अभिनेता भी होगा। यदि दर्शक स्वप्न देखता है, तो अभिनेता की कल्पना को भी पंख लग जाते हैं। यदि दर्शक दैनंदिन जीवन की चिंताओं से ग्रस्त है, तो अभिनेता की कला भी धरती पर रेंगकर रह जाती है। जब दर्शक की भावनाएं उफ़ान लेती हैं, तब अभिनेता भी हर्षोन्मत्त हुए विना नहीं रह पाता। दर्शक और अभिनेता के वीच मौजूद यह तादात्म्यता पूरी तरह उभर सके, इसके लिए रंगमंच को पूर्वाग्रहों से मुक्त होना पड़ेगा। हम रूढ़ियों, लीकों, जो पुराना पड़ चुका है, उसके विरुद्ध जेहाद छेड़ना चाहते हैं। धरती से जकड़ा हुआ भारी-भरकम थियेटर कला का मंदिर नहीं, कला के लिए कारावास है। परंपराएं कलाकार के लिए वेड़ियां वनकर रह गयी हैं। हम कला को कारावास से मुक्त करके उसको मंदिर में प्रतिष्ठित करना चाहते हैं। हम अभिनेता को उसकी बेड़ियों से मुक्त करवायेंगे। हमारा मंदिर सचल होगा। हमारा अभिनेता चिर सक्रिय रहेगा, जीवन का दर्पण वनेगा। आज सारा विश्व धधक रहा है और अब वह समय नहीं कि रंगमंच घरेलू ड्रामे दिखाये। हमारा लक्ष्य मंच पर एक ऐसी आत्मिक उथल-पुथल को जन्म देना है, जो कि जीवन में उठ रहे तूफ़ानों का प्रतिबिंब हो!"

त्स्वेतुखिन निचले होंठ से मुंह पर मुहर सी लगाते हुए बैठ गया, लेकिन बैठे हुए भी ऐसे लग रहा था, जैसे कि अभी भी खड़ा हो – उसका सारा जिस्म ऐसा तना हुआ और फैला हुआ था।

रागोज़िन ने मुलायम पड़ते हुए कहा,

"कुछ अमूर्त सा है... व्यवहार में आप इसे कैसे पेश करेंगे?"

"व्यावहारिक रूप हमारे विश्वासों से उत्पन्न होगा," त्स्वेतुखिन पहले जैसे ही भाषण झाड़ता रहा, "और हमारे विश्वास हमारा युवावर्ग हैं" (यहां उसने हाथ से आनोचका की ओर इंगित किया)। "हम पेशेवर कलाकार युवा लोगों को केवल तकनीक सिखाते हैं। असली काम तो वे खुद करते हैं: जीवन और क्रांति में अपने जैसा विश्वास हमें भी सिखाना।"

"इस स्टूडियो से आप भी संवंध रखते हैं?" सहसा इज़्वेकोव ने पास्तुखोव से पूछा।

अलेक्साद्र व्लादीमिरोविच ने तुरंत उत्तर न दिया, मानो दिखाना चाहता हो कि वह जो कहने जा रहा है, उसका अब तक कही हुई बातों से कोई ताल्लुक नहीं है।

"नही। मैं यहां नया आदमी हूं। स्टूडियो मेरे बिना खोला गया था। लेकिन उसके पीछे जो विचार हैं, उनसे मैं परिचित हूं। मेरे लिए वे नये नही।"

"आप उनसे सहमत हैं?"

"मैं मानता हूं कि येगोर पावलोविच ने अपनी बात कुछ अमूर्त ढंग से पेश की है। लेकिन असल बात चूंकि सचल युवा थियेटर की है, मेरे खयाल से उसका समर्थन किया ही जाना चाहिए। वैसे मैं नहीं समझता कि वह बेचारे पुराने, परंपरागत थियेटर के लिए चुनौती बन सकता है।"

"वह तो देखा जायेगा!" त्स्वेतुखिन आक्रामक अंदाज़ में बोला।

"यह मेरी निजी राय है और मैं कोई आपत्ति नहीं करना चाहता। उल्टे, मैं पूरी तरह से येगोर पावलोविच जैसे प्रतिभाशाली आदमी के निर्देशन में की गयी इस उत्साहभरी पहल का समर्थन करता हूं, हालांकि मैं फिर दोहराऊंगा कि जहां तक इस तरह के विचार का सवाल है, तो उसमें मुझे कोई क्रांति की बात नहीं दिखायी देती।"

"बेशक, क्रांति के मामले में हम क्या खाकर तुम्हारी बराबरी करेंगे!" त्स्वेतुखिन ने मज़ाक किया, लेकिन फिर तुरंत अपनी ज़बान पर लगाम लगा ली और देखा कि अफ़सोस करने से अब कोई फ़ायदा नहीं, क्योंकि इज़्वेकोव मानो इसी चर्चा के छिड़ने की प्रतीक्षा कर रहा था।

"हां, मैंने भी पढ़ा है," इज़्वेकोव बोला। "लगता है, आपने क्रांति में भाग लिया था? किस पार्टी में थे आप?"

अलेक्सांद्र व्लादीमिरोविच ने उत्तर देने में फिर कुछ विलंब किया।

"मैं कभी किसी पार्टी में नहीं था।"

"लेकिन अंडरग्राउंड आंदोलन में तो थे?"

"नहीं," पास्तुखोव दृढ़ता से बोला।

"तो यह क्या गप्प है?"

पास्तुख़ोव का चेहरा कुछ उतर गया। वह वातचीत को किसी दूसरी ओर मोड़ना चाहता था, लेकिन तभी उसे त्स्वेतुखिन के चेहरे पर पश्चात्ताप की छाया दिखायी दे गयी और तुरंत हाथ से होंठों पर उभरा असंतोष पोंछकर वह हल्के से हंस पड़ा।

"हां। गप्प का भ्रूण। अतिशयोक्ति। पुलिस ने मुझपर और यह इन येगोर पावलोविच पर आपके पर्चे बांटने का शक किया था, कामरेड रागोज़िन। इतनी ही बात थी। आप लोग शायद पर्चे छापा करते थे, है न?"

"गिरफ़्तार भी हुए थे?" रागोज़िन ने पूछा।

"नहीं। बात पूछताछ से आगे न बढ़ पायी।"

"फिर भी सताये तो गये ही थे?"

एकाएक रागोज़िन ठहाका लगाकर हंस पड़ा। कोई इसकी वजह न समझ पाया। हंसते-हंसते उसकी आंखों में पानी आ गया, जिसे वह मुट्ठियों से पोंछने की कोशिश करता रहा। यह हंसी इतनी छुतहा थी कि शीघ्र ही आनोचका भी हंसने लग गयी, और फिर दूसरे भी मुस्करा पड़े।

"आज का दिन भी कैसा है!" रागोज़िन ने सिर हिलाते हुए कहा। "और रोज़ तो हमेशा रागोज़िन के सताये लोग आते थे, लेकिन आज जिसे देखो, वही रागोज़िन की वजह से सताया हुआ निकल रहा है। कमाल का आदमी है यह रागोज़िन!"

सहसा उसने गंभीर होकर किरील को देखा:

"शायद तुम अकेले हो, जिसे न मैंने, न मेरी वजह से किसी और ने ही सताया है।"

"हां, मेरे बारे में तुम निश्चिंत रह सकते हो," किरील ने भी उतनी ही गंभीरता से कहा और फिर पास्तुख़ोव को संबोधित किया:

"आप क्या सचमुच स्टूडियो के काम में क्रांतिकारी बात नहीं पाते?"

"नहीं पाता," पास्तुख़ोव ने प्रतिशोध की भावना से जवाब दिया। "सामान्य अमेचर नाटक मंडली। वही परदे, वही लिबास

और मज्जाएं। बस सिर्फ़ खेलने के लिए अपना कोई थियेटर नहीं है।"

"अच्छा वकील लाये हैं आप अपने साथ!" त्स्वेतुख़िन की ओर देखते हुए रागोज़िन फिर हंस पड़ा।

"अफ़सोस की बात है कि मुझसे गलती हो गयी," येगोर पावलोविच ने झुंझलाते हुए जवाब दिया।

"मैंने सिर्फ़ तुम्हारी पैसों की मांग का समर्थन करने का वचन दिया था, न कि तुम्हारे सिद्धांतों के समर्थन का।"

"अलेक्सांद्र व्लादीमिरोविच!" आनोचका के मुंह से कराह सी निकली। "बेहतर होता, आप चुप ही रहते!"

दोनों हाथों की अंगुलियां आपस में कसकर भींचे वह सारी ही आगे यों झुक आयी थी, जैसे कि अपने को उछलने से रोकने की कोशिश कर रही हो। किरील एक नज़र उसपर डालकर झटके से मेज के पास से हट गया और खिड़की के पास खड़ा हो गया। वहां से वह पास्तुखोव को देखने लगा, जो अब आपे से बाहर हो गया था:

"मुझसे अगर पूछ रहे हैं, तो मै चुप क्यों रहूं? कला के भविष्य के बारे में मैंने येगोर पावलोविच से कम नहीं सोचा है और अपनी राय व्यक्त करने का मुझे भी पूरा हक है। येगोर पावलोविच चिर गति की, जीवन के दर्पण की बातें करता है। लेकिन चिर गति का अस्तित्व केवल 'परपीटुम मोबाइल' के आविष्कारकों के अधकचरे, सड़े दिमागों में है और रहा सवाल 'जीवन-दर्पण' का, तो वहां 'पादरी मेर्गियम' दिखायी जा रही है... आप अपने थियेटर में क्या दिखायेंगी? शिलर? इसे आप क्रांति कहती हैं? नहीं, अगर क्रांति ही चाहती हैं, तो बाहर सड़क पर निकलिये, नगर के स्क्वायर में जाइये। पुराने ज़माने जैसे बजरे बनाइये, उनमें स्तेपान राज़िन और उसके गिरोहों को वोल्गा पर छोड़िये और लोग किनारे से देखें कि वे कैसे पालों की जगह ज़ार के सेनानियों को लटकाते हैं और अपने साथ गद्दारी करनेवालों को नदी में फेंक देते हैं!"

"तुम हमारे लिए ऐसे तमाशे की पटकथा लिख दोगे?" त्स्वेतुख़िन ने पूछा।

"मैं क्यों लिखूं? कला में क्रांति लाने का दावा तुम कर रहे

हो या मैं? मैं तो सोचता हूं कि प्रतिभा हो, तो दर्शक क्रांति के बिना भी संतुष्ट हो जायेगा।"

"सचमुच, आप इनके स्टूडियो के लिए कोई क्रांतिकारी नाटक क्यों नहीं लिख देते?" इज़्वेकोव बोला। "मेरे खयाल से प्रतिभाएं तो निकल ही आयेंगी।"

"हम अलेक्सांद्र व्लादीमिरोविच से अनुरोध कर चुके हैं," आनोचका ने किसी सहज प्रेरणावश किरील की ओर मुड़ते हुए कहा। "सचमुच कितना बढ़िया होता!"

"हां, क्यों नहीं!" किरील ने भी उसी स्वर में कहा। "अगर हम प्योत्र पेत्रोविच को स्टूडियो की इमदाद के लिए राज़ी कर लें, तो अच्छे नाटक के लिए साधनों की समस्या नहीं रह जायेगी।"

"इसे कहते हैं वकील!" रागोज़िन बोला। "फिर भी जनता का पैसा किसी हवाई चिड़िया पर खर्च करने के लिए तुम मुझे राज़ी नहीं कर सकते।"

आनोचका झट से खड़ी हो गयी।

"लेकिन हम हवाई चिड़िया नहीं! येगोर पावलोविच की मुट्ठी में बंद साधारण अमेचर चिड़िया हैं!"

"ऐसी चिड़िया भी मुझे राज़ी नहीं कर सकती," रागोज़िन मुस्कराया।

"ओह, सारी बात कितनी आसान थी!" आनोचका झुंझला उठी और सहायता के लिए किरील की ओर मुड़ी। "हवाई चिड़िया का भ्रम इसलिए पैदा हुआ कि बहस न जाने कहां की कहां पहुंच गयी। ऐसी बहस से क्या फ़ायदा कि आगे चलकर कला का क्या होगा या क्या नहीं होगा? भविष्य को हर कोई अपने ढंग से देखता है। लेकिन आप यह देखें कि इस समय हमारे पास क्या है, और तब सब कुछ स्पष्ट हो जायेगा। हम बिना किसी संकोच के कह सकते हैं कि हम एक बिल्कुल नये, युवा थियेटर का निर्माण कर चुके हैं।"

"आपका थियेटर लाल सैनिकों को पसंद आयेगा?" रागोज़िन ने पूछा।

"क्यों नहीं!"

"और आप उसके साथ मोर्चे पर जायेंगी?"

"बेशक। मैं ठीक कह रही हूं न, येगोर पावलोविच?"

"यह भी हमारा एक उद्देश्य है," त्स्वेतुख़िन ने तुरंत पुष्टि की।

"मुझे पक्का विश्वास है कि अगर एक बार आप हमारी रिहर्सल देख लें, तो आप पैसा तुरंत दे देंगे!"

"ज़रूर," किरील ने हंसते हुए कहा।

रागोज़िन ने उसे घूरा और फिर धीरे से बोला,

"तुमने मुझे यहां बिठाया है, तो समझ लो, अब मालिक मैं हूं और मैं जनता का पैसा यों बरबाद नहीं करूंगा।"

"कसम है कि उसमें मेरा कोई हाथ न था। मैंने सिर्फ़ सबकी हां में हां मिलायी थी... पर तुम इस स्टूडियोवाले मसले को ज़रा गंभीरता से लो। यह ऐसा-वैसा मसला नहीं है।" किरील फिर मेज़ के पास आ गया। "हां, कामरेड पास्तुख़ोव, आपने बताया नहीं कि कोई क्रांतिकारी नाटक लिख देंगे या नहीं।"

"अभी मुझे कोई उचित विषयवस्तु नहीं सूझी है," अलेक्सांद्र व्लादीमिरोविच ने शिष्टतापूर्वक जवाब दिया।

"और अगर हम सुझा दें?"

"सुझा देंगे? विषयवस्तु?"

"हां।"

"यह सुझाव नहीं, शायद आदेश होगा, है न?"

"वैसा ही कह लीजिये।"

"लेकिन आप जानते हैं, लेखक की स्वतंत्रता विषयवस्तु के चुनाव में ही व्यक्त होती है।"

"हम आपकी स्वतत्रता नहीं छीनना चाहते। आप अपनी स्वतंत्रता के दायरे में कोई ऐसी चीज़ तो लिख ही सकते हैं, जो नये थियेटर को पसंद आये। आखिर आप पहले भी तो किसी की पसंद के मुताबिक लिखते थे, है न?"

"मेरे नाटक पब्लिक पसंद करती थी।"

"मैं सोचता हूं कि तब भी आप कुछ हद तक इसपर निर्भर थे कि किन्हें पसंद आते हैं। बेशक अब पब्लिक दूसरी है।"

"आप कहना चाहते हैं कि मैं अब आपपर निर्भर होऊंगा?"

"शायद। अगर आपके नये नाटक नयी पब्लिक को पसंद आ सके।"

"मुझे निर्भर बनाकर आप मुझे स्वतंत्रता से वंचित कर रहे हैं।"

"यह बात सबसे पहले आपके भूतपूर्व आदेशदाताओं पर लागू होती है, जिन्हें हमने आपको उनपर निर्भर बनाने की स्वतंत्रता से वंचित कर दिया है।"

"और अब यह स्वतंत्रता आप ले रहे हैं?"

"वह मेरी ही है। मेरी स्वतंत्रता मेरी रुचि है।"

पास्तुख़ोव ने हल्के से कंधे उचकाये और उस उपदेशकीय अंदाज़ में बोला, जिसमें कि कोई शिक्षाप्रद कहानी सुनायी जाती है:

"दस वर्ष से भी पहले की बात है। मैं कला के क्षेत्र में नया-नया ही आया था और अपना काफ़ी समय विभिन्न मंडलियों और सभाओं में जाने में बिताया करता था। एक दिन मेरा एक मित्र मुझे 'सुनहरी ऊन' पत्रिका के संपादकमंडल की बैठक में ले गया। पत्रिका का मालिक रियाबुशीन्स्की था, जिसे आप भी जानते होंगे। किसी बात से चिढ़कर उसने कुछ इस प्रकार की बात कही: "मैं लेखकों और वेश्याओं में कोई फ़र्क नहीं पाता। वेश्याओं की तरह लेखक भी अपने को बेचते हैं और अगर कोई ज़्यादा दाम देने को तैयार हो, तो उसे अपने साथ कुछ भी करने की इजाज़त दे देते हैं..."

"वाह, आपने सिद्ध कर दिया कि मैं सही था!" इज़्वेकोव बीच ही में बोल पड़ा।

पास्तुख़ोव ने भेदती नज़रों से उसे देखते हुए पूछा,

"आप कहना चाहते हैं कि आप रियाबुशीन्स्की से सहमत हैं?"

"नहीं, मैं कहना चाहता था कि हमने आपको सभी रियाबुशीन्स्कियों से मुक्ति दिला दी है!"

"शुक्रिया। मगर मुझे अपनी मुक्ति का उपभोग भी करने दीजिये।"

"बेशक कीजिये," इज़्वेकोव ने त्स्वेतुख़िन की ओर मुड़ते हुए कहा। "इसका मतलब है कि क्रांतिकारी कला को आपके बिना ही काम चलाना होगा और शायद चल भी जायेगा।"

"मैं भी ऐसा ही सोचता हूं," त्स्वेतुख़िन बोला।

"लेकिन मैं सोचता हूं," रागोज़िन ने उठते हुए कहा, "कि

जब तक ऐसी बहसें चल रही हैं, तब तक मेरा आपके खेल में पैसा लगाना समयपूर्व कदम होगा।"

"आज समयपूर्व हो सकता है, लेकिन कल अगर देर हो गयी तो?" किरील बोला। "नहीं, हमें इमदाद देने से इंकार करने का कोई हक नहीं। हमें अपने और पराये के बीच फ़र्क करना आना चाहिए। जिस क्लब में इनका स्टूडियो काम करता है, उसके अधिकारियों से बातें करके देखेंगे। अगर सवाल पैसों का ही है, तो इंतज़ाम हो सकता है। तुम मेरे कमरे में एक मिनट के लिए आओगे न, प्योत्र पेत्रोविच?"

वह यों झुका, जैसे कि केवल आनोचका से ही विदा ले रहा हो, जो गंभीरता और कृतज्ञतापूर्वक उसे देख रही थी। कमरे से निकलते हुए उसने एकाएक पाया कि उसके कालर का बटन खुल गया है। अटपटाते हुए उसने बटन फिर लगा लिया।

रागोज़िन से विदा लेने की औपचारिकता कुछ रूखी सी ही निकली। कमरे से सबसे पहले पास्तुख़ोव निकला। वह कुछ रूठा और अपने में खोया हुआ था और जब तक बाहर सड़क पर न आ गया, एक बार भी अपने खामोश साथियों की ओर न मुड़ा।

दरवाज़े पर, आने-जानेवालों से कुछ अलग हटकर तीनों ने बारी-बारी से एक दूसरे की आंखों में झांका। पास्तुख़ोव ने माफ़ी सी मांगते हुए कहा,

"येगोर, लगता है कि मैंने तुम्हारा कैरियर बिगाड़ दिया है। और अपना भी। लेकिन हिम्मत न हारो। लड़ाई के दिनों में कैरियर बनाना आसान होता है और क्रांति के दिनों में तो दोगुना आसान।"

"आप कहना चाहते हैं कि येगोर पावलोविच को कैरियर की चिंता पड़ी है?" आनोचका उबल पड़ी।

उसका गुस्से से तमतमाता चेहरा देखकर पास्तुख़ोव ने हल्के से आंखें मिचकायीं और फिर होंठों पर बुत जैसी मुस्कान बिखेरकर धीरे-धीरे, हर शब्द पर ज़ोर देते हुए कहा,

"किसी न किसी रूप में तो अवश्य ही। मैं निर्देशकों की रग-रग से परिचित हूं। होश में आओ, देवी जी। तुम्हें सब्ज़ बाग तो दिखा रहे हैं, पर याद रखना, इसकी कीमत भारी चुकानी पड़ेगी..."

"आप... ऐसा सोचकर ही उबकाई आ जाती है!" आनोचका ने हांफते हुए कहा और मानो किसी असह्य उजाले से बचने के लिए आंखों पर हाथ की ओट कर ली।

"जानते हो, इसे क्या कहते हैं?" एकाएक त्स्वेतुख़िन सारी सड़क को सुनाता हुआ चिल्लाया। "यह कमीनापन है, कमीनापन!"

और वे तुरंत अलग-अलग दिशाओं में मुड़ गये। येगोर पावलोविच ने अपनी हथेली से आनोचका की कोहनी थाम ली थी।

१६

ग्रीष्म शुरू हो चुका था और लगता था कि वह बहुत ही अनर्थकारी सिद्ध होगा। इस ख़ुशहाल इलाके की मौजों से परिचित पुराने सरातोव-वासी जानते थे कि लगातार चलनेवाली स्तेपियाई हवाओं का मतलब है कि अबकी बार सूखा पड़ेगा। वसंत के शुरू से केवल एक बार वर्षा हुई थी और तब भी पानी धरती को सिर्फ़ ऊपर-ऊपर से भिगोकर रह गया था। हवाओं ने देखते ही देखते इस नमी को सुखा डाला था और फिर सारी ज़मीन पर एक मोटी पपड़ी जम गयी थी। पहाड़ी ढलानों की हरियाली मुरझाकर भूरी पड़ गयी थी और उनका नज़ारा दिन प्रतिदिन उबाऊ बनता जा रहा था। वोल्गा में पानी का स्तर तेज़ी से घटता जा रहा था और रेतीले किनारे यों फैलते जा रहे थे, मानो नदी के ऊपर बढ़ रहे हों।

रविवार की उस सुबह किरील जब घर से निकला, तो अनायास उसकी आंखें ऊपर उठ गयीं। आसमान हल्की नीली झांई ली हुई चादर जैसा सफ़ेद था और दूर क्षितिज के पास हिलकोरे से ले रहा था। वोल्गा के पार स्तेपियों में मरीचिकाएं प्रकट हो गयी थीं। एकाएक नदी तट के ऊपर कभी धुंधली सी तो कभी चमचमाती हुई संकरी पट्टी द्वारा ज़मीन से पृथक्कृत पापलर के हरे-भरे पेड़ों का कुंज दिखायी दे जाता और मालूम न हो पाता कि वह तट पर उगा हुआ है या कि सीधे पानी में से पैदा हुआ है। उजाला हर क्षण बदलता हुआ खिलवाड़ कर रहा था और हरित कुंज अपनी सुखद शीतलता से आंखों को राहत पहुंचा रहा था।

किरील ने हवा में सड़ी हुई मछलियों की गंध महसूस की। दिन प्रतिदिन यह गंध तीव्रतर होती जा रही थी। हवा अगर वोल्गा की ओर से आ रही होती, तो पहाड़ियों पर सबसे ऊपर बने मकानों समेत सारा नगर इस गंध से सरोबार हो जाता।

अफवाह फैली थी कि नदी के निचले भागो से ऊपरी भागों की ओर जाती हिलसा मछलियां गरमी और उथलेपन के कारण पानी मे उछल-उछलकर रेतीले किनारों पर जमा हो रही हैं और वहां पड़ी सड़ रही हैं। इस साल वे अभूतपूर्व पैमाने पर स्थानांतरण कर रही थीं। उनके पहले झुंड सरातोव से आगे उत्तर में ख्वालीन्स्क, सिज़रान और समारा मोड़ तक पहुंच गये थे, जबकि नीचे से और-और नये झुंड आते जा रहे थे और थकावट के मारे दुबलाते, छटपटाते और मरते जा रहे थे। निचले इलाकों के मछुआरे मछलियों के इस स्थानांतरण को रोकने, उन्हें विराट संख्या में खुद ही मौत का ग्रास न बनने देने के लिए कुछ नहीं कर रहे थे। उनके पास मछलियों के बारे में सोचने के लिए वक्त था भी कहां!

गरमियों के शुरू में दक्षिणी रूस की सफ़ेद गार्ड फ़ौजों ने लाल सेना के विरुद्ध इतने व्यापक पैमाने पर आक्रामक कार्रवाइयां शुरू कर दी थीं कि उनके सामने दक्षिण के गृहयुद्ध की तब तक की सभी लड़ाइयां फीकी पड़ गयी थीं। देनीकिन की वालंटियर फ़ौज खारकोव की ओर कूच कर रही थी। एक और कोर को क्रीमिया पर कब्ज़ा करने का कार्यभार सौंपा गया था। वालंटियरों के एक विशेष दस्ते को क्रीमिया प्रायद्वीप से बाहर निकलने का रास्ता काट देना था। पूर्व में दोन कज़्ज़ाकों की सेना दोन की क्रांतिकारी फ़ौज को कुचलने के लिए उत्तर की ओर बढ़ रही थी। व्रांगेल अपनी संपूर्ण काकेशियाई सेना के साथ साल्स्क स्तेपियां पार करता हुआ त्सरीत्सिन पर चढ़ा आ रहा था। उत्तरी काकेशिया की फ़ौजों ने अपनी कुछ टुकड़ियां अस्त्राखान पर कब्ज़ा करने भेज दी थीं। इस तरह ये छहों आक्रमण पंक्तियां ताश के पत्तों की तरह सजे पंखे जैसे सारे दक्षिण में फैली हुई थीं और उन सबका नियंत्रण-निर्देशन देनीकिन का येकातेरीनोदार स्थित मुख्यालय कर रहा था। सफ़ेद गार्डों की सभी कार्रवाइयां बहुत ही सुसमन्वित ढंग से शुरू हुई थीं। इस अत्यंत घमासान ग्रीष्मकालीन

अभियान के आरंभ से ज़ारशाही जनरलों, ज़मींदारों, बुर्जुआज़ी और कज़्ज़ाकों के गंठबंधन में हर्षोल्लास और आशाओं का जैसा एककारी ज्वार उमड़ा था, वैसा बाद में फिर कभी नहीं उमड़ पाया।

किंतु लाल सेना ने त्सरीत्सिन पर कब्ज़ा करने के व्रांगेल के पहले प्रयास को विफल बना दिया और अप्रत्याशित जवाबी हमला करके उसकी काकेशियाई सेना को पीछे खदेड़ डाला। अस्त्राखान नगर न केवल त्सरीत्सिन को अतिरिक्त कुमुकें भेज रहा था, बल्कि स्व्यातोई क्रेस्त की तरफ़ से स्तेपियों को पार करके तथा किज़ल्यार से कास्पियन तट के साथ-साथ आगे बढ़कर दो कालमों में वोल्गा मुहाने पर हमला करनेवाले तेरेक कज़्ज़ाकों के उत्तरी काकेशियाई दस्ते से लोहा भी ले रहा था। वोल्गा के निचले भाग के धूप से झुलसे मैदानों में युद्ध का गर्जन और-और भयंकर होता जा रहा था। सामान्य काम-धंधों की शांति अतीत की बात बन चुकी थी और यहां तक कि वोल्गा के मछुआरों का सदियों से चला आ रहा व्यवसाय भी ठप्प हो गया था।

किरील वैसे हमेशा युद्ध की घटनाओं के प्रति जागरूक रहता था, लेकिन इस सुबह तो वोल्गा की ओर से आनेवाली हवाओं ने उसे युद्ध का प्रांगण बने हुए असीम विस्तारों को मानो शारीरिक रूप से महसूस करने पर भी विवश कर दिया। अपने दिमाग में उसने उन सभी खबरों को एक बार फिर उलटा-पलटा, जो पिछले दिनों मोर्चों से प्राप्त हुई थीं। हालांकि अपने काम से वह लड़ाई में निरंतर भाग ले रहा था, फिर भी उसे अधिकाधिक ऐसा लगने लगा था कि वह उस जगह से बहुत दूर है, जहां कि देश का भाग्य तय होने जा रहा है। यह अहसास उसे इस समय फिर हुआ।

हवा अपने साथ एक और अनुभूति भी लायी थी... किरील को एकाएक इस इच्छा ने अभिभूत कर लिया कि नीचे वोल्गा तट पर जाये और मछलियों की इस तेज़ गंध के निकट कोई छोटा सा टापू खोजकर गरम रेत पर पसर जाये, अपने को पूरी तरह सूर्य की तेज़, चुभती किरणों के खिलवाड़ के लिए समर्पित कर दे, देर तक नन्ही-नन्ही लहरों की छपछपाहट सुनता रहे और हवा से उड़ते रेत कणों की अपने नंगे बदन पर गरम चुभन महसूस करता जाये।

लेकिन वह घर से किसी दूसरे ही इरादे से निकला था। उसे

दीविच से मिलने अस्पताल जाना था। इसे टालना संभव न था, क्योंकि फिर मालूम नहीं फ़ुरसत कब मिल पाती। इसके अलावा खुद दीविच ने पर्चा भेजकर उसे बातचीत के लिए बुलाया था।

किरील ने दीविच को एक अच्छे सैनिक अस्पताल में भरती करवा दिया था। वहां चार ही हफ़्ते में वसीली दनीलोविच की सेहत में इतना सुधार आ गया कि वह दर्पण में खुद भी अपने को मुश्किल से पहचान पाता था। पलकों की सूजन खत्म हो गयी थी और आंखों का पीलापन जाता रहा था। हजामत बना लेने पर चेहरा कहीं अधिक सौम्य, युवा और सुंदर लगने लगा था। आवाज़ में कड़क आ गयी थी और हंसते हुए ठोड़ी के मध्य में गढ़ा पड़ जाता था।

लेकिन हंसने के अवसर कम ही मिल पाते थे। दीविच को जिस छोटे से वार्ड में रखा गया था, उसमें तीन बिस्तर और थे। दो बिस्तरों के मरीज़ तो बदलते रहे थे। मगर तीसरे पर जब से दीविच आया था, लगभग तब से एक ही मरीज़ था। छोटे कद, आंखों के नीचे बैंजनी थैलियों, लाल, थुलथुल चेहरे और मुलायम, बेचैन हाथोंवाला यह मरीज़ एक भूतपूर्व अफ़सर था, जो अब रेजीमेंट के स्टाफ़ हेड-क्वार्टर्स में कमांडर के पद पर नियुक्त था। उसे प्रायः जिगर के दर्द के दौरे पड़ते थे, लेकिन जब वह सामान्य होता था, बड़ा ज़िंदादिल बन जाता था और खूब बातें करता था। बहस का शौकीन होने के कारण उसकी हमेशा दीविच से किसी न किसी बात पर बहस होती ही रहती थी।

अस्पताल में रहते हुए दीविच को बहुत सी नयी बातें मालूम हुईं। यहां जो भी आता, उसके पास क्रांति के दौरान अर्जित कोई न कोई नया अनुभव, ज्ञान अवश्य होता, जो फिर दूसरों के अनुभव और ज्ञान से मिलकर सबका, तरह-तरह की परीक्षाओं और मुसीबतों से गुज़रे लोगों का साझा अनुभव और ज्ञान बन जाता। इन लोगों – अर्दलियों, नर्सों, डाक्टरों, हज्जामों, तीमारदारों और मोर्चे से आये घायल या बीमार सैनिकों – से दीविच को ऐसी-ऐसी बातें पता चलीं, जिनसे वह पहले बिल्कुल अनजान था और इस तरह लंबे अरसे तक जर्मनों की क़ैद में रहने के कारण उसकी जानकारी में जो रिक्त स्थल पैदा हो गये थे, उन्हें वह धीरे-धीरे भरता गया। वह बोलता कम और

सुनता अधिक था। दूसरे लोगों के स्पष्ट या अस्पष्ट, उत्तेजनापूर्ण या उदासीनताभरे, क्रोधजनित या प्रशंसामिश्रित विचारों को शनैः शनैः आत्मसात् करता हुआ वह समझ गया कि हर किसी को उनके लिए इतनी भारी कीमत चुकानी पड़ी है और इतने अधिक प्रिय हैं कि जैसे एक और जन्म लेकर ही उन्हें हासिल किया गया हो।

चौथे हफ़्ते के अंत में वार्ड में एक नया मरीज़ आया, जो अर्ख़ांगेल्स्क का रहनेवाला था और किसी स्टीमर पर मैकेनिक था। उसकी आयु तीस से कुछ ज़्यादा, चेहरा चकत्तेदार और गाल की हड्डियां उभरी हुई थीं। हाथों की भारी हरकतों से लेकर, जिनका सहारा वह कभी-कभी ही लेता था, धीरे-धीरे और मोटी आवाज़ में बोलने के उत्तरी अंदाज़ तक उसमें सब कुछ गठीला और रोबीला था। स्टीम विंच की मरम्मत करते हुए उसकी एक पसली टूट गयी थी: कमर पर पेटी न बंधी होने की वजह से उसकी कमीज़ का पल्ला चक्के के दांते में फंस गया था और फिर रॉड इतनी ज़ोर से बगल में आकर लगा कि आगे क्या हुआ, वह नहीं जान पाया। दो दिन उसे इमर्जेंसी अस्पताल में रखा गया, और फिर यहां भेज दिया गया। उसका कहना था कि ज़्यादा दिन तक खाट तोड़ते रहने का उसका कोई इरादा नहीं है। वोल्गा इलाके में तो वह संयोगवश ही टपक पड़ा था। अर्ख़ांगेल्स्क के सफ़ेद गार्डों के चंगुल से भागकर वह ज़ातोन पहुंचा था, जहां वोल्गा बेड़े के जहाज़ों की मरम्मत की जाती थी।

चौथा बिस्तर उस समय खाली था और वार्ड में वे तीन ही रह गये थे। स्टाफ़ अफ़सर देर तक नये मरीज़ को कुरेदता रहता कि वह कौन है, क्या है, वगैरह-वगैरह। आखिरकार जहाज़ी बोल ही पड़ा।

"और कभी मूर्मान्स्क नहीं गये?"

"कैसे नहीं!" जहाज़ी अपनी भारी-भरकम आवाज़ में बोला। "दस वर्ष की उम्र में मैंने पहली बार जहाज़ पर कदम जो रखा, तो तब से पानी का साथ फिर कभी नहीं छोड़ा। पंद्रह वर्ष का होते-होते मैं स्टीमर पर कोयला झोंकनेवाला बन गया। कौन सा समुद्र, कौन सा देश मैंने नहीं देखा है!"

"विदेश में कुछ सीखा भी?" स्टाफ़ अफ़सर ने पूछा।

"बहुत कुछ। लेकिन इस विदेश की असलियत तो मैं अब जाकर

ही जान पाया हूं। आखिरी बार जब मूर्मान्स्क से अर्खांगेल्स्क जा रहा था, तब सब कुछ समझ गया।"

"रूसी समुद्र में विदेश की असलियत कैसे मालूम हुई ?"

"भ्रम हो गयी। आप जानते हैं न कि उत्तर में रूसी जहाज़ों पर आजकल ब्रिटिश झंडे फहराते हैं ?"

"तो क्या हुआ ?"

"यही तो बात है। अंग्रेज़ सारे रास्ते ह्विस्की और सिगार का मजा उडाते रहे और हमारे रूसी भाइयों को – मामूली जहाज़ियों को भी और अफ़सरों को भी – मूर्मान्स्क में जहाज़ के पेटे में मछलियों की सड़ांध सूंघने के लिए जो बंद किया गया, तो अर्खांगेल्स्क पहुंचने तक वे वहीं घुटते रहे।"

स्टाफ़ अफ़सर ने हल्के से कंधे उचका दिये।

"बेशक। मुश्किल तो यह है कि बोल्शेविकों से छुटकारा पाने के लिए हमारे कुछ लोग पूरे साल पेटे में बैठे मछली की सड़ांध सहने को तैयार हैं।"

दीबिच का चेहरा तमतमा गया, लेकिन अपने पर काबू पाकर उसने शांत स्वर में कहा,

"मैं भी पेटे में जितना कहें बैठने को तैयार हूं, बस अगर इससे हमारे जहाजों से विदेशी झंडे उतर सकें।"

"मैं भी यही चाहता " स्टाफ़ अफ़सर ने गहरी सांस ली। "लेकिन मुश्किल यह है कि यूरोप के देश सोवियतों को मान्यता देने को कभी तैयार नहीं होंगे। उनके अनुसार सत्ता केवल उत्तराधिकार में ही पायी जा सकती है।"

"ज़ार ने जो कर्ज़े लिये थे, वे अगर चुका दिये जायें, तो किसी भी सत्ता को आपके ये यूरोप के देश मान्यता दे देंगे," दीबिच बोला।

"मेरे क्यों ? मेरे बजाय वे आपके ज़्यादा हैं, क्योंकि आप इतने समय तक... यूरोप में रहे थे।"

दीबिच चुप रहा। जहाज़ी बारी-बारी से दोनों पड़ोसियों को ताके जा रहा था।

"ये जो बोल्शेविकों से छुटकारा पाने के लिए पेटे में भी बैठने को तैयार हैं, उन्हें मैं देख चुका हूं," उसने धीरे-धीरे कहा। "सालभर

पहले की बात है। सफ़ेद गार्ड अंग्रेज़ वालंटियरों का धूमधाम से स्वागत करने के लिए द्विना के तट पर जमा हो रखे थे। अर्खांगेल्स्क के एक छोर से दूसरे छोर तक फ़ौजें कतार बांधे खड़ी थीं। चायकोव्स्की की सारी सरकार ऊपर डेक पर चढ़ी: 'स्वागत है, प्यारे मेहमानो। पधारिये, पधारिये!'"

"तुम कहते हो कि अंग्रेज़ लोग अफ़सरों और मामूली जहाज़ियों, सभी रूसियों को पेटे में बंद कर देते हैं," स्टाफ़ अफ़सर यों बोला, जैसे कि अपने आपसे बातें कर रहा हो। "लेकिन अपने को बराबर तो हमने खुद किया है। इस वार्ड में ही देखो। यहां कमांडर भी हैं और जो कमांडर नहीं हैं, वे भी हैं। यूरोप के लोग सोचते हैं कि यह रूसी रिवाज है और इसीलिए वे सबको एक साथ रखते हैं। सिर्फ़ मुझे विश्वास नहीं होता कि वे मामूली जहाज़ियों और अफ़सरों के बीच कोई फ़र्क नहीं करते।"

"मैं सच कह रहा हूं," जहाजी ने मानो जानबूझकर खामोशी से जवाब दिया। "मैंने अपनी आंखों से देखा है। अंग्रेज़ों ने सफ़ेद गार्ड अफ़सरों के लिए आर्टिलरी स्कूल खोला है और सब के साथ सिपाहियों जैसा सलूक करते हैं। अंग्रेज़ सार्जेंट के लिए रूसी अफ़सर को थप्पड़ या लात मारना मामूली बात है।"

"ऐसी गप्प तो न हांको," स्टाफ़ अफ़सर ने विरोध किया और अपने बिस्तर से थोड़ा सा उठ भी गया।

"ठीक तो करता है," दीविच का चेहरा फिर तमतमा उठा, "अगर उनका सार्जेंट रूसी अफ़सर को पीटता है! आप उसे रूसी अफ़सर कहेंगे, जो अपने लोगों को कुचलने के लिए विदेशियों को बुलाता है? भाड़ में जाये ऐसा अफ़सर! उसके लिए तो सार्जेंट का थप्पड़ या लात भी कम होगी!"

"आप क्या कह रहे हैं, कामरेड दीविच!" स्टाफ़ अफ़सर ने बिस्तर से पैर नीचे लटकाते हुए आश्चर्य प्रकट किया।

उसकी आंखों के नीचे की थैलियों का रंग और गाढ़ा हो गया, बैठ जाने पर वह और भी नाटा लगने लगा, थुलथुल गाल लटक गये और चेहरा बहुत बड़ा दिखने लगा।

"आप खुद भी क्या रूसी अफ़सर नहीं हैं?"

"नहीं!" दीविच चिल्लाया। "मैं रूसी अफ़सर नहीं हूं! मैं वह अफ़सर नहीं हूं, जिसे अंग्रेज़ सार्जेंट से सीखने की ज़रूरत पड़ती है! मैं ..."

"सफ़ाई क्यों दे रहे हैं? जिन अफ़सरों से आप अपने को अलग साबित करना चाहते हैं, क्या उन्होंने और आपने एक ही शपथ नहीं ली थी?"

"शपथ?"

दीविच अपने हड़ियल शरीर पर घुटनों तक लंबा, हरा चोगा लपेटते और दुबले, पीले हाथों से उसे पेट पर कसकर पकड़ते हुए बिस्तर से उछलकर नंगे पांव ही वार्ड के बीचोंबीच खड़ा हो गया। वह थरथर कांप रहा था और दुबली, नंगी गरदन घुमाकर कभी स्टाफ़ अफ़सर को, तो कभी जहाज़ी को देख रहा था।

"शपथ? किसकी खातिर? जिस व्यवस्था के प्रति वफ़ादारी की मैंने शपथ ली थी, वह कभी की मिट चुकी है। यानी कि मैं शपथ से मुक्ति पा चुका हूं। वह सेना, जिसकी खातिर मैंने शपथ खायी थी, वह भी अब नहीं रही। इसलिए मैं उससे भी मुक्ति पा चुका हूं। बाकी बचा देश, है न? मेरे बाप-दादाओं की धरती। मेरी मातृभूमि। तो मेरी शपथ मुझे कर्त्तव्यबद्ध करती है कि जो भी इस देश, इस धरती का अतिक्रमण करे, उसे निकाल बाहर कर दूं। यह शपथ निभाने को मैं तैयार हूं। लेकिन यह काम इस समय वह सेना नहीं कर रही, जो विदेशियों को इसलिए गले लगाती है कि वे उसके अफ़सरों पर थप्पड़-लातें बरसाते हैं। मैं तो सोचता था ..."

वह एकाएक रुक गया और फिर बिस्तर के पास लौटकर अपनी बात खत्म करते हुए कटुता से बोला,

"मै तो सोचता था, कामरेड कमांडर, कि आप दूसरी सेना में हैं।"

"मैं इंकार नहीं करता," स्टाफ़ अफ़सर ने कुछ दबते हुए जवाब दिया। "लेकिन हमारे सभी पंद्रह करोड़ लोगों से एक तरह सोचने की उम्मीद नहीं की जा सकती। विदेशी बेशक उनकी मदद कर रहे हैं, जो उनके जैसा सोचते हैं। हम इंटरनेशनल की बात करते हैं। यह क्या है? वे ही विदेशी न, जो हमारे जैसा सोचते हैं?"

"मगर हम उन्हें अपना देश तो नहीं दे रहे हैं।"

"हमारा देश हमारा अपना मामला है," जहाज़ी ने गंभीरतापूर्वक कहा। वह पांव चौड़े फैलाकर और अपने बड़े हाथ घुटनों पर रखे हुए चारपाई की पाटी पर बैठा हुआ था। तंग और छोटे सफ़ेद सूती पायजामे की पृष्ठभूमि पर उसके हाथ काफ़ी काले लग रहे थे।

"यह मेरा निजी मामला है कि मैं अपने घर में क्या करता हूं – किसे आदर-सम्मान देता हूं और किसे दरवाज़ा दिखाता हूं। अपना घर मैंने अपने बाप-दादाओं से पाया है। उन्होंने उसे बनाया था और अपना खून बहाकर उसकी रक्षा की थी। इसलिए कोई मुझे हुक्म नहीं दे सकता कि उसे मैं कैसे चलाऊं। अगर मैंने किसी को बुलाया है, तो कृपा करके मेहमान की तरह रहे। लेकिन अगर बिन पूछे मेरे मामलों में नाक घुसेड़ी, तो फिर शिकायत न करे कि चूतड़ पर दो लातें खायी हैं... सागर पार का कोई मुझपर चौधराई करके तो देखे! अरे, मैं पेड़ की छाल खाकर रह लूंगा, पर किसी बाहरी आदमी को अपने घर, अपने देश में हुक्म नहीं चलाने दूंगा!"

"जाओ, खाओ न छाल, अगर इतनी पसंद है," स्टाफ़ अफ़सर बिस्तर पर चढ़ने के लिए उसे ठीक करते हुए बोला।

"ऐसी बात नहीं कि पसंद है," ज़हाज़ी बुरा मान गया। "छाल किसे पसंद आयेगी? मैं तो यही कह रहा था कि मैं अपना घर खुद चलाऊंगा और किसी परदेसी सार्जेंट के मातहत रहने से मर जाना बेहतर समझूंगा।"

बातचीत लगा कि यहीं खत्म हो गयी। अगले रोज़ दीबिच ने इज़्वेकोव को छोटा सा पर्चा भेजा और आतुरता मे उत्तर की प्रतीक्षा करने लगा।

किरील तेज़ डग भरता हुआ वार्ड में दाखिल हुआ, बीच में आकर रुक गया, सभी मरीज़ों पर एक सरसरी निगाह डाली और हाथ उठाकर सिर के पीछे खुजलाने लगा। खिड़की के पासवाले बिस्तर से उसे देखकर मुस्करानेवाला आदमी उसे वह दीबिच कतई न लगा, जिसे उसने अपने कक्ष में बेहोशी से उबारा था। वह उस पहलेवाले दीबिच, बटालियन कमांडर, जैसा कहीं ज़्यादा था, जिसने मोर्चे पर अधबने बंकर में सिपाही लोमोव को डांट पिलायी थी। लेकिन

यह दीविच्च पुराने दीविच से भिन्न भी था – अपने दुबलेपन के कारण ही नहीं, बल्कि चेहरे पर व्यक्त तनावहीनता के भाव के कारण भी, जिसे देखकर उस समय निश्चिंतता तक का भ्रम हो सकता था।

"अरे, आप तो ऐसे भले-चंगे दिख रहे हैं कि जैसे सीधे फ़ौज में लौटने को तैयार बैठे हों!"

इज़्वेकोव ने यह भरी-पूरी आवाज़ में कहा और वार्ड में घुसकर लोग आम तौर पर जैसे पहले अपरिचित मरीज़ों का मुआयना सा करते हैं, वैसे औरों की ओर भी नहीं देखा।

"मैं भी यही सोच रहा था कि फ़ौज में वापस लौटने का समय हो गया है," दीविच ने मुस्कराते हुए जवाब दिया।

"ओ-हो! लेकिन अभी क्या जल्दी नहीं है? आप क्या सचमुच पूरी तरह चंगे हैं? भूल गये कि मौत के मुंह में जाते-जाते बचे थे?"

"अब तो हफ़्तेभर से कसरत भी रहा हूं। कल यह कुर्सी टांग पकड़कर उठा ली थी।"

"आगे की या पीछे की?"

"पीछे की।"

"जब आगे की पकड़कर उठा लेंगे, तभी यहां से डिस्चार्ज होने की सोचियेगा।"

दोनों खिलखिलाकर हंस पड़े। उनकी बातचीत के नौजवानों जैसे हंसी-मजाकभरे अंदाज़ ने उनके बीच की दूरी और कम कर दी तथा पहली बार दोनों ने अपने को समवयस्क अनुभव किया। वे एक दूसरे को बताने लगे कि कहां पढ़े थे, कैसे स्कूल में आधी छुट्टियों में मेढककूद खेला करते थे, कैसे कमरपेटी के बकलस पर (अपने बकलस से कौन दूसरे के बकलस को ज़्यादा गहरा पिचकाता है) या पंजा-लड़ाई में (मेज़ पर कोहनी टिकाकर और पंजे से पंजा भिड़ाकर दूसरे के पंजे को कौन पहले नीचे झुकाता है) ताकत आज़माया करते थे। एकाएक किरील चिल्लाया,

"चलो, हो जाये एक बार फिर!"

और वह चारपाई पर दीविच के सामने बैठ गया।

बिस्तर पर पंजा-लड़ाई में सहूलियत न होने के बावजूद दोनों ने झुककर गद्दे पर कोहनियां टिका लीं और एक दूसरे का पंजा पकड़

लिया। दीबिच ने ज़बर्दस्त प्रतिरोध किया। तनाव के मारे उसका चेहरा लाल हो गया। लेकिन धीरे-धीरे हाथ नीचे झुकता गया और फिर एकाएक गद्दे पर गिर पड़ा।

"मैंने कहा था न कि अभी अस्पताल से छूटने का वक्त नहीं आया है," किरील ने हंसते हुए कहा और दूसरे मरीज़ों की ओर मुड़ते हुए पूछा, "और कौन उतरेगा मैदान में?"

"हां, यहां से ज़्यादा आसानी से विजय और कहां मिल पायेगी!" स्टाफ़ अफ़सर ने छींटा कसा।

"आसानी से मिल पायेगी–मैं कह नहीं सकता। क्यों, आप भिड़ायेंगे पंजा?" किरील ने अर्खांगेल्स्कवाले से पूछा।

जहाज़ी ने जवाब तुरंत न दिया। फिर मानो कुछ सोचकर झिझकते-झिझकते बोला,

"और अगर मैं आप दोनों से एक साथ चाहूं?"

"क्यों, कामरेड दीबिच, आप तैयार हैं न?"

किरील और दीबिच, दोनों ने अपने दायें हाथ जोड़ लिये और कोहनियां जहाज़ी के बिस्तर के पासवाली मेज़ पर टिका दीं। जहाज़ी ने सामने बैठकर अपने बड़े, गरम पंजे में दोनों के पंजे पकड़ लिये और जैसे कि चरखी घुमा रहा हो, देखते ही देखते उन्हें मेज़ पर पटक दिया।

तभी किरील की नज़र जहाज़ी के खुले सीने पर गुदी हुई तीर से बिंधे दिल की आकृति पर पड़ी।

"आप जहाज़ी हैं?" उसने पूछा। "नाम क्या है?"

"स्त्राश्नोव," जहाज़ी ने जवाब दिया।

"ओहो!" किरील वहां से उठा, वापस दीबिच के बिस्तर के पास जाकर बैठ गया और किसी अनिर्वचनीय संतोष से परिपूर्ण निगाहों से उसे देखने लगा।

"आप क्यों नहीं पूछते कि मैं किस फ़ौज में लौटना चाहता हूं?"

"पूछना क्या है? आपका चेहरा ही बताये दे रहा है।"

दीबिच मुस्करा दिया।

"बड़ी तेज़ निगाह है आपकी!"

"तय कर लिया है?"

"हां।"

"तब तो ठीक है। यहां से छूटने पर सीधे मेरे पास आइयेगा। मैं एक सिफ़ारिशी चिट्ठी लिख दूंगा। जल्दी ही हम कुछ नयी टुकड़ियां बनाने जा रहे हैं। आप उसमें मदद कर सकते है।"

"मैं सोच रहा था कि पहले मां के पास हो आऊं। बस, एक-दो दिन के लिए।"

"जैसी आपकी इच्छा," किरील बोला।

"आप मेरे जाने का इंतज़ाम कर देंगे न?"

"जैसी आपकी इच्छा," इज़्वेकोव ने दोहराया।

इस मुलाकात में पहली बार दोनों एकाएक चुप हो गये।

"आपको यहां अखबार नहीं मिलते?" आखिर किरील ने पूछा।

"मिलते हैं। क्या हो रहा है वहां मोर्चे पर?"

"आप पढ़ते तो हैं। उफ़ा पर हमारा कब्ज़ा हो गया है। अब उराल के पार बढ़ने लगेंगे।"

"और दक्षिण में?"

"वहां हालत खराब है।"

"देनीकिन ने क्या निर्णायक लड़ाई शुरू कर दी है?"

इज़्वेकोव ने बगलवाले बिस्तर की ओर देखा। स्टाफ़ अफ़सर उसे टकटकी लगाये ताक रहा था।

"निर्णय तो हम बोल्शेविक करेंगे," किरील ने ऊंची आवाज़ में कहा और इंतज़ार करने लगा कि उत्तर मिलता है या नहीं।

लेकिन वार्ड में और भी ज़्यादा खामोशी छा गयी।

"मैं ऐसा क्यों कह रहा हूं? इसलिए कि जनता हमारे साथ है। आप मानते हैं न?"

"हां," दीबिच बोला।

"इस बारे में दो रायें हो भी नहीं सकतीं। आपने एक बात गौर की है? जनता महसूस करती है कि मुख्य मुद्दों पर हम वही कर रहे हैं, जो वह चाहती है। यह मात्र संयोग नहीं है। हमारे लक्ष्य रूस के ऐतिहासिक हितों से पूरी तरह मेल खाते हैं और जनता के जीवन के निर्णायक क्षणों में उनका एक बन जाना अनिवार्य ही है। मिसाल के लिए यही लें: जनता ने युद्ध से निकल जाने की मांग की,

उसने ज़मींदारों का जुआ उतार फेंका और अब वह विदेशी दखलंदाज़ों को खदेड़ रही है। हर काम में हम उसका साथ दे रहे हैं। क्या यही बात नहीं है?"

किरील ने अपनी आंखें दीविच के पड़ोसी पर से हटायी नहीं थीं, जो शंकालु श्रोता जैसी भेदती और भिंची नजरों से उसे ताके जा रहा था। सहसा किरील इस अरसे से अनुभव न की हुई खुशी से आप्लावित हो गया कि वह फिर पेशेवर प्रचारक जैसे बोल रहा है। इस पेशे को उसने अपने जीवन के बहुत से वर्ष अर्पित किये थे, अपने नाम से रहते हुए भी और लोमोव के नाम से काम करते हुए भी, मोर्चे पर भी और जहां-जहां उसे भेजा गया था, वहां भी। उसे संतोष था कि दीविच उसकी बातों का विरोध नहीं कर रहा है। लेकिन इससे भी ज़्यादा संतोष उसे इस बात से था कि दूसरे श्रोता – स्टाफ़ अफ़सर – की खीझ बढ़ती जा रही है। मोर्चे पर इसे बढ़ती जा रही है। मोर्चे पर इसे जले पर नमक छिड़कना कहते थे।

आखिरकार उसने सीधे स्टाफ़ अफ़सर को ही संबोधित किया, "आप शायद मुझसे सहमत नहीं हैं?"

"क्षमा चाहता हूं, कामरेड, यह अस्पताल है न कि... और मुझे जिगर की बीमारी है।"

"ओह, हां। बड़ी गंभीर बीमारी है... तो, कामरेड दीविच, पहले आप घर ही जायेंगे न?" किरील ने उठते हुए पूछा।

"नहीं, अस्पताल से सीधे आपके पास आऊंगा।"

"मैं इंतज़ार करूंगा। लेकिन ध्यान रखना, इसे ज़्यादा न उठायें," किरील ने कुर्सी की ओर इशारा करते हुए कहा। "और अब पीछे मुड़कर न देखना, नहीं तो लोत की बीवी की तरह पत्थर बन जायेंगे।" वह फिर हंस पड़ा।

वार्ड से निकलते हुए वह एक क्षण के लिए स्त्राश्नोव के बिस्तर के पास रुका।

"माफ़ कीजिये, आपका परिचय?" जहाज़ी ने पूछा।

"मैं नगर सोवियत का सेक्रेटरी इज़्वेकोव हूं।"

"अ-हां," जहाजी बोला। "मैं आपके बारे में सुन चुका हूं। ठीक ही था।"

"ठीक था?" किरील मुस्कराया।

"ठीक था," स्त्राश्नोव ने दोहराया और मुस्कराते हुए उसने धीरे-धीरे अपना भारी हाथ इज़्वेकोव की ओर बढ़ा दिया।

एक दूसरे का हाथ पकड़े दोनों मुस्कराते हुए एक क्षण चुपचाप एक दूसरे को देखते रहे। फिर किरील चला गया।

गरमी के बावजूद वह चलते हुए यों हल्का महसूस कर रहा था, जैसे कि अभी-अभी कसरत करके लौटा हो। एकाएक मन में इच्छा पैदा हुई कि रागोज़िन से मिलने चला जाये।

जब वह पहुंचा, प्योत्र पेत्रोविच अपने नीची छतवाले कमरे में खुली खिड़की के सामने समोवार के पास बैठा था। कमरे में घुटन थी, मक्खियां भिनभिना रही थीं और बाहर आसमान कहीं दूर से उड़कर आते धूल के बादलों से ढका हुआ था।

"मैं यहां बैठा पसीने से नहाता सोच रहा था कि नदी किनारे क्यों न चला जाये। अपने को रोक नहीं पा रहा हूं।"

"नहाने? तुम क्या ज्योतिषी बन गये हो? मैं भी यही सोच रहा था," किरील बोला।

"सचमुच?" रागोजिन चौंक पड़ा। तो बोलो, तुम्हारी क्या राय है: मेरी जान-पहचान का एक बहुत अच्छा बुढ़ऊ है। उसके पास बंसियां, देगची, वगैरह सब कुछ है। और उसका एक नाववाला दोस्त भी है। चलकर नहायेंगे, शाम को बंसी डालकर मछली पकड़ेंगे और हो सकता है कि रात भी वहीं काटें, ताकि भोर में किस्मत फिर आजमायी जा सके। सुबह वापस लौट आयेंगे। ठीक है न?"

शीघ्र ही तय हो गया कि किरील कार के लिए गैरेज जायेगा, फिर घर खबर करेगा कि अगली सुबह तक शायद वापस न लौटे और उसके बाद सीधा नदी तट पर पहुंच जायेगा। इस बीच रागोज़िन खाने-पीने और मछली पकड़ने का सामान जुटा लेगा।

दो घंटे बाद वे घाट पर मिले। किरील खाली हाथ था और रागोजिन व बुढ़ऊ दुनियाभर की चीज़ों से लदे हुए। उन्होंने दो चप्पुओं-वाली एक नाव ली, जिसे खेना, बुढ़ऊ के अनुसार, आसान था। यह एक जर्जर, भद्दी, पुरानी डोंगी थी, जिसे किसी प्राचीन साहित्य के प्रेमी ने न जाने क्या सोचकर 'मीदेआ' नाम दिया था। रागोज़िन

बहुत उत्तेजित था। उसने जल्दी-जल्दी सारा सामान नाव में रखा, जैसे कि डर रहा हो कि कहीं उसकी योजना, जिसे वह अरसे से बनाता आ रहा था, ऐन मौके पर खटाई में न पड़ जाये। जब सब कुछ तैयार हो गया, तभी उसने किरील से पूछा,

"इन्हें नहीं पहचाना?"

किरील ने बूढ़े की ओर देखा। उसके धूप से झुलसे चेहरे पर गहरी, मानो जानबूझकर खींची हुई झुर्रियां पड़ी हुई थीं। बड़ी, कूबड़दार नाक पर गिलट के फ़्रेम का चश्मा चढ़ा हुआ था। किरील ने एकाएक संकोच के साथ पूछा,

"वही हैं?"

इज़्वेकोव की नाक के चकत्ते, जो गरमियों में हमेशा बढ़ जाते थे और मुस्कान छिपाने की कोशिश करते समय और गाढ़े हो जाते थे, अब पहले से और चौड़े दिखने लगे। इस शांत बूढ़े के सामने वह और भी छोकडा सा लगने लगा।

"वही हैं," रागोज़िन ने जवाब दिया और आदरभरे स्नेह से अपनी बांह बूढ़े के कंधे पर रख दी, जिसकी हड्डियां पंखों की तरह बाहर निकली हुई थीं। "इन जैसे मज़बूत लोगों की बदौलत ही हम जीत पाये हैं। बहुत बड़े साज़िशी हैं!"

"अच्छा, मुझे यह कहकर पुकारते हो!" सावधानी से नाव में पैर रखते हुए बूढ़ा बोला। "मैं तो सोचता था कि मेरा नाम मात्वेई है।"

"आप पहले आदमी थे, जिसने मुझे कामरेड कहा था," किरील ने पुरानी यादों में खोते हुए कहा। "मैं तब लड़का ही था।"

"और अब जानते हो, कहां रहते हैं? वहीं, जहां हम पर्चे छापा करते थे। मेश्कोव के घर में।"

"हां, श्रीमान मेश्कोव के साथ एक ही घर में," बूढ़े ने पतवार की रस्सी अपने गले में डालते हुए कहा।

"प्रसंगतः हाल ही में मैंने मेश्कोव को देखा था," रागोज़िन ने कहना जारी रखा। "पहले जैसा नहीं रह गया है।"

"पहले जैसा तो नहीं रह गया है, पर गुस्सैल अभी भी वैसा ही है," बूढ़े ने बताया।

लेकिन किरील कुछ न बोला। उसने आगे के चप्पू थाम लिये। रागोज़िन ने नाव के बीचोंबीच दूसरी जोड़ी पकड़ी और वे रवाना हो पड़े।

तरख़ान्का के मध्य में पहुंचकर वे चुपचाप ऊपर की ओर बढ़ने लगे। सड़ती हुई मछलियों की गंध और-और तेज़ होती जा रही थी। आसपास सब कुछ चिलचिलाती धूप में तप रहा था। रेत पर कहीं छाया का नामोनिशान न था। पानी की सतह आंखों को चुंधियाती हुई चमक रही थी। गरम, दमघोंटू हवा में ताज़गी का एक भी झोंका न था। केवल चप्पुओं के हर छपाके के साथ सिर के ऊपर फैला हुआ सफ़ेद और तपता हुआ आकाश का गुंबद मानो और-और बड़ा व विस्तृत होता जा रहा था।

"मैंने अरसे से चप्पू हाथ में नहीं लिये हैं । पिछली बार ओका नदी में, कोलोम्ना के पास, पकड़े थे," रागोज़िन बोला।

किसी ने कोई प्रतिक्रिया नहीं दिखायी। बूढ़े ने चश्मा ऊपर माथे पर, टोपी के ठीक नीचे चढ़ा लिया था और आंखें इतनी ज़ोर से भींचकर आगे ताक रहा था कि पलकों के बीच की पतली दरार में पुतलियां भी नहीं देखी जा सकती थीं। किरील ने आंखें बंद कर ली थीं और सिर्फ़ आवाज़ के सहारे ही चप्पू चलाता जा रहा था। जब वे हरे टापू के पास से गुज़र रहे थे, उसने कमीज़ उतार ली। उसका सारा बदन पसीने से चमक रहा था।

"देखना, धूप से जल न जाना," रागोज़िन ने आगाह किया।

लेकिन किरील ने फिर भी कुछ न कहा।

पहला रेतीला अंतरीप पीछे छूट गया और अब वे सीधे मुख्य धारा की ओर बढ़ने लगे। मछलियों की गंध और भी असह्य बन गयी। उसकी जी मिचलानेवाली मिठास में अब खट्टापन भी मिल गया था।

जब वे नदी की रेती के नज़दीक पहुंचे, उन्होंने पाया कि पानी के किनारे रेत पर दो-दो, तीन-तीन चमकीली धारियां सी बनी हुई हैं। पानी के सबसे नजदीकवाली धारी बहुत ही चमकीली थी। दूसरी कुछ भूरी थी और सबसे आखिर की लगभग काली पड़ गयी थी। जल्दी ही इन धारियों में मछलियों और धूप में चमकते उनके सूखे गल्फ़ों को पहचाना संभव हो गया।

"नाव को इनसे दूर ही रखें," रागोज़िन ने बूढ़े से कहा। "सांस लेना दूभर है।"

"मज़दूर आदमी का भोजन बेचारी हिलसा," मात्वेई ने अफ़सोस से सिर हिलाया। "कितनी अच्छी चीज़ बरबाद चली गयी है!"

"कोई बात नहीं, शीघ्र ही सब ठीक हो जायेगा," रागोज़िन बोला।

"लेकिन कब? लोग भूखे आज हैं! शिकायत आज कर रहे हैं!"

"कुछ का काम ही शिकायत करना है।"

मुख्य धारा निकट आते जाने से चप्पू चलाना कठिन होता जा रहा था और पूरी ताकत लगानी पड़ रही थी। रागोज़िन ने भी कमीज़ उतार ली और सिर पर टोपी के नीचे गीला रूमाल रख लिया। धारा नाव को अंतरीप की ओर धकेल रही थी और बूढ़ा उसका रुख सीधे, बहाव के विपरीत दिशा में किये हुए था, ताकि पानी उसे रेती पर न पटक दे। जब आखिरी अंतरीप भी पीछे छुट गया और सामने वोल्गा का अपार विस्तार आ गया, मात्वेई ने पतवार छोड़ दी और नाव पानी के बहाव के साथ बहने लगी।

"बस, हो गया!" रागोज़िन ने चिल्लाकर कहा और चप्पू उठा लिये। उनसे और उनके कुंडों से नाव में पानी की धार बह चली। चप्पुओं के हत्थों पर पैर फैलाते हुए रागोज़िन किरील से बोला,

"लगता है, काफ़ी ताकत है, जो इतने ज़ोर से चप्पू चलाते रहे!"

तीनों चुप हो गये और पानी के बहाव के साथ बहती नाव में निश्चेष्ट बैठ सुस्ताने लगे। बायें तट से गरम, लेकिन स्वच्छ स्तेपियाई हवा के झोंके आ रहे थे। यहां मुख्य धारा के साथ हर चीज़ पूर्ण निर्द्वंद्वता और बेमिसाल खुलेपन का अहसास करा रही थी।

बूढ़े ने संकरे मुंहवाली एक छिछली खाड़ी में अच्छी सी जगह चुन ली और नाव रोक दी। रागोज़िन और किरील तुरंत नीचे कूदकर नहाने चले गये।

उन्होंने बूढ़े को भी पानी में उतरने के लिए उकसाया, लेकिन उसने कहा कि अपने ज़माने में वह काफ़ी तैर चुका है और अब ज़्यादा से ज़्यादा पैर ही भिगो सकता है।

"शायद तैरना नहीं आता," प्योत्र पेत्रोविच ने चिढ़ाया।

"जब तुम 'बचाओ! 'बचाओ!' चिल्लाओगे, तब देखना, तैरना जानता हूं कि नहीं..."

किरील और रागोज़िन वोल्गाई तरीके से तैर रहे थे – कंधे के ऊपर से हाथ घुमाकर पानी काटते हुए। प्योत्र पेत्रोविच हर बार चेहरा पानी में छुपा लेता, जिससे उसकी चांद धूप में चमकने लगती, फिर फुफकारता हुआ सिर ऊपर उठाकर मुंह से पानी की पिचकारी छोड़ता और "ओहो-हो!" चिल्लाता और फिर पानी में डुबकी लगा लेता। किरील बिना किसी ऐसी नाटकीयता के तैर रहा था, इसलिए वह काफ़ी आगे निकल गया। उनकी बांहें धूप में ऐसे कौंध रही थीं, जैसे कि किसी धीरे-धीरे घूमते पहिये के आरे हों।

जीभर तैर लेने के बाद उन्होंने काम बांट लिया। बूढ़ा मात्वेई बाल्टी और थैलानुमा जाल उठाकर मछलियों के लिए चारा – मीनिकाएं – पकड़ने चला गया। रागोज़िन बंसियां और कांटे तैयार करने लगा और किरील अलाव के लिए लकड़ियां जुटाने भेजा गया। इन सब कामों में काफ़ी समय निकल गया। मीनिकाएं बड़ी चालाक थीं – ज्यों ही जाल डाला जाता, उनके झुंड तुरंत जगह बदल लेते। लकड़ियां काफ़ी दूर, एक रेतीले टीले पर ही मिल सकती थीं। वहां से भी सूखी लकड़ियां पानी बहा ले गया था और झाड़ियों पर जो अधसूखी टहनियां बची रह गयी थीं, उन्हें हाथ से तोड़ना इतना आसान न था। बंसियों की डोरिया जगह-जगह से कमज़ोर या टूटी हुई थीं। उन्हें फिर से जोड़ना और उनपर नये कांटे बांधना ज़रूरी था। कहने का मतलब यह कि हर किसी को काफ़ी खटना पड़ा।

दिन काफ़ी ढल गया था, जब वे कांटों पर चारा फंसाने लगे। चार बंसियों पर कोई एक सौ कांटे थे, लेकिन उनपर मीनिकाओं को फंसाना काफ़ी झंझट का काम सिद्ध हुआ। गरमी इतनी थी कि जब तक आखिरी कांटों पर मीनिकाएं फंसायी जातीं, तब तक पहले कांटों की मीनिकाएं मुर्दा तैरने लग जातीं और उन्हें बदलना जरूरी हो जाता।

आख़िरकार रागोज़िन ने अंतिम बंसी का सीसे का साहुल पानी में डाल ही दिया। तीनों बड़े संतोष से साहुल के पीछे मीनिकाओं को

एक-एक करके किनारा छोड़ते, हवा में उछलते और फिर पानी की सतह के नीचे गायब होते देखने लगे। पानी के ठीक किनारे पर रेत में टहनियां गाड़कर उनसे बंसियां बांध दी गयी थीं। हर बंसी के ऊपरी किनारे पर एक-एक छोटी घंटी बंधी हुई थी।

"किरील, दायीं बंसी पर तुम नज़र रखना," रागोज़िन ने कहा, "बायीं पर मैं और बीचवालियों पर मात्वेई। और अब चलो, चाय पी जाये।"

शाम के धुंधलके तक वे रेत में कोहनियां गाड़े आग के गिर्द औंधे लेटे धूएं की गंधवाली गरम-गरम चाय की चुस्कियां लेते रहे। हवा रुक गयी थी और नदी की शांत सतह अपना रंग बदलती जा रही थी। बहुत देर तक तीनों में से कोई कुछ न बोला। शायद वे अपने जीवन के सर्वोत्तम क्षणों को याद कर रहे थे, या फिर हो सकता है कि किसी ऐसी भाषा में बातें कर रहे थे, जिसमें शब्दों की कोई ज़रूरत नहीं पड़ती। आखिरकार जब बूढ़ा मात्वेई बोला, तो उसकी आवाज़ ने उस निःशब्द वार्तालाप को मानो तोड़ा नहीं, बल्कि आगे जारी ही रखा।

"पेत्रोविच, अभी तुमने कहा कि कुछ लोग शिकायत करना ही जानते हैं। लेकिन जब से मुझे याद है, मैंने लोगों को शिकायतें करते ही सुना है: जई महंगी है। बर्फ़ इतनी कम गिरी है कि बोये हुए खेत भी ठीक से नहीं ढक पाये हैं। मवेशियों के लिए पर्याप्त चारा नहीं है। घर में कमानेवाला एक है और खानेवाले बहुत। ज़मीन कम है। बारिश से खेत में बोया हुआ सारा बीज सड़ गया है। मिट्टी बहुत ही बलुई या चिकनी है। गरमी ने सारी घास भी झुलसा डाली है। लगान बहुत ज़्यादा है। कुलक खून तक चूसे डाल रहे हैं। ज़मीन के टुकड़े-टुकड़े होने से बड़ी मुसीबत हो गयी है। अतिरिक्त कमाई का कोई ज़रिया नहीं है। मकान जल गया है। दूसरी जगहों से बहुत लोग आकर बसने लगे हैं, वगैरह, वगैरह।"

"सब सच तो है," किरील बोला।

"सच तो है, पर सवाल इस सच को बदलने का है। ज्यों ही बदलने लगोगे, देखोगे कि सभी शिकायतें गायब हो गये हैं।"

"आप चाहते क्या हैं?"

"मैं चाहता तो बहुत कुछ हूं। जैसे यही कि लोग शिकायतें करना बंद कर दें और जो ठीक नहीं है, उसे ठीक करने लग जायें।"

"उनके सामने मिसाल पेश करनी चाहिये और यह काम हम करेंगे।"

"करेंगे नहीं, बल्कि कर रहे हैं," रागोज़िन बोला। "थोड़ा-बहुत तो कर भी चुके हैं।"

"बेशक," किरील ने सहमति जतायी। "लेकिन अभी हम लोगों के बीच नये संबंध ही कायम कर रहे हैं, जबकि मात्वेई हमारे रहन-सहन के सारे ढंग, रोज़मर्रे के जीवन की बात कर रहे हैं।"

बूढ़ा हल्के से हंस पड़ा।

"कहते हैं न कि भूखे पेट भजन नहीं होता। तो भाई मेरे, ज़रूरत इस बात की है कि तुम भजन, भोजन और भंजन – दुश्मन की शक्ति के भंजन – के बारे में एक साथ सोचो।"

"सब कुछ के बारे में एक साथ सोच पाना तो अभी संभव नहीं," रागोज़िन बोला, "हालांकि हम इसकी ज़रूरत से इंकार नहीं करते। पर हमें इस समय ऐसा करने कौन देगा?"

बूढ़ा चुप रहा – या तो इसलिए कि वह अपनी बात पूरी कह चुका था, या फिर इसलिए कि उसके पास कोई जवाब न था। बाद में कुछ सोचकर बोला,

"वहां नाव में मैं सोच रहा था कि देखो, ये लोग ऐसे आराम करने निकले हैं कि जैसे सारा काम खत्म कर चुके हों। लेकिन काम तो अभी कितना बाकी है! अकेली गंदगी ही देखो कितनी पड़ी हुई है!"

"देकार्त ने कहा था कि पृथ्वी गंदगी से ढका सूरज है," किरील ने किसी को भी खास तौर पर संबोधित न करते हुए कहा।

बूढ़े ने खड़े होकर धीरे से बदन को ताना और फिर पूछा,

"कोई वैज्ञानिक था क्या? जहां तक सूरज की बात है, उसे वैज्ञानिक ही जानें। लेकिन गंदगी तो हम खुद भी देख सकते हैं।"

और फिर डूबते हुए सूरज की चमक से बचने के लिए आंखों पर ओट करते हुए बोला,

"ये कौन आदमी आ रहा है?"

तिनकों की बड़ी सी टोपी पहने एक आदमी पानी के किनारे-किनारे तेज़ी से डग भरता उनकी ओर आ रहा था। उसके साथ दो लड़के भी थे, जो नदी की सतह पर चपटे पत्थर फेंकते और यह देखते कि किसका पत्थर ज़्यादा "चौकड़ियां" भरता है, यानी डूबने से पहले पानी की सतह पर ज़्यादा बार कूदता है, उससे कभी आगे निकल जा रहे थे, तो कभी पीछे छूट जा रहे थे। जल्दी ही चौकड़ियां गिनने की उनकी आवाज़ भी सुनायी देने लग गयी। चौकड़ियां आख़िर में ज्यों-ज्यों छोटी होती जातीं, गिनती में त्यों-त्यों तेज़ी आती जाती: पांच, छह, सात, आठ-नौ-दस!"

एकाएक रागोज़िन चौंककर खड़ा हो गया।

"अरे, यह तो..."

फिर अनायास आगे बढ़ते हुए चिल्लाया,

"हां, हां, वही तो हैं! आर्सेनी रोमानोविच!" और रेत में धंसते नंगे पैर जल्दी-जल्दी उठाते हुए आगंतुक की ओर दौड़ पड़ा।

"आर्सेनी रोमानोविच!" उसने पुकारा।

तब तक लड़के भी दौड़ते हुए आ गये थे, लेकिन रागोज़िन तक पहुंचने से पहले ही वे कुछ अचकचाकर रुक गये और दोरोगोमीलोव की ओर मुड़े, जो उनके पीछे तेज़ी से आ रहा था।

"हैलो," रागोज़िन ने हंसते हुए कहा। वह पावलिक और वीत्या को तुरंत पहचान गया था। 'लाओ तो जल्दी से उन्हें पकड़कर, जिनकी तुम लोग इतनी वकालत कर रहे थे!"

छोकड़े सचमुच ही पीछे दौड़ पड़े और दोनों ने एक-एक ओर से आर्सेनी रोमानोविच का हाथ पकड़ लिया। आर्सेनी रोमानोविच कुछ कदम उनके साथ दौड़ा, फिर उनके जैसे ही अचकचाकर रुक गया।

टोपी उतारकर उसने बाल ठीक किये, या कहें कि उन्हें और भी बिगाड़ा और कपड़े ठीक करने लगा। स्पष्टतः उसे संकोच हो रहा था कि उसकी कमीज़ पैंट में खुंसी हुई थी और खुद पैंट भी पुराने गेलिसों के सहारे जैसे-तैसे टिकी हुई थी।

"कोई बुराई नहीं अगर हम एक दूसरे को चूम लें," रागोज़िन ने खुशी से खिलते हुए कहा। "क्या हाल-चाल हैं, मेरे प्रिय दोस्त?"

उन्होंने एक दूसरे को चूमा। खुशी के मारे लड़कों के भी पैर जमीन पर नहीं पड़ रहे थे (उन्होंने पहले कभी आर्सेनी रोमानोविच को किसी को चूमते हुए नहीं देखा था) और दोनों में से हर कोई अपना गंदा हाथ रागोज़िन की ओर पहले बढ़ाने की कोशिश कर रहा था।

"प्योत्र पेत्रोविच, मेरे इन शैतानों को माफ़ कर दीजिये," हर्षविह्वल, मगर लज्जा से गड़े जा रहे दोरोगोमीलोव ने कहा। "यह न सोचियेगा कि मैं... मेरे कहने का मतलब है कि उस बेकार की बात के सिलसिले में... इन्हें आपके पास मैंने नहीं भेजा था। ये खुद ही गये थे... मुझसे पूछे बिना ही..."

"प्योत्र पेत्रोविच जानते हैं कि हम – वीत्या और मैं – खुद ही गये थे।"

"तुम ठहरो भी! मुझे बताने दो..."

"बताने को कुछ नहीं है, कुछ नहीं!" तसल्ली और साथ ही उलाहना सा देते हुए रागोज़िन ने दोरोगोमीलोव की बात बीच ही में काट दी। "मुझे सब मालूम है, सब! हां, आप यह बताइये कि आप मुझसे छिप क्यों रहे हैं? शैतान ही जानता है कि मैं कितना व्यस्त रहता हूं। लेकिन आप..."

"यही तो बात है," दोरोगोमीलोव बोला। "इसीलिए तो मैं शर्मिंदा हूं कि इन्होंने आपका..."

"छोड़िये भी! ख़ैर, आप लोग यहां क्या कर रहे हैं?"

"हम मछली मारने आये हैं। हमारी नाव वहां है," पावलिक ने सबकी ओर से जवाब दिया और हाथ से पीछे की दिशा में इशारा किया। "दिन के खाने के बाद हमने नौ बंसियां डाली थीं, लेकिन अभी तक हाथ कुछ भी नहीं लगा। आज मछलियां न जाने क्यों नहीं फंस रही हैं!"

"बंसियां आप लोगों ने भी डाली हैं?" वीत्या ने पूछा।

"चारे के लिए मीनिकाएं इस्तेमाल कर रहे हैं?" पावलिक ने भी पूछा।

"मछलियों को अब कीड़े पसंद नहीं हैं, ठीक है न?" वीत्या फिर बोला।

इस तरह बड़ों को जवाब देने का मौका दिये विना वे सवाल पर सवाल करते रहे। आखिर जब सभी आग के पास पहुंच गये, रागोज़िन बोला,

"अब बाकायदा ढंग से परिचय हो जाये। क्या नाम हैं तुम्हारे?"

लड़कों ने स्कूली तरीके से विनम्रतापूर्वक अपने नाम बता दिये: वीत्या शुब्निकोव, पावेल पाराबुकिन।

किरील नामों के इस मानो जानबूझकर पैदा किये हुए संयोग से चौंक पड़ा। उसने लड़कों का अभिवादन किया, लेकिन इस बार अपनी पहले जैसी आत्मविश्वासभरी जल्दबाज़ी के विना ही। वीत्या के चेहरे ने उसे चकित कर दिया – उसके आकर्षक बचकाना नाक-नक्शों ने किरील के मन में अनगिनत धुंधली यादें जगा दी थीं।

"तुम्हारी मां का नाम येलिज़ावेता मेरकूर्येव्ना है न?"

"हां," वीत्या ने शरमाते हुए जवाब दिया। "आप उन्हें जानते हैं?"

"तुम... उनके अकेले बच्चे हो?" किरील ने अचकचाते हुए पूछा।

"अकेला... चाचा मात्वेई भी हमारे साथ ही रहते हैं।"

बूढ़े ने सिर हिलाकर हामी भरी और बताया,

"मेश्कोव का नाती है..."

रागोज़िन किरील को एकटक देखे जा रहा था, लेकिन वह जैसे कि पूरी तरह बच्चों में ही खोया हुआ था।

"तुम लोग अरसे से दोस्त हो?" किरील ने अब पावलिक से पूछा और उसे भी वैसे ही गौर से देखा, जैसे कि अब तक वीत्या को देख रहा था।

"हम हमेशा से दोस्त रहे हैं," पावलिक ने निर्भीकतापूर्वक जवाब दिया। "मैं ठीक कह रहा हूं न, आर्सेनी रोमानोविच?"

लड़कों से बातें करते हुए किरील न चाहते हुए भी दोरोगोमीलोव की उपस्थिति को लगातार महसूस किये जा रहा था। उसे लग रहा था कि यह अप्रत्याशित आगंतुक उसका ध्यान अपनी ओर मुड़ने की प्रतीक्षा कर रहा है और उसके जैसे ही लगातार व एक खास ढंग से उसकी उपस्थिति को महसूस कर रहा है। लीज़ा के बेटे और आनोचका

के भाई से एक साथ मिलने से उसे कितना भी आश्चर्य क्यों न हुआ हो, वह जानबूझकर उनके साथ अपनी बातचीत को लंबा खींचता गया, ताकि पहले अपने ऊपर काबू पा ले और फिर शांति से आर्सेनी रोमानोविच की प्रतीक्षारत दृष्टि का उत्तर दे सके। उसे इस आदमी की धुंधली सी याद तो थी, लेकिन बचपन से ही उसके प्रति वह अनचाहे एक ऐसा द्वेषभाव रखने लगा था, जो आगे चलकर, जब उसे अपने पिता की मृत्यु का किस्सा मालूम हुआ, गुप्त शत्रुता में बदल गया था। किरील को बचपन में तब बहुत अच्छा लगता था, जब गली के छोकड़े दोरोगोमीलोव को झबरैला कहकर चिढ़ाते थे। वह खुद भी तब मन ही मन उसे इसी नाम से पुकारा करता था।

"और इनसे मिलो – यह हैं दोरोगोमीलोव," रागोज़िन ने जोशीले अंदाज में कहा।

"इज्-वे-कोव," किरील ने झबरैले पर आंखें गड़ाते और अपने नाम के हर हिस्से का अलग-अलग उच्चारण करते हुए रुखाई से जवाब दिया और पाया कि दोरोगोमीलोव का बूढ़ा, बेचैन चेहरा फक पड़ गया है। उसे लगा कि जो अनपूछा सवाल उसे अब तक इतना परेशान किये हुए था, उसका उसे एकाएक जवाब मिल गया है: "हां, कसूर-वार है!" उसकी इच्छा हुई कि वह चीखकर, ताकि दूसरे लोग भी सुन लें, पूछे: "बताइये, मेरे पिता कहां डूबे थे?" या नहीं, इससे भी अधिक निर्दयता के साथ: "आपने मेरे पिता को कहां डुबाया था?"

लेकिन ज्यों ही उसने अपने बढ़े हुए हाथ में आर्सेनी रोमानोविच का कांपता हुआ और साथ ही हर्षातुर हाथ महसूस किया, वह संयत हो गया और एक बिल्कुल दूसरा ही सवाल मन में उठा: दुर्घटना से बचा हुआ आदमी क्या दुघटना में मरे हुए के सामने अपने को हमेशा अपराधी नहीं महसूस करता रहता? क्या ऐसे आदमी को कभी मानसिक शांति मिल सकती है, चाहे उस समय उसने अपने साथी को बचाने की कितनी भी कोशिश क्यों न की हो?

"किरील, जानते हो, १९१० में मैं आर्सेनी रोमानोविच की बदौलत ही बच पाया था," रागोज़िन पहले जैसे ही उत्तेजनापूर्वक कहे जा रहा था।

"क्या बात करते है आप!" दोरोगोमीलोव ने झेंपते और हाथ में पकड़ी टोपी को झटकते हुए विरोध किया। "नहीं, नही, ऐसी बात न कहें!"

उसके चेहरे का पीलापन जाता रहा और उसकी जगह बुढ़ापे की ललाई ने ले ली। एकाएक वह भावविह्वल और साथ ही औपचारिकतां-पूर्ण स्वर में कहने लगा,

"आपकी अनुमति हो तो आपकी उपस्थिति में" (वह बारी-बारी से किरील और रागोज़िन को देखे जा रहा था) "मैं इनसे, इन लड़कों से कुछ कहना चाहता हूं" (उसने पावलिक और वीत्या को शिक्षक जैसे स्नेह और अधिकार के साथ अपने पास खींच लिया)। "मेरे नन्हे दोस्तो, तुम इन लोगों को अच्छी तरह देख लो और हमेशा-हमेशा के लिए याद रख लो। ये जो कुछ कर रहे हैं, तुम्हारे आज के और भविष्य के सुख के लिए कर रहे हैं। इसलिए कर रहे हैं कि जब तुम बड़े होओ, तुम्हें जीवन में कभी वे कष्ट और अन्याय न देखने पड़ें, जो पहले आम सी बात थे और जो आज भी तुम्हें जहां-तहां दिख जाते हैं। ये लोग हमारी धरती को वैसा ही शुद्ध-पवित्र बनाना चाहते हैं, जैसा कि यह सांध्यकालीन आकाश है... मुझे आशा है कि आप मुझे क्षमा कर देंगे... मैं थोड़ा सा.."

वह आगे न बोल सका और डूबते सूरज की ओर मुंह फेरकर खांसता हुआ एक-दो कदम अलग हट गया।

किरील ने एकाएक पाया कि इस बिखरे बालोंवाले बूढ़े और उस बूढ़े के बीच एक अद्भुत साम्य है, जिसने निर्वासन के दिनों में उसे अपने पुस्तक-प्रेम की छूत लगा दी थी। उसने राहत की सांस ली।

लड़के गभीरता से और टकटकी लगाये उसे देख रहे थे। फिर सहसा, ऐसे अप्रत्याशित भाषण के बाद, वीत्या ने ज़ोर से पूछा,

"चाचा मात्वेई, मीनिकाओं को कांटे में कैसे फंसाना चाहिए – पीठ से या जबड़े से?"

रागोज़िन हंस पड़ा और नन्हे साथियों को आग की ओर ठेलते हुए बोला,

"चलो, चाय पीते हुए तय करेंगे कि बेहतर तरीका क्या है।"

तभी एक छोटी सी घटना हो गयी, जिसने सबसे अंतरंग बातचीत

से भी ज़्यादा तेज़ी से सबके बीच घनिष्ठता कायम कर दी।

सभी आग के गिर्द बैठे ही थे कि वीत्या उचककर बैठता हुआ चिल्लाया,

"फंस गयी?"

सभी एक साथ बंसियों की ओर मुड़ गये। रेत में गड़ी हुई टहनिया पानी की शांत, मटमैली-पीली पृष्ठभूमि पर साफ़-साफ़ दिखायी दे रही थी। एकाएक सबसे किनारे की टहनी नीचे झुकी और फिर सीधी हो गयी और घंटी की तेज़, पतली टन-टन हवा में गूंज उठी।

वीत्या, पावलिक और किरील उछलकर खड़े हो गये। लेकिन रागोज़िन ने उन्हें पकड़कर नीचे खींचा।

"ठीक से फंसने दो!" उसने डरावनी, खुसफुसाती आवाज़ में कहा।

लेकिन लड़कों को बिठाकर और किरील को भी आस्तीन से खींचकर, ताकि वह बैठ जाये, वह खुद यों उकड़ूं हो गया कि जैसे घातक छलांग लगाने की तैयारी कर रहा हो, और भौंहें उठाकर तथा आंखें फाड़े हुए मकड़ी जैसे घुटनों और हाथों के बल नदी की दिशा में रेंगने लगा। उसके पीछे-पीछे लड़के, किरील और सबके बाद आर्सेनी रोमानोविच – भी उठकर वैसे ही रेंगने लगे। आर्सेनी रोमानोविच का एक गेलिस ज़रूरत से ज़्यादा खिंचाव के कारण टूट गया और पैरों के बीच लटक गया।

टहनी फिर झुकी और कांपी और घंटी की घबड़ायी सी आवाज़ हवा में फिर तिर गयी। रागोज़िन ने टहनी से नज़रें हटाये बिना हाथ से पीछे की ओर डरानेवाला इशारा किया कि सब रुक जायें, आगे न बढ़ें, जबकि वह खुद और-और तेज़ी से पानी की ओर बढ़ता जा रहा था।

पानी से कोई पांच कदम की दूरी पर वह ठहर गया। घंटी बजनी बंद हो गयी थी। दूसरे मछुआरे बहुत ही तरह-तरह के और असुविधाजनक मुद्राओं में जहां के तहां रुके हुए थे। आर्सेनी रोमानोविच जैसे-तैसे अपना गेलिस ठीक करने में लगा हुआ था। कहीं दूर से किसी नाव की मोटर की भारी घर्राहट सुनायी दे रही थी। टहनी कोई हरकत नहीं कर रही थी।

एकाएक वह बहुत नीचे तक झुकी। बंसी की डोर पूरी तन गयी और फिर पानी से छटककर तार जैसे कांपते हुए उसने आसपास बड़ी-बड़ी चमकती बूंदें बिखरे दीं।

"फंस गयी!" रागोज़िन बिल्कुल अपरिचित आवाज़ में चिल्लाया और बंसी की ओर लपका।

उसके पीछे दूसरे भी सभी उधर लपके। उसने डोर को पकड़कर एक ओर झटका और फिर पीछे हटकर इंतज़ार करते हुए कान लगाकर सुनने लगा कि वहां, पानी के नीचे क्या हो रहा है।

"मात्वेई, जाल!" वह चिल्लाया।

मात्वेई अपने अकड़े हुए पैर रेत पर मुश्किल से उठाता हुआ जाल को कंधे पर रखकर ले आया। किरील पीला पड़ गया और रागोज़िन से बोला,

"मुझे दो! यह मेरी है। तुम्हारी उस किनारेवाली है।"

"ठहरो भी न एक मिनट!" बंसी को पानी से खींचते और किरील को कोहनी से दूर ही रहने का इशारा करते हुए रागोज़िन बोला। "सावधानी बरतने की ज़रूरत है, नहीं तो हाथ से निकल जायेगी!"

"मुझे दो, मुझे दो!" पानी में घुसते और रागोज़िन के हाथ से बंसी छीनते हुए किरील ने ज़िद्द की।

प्योत्र पेत्रोविच ने पानी में और गहरे, घुटने-घुटने तक घुसकर बंसी को और आगे से पकड़ लिया।

"मैं कह रहा हूं न कि हाथ से निकल जायेगी! जल्दी न करो, नहीं तो डोर टूट जायेगी!"

वह डोर को और एक मिनट ढीला छोड़े रहा और फिर धीरे-धीरे खींचने लगा। कांटे, जिनमें चारा फंसा हुआ था, ऊपर आकर हवा में झूलने या डोर पर उलझने लगे।

"खूब मोटी है!" किरील बच्चों जैसे चिल्लाया। उसकी नज़र तनी हुई बंसी पर ही टिकी हुई थी, जिसकी ओर उसने अनजाने में अपने हाथ अभी भी बढ़ा रखे थे।

"मात्वेई, जाल पकड़ो!"

बूढ़ा तब तक पानी में घुस चुका था और जाल बंसी के नीचे लगाकर लोहे के छल्ले से, जिसपर कि जाल बंधा हुआ था, नदी के तले की मुलायम रेत कुरेद रहा था।

मछली ने पहले तो डोर के दायीं ओर, फिर बायीं ओर पानी की शांत सतह को मथ डाला। सभी को लगा कि वह बहुत बड़ी है – पानी यों उछलने, छलकने, चमकने लगा था।

"थोड़ा और ढील दो," बूढ़े ने सलाह दी।

गगोज़िन ने डोर ढीली छोड़ दी, गरदन घुमाकर पीछे किरील को देखा और एकाएक बंसी उसे थमा दी:

"लो, पकड़ो!"

किरील ने इतने जोश से बंसी को उठाया कि कांटे इधर से उधर झूल उठे और उनमें से एक सीधे उसकी अपनी आस्तीन में और दूसरा मात्वेई की कमीज़ में जा फंसा।

"सावधानी से!" बूढ़ा चिल्लाया।

लेकिन तभी पानी का एक ऊंचा फ़ौवारा उठा।

मछुआरों से दो ही कदम की दूरी पर सान चढ़े चाकू जैसी पूंछ चमकी। मात्वेई ने तुरंत जाल के नीचे घुटना रखकर दायें हाथ से ऊपर से दबा दिया और फिर बायें हाथ से जाल बाहर निकाला। उसके छेदों से बहते पानी में पकड़ा हुआ मच्छ बुरी तरह से छटपटा रहा था।

"पकड़ ली! पकड़ ली!" चार कंठ एक साथ चिल्लाये।

चिल्लानेवाले वीत्या, पावलिक, किरील और उनके गिर्द दौड़ता आर्सेनी रोमानोविच थे। जाल को पानी से दूर खींच लिया गया और किरील ने डोर पकड़कर सफ़ेद पेट और नीली-भूरी पीठवाली फड़-फड़ाती हुई पाइक मछली को ऊपर उठाया। पसीने से तर अपना चेहरा आस्तीन से पोंछते हुए वह उसे पकड़े रहा और हर्षमिश्रित विस्मय से बोला,

"कम से कम सात पाउंड होगी!"

रागोज़िन ने डोर लेकर हाथ में तौला और कहा,

"पांच से ज़्यादा नहीं।"

फिर मात्वेई ने भी वैसा ही किया और फ़ैसला सुनाया,

"नहीं, साढ़े तीन पाउंड से एक आउंस ज़्यादा नहीं!"

इसके बाद लड़के पाइक की पूंछ झटकने लगे, जिसपर आर्सेनी रोमानोविच ने उन्हें लेक्चर पिलाया कि पाइक अधमरी भी हो, तब भी उससे छेड़खानी क्यों नहीं करनी चाहिए।

इस सारी उत्तेजना में कोई न सुन पाया कि मोटरनौका का शोर नज़दीक ही आ गया है। उसकी ओर सबसे पहले बूढ़े का ध्यान गया।

"लगता है कि इधर ही मुड़ रही है," वह बोला।

"हमें इससे क्या मतलब?" रागोज़िन ने जवाब दिया।

"किसकी मोटरनौका होगी?" बूढ़ा आंखें भींचते हुए बोला।

"हमें कोई फ़र्क पड़ता है?" प्योत्र पेत्रोविच ने फिर उसका ध्यान उधर से हटाने की कोशिश की।

फिर सभी मछली तैयार करने में व्यस्त हो गये। बेशक, अच्छा सूप पकाने के लिए वही काफ़ी नहीं थी। लेकिन पहले तो सूरज अभी-अभी डूबा था और मछलियों के फंसने का वक्त शुरू ही हुआ था और, दूसरे, मछुआरे दूरंदेश आदमी होते हैं और इसलिए घर से निकलते वक्त उनका थैला लौटते वक्त के मुकाबले कहीं ज़्यादा भरा होता है।

"मोटरनौका इधर ही आ रही है," मात्वेई फिर बोला।

"तो क्या हुआ? तुम सोचते हो कि मछलियों को डरा देंगे?"

"मछलियों को तो नहीं, हमें..."

सभी आंखें मोटरनौका की ओर मुड़ गयीं। वह अपने उठे हुए अग्रभाग से पानी को ऊंचे, फेनिल शिखरोंवाली दो सतरंगी लहरों में बांटती हुई और पीछे कहीं दूर जाकर खो जानेवाली तरंगों का तिकोन छोड़ती हुई सीधे उसी तरफ़ आ रही थी, जहां बंसियां खड़ी हुई थीं। एकाएक मोटर की घर्राहट बंद हो गयी। कटे हुए पानी के उफनने की आवाज़ सुनायी दी, फिर वह भी शांत हो गयी और नौका अपने शोर की कहीं दूर गूंज मात्र ही छोड़कर रेती पर आकर झटके से रुक गयी।

साफ़-सुथरी, चुस्त वर्दीवाला एक आदमी नीचे कूदा और सीधे

इज़्वेकोव कीं ओर लपका। अगर उसने सैल्यूट में एड़ियां नहीं बजायीं, तो इसमें उसका नहीं, रेत का ही कसूर था।

"ज़ुबीन्स्की। सैनिक कमिसार का आदेश है कि कामरेड इज़्वेकोव और कामरेड रागोज़िन को लेकर तुरंत वापस पहुंचूं।"

"क्यों?"

"यह पत्र है।"

किरील ने मुहर तोड़ी और लिफ़ाफ़ा खोला। प्रदेश कमेटी ने उसे और प्योत्र पेत्रोविच को एक फ़ौरी पार्टी मीटिंग के लिए बुलाया था।

इज़्वेकोव ने प्योत्र पेत्रोविच को भी कागज़ पढ़ने को दिया। दोनों की निगाहें मिलीं और फिर वे जूते पहनने के लिए आग के पास चले गये। जब दोनों तैयार हो गये, रागोज़िन ने मात्वेई का कंधा कुछ ऐसे छुआ कि जैसे कहना चाह रहा हो: क्या करें, ज़रूरत ही ऐसी आ पड़ी है!

"कोई बात नहीं," मात्वेई बुदबुदाया। "मुझे तुम चाहो तो पानी में भी फेंक दो। मैं चूं नहीं करूंगा।"

"छोड़ो भी तुम यह बड़बड़ाना," रागोज़िन बोला और उसका हाथ अपने हाथ में लेना ही चाहता था कि तभी किसी ने उसे कोहनी पकड़कर खींच लिया।

आर्सेनी रोमानोविच, जो बहुत ही उत्तेजित था, उसे कुछ अलग ले गया और ज़ुबीन्स्की को एकटक देखता हुआ जल्दी-जल्दी खुस-फुसाया,

"प्योत्र पेत्रोविच, इस आदमी से सावधान रहना। यह आपकी राह का कांटा बन सकता है।"

"घबड़ाओ नहीं, मेरे दोस्त। हम छोटे बच्चे नहीं हैं। हां, ज़रा नाव और बंसियों के सिलसिले में बूढ़े की मदद कर देना।"

"और मछली? मछली का क्या करें?" पावलिक चिल्लाया।

रागोज़िन ने लड़के को खींचकर अपने से सटाया, अगूंठे से उसकी धूप से झुलसी हुई नाक दबायी और आंखों में झांकते हुए कहा,

"मछली तुम्हारी है। चाहो तो सबके लिए सूप बना लो, चाहो तो अकेले ही खा लो।"

और फिर मज़ाक में उसे हल्के से धकेल दिया।

किरील, ज़ुबीन्स्की और मोटर चलानेवाला रेती में घुसी नौका को पीछे धकेल रहे थे। रागोज़िन ने भी कंधा लगा दिया। जब वह पानी में पहुंच गयी, वे उछलकर उसमें चढ़ गये। ज़ुबीन्स्की तुरंत अपने गीले बूट सुखाने में जुट गया।

मोटर झटके से स्टार्ट हो गयी और उसकी उतावली घर्राहट ने और सभी आवाज़ें दबा दीं। किसी ने भी मुड़कर रेती की ओर नहीं देखा, जहां सूर्यास्त के गुलाबी उजाले में पानी के ठीक किनारे पर दो लड़के और उनसे कुछ पीछे दो बूढ़े निश्चेष्ट खड़े थे।

रास्ते में कोई कुछ न बोला। मोटरनौका का अग्रभाग एक बहुत बड़ी हथेली की तरह पानी को थपथपा रहा था। जब सामने सांझ की ललाई में डूबे नगर की पहली, हल्के-हल्के टिमटिमाती बत्तियां दिखने लगीं, तभी किरील ने झुककर ज़ुबीन्स्की के कान के पास मुंह ले जाते हुए चिल्लाकर कहा,

"क्या बात है, आपको मालूम है?"

"उराल मोर्चे पर फिर कज़्ज़ाक हलचल दिखाने लगे हैं।"

"किस दिशा में?"

"कहते हैं कि पुगाचोव की दिशा में।"

ज़ुबीन्स्की के बूट अब तक सूख चुके थे। वह बायें पैर की पट्टी से रगड़कर दायें बूट की नोक चमका रहा था और किसी गहरी सोच में खोया हुआ था।

"आपको कैसे पता चला कि हम यहां हैं?" किरील ने फिर चिल्लाकर पूछा।

"गैरेजवालों ने बताया कि आप मुख्य धारा की ओर गये हैं। वहां किनारे पर आपके लिए कार खड़ी होगी।"

मोटरनौका जब घाट के पास खड़ी नावों के बीच से अपने लिए रास्ता बना रही थी, किरील, रागोज़िन और ज़ुबीन्स्की अग्रभाग पर खड़े थे। आखिर नौका झटके से रुकी और तीनों एक दूसरे पर लगभग गिर ही पड़े, लेकिन फिर संभल गये और उछलकर किनारे पर आ गये।

किनारे पर कोई कार न थी।

"कार भेजने का वायदा किसने किया था?"

"गैरेज के मैकेनिक शुब्निकोव ने," जुवीन्स्की ने खीझभरे स्वर मे कहा। "लेट हो गया है शैतान कहीं का! खैर, मैं दौड़कर गैरेज जाता हूं और आप तब तक धीरे-धीरे चढ़ाई चढ़िये।"

वह खिलाड़ियों की तरह कोहनियां बगलों से सटाये दौड़ चला।

किरील और रागोज़िन सिपाहियों की चाल से पहाड़ी चढ़ने लगे। अंधेरा घिर आया था। नौजवान जोड़े टहलते हुए नीचे घाट की बत्तियों की ओर उतर रहे थे। ब्रास बैंड बज रहा था और ड्रम की भारी आवाज़ नपी-तुली ताल में उसे संगत दे रही थी।

"शैतान ही जानता है कि गैरेज में उन्होंने इस बनिये को क्यों रखा है," किरील बोला।

"क्योंकि जानकार आदमी है," रागोज़िन ने लापरवाही से जवाब दिया।

"हम भी अच्छे हैं," किरील ने कहना जारी रखा, मानो अपने आपसे और बिना किसी सिलसिले के बातें कर रहा हो। "अगर हम पिछले साल कज़्ज़ाकों को वोल्गा पार न करने देते, तो आज उराल मोर्चे की नौबत न आती..."

"भूल गये, तब कैसा वक्त था?" रागोज़िन ने पूछा। "उनके पास पूरी तीन रेजीमेंटें थीं और वे भी हर तरह से लैस। उनके मुकाबले में पिछले साल फ़रवरी में हमारे पास क्या था? नीति वक्त तय करता है। कुछ भी हो, कज़्ज़ाकों से हमें कभी न कभी तो लड़ना ही है।"

चढ़ाई एक ही बार में चढ़कर वे दम लेने के लिए रुक गये। ऊपर, नगर की पुरानी सड़कों पर बहुत घुटन थी और लोग भी नहीं के बराबर थे। सिर्फ़ छिपे, अंधेरे अहातों से सुनायी दे रही बातचीतों और शांत घरों की अधखुली खिड़कियों के उजालों से ही जीवन का पता चल रहा था।

रागोज़िन ने एक हाथ किरील के कंधे पर रख लिया।

"शायद इन गरमियों में हम जिस परीक्षा से गुज़रेंगे, वह सबसे मुश्किल तो नहीं, लेकिन अब तक की सभी परीक्षाओं से मुश्किल अवश्य ही होगी। क्या सोचते हो, झेल लेंगे न?"

"झेलना ही होगा," किरील बोला।

उसने प्योत्र पेत्रोविच के हाथ को प्यार से खींच लिया।

दोनों और तेज़ी से चलने लगे और जब तक गंतव्य पर न पहुंच गये, कोई कुछ न बोला।

१७

१
सामरिक घटनाओं की पूर्वपीठिका

यदि आप पुराने रूस के मानचित्र पर दृष्टिपात करें, तो पायेंगे कि कज़्ज़ाकों के इलाके दक्षिण में दोन नदी से लेकर अज़ोव और काला सागरों तक, मध्य में उत्तरी काकेशिया से होते हुए पूर्व में कास्पियन सागर तक और फिर वहां से उत्तर में ऊपर उराल के साथ-साथ घोड़े की नाल जैसी आकृति बनाते हुए फैले पड़े हैं। दोन, कुबान, तेरेक, अस्त्राख़ान, उराल और ओरेंबुर्ग के कज़्ज़ाकों के इलाके आपस में यों जुड़े हुए हैं, जैसे कि सिपाही एक दूसरे का हाथ पकड़े कतार में खड़े हों।

गृहयुद्ध के ज़माने में यह सारी नाल एक सिरे से लेकर दूसरे सिरे तक सफ़ेद कज़्ज़ाकों का मोर्चा बनी हुई थी। लेकिन यह कहना ठीक न होगा कि उसका सिलसिला कहीं पर टूटा हुआ नहीं था। वोल्गा के निचले इलाके ने, जिसमें त्सरीत्सिन और सरातोव भी आ जाते थे, इस नाल को दो टुकड़ों में काट दिया था।

यह विचार सबसे पहले कलेदिन को ही सूझा था कि नाल के बीच में स्थित सारे इलाके पर कब्ज़ा कर लेना चाहिए। वह प्रति-क्रांतिकारियों का एक प्रमुख जनरल था। उसने ओरेंबुर्ग के अतामान दूतोव को अपने एक पत्र में लिखा था, "कुछ भी हो, हमें वोल्गा पर अधिकार करना है। तभी हम एक हो सकते हैं और मास्को पर संयुक्त हमला कर सकते हैं। बाधा सरातोव की है। मेरे विचार में पूरी कोशिश करके जल्दी से जल्दी उसपर कब्ज़ा कर लेना बहुत ज़रूरी है और यह काम सबसे आसानी से आप ही कर सकते हैं..."

दूतोव ने अपनी पूरी ताकत लगा दी। अक्तूबर क्रांति के तुरंत बाद उसने अपनी ओरेंबुर्ग के पास स्थित डिविज़न को आदेश दिया कि चौबीस घंटे के अंदर-अंदर ही "वोल्गा प्रदेश की राजधानी" सरातोव

पर कब्ज़ा कर ले। लेकिन यह आदेश कभी पूरा न हो सका। चौबीस घंटे तो क्या, दो महीने में भी सरातोव के लाल सैनिकों से घुटने न टिकवाये जा सके। यह सरातोव के इलाके में सफ़ेद कज़्ज़ाकों का पहला मोर्चा था।

१६१८ का साल दक्षिण में विद्रोह से शुरू हुआ। अस्त्राख़ान के कज़्ज़ाकों ने अस्त्राख़ान को घेरे में लेकर सरातोव जानेवाला रेलमार्ग काट डाला। यह दूसरा सफ़ेद कज़्ज़ाक मोर्चा था और इसने सरातोव के रक्षकों को वोल्गा के पार जाकर लड़ने को मजबूर कर दिया। अस्त्राख़ान की सहायता के लिए उन्होंने लड़ाई की आग में तपी हुई अपनी सबसे बढ़िया टुकड़ियां भेजीं, जिन्हें सरातोव में "पूर्वी सेना" के भव्य नाम से पुकारा जाता था। रेलमार्ग मुक्त करवा लिया गया और अस्त्राख़ान फिर से उत्तर से जुड़ गया।

लेकिन तब तक दोन के सफ़ेद कज़्ज़ाक भी सिर उठाने लग गये थे। जर्मनों की मदद से, जो उक्रइना पर अधिकार करके उसकी सीमा के पार पूर्व की ओर बढ़ रहे थे, इन दोन कज़्ज़ाकों ने वोल्गा पर धावा बोल दिया। सरातोव ने त्सरीत्सिन की रक्षा के लिए कुमुक, तोपखाना और एक विशेष दस्ता भेजा, जिसके पास ४० मशीनगनें थीं।

सरातोव के पास का यह तीसरा सफ़ेद कज़्ज़ाक मोर्चा गृहयुद्ध के वर्षों में कई बार बहुत ही महत्त्वपूर्ण बना। १६१८ में क्रास्नोव ने बार-बार अपने दोन कज़्ज़ाकों को अविजेय त्सरीत्सिन के खिलाफ़ निरर्थक झोंका। नगर को उसके रक्षकों के अपूर्व शौर्य ने ही नहीं बचाया। यहां पहली बार कज़्ज़ाक अतामानों और डाकुओं के गिरोहों के सरगनों का सैन्य संचालन और गोलाबारी की एक सर्वथा नयी कला से साक्षात्कार भी हुआ। आगे चलकर यदि त्सरीत्सिन का नाम बदलकर स्तालिनग्राद रखा गया, तो इसे वोल्गातटीय स्तेपियों और दायें तट के पहाड़ी प्रदेश की इन लड़ाइयों के ऐतिहासिक महत्त्व का ही सूचक कहा जा सकता है।

दोन कज़्ज़ाकों के मोर्चे से उत्पन्न ख़तरे ने सरातोव को छापामार दस्तों से नियमित सेना बनाने के लिए प्रेरित किया। अस्त्राख़ान के प्रतिक्रांतिकारियों के विरुद्ध जो चुनिंदा दस्ते सक्रिय थे, वे ही उसका

आधार बने। लेकिन इस नयी सेना के भाग्य में त्सरीत्सिन मोर्चे पर लड़ना नहीं लिखा था।

१६१८ के वसंत में उराली कज़्ज़ाकों ने उराल्स्क सोवियत के सभी सदस्यों को गिरफ़्तार कर लिया था और नगर को अपनी अधीनता मानने पर विवश कर दिया था। उसके बाद उन्होंने घोषणा की कि बोल्शेविक सरातोव को सबक सिखाने का वक्त आ गया है। इसलिए सरातोव की नयी सेना को दोन की ओर नहीं, अपितु वोल्गा के पार चौथे सफ़ेद कज़्ज़ाक मोर्चे की ओर, जिसे उराल मोर्चा भी कहते थे, कूच करना पड़ा।

उराल मोर्चे का सामरिक इतिहास उस वसंत से शुरू होता है, जब सोवियत सेनाओं ने एक ठोस शक्ति के रूप में पूर्व की ओर बढ़ना शुरू किया था। वसीली चपायेव निकोलायेव्स्क से कच्चे मार्गों पर बढ़ रहा था और सरातोव, तम्बोव तथा नोवो-उज़ेन्स्क की फ़ौजें रेल द्वारा उसके पीछे-पीछे आ रही थीं। अल्ताता रेलवे-स्टेशन के पास ये चारों फ़ौजें मिल गयीं और खुली स्तेपी के पार सेमीग्लावी-मार होते हुए उराल्स्क नगर पर हमले के लिए बढ़ चलीं। उराल्स्क के लिए हुई लड़ाइयों में अनेक शत्रु डिविज़नों को धूल चटायी गयी, लेकिन सफ़ेद गार्डों ने जवाबी हमला शुरू करके सोवियत सेनाओं को उनकी पहले की पोज़ीशनों पर वापस खदेड़ दिया। दस दिन बाद सैन्य परिषद ने सरातोव नगर की कार्यकारिणी की बैठक में घोषणा की कि सोवियत चढ़ाई फिर शुरू कर दी गयी है। इस बैठक में अस्त्राख़ान के मेहनतकश कज़्ज़ाकों की कांग्रेस के प्रतिनिधि भी उपस्थित थे। उन्होंने बताया कि कांग्रेस ने "उराली मेहनतकश कज़्ज़ाक भाइयों" से अपील की है कि "हमारे बीच से उन सभी को निकाल बाहर करें, जो हमें जनता की सरकार, यानी सोवियतें कायम करने से रोक रहे हैं"। इससे संघर्ष को बड़ा प्रोत्साहन मिला।

किंतु इन्हीं दिनों कुछ ऐसी घटनाएं हुईं, जिनसे उराल्स्क के समीप की आरंभिक सफलताओं पर पानी फिर सकता था।

सरातोव से ज्यों ही अधिकांश सेना उराल मोर्चे पर भेजी गयी, नगर गैरीज़न के बचे-खुचे दस्तों में विद्रोह फूट पड़ा। गुप्त अफ़सर संगठनों ने दक्षिणपंथी समाजवादी-क्रांतिकारियों के साथ मिलकर एक

तोपखाना दस्ते को मोर्चे पर भेजे जाने का विरोध करने के लिए उकसाया। उन्होंने सिपाहियों को छककर शराब पिलायी, अपने कमांडरों को मारने के लिए उत्तेजित किया और सोवियत के प्रतिनिधियों को गिरफ्तार कर लिया। फिर तो तोपें और बंदूकें खुद ही दगने लग गयीं। यह सारा उपद्रव दबा दिया गया। लेकिन तभी वीक्तोरोव नाम का एक कज़्ज़ाक अफ़सर सोवियत की इमारत को नष्ट करने की रातोंरात बनायी हुई योजना लेकर सामने आया और फिर एक सुबह नगर पर तोपों से गोले बरसने भी शुरू हो गये। डेढ़ सौ मज़दूरों की एक टोली विद्रोहियों के धुआंधार हमले का तब तक मुकाबला करती रही, जब तक कि जवाबी गोलाबारी करके सारे विद्रोह को पूरी तरह न कुचल दिया गया।

बेशक यह तीन दिन की घटना लड़ाई के मोर्चे को प्रभावित नहीं कर सकती थी। किन्तु वह उन विद्रोहों तथा उपद्रवों के उस चक्रवात का पूर्वाभास अवश्य देती थी, जिसने शीघ्र ही सारे सरातोव प्रदेश तथा मध्य वोल्गा क्षेत्र को अपनी चपेट में ले लिया और फिर उराल लांघकर साइबेरिया पर भी छा गया।

रेलगाड़ियों में भर-भरकर पहुंचे भूतपूर्व युद्धबंदी चेकोस्लोवाकों ने सफ़ेद गार्ड अफ़सरों के साथ मिलकर र्तीश्चेवो पर अधिकार कर लिया था और फिर सरातोव तथा पेंज़ा की ओर बढ़ रहे थे। सरातोव के लामबंद मज़दूर दस्तों ने न केवल उनका आगे बढ़ना रोक दिया, बल्कि उन्हें र्तीश्चेवो से भी खदेड़ डाला और फिर अत्कार्स्क और बलाशोव के मज़दूरों के सहयोग से दूसरे चेक-अधिकृत नगरों को मुक्त करना शुरु कर दिया। किंतु समारा के रास्ते पर विद्रोहियों ने पिछवाड़े से प्रहार करके अपना पीछा करनेवालों को ज़बर्दस्त मात दे दी। संघर्ष का लंबा खिंचना अब अनिवार्य सा हो गया।

समारा में चेकों और संविधान सभा की सत्ता स्थापित हो जाने के बाद सरातोव की दर्जनों तहसीलें बागी कुलकों के कब्ज़े में चली गयीं। उधर वोल्गा के दोनों ओर की जर्मन बस्तियों के निवासियों ने भी विद्रोह का झंडा बुलंद कर दिया था।

सरातोव के पास कुछ विश्वसनीय बटालियनें थीं, जिनकी मदद से विद्रोहों की इस आग को बुझा दिया गया। फिर इन बटालियनों

को वोल्स्क सेना के रूप में पुनर्गठित करके उत्तर मे चेकोस्लोवाकों का पीछा करने भेजा गया। चेकों से वापस छीन लिये गये समारा में सबसे पहले घुसनेवालों में एक सरातोव रेजीमेंट भी थी।

किंतु दायें तट से खदेड़ दिये जाने के बाद विद्रोहियों ने सरातोव को बायें तट से तंग करना शुरू कर दिया। चेकों ने निकोलायेव्स्क पर कब्ज़ा कर लिया। समारा की सफ़ेद गार्ड सरकार द्वारा भेजी हुई फ़ौजें उनकी मदद के लिए आ गयी थी।

चपायेव ने खतरे को भांपकर अपनी घुड़सवार डिविज़न को उरा-ल्स्क से निकोलायेव्स्क की ओर मोड़ दिया। वह न केवल वहां से चेकों को भगाने में सफल रहा, बल्कि गरमियों के अंत में उसने अपनी जन्मस्थली वलाकोवो से कुछ ही दूर स्थित वोल्शोई इर्गिज़ नामक जगह पर समारा सरकार की फ़ौजों का पूर्ण सफ़ाया भी कर दिया।

इसके बाद चपायेव की डिविज़न समारा की ओर बढ़ी। शरद में इस डिविज़न की पुगाचोव रेजीमेंट ने, जिसने पहले अद्‌भुत पराक्रम का प्रदर्शन करते हुए निकोलायेव्स्क-पुगाचोव को फ़तह किया था, समारा पर लाल झंडा फिर से फहरा दिया।

इसी समय चपायेव अपनी डिविज़न की निकोलायेव्स्क ब्रिगेड के साथ फिर वापस उराल्स्क की ओर बढ़ रहा था। कज़्ज़ाक अब तक काफ़ी शक्तिशाली बन चुके थे। स्तेपियाई कस्बे तालोवाया के निकट उन्होंने चपायेव को घेर लिया। किंतु कुछ भयंकर मुठभे-ड़ों के बाद उसने इस घेरे को तोड़ ही डाला और पुगाचोव लौट आया।

१९१९ के आरंभ में वोल्गा-पार प्रदेश में स्थिति ऐसी थी।

इस अतुलनीय १९१९ के वर्ष में, मोर्चों की परिवर्तनशीलता की दृष्टि से बेजोड़ इस युद्ध में, उराल्स्क मोर्चा जितनी तेज़ी से बदलता रहा, इतिहास में उसकी कोई मिसाल शायद ही मिल सकती है। लाल सेना ने उराल्स्क को वर्ष के आरंभ में, फ़रवरी में जीता। सफ़ेद कज़्ज़ाकों को पीछे हिमाच्छादित, अतिशीत स्तेपियों में हट जाना पड़ा। दिन-रात पेट-पेट तक बर्फ़ और तूफ़ानों में चलने के कारण उनके घोड़े थककर चूर हो गये। शरद और सरदियों का आरंभ मास्को में

सैनिक अकादमी में बिताने के बाद चपायेव फ़रवरी में फिर उरालस्क स्तेपी में अपनी डिविज़न का नेतृत्व करने के लिए लौट आया था। वह दक्षिण में कास्पियन सागर की ओर बढ़ा, ताकि कज़्ज़ाकों के पिछवाड़े में पहुंच जाये। फ़रवरी के अंत में अलेक्सांद्रोव-गाई और मार्च के मध्य स्लोमीख़ीन्स्काया उसके कब्ज़े में आ गये। उसके घुड़सवारों को सैकड़ों मीलों की दूरी तय करनी थी। लेकिन इतिहास का खेल ऐसा रहा कि उन्हें सैकड़ों नहीं, हजारों मीलों की दूरी तय करनी पड़ी।

वसंत में कोल्चाक की सफ़ेद गार्ड सेना के हमलों ने क्रांति की सभी शक्तियों को पूर्वी मोर्चे पर संकेंद्रित किया जाना आवश्यक बना दिया। अप्रैल में चपायेव की रेजीमेंटों को उराल स्तेपी से उत्तर में समारा स्तेपियों में भेज दिया गया, जहां उन्होंने कोल्चाक की मुख्य फ़ौजों पर जवाबी हमला करने में हिस्सा लिया। मई के मध्य में फ़्रुंज़े के सफल बुगुरुस्लान आपरेशन के समय चपायेव के सैनिकों ने बेलेबेई पहुंचकर काप्पेल की कोर के छक्के छुड़ाये, नगर पर कब्जा किया और फिर उफ़ा की ओर बढ़ने लगे। जून के आरंभ में सफ़ेद गार्ड उफ़ा छोड़ने को भी मजबूर हो गये।

कोल्चाक की बहुत बड़ी फ़ौज के विरुद्ध संघर्ष ने उराल के सफ़ेद कज़्ज़ाकों को दम लेने का नया मौका दे दिया था। जल्दी ही पुनः ताकत जुटाकर अप्रैल के मध्य में उन्होंने ल्बीश्चेन्स्क पर धावा बोल दिया और फिर महीने के अंत तक उरालस्क में स्थित लाल सेना के दस्तों को घेरे में ले लिया। इस तरह उरालस्क की अस्सी दिन लंबी नाकाबंदी शुरू हुई।

नाकाबंदी के पचासवें दिन, जुलाई के मध्य में, लेनिन ने सेना के कमांडर फ़्रुंज़े को निम्न तार भेजा:

"कृपया... नाकाबंद उरालस्क की पचास दिन से रक्षा कर रहे वीरों से मेरी ओर से कह दें कि हिम्मत न हारें और बस कुछ हफ़्ते और यों ही डटे रहें..."

फ़्रुंज़े ने उसी दिन चपायेव को उफ़ा से अपनी डिविज़न के साथ दक्षिण की ओर बढ़ने और सफ़ेद कज़्ज़ाकों से उरालस्क को मुक्त करने

का आदेश दे दिया। पांच दिन बाद चपायेव की घुड़सवार सेना रवाना हो पड़ी।

उराल के कज़्ज़ाकों की वसंतकालीन कार्रवाइयों – उराल्स्क की नाकाबंदी, पश्चिम में पुगाचोव नगर की ओर और सरातोव के रेलमार्ग के साथ-साथ आगे बढ़ना – की सफलता में लाल सेना का कोल्चाक के विरुद्ध संघर्ष ही नहीं, दक्षिण की घटनाएं भी सहायक हुई थीं।

मई के आरंभ में बोगुचार-वेशेन्स्काया के इलाके में दोन कज़्ज़ाकों का विद्रोह छिड़ गया। इससे लाभ उठाकर मई के मध्य में सफ़ेद गार्डों की दोन सेना ने आक्रमण अभियान शुरू कर दिया और महीने के खत्म होते होते देनीकिन ने, जो दोनेत्स क्षेत्र से मिल्लेरोवो होते हुए बोगुचार की ओर बढ़ रहा था, लाल सेना के मोर्चे को भेदने में कामयाबी पा ली।

अपने पूर्ववर्तियों – जनरल कलेदिन और क्रास्नोव – की भांति देनीकिन भी वोल्गा पार के कज़्ज़ाकों से जा मिलने को बेताब था। वह अलग-थलग पड़े उराल्स्क मोर्चे से संपर्क बनाने के लिए लगातार एड़ी-चोटी का ज़ोर लगा रहा था। उसके मुख्यालय ने फ़रवरी, १९१९ से ही उराली कज़्ज़ाकों से कुछ ताल्लुक कायम कर लिये थे। यह या तो अंग्रेज़ों के कब्ज़े में आ गये बाकू के ज़रिये किया जाता था, या फिर पेत्रोव्स्क बंदरगाह के ज़रिये। देनीकिन यहां से उराली कज़्ज़ाकों के लिए स्टीमरों द्वारा पैसा, वर्दियां, राइफ़लें, गोला-बारूद, तोपें और बख्तरबंद गाड़ियां भेजा करता था, यानी वह सब, जो उसे किसी भी कीमत पर बोल्शेविकों का पतन देखने के इच्छुक मित्र राष्ट्रों (एंटेंट) से मिलता था।

लेकिन सफ़ेद गार्डों के लिए ये ताल्लुक काफ़ी न थे। इस समय, जबकि वे लाल सेना के विनाश और क्रांति को कुचलने के लिए सब कुछ दांव पर लगा रहे थे, देनीकिन के लिए यह बहुत ज़रूरी था कि क्रांति के विरोधियों की सेनाएं दुर्लघ्य वोल्गा के आरपार एक दूसरे की मदद के वास्ते हाथ बढ़ायें। अतः जून के अंत में उसने उराली कज़्ज़ाकों को हुक्म दिया कि जैसे भी हो उराल्स्क पर कब्ज़ा कर लें

और फिर बुज़ुलुक या समारा की ओर बढ़ें, ताकि भागते हुए कोल्चाक की लाल सेना के पिछवाड़े से मदद की जा सके।

उन दिनों उमसदार उराली स्तेपियां उफ़ा से एक ठोस लहर जैसे आगे बढ़ते चपायेव के रिसाले के घोड़ों की टापों से गूंज रही थीं।

उन्हीं दिनों नाकाबंद उराल्स्क से हवाई जहाज़ द्वारा समारा पहुंचे कुछ सैनिकों ने लाल सेना को अपने नगर के रक्षकों का अभिवादन पत्र पहुंचाया। पत्र में उन्होंने सहायता के आश्वासन के लिए आभार प्रकट किया था। उन्होंने लिखा था कि नाकाबंदी की शुरूआत से वे तीन भयंकर टक्करों में शत्रु को मुंह की खिला चुके हैं, बहुत से छोटे-मोटे हमले नाकामयाब कर चुके हैं और नगर पर लगातार बमबारी के बावजूद अपना हौसला ज्यों का त्यों बनाये हुए हैं। उन्होंने यह भी सूचित किया था कि नगर में गिरजों के घंटों के गर्जन के साथ जनरल तोल्स्तोव का स्वागत करने की सफ़ेद गार्डों की एक साजिश को विफल बना दिया गया है। अपना जोशीला पत्र उन्होंने इन शब्दों के साथ ख़त्म किया था:

"संभवत: आपके मन में सवाल पैदा हो: उराल्स्क के रक्षकों के पास वह कौन सा हथियार है, जिसने उन्हें ऐसा अविजेय बना दिया है? तो वह हथियार है क्रांतिकारी उत्साह और इस बात में अटल विश्वास कि उराल्स्क की उपजाऊ भूमि भुखमरी से ग्रस्त हमारी लाल राजधानियों – पेत्रोग्राद और मास्को – के लिए बहुत ही बड़ा महत्त्व रखती है ..."

ये शब्द रूस के लोगों की आधारभूत चेतना को व्यक्त करते थे, जो उस समय दक्षिण-पूर्व में जान की बाज़ी लगाकर लड़ रहा था: क्रांति को रोटी की ज़रूरत थी, क्रांति को तेल की ज़रूरत थी, क्रांति वोल्गा को सफ़ेद गार्डों के हवाले नहीं कर सकती थी।

२

जो लोग अतीत की लड़ाइयों के मानचित्र का अध्ययन करते हैं, जो लोग उन घटनाओं के प्रत्यक्षदर्शियों के वंशज हैं, उनके लिए मानचित्र निर्विवाद तथ्यों का दस्तावेज़ होने के साथ-साथ इतना पेचीदा

और उलझा हुआ लगता है, जितना कि प्रत्यक्षदर्शियो को भी नहीं लगा था। इस मानचित्र की अचल टेढ़ी-मेढ़ी रेखाओं को आप जितने ही ध्यान से देखेंगे, उतना ही आप पूछना चाहेंगे: अमुक रेखा वहां न होकर यहां क्यों है, वह महीने के आखिर में ही क्यों बदली, पहले या बाद में क्यों नहीं और फिर वह गायब क्यों हो गयी व उसके स्थान पर दूसरी क्यों आ गयी?

प्रत्यक्षदर्शी युद्ध के मानचित्र को वैसे ही स्वीकार कर लेता है, जैसे कि मौसम को: सुबह बदली छायी हुई थी, दोपहर तक बारिश होने लगी, फिर हवा चली और उसके बाद आसमान साफ़ हो गया। सामरिक कार्रवाइयां ज्यों-ज्यों बढ़ती जाती हैं, त्यों-त्यों प्रत्यक्षदर्शी के दिमाग पर अपनी समय-समय पर पैदा होनेवाली तफ़सीलों की छाप छोड़ती जाती है और इस तरह मानचित्र पर खींची गयी हर रेखा को जीवंत महत्त्व प्रदान कर देती है। प्रत्यक्षदर्शी के लिए कागज़ पर अंकित युद्धक्षेत्र गंभीर अर्थ रखता है: उसके लिए उसका हर बिंदु रक्त, यंत्रणा, आशा या दिल की जीत का प्रतीक होता है।

युद्ध से संबंधित सभी घटनाएं – सेनाओं की स्थिति, लड़ाई की जगहें, सामरिक कार्रवाइयों का समय, पैमाना और महत्त्व – एक आरेख की तरह किरील इज़्वेकोव के अवचेतन में अंकित रहती थीं। ज्यों ही कोई नयी घटना घटती, वह अवचेतन मस्तिष्क के इस आरेख में जगह पा जाती। इसलिए किरील जब सोने जाता या सुबह उठता, तो उसे शुद्ध अनुमान पर आधारित इतनी मोटी-मोटी जानकारी रहती ही थी कि आज क्या हुआ है या हो सकता है। वह नहीं जान सकता था कि कल क्या होगा। लेकिन इतना वह अवश्य जानता था कि अंततः होना क्या है, क्योंकि वह इस अपरिहार्य को तहेदिल से चाहता था और उसे उसकी अपरिहार्यता में गहन विश्वास था।

मछली का शिकार बीच ही में छोड़कर उस शाम जब किरील और रागोज़िन सोवियत के दफ़्तर में पहुंचे, तो पता चला कि कज़्ज़ाकों ने सहसा धावा बोलकर पुगाचोव पर कब्ज़ा कर लिया है और एक सौ आदमियों के कम्युनिस्ट दस्ते को गाजर-मूली की तरह काट डाला

है। उफा से पांच दिन पहले रवाना हुआ चपायेव अपनी डिविज़न के साथ उराल्स्क की ओर लपक रहा था और उसका लक्ष्य स्तेपी में काफ़ी अदूर था, जबकि पुगाचोव वोल्गा से अधिक से अधिक दो दिन के मार्च की दूरी पर था और कज़्ज़ाक गश्ती दस्ते किसी भी समय वोल्गा के दायें तट पर पहुंच सकते थे।

वह साल लामबंदियों का साल था। एक लामबंदी खत्म होती, तो दूसरी शुरू हो जाती। उसके लिए हुक्म कभी केंद्रीय सरकार की ओर से आता, तो कभी प्रदेश या यहां तक कि ज़िले के अधिकारियों की ओर से। लोगों को सेना, रसद उगाही टोलियों, चिकित्सा टोलियों, श्रम व प्रतिरक्षा दस्तों, ईंधन का इंतज़ाम करनेवाली टोलियों में भरती किया जा रहा था। लामबंदी में कम्युनिस्ट, मज़दूर, डाक्टर, गरीब किसान, ट्रेड-यूनियन सदस्य, बुर्जुआ, भूतपूर्व ज़ारशाही अफ़सर, आदि हर कोई आ जाता था। कुछ लामबंदियों में स्वेच्छा से आगे आनेवाले लोगों की भीड़ लग जाती, तो कुछ बाकायदा शुरू होने से पहले ही फिस होकर रह जातीं। मोर्चे की लगभग हर महत्त्वपूर्ण घटना के बाद किसी न किसी तरह की सैनिक लामबंदी ज़रूर होती। इसी तरह जब विद्रोह, धावा, साज़िश या गद्दारी जैसी कोई अप्रत्याशित बात होती, तब भी लगभग हमेशा जल्दबाज़ी में भरती किये हुए योद्धाओं का दस्ता तुरंत घटनास्थल पर भेज दिया जाता।

पुगाचोव पर कज़्ज़ाकों के कब्ज़े और वोल्गा पार से उत्पन्न नये खतरे ने सरातोव की रक्षा के संकल्प को उल्टे और बढ़ा ही दिया। मोर्चे पर जो सैनिक टुकड़ियां भेजी जानी थीं, उनका चुनाव तुरंत कर लिया गया। इसके साथ ही तय किया गया कि हर टुकड़ी के साथ एक प्रहारक दस्ता भी हो। इसी तरह तुरंत उन बोल्शेविकों की सूची भी बनायी गयी, जिन्हें इस दस्ते में शामिल किया जाना था।

किरील और रागोज़िन को न जाने क्यों विश्वास था कि उन्हें भी इस सूची में शामिल किया जायेगा। जिस ढंग से उन्हें वोल्गा के दूसरे किनारे पर खोज निकाला गया था और तुरंत मोटरनौका द्वारा शहर वापस लाया गया था, जिस तरह के उत्तेजित वातावरण में

पार्टी की मीटिंग हुई थी व जिस तरह रात काफ़ी ढल जाने पर वह खत्म हुई थी और फिर अंत में शहीद कामरेडों की स्मृति में 'तुमने किया था जीवनदान' गीत तथा पार्टी गीत गाये गये थे, उस सबने उसके मन में यह उत्कट विश्वास पैदा दिया था कि उन्हें स्वयंसेवक के तौर पर मोर्चे पर अवश्य जाना चाहिए और निश्चय ही जायेंगे भी।

लेकिन उन्होंने अपनी इच्छा प्रकट की ही थी कि उन्हें साफ़ इंकार कर दिया गया। कहा गया कि उनके अपनी जगहें छोड़ने का सवाल भी नहीं उठ सकता और स्थिति ऐसी कतई नहीं है कि "प्रदेशीय स्तर के पार्टी कार्यकर्त्ताओं" को लामबंद करने की ज़रूरत पड़े।

"प्रदेशीय स्तर!" किरील चिल्लाया। "इस समय प्रदेश से भी बड़ी चीज़ दांव पर लगी है!"

"और कब आप सोचते हैं कि स्थिति वैसी होगी?" रागोज़िन ने तीखे स्वर में पूछा। "जब वे इल्यीन्स्काया मैदान से सोवियत पर गोले फिर बरसाने लगेंगे? ऐसी बात है क्या?"

लेकिन उसका सारा गुस्सा बेकार था। फ़ैसला हो चुका था कि सोवियत के विभागाध्यक्षों को लामबंद नहीं किया जायेगा। रागोज़िन पूरी ताकत से लामबंदी के लिए ज़िम्मेदार आदमी पर बरस पड़ा।

"मेरी जगह कलम घिसने के लिए क्या आपको और कोई नहीं मिल सकता?" वह बोला। "इस समय ज़्यादा महत्त्वपूर्ण क्या है— मोर्चा या जमा-खर्च? कुछ भी हो, मुझे आप वित्त-मंत्री तो कभी बना नहीं पायेंगे! मैं और भला वित्ते*? आप ही बताइये, आपने मुझे जब से पैसा गिनने बिठाया है, तब से क्या बदला है? दाम कम हो गये हैं? केरेन्स्की के ज़माने के नोटों की साख बढ़ गयी है? दफ़्तरों में काम करनेवाले कम हो गये हैं? मैं और तो और हिसाब-किताब को भी ढर्रे पर नहीं ला पाया हूं—हर जगह ऐसी गुत्थियां हैं कि उलझकर टांग तोड़ बैठो!"

---

* वित्ते ज़ारशाही काल में वित्त-मंत्री था।—अनु०

इस उत्तेजनापूर्ण भाषण के उत्तर में यही सुनने को मिला कि "चेतना की कमी" है और फिर आखिर में यह चिर परिचित टिप्पणी भी कि "पार्टी का अनुशासन मानना ही होगा"।

अनुशासन मानना जैसे कि व्यंग्य सहने से आसान था: इज़्वेकोव और रागोज़िन में चेतना की कमी का सवाल ही भला कहां से उठ सकता था, जबकि उनकी सारी चेतना क्रांति की नियति से अभिन्न रूप से जुड़ी हुई थी?

जब वे सोवियत की इमारत से निकलकर चुपचाप अंधेरी सड़कों पर अगल-बगल चल रहे थे, दोनों ऐसा ही सोच रहे थे और महसूस कर रहे थे।

रात अंधकारपूर्ण मेघाच्छन्न और उमसदार थी। शायद पानी बरसनेवाला था। चारों ओर पूर्ण नीरवता छायी हुई थी, लेकिन लगता था कि नगर सोया हुआ नहीं, बल्कि दम साधे किसी चीज़ की प्रतीक्षा कर रहा है। कोई अदृश्य शत्रु मानो पेड़ों और चहारदीवारियों के पीछे छिपकर अथवा छतों के ऊपर से सांस रोके रात की बेरंग आंखों से किरील और रागोज़िन का पीछा कर रहा था।

इज़्वेकोव ने रात रागोज़िन के यहां ही बिताने का फ़ैसला किया: वेरा निकान्द्रोव्ना वैसे भी सोच रही होगी कि बेटा रात में नदी तट पर ही रह गया है। दूसरी ओर, रागोज़िन का घर सोवियत के निकट था और सुबह जल्दी काम पर पहुंचा जा सकता था।

उन्होंने खिड़कियां खोल दीं, टिन के गोल रिफ़्लेक्टरवाला मिट्टी के तेल का लैंप जलाया (बिजली अरसे से नहीं थी) और घर में बची-खुची खाने की चीज़ें इकट्ठी करके रात का भोजन किया। फिर फ़र्श पर ही चादरें बिछाकर दोनों नंगे लेट गये। लेकिन नींद तुरंत किसी को नहीं आयी और दोनों में से कोई भी नहीं बता सकता था कि इसकी वजह उमस थी या दिमाग में चक्कर काट रहे तरह-तरह के ख़याल।

किरील के बार-बार करवटें बदलने और भारी सांसें लेने की आवाज़ सुनकर रागोज़िन बोला,

"पहले कहा करते थे: 'शिक्षा के बीज बोओ!' लेकिन इसके लिए वक़्त कहां है! कभी आस्तीन पर कालर का पैवंद लगाओ, तो

कभी कालर पर आस्तीन का। कभी हाथ हिलाओ, तो कभी गोली चलाओ। अगर वहां नहीं, तो यहां। इन सब झंझटों से फ़ुरसत मिले, तब न!"

किरील ने एकाएक व्यंग्य से हंसते हुए जवाब दिया,

"और तुम चाहते हो कि मच्छर दूसरे भगायें और तुम मछली पकड़ते रहो। नहीं, दोस्त मेरे, कांटे में चारा भी तुम्हें ही लगाना है और मच्छर भी तुम्हें ही भगाने हैं। मात्वेई ठीक ही कह रहा था।"

फिर कुछ रुककर वह आगे बोला,

"पर तुम्हें शिकायत किस बात से है? तुम्हें शिक्षा के बीज बोने से तो कोई नहीं रोक रहा..."

"ठीक कहा। दिन भर बैठे-बैठे केरेन्स्की के ज़माने के नोट गिनते रहो, कलम घसीटते जाओ और हो गया शिक्षा का प्रसार! यही न?"

"तो इन नोटों को रद्द क्यों नहीं कर देते?"

"वह तो कोल्चाक ने भी किया था..."

"यानी कि वह समझदार था।"

"समझदार? उसके अफ़सरों ने बगावत कर दी, क्योंकि उनकी जेबें इन नोटों से ठसाठस भरी हुई थीं। कंगाल बनना कौन चाहेगा? देहात में हमारे किसानों के पास भी ऐसी दौलत की कमी नहीं है और फिर तुम केरेन्स्की के ज़माने के नोटों के बारे में जानते क्या हो?"

"अगर तुम जानते हो, तो इसका मतलब है कि ठीक जगह बिठाये गये हो। सो बैठे रहो!"

रागोज़िन उठकर खड़ा हो गया। अंधेरा इतना था कि किरील उसका लंबा गोरा बदन भी नहीं देख सकता था। सिर्फ़ जब वह खिड़की पर जाकर बैठ गया, तभी उसकी कुछ धुंधली सी छाया दिखायी दी। बाहर भोर का हल्का-हल्का उजाला होने लग गया था।

"तुम सोचते हो कि मैं थूक लगा-लगाकर नोट गिनता हुआ बैठा इंतज़ार करता रहूंगा कि सफ़ेद गार्ड कब सोकोल पहाड़ी पर दिखते हैं?"

"नहीं," किरील ने शांति से जवाब दिया। "अगर सफ़ेद गार्ड सोकोल पहाड़ी पर पहुंचते हैं, तो शहर में तुम्हारी छाया भी नहीं रहेगी।"

"भाग जाऊंगा क्या?"

"सबसे पहले तुम्हें ही सुरक्षित जगह पर पहुंचाया जायेगा।"

"शुक्रिया। लेकिन अगर दोस्ती निभानी है, तो पूरी निभाओ: मेरे साथ मेरी तिजोरियों को भी पहुंचा देना।"

किरील तुरंत उठकर पालथी मारकर बैठ गया और चिल्लाते हुए बोला,

"मैं तीन साल से ज़्यादा फ़ौज में था, फ़ौज का आदी हूं और इसलिए अपनी जगह फ़ौज में ही समझता हूं। लेकिन मुझे भी तो स्याही-सोख्ते के काम पर बिठाया हुआ है!"

"तुम कहना क्या चाहते हो?"

"यह कि मैं तुमसे बदतर नहीं हूं, लेकिन जो मुझसे कहा गया है, वह कर रहा हूं।"

"मैं क्या नहीं कर रहा हूं?"

"तो फिर यह तमाशा काहे मचाये हुए हो?"

किरील ने तकिये पर लुढ़ककर उसे बाहों में भर लिया और चुपचाप पड़ा रहा। शीघ्र ही उसकी सांस नपे-तुले ढंग से और ज़ोर-ज़ोर से आवाज़ करते हुए चलने लगी। मालूम नहीं वह थकावट के मारे सचमुच सो गया था या सोने का बहाना ही कर रहा था।

दूसरे रोज काम में उसका मन उचटा-उचटा सा रहा। कुछ भी ठीक से नहीं हो पा रहा था। छाती और पीठ पर जलन महसूस हो रही थी। इसकी वजह शायद पिछला सारा दिन धूप में नंगा बदन रहना था। जैसे-जैसे दिन के भोजन के समय तक उसने, मीटिंगों, टेलीफ़ोन पर बातचीतों, कागजों को पढ़ने, जांचने, आदि का काम निबटाया और फिर कार मंगाकर घर चला गया।

वेरा निकान्द्रोव्ना के पास उस समय आनोचका बैठी हुई थी। किरील के पहुंचते ही वह जाने के लिए खड़ी हो गयी।

हमेशा की तरह इस बार भी किरील को उसके संकोच में एक खास आकर्षण दिखायी दिया।

"नहीं, नहीं," वेरा निकान्द्रोव्ना ने आपत्ति की। "अभी मत जाओ। पहली बात तो यह है कि हमारे काम में मर्द की सलाह बड़ी सहायक हो सकती है और, दूसरे, तुम्हें हमारे साथ भोजन करना होगा।"

लेकिन जिस मर्द की सलाह की वह बात कर रही थी, वह उसके लिए भरोसे के वजाय चिंता का ही कारण बना हुआ था।

"रात नदी तट पर काटी?"

किरील ने ठहरकर जवाव दिया,

"नहीं, हम शाम को देर से लौटे और चूंकि कार नहीं थी, इसलिए रागोज़िन के यहां ही ठहर गया।"

"क्या मछलियों का बोझ वहुत था?"

"हां," उसने तुरंत हामी भरी। "मैंने एक इतनी बड़ी मछली पकड़ी थी!"

उसने दोनों वाहें ऐसे फैला दीं कि आनोचका को पीछे हट जाना पड़ा।

"तब तो शायद ट्रक में ढोकर ला रहे होंगे," वेरा निकान्द्रोव्ना गंभीरता से बोली।

"नहीं, ट्रेलरवाले ठेले पर। जैसे ठेलों पर राहतीर ढोया करते हैं।"

वेरा निकान्द्रोव्ना मात्र शिष्टतावश मुस्करा दी। अगर वह मज़ाक करने लगा है, तो इसका मतलब है कि वह गंभीर बातें न पूछे जाने से खुश है और यह सिद्ध करता है कि नगर में रात की असाधारण पार्टी मीटिंग के वारे में जो खुसफुसाहट हो रही है, वह निराधार नहीं है। आनोचका ने मानो वेरा निकान्द्रोव्ना के विचारों को पढ़ लिया और उसकी मदद के लिए आते हुए पूछा,

"कहते हैं कि खबरें अच्छी नहीं हैं। ठीक है क्या?"

"नहीं, कुछ खास नहीं हुआ है," किरील ने झट से जवाव दिया। "मैं जब आया था, आप लोग क्या वातें कर रहे थे?"

"आनोचका अपने भाई की शिकायत कर रही थी। मैं नहीं जानती कि क्या सलाह दूं। आनोचका, ज़रा किरील को भी बता दो।"

"जैसे कि इनके पास पावलिक की फ़िक्र करने के अलावा और कोई काम नही है," आनोचका फिर संकोच में पड़ गयी।

लेकिन किरील ने ज़िद्द की कि वह बता दे – उसे जवाब देने के बजाय पूछना ज़्यादा पसंद था।

पता चला कि मां की मृत्यु के बाद से पावलिक ज़्यादातर घर से बाहर ही रहता है और सारा समय सड़क पर, नदी तट पर या बेघर छोकड़ों के साथ बिताता है। यहां तक कि कभी-कभी रात को भी घर नही लौटता।

"मैंने उसे नदी तट पर दोरोगोमीलोव के साथ देखा था," किरील ने मां को प्रश्नभरी निगाहों से देखते हुए बताया। "ऐसे संग में क्या कोई बुराई है?"

"लेकिन आर्सेनी रोमानोविच खुद ही शिकायत कर रहे हैं कि पावलिक बदल गया है। वह अब पढ़ने के लिए उनसे किताबें भी नहीं लेता।"

"तो क्या हो गया? छुट्टियों के दिन हैं। मौका मिलता, तो मैं भी सारा-सारा दिन वोल्गा के किनारे गुज़ारता। कितने मज़े के दिन होते हैं ये!" किरील ने ईर्ष्या से गहरी सांस ली।

"यही तो बात है कि छुट्टियां हैं! ऐसे में स्कूल भी कुछ नहीं कर सकता," वेरा निकान्द्रोव्ना ने इस तरह कड़ाई से कहा, जैसे कि अध्यापकों की मीटिंग में बोल रही हो।

"तो फिर मेरी सलाह की क्या ज़रूरत है?" किरील ने मुस्कराते हुए पूछा। "तुम अध्यापिका हो और बेहतर जानती हो कि क्या करना चाहिए।"

"इस लड़के के साथ सचमुच बहुत मुश्किल है," वेरा निकान्द्रोव्ना बोली।

"मेरे साथ नहीं थी क्या?" किरील ने पूछा और फिर आनोचका की ओर मुड़ते हुए कहा, "आप क्या उसे घरघुस्सू बना देना चाहती हैं?"

"वह आवारा बन रहा है और मैं उसे आवारा बना नहीं देखना चाहती। मेरे पास उसपर नज़र रखने के लिए पर्याप्त समय नहीं है और फिर वह मेरा कहा भला मानता भी कहां है! हाल ही में वह कहने लगा कि भागकर फ़ौज में भरती हो जायेगा। ऐसे में आप ही बताइये, मैं क्या कर सकती हूं?"

किरील हंस पड़ा:

"मैं भी उसके साथ चला जाऊंगा!"

वेरा निकान्द्रोव्ना ने अपने बेटे को उससे कहीं ज़्यादा गौर से देखा, जितना कि बातचीत द्वारा अपेक्षित था: बेशक वह कोई महत्त्व-पूर्ण बात छिपा रहा है।

"फिर वह हर समय यह बेवकूफ़ीभरा वाक्य दोहराता रहता है: तुम नहीं जानती कि जीवन क्या होता है!" आनोचका ने मुस्कराते हुए आगे बताया।

"बेशक, नहीं जानती हैं!" किरील हंसता रहा। "शायद ही कोई दिन जाता है, जब सोवियत में मेरे पास ऐसे वीर-बहादुर न लाये जाते हों। वह निश्चय ही भाग जायेगा और फ़ौज में भरती हो जायेगा!"

"पिताजी का भी कहा नहीं सुनता। पिताजी उसे पुरानी चीज़ों के विभाग में लगाना चाहते थे – किताबें फाड़ने के काम पर..."

"किताबें फाड़ने के?" किरील को हैरानी हुई।

"हां। वह उसे गोदाम में ले गये, जहां बेकार की किताबें फाड़ी जाती हैं। पावलिक लगभग रोता हुआ दौड़ा-दौड़ा मेरे पास आया और बोला, 'यह रही तुम्हारी क्रांति! तुम नहीं जानती, जीवन क्या होता है! जाकर देखो, पिताजी किताबे कैसे फाड़ते हैं!'"

"किताबें?" किरील ने अब के पूरी गंभीरता से दोहराया। "मैं पहली बार सुन रहा हूं। मालूम करना होगा कि माजरा क्या है।"

वह किताबों की आलमारी के पास चला गया। वह अभी भी खाली ही थी। सिर्फ़ एक कोने में अखबारों और बीस-तीस पैंफ़्लेटों का ढेर लगा हुआ था और उसके ऊपर प्रस्तावित पुस्तकालय के अलग-

अलग सेक्शनो के नामों के संकेतपट्ट पड़े हुए थे। किरील ने उनमें से "अर्थशास्त्र" और "कथासाहित्य" वाले संकेतपट्ट उठाये और पूछा,

"यह क्या तुम्हारे पिताजी तय करते हैं कि कौन सी किताब बेकार है और कौन सी नहीं?"

"वहां इसके लिए दूसरे आदमी हैं। पिताजी का काम कुछ और है... शायद इंतज़ाम से संबंध रखनेवाला। लेकिन उनके बारे में भी क्या कहूं – वह बीमार हैं... आप वह रूसी बीमारी जानते ही हैं..."

"मेरी समझ में नहीं आता, इसे रूसी बीमारी ही क्यों कहते हैं," किरील हल्के से हंस दिया। "पीते रूसी ही नहीं। पीते अंग्रेज़ भी हैं। लेकिन अंग्रेज़ बीमारी शराब की लत को नहीं, रिकेट्स को कहा जाता है!"

वह अपने इस, शायद कहीं पढ़े हुए सपाट मज़ाक पर तुरंत शरमा गया, लेकिन आनोचका ऐसे ठहाका लगाकर हंसी, जैसे कि स्कूली लड़कियां ही हंसा करती हैं, बिना किसी खास वजह के और सिर्फ़ इसलिए कि कैशोर्यसुलभ जीवनोल्लास हंसी-ठहाकों के बिना अधूरा ही रहता है।

किरील ने हाथ से अपना मुंह ढक लिया – कुछ भी हो, उसका मज़ाक सपाट होने के बावजूद सचमुच हंसानेवाला था और आनोचका की उन्मुक्त हंसी का आरोह-अवरोह, छलकाव आनंददायी था। वेरा निकान्द्रोव्ना ने भोजन की तैयारी में जुटने का उचित मौका पाया और किरील तथा आनोचका को अकेले छोड़कर चली गयी।

वह आनोचका की हंसी के थमने का इंतज़ार करता रहा। लेकिन उसके बाद भी देर तक दोनों में से कोई कुछ न बोला। आखिरकार इस असामान्य सी लड़की के साथ अकेला रह जाने से एकाएक उत्पन्न अपने विभ्रम पर नियंत्रण पाने के उद्देश्य से किरील ने जानबूझकर कामकाजी अंदाज़ में पूछा,

"हां, तो आपके भाई का क्या किया जाये?"

"अगर पिताजी की कमाई कुछ ज़्यादा होती, तो पावलिक

का शायद घर में मन लग जाता ... वह किसी चीज़ में रुचि लेने लगता या हो सकता है कि घर में अभाव की हालत न होने से ही ..."

"मैं देखूंगा कि आपके पिताजी के लिए क्या कर सकता हूं," किरील बोला।

वह भागकर खिड़की के पास चली गयी और एक मिनट तक कुछ न बोल सकी। उसने उल्टे हाथ से अपने सिर पर ऐसे आड़ कर ली कि जैसे उसे इससे भी शर्म लग रही हो कि किरील उसके सिर के पिछले भाग को देख रहा है।

"बुरा न मानें," किरील ने उसे ढाढ़स बंधाना चाहा।

"नहीं, मेरा मतलब वह कतई नहीं था ... जल्दी ही मैं भी कमाने लग जाऊंगी और तब ..."

"बेशक," किरील ने तुरंत जवाब दिया। "ज्यों ही आपका थियेटर अपने पैरों पर खड़ा हो जायेगा, सब ठीक हो जायेगा।"

"सचमुच?" आनोचका झट से उसकी ओर मुड़ गयी। उसकी आंखों में अब एक नयी चमक थी। "आप मदद कर देंगे?"

"क्यों नहीं? और रागोज़िन भी। वह जानता है कि कला खुद ही पैदा नहीं हो जाती। मैं और वह तो नाटक नहीं खेल सकते।"

"नहीं, आप सच कह रहे हैं?" उसने लगभग चिल्लाते हुए फिर पूछा।

"बेशक। वह और मैं अभिनेता नहीं हैं।"

"नहीं, मैं यह नहीं पूछ रही," आनोचका ने हंसते हुए उत्तेजित स्वर में कहा। "मैं पूछ रही थी कि आपको क्या सचमुच हमारे थियेटर में विश्वास है?"

"आपको तो है न? और जब मैं आपको देखता हूं, तो विश्वास करना ही पड़ता है।"

"थियेटर में या मुझमें?" आनोचका ने थोड़ा सा झिझकते हुए पूछा।

"यही सवाल मैं आपसे भी पूछूंगा: आपको थियेटर में विश्वास है या उसमें काम करनेवाले लोगों में?"

"दोनों एक ही बात हैं," उसने कुछ सोचकर कहा और फिर

तुरंत किरील के विचार भांपकर भौंहों पर वल डालते हुए पूछा, "आपका मतलव त्स्वेतुखिन से तो नहीं है?"

वह मानो वुरा मान गया कि आनोचका ने उसे रंगे हाथों पकड़ लिया है। लेकिन फिर उसने दृढ़तापूर्वक कहा,

"मुझे लगता है कि वह काफ़ी अच्छा काम कर सकता है, क्योंकि उसमें लगन और शौक, दोनों ही हैं। लेकिन उतनी ही आसानी से वह वहुत कुछ गड़वड़ा भी सकता है, क्योंकि ज़रूरत से ज़्यादा कल्पनाओं में खोया रहता है।"

"आप सोचते हैं कि आपसे कभी गलती नहीं होती?" आनोचका ने चिढ़कर पूछा।

"नहीं, मैं ऐसा नहीं सोचता।"

"लेकिन चाहते हैं कि गलती कभी न हो, है न?"

"हां, चाहता हूं। इतना मैं निश्चय के साथ कह सकता हूं," उसने अपनी वात पर ज़ोर देते हुए जवाव दिया।

आनोचका सहजभाव से कमरे में चहलकदमी करने लगी, किंतु किरील देख रहा था कि वह अपने किसी अवांछित मनोवेग से जूझ रही है।

"मैं भी ऐसा ही चाहती। लेकिन जानती हूं, कम से कम जिस पेशे को मैंने चुना है, उसमें आदमी से गलतियां हो ही जाती हैं।"

"कला में?"

"हां।"

"किसने वताया आपको?"

"मैं देख चुकी हूं कि अनुभवी कलाकार कैसे काम करते हैं— कैसे वे खोजते हैं, कैसे उन्हें लगता है कि वे जो खोज रहे थे, मिल गया है, और कैसे वे वाद में उसे भी ठुकरा देते हैं और सव कुछ नये सिरे से शुरू करते हैं।"

"ऐसा हर काम में होता है," किरील वोला।

आनोचका ने अफ़सोस से यों सिर हिलाया, जैसे कि किरील को लज्जित करना चाहती हो।

"आपको खुद अपनी वात में विश्वास नहीं है। लगभग हर पेशे में पहले की उपलब्धियों की नकल की जाती है। लेकिन कला में ऐसा

करके तो देखें! नकल कलाकार की मौत है। उसके जीवन का स्वप्न होता है अपने को न केवल दूसरों से, बल्कि वह खुद कल तक जैसा था, उससे भी भिन्न ढंग से अभिव्यक्त करना।"

"त्स्वेतुखिन आपको यही सिखाता है? मैं उससे सहमत नहीं। कलाकार को अपने माध्यम से लोगों को अभिव्यक्त करना चाहिए और वह भी ऐसे, जैसे कि वे वास्तव में हैं। नहीं तो उसे कोई नहीं समझ पायेगा।"

आनोचका एकाग्र होकर सोच रही थी। वह अपना सारा ध्यान यों केंद्रित किये हुए थी कि जैसे कोई सवाल हल कर रही हो। उसने होंठों पर अंगुली भी रख ली थी। एकाएक उसने हर्षभरी मुस्कान के साथ और शांत स्वर में, जैसे कि वह अपनी कोई बहुत ही अंतरंग भावना प्रकट करने जा रही हो, कहा,

"मैं आपसे सहमत हूं और मेरा खयाल है कि येगोर पावलोविच भी अवश्य सहमत होंगे। लेकिन, समझा जाना – यह लक्ष्य है, जबकि मैं बात लक्ष्य की ओर बढ़ते हुए होनेवाली गलतियों की कर रही थी। यानी वे गलतियां, जो खोज के दौरान, काम के दौरान होती हैं। कोई भी लक्ष्य उसकी ओर बढ़े बिना तो पाया नहीं जा सकता। ठीक है न? गलतियां इस बढ़ने की प्रक्रिया में ही होती हैं।"

"गलतियां करना पाप नहीं है। लेकिन दूसरों की गलतियां क्यों दोहरायी जायें?"

आनोचका एकाएक एड़ियों के बल घूमकर उसकी ओर मुखातिब हुई।

"नहीं! इसका मतलब है कि आप त्स्वेतुखिन को बिल्कुल नहीं जानते!"

मेज़ पर खाना लग चुका था। वेरा निकान्द्रोव्ना अब तक एक कान से उनकी बातें सुनती जा रही थी, जिसकी वजह से किरील का ध्यान अपने विचारों से बार-बार हट जाता था। जब सब मेज़ के गिर्द बैठ गये, वेरा निकान्द्रोव्ना संतोष और निश्छलता से, मानो इस बात पर खुश होते हुए कि उसने जैसा चाहा था, वैसा ही हुआ है, बोली,

"वड़ी वहसी हो तुम! अरे, तुम्हें अपने थियेटर से प्यार है, तो करो प्यार। कौन रोकता है तुम्हें!"

"हां, हां," आनोचका खुशी से चिल्लायी। "कोई भी नहीं रोक सकता, क्योंकि यह सबसे प्रबल भावना है! सबसे उत्कृष्ट! सबसे पूर्ण! सबसे..." (यहां उसकी निगाहें एकाएक किरील की शरारतभरी निगाहों से टकरा गयीं और वह तुरंत अचकचा गयी।) "...सबसे... मुझे थोड़ा सा सूप डाल दीजिये, वेरा निकान्द्रोव्ना... किस चीज का है यह – पत्तागोभी का?"

शुरुआत ऐसी मनोरंजक रही, तो फिर सारे ही भोजन के दौरान खुलकर हंसी-मज़ाक चलता रहा। किरील को लगा कि वह घर पर ही नहीं, बिल्कुल अपने ही लोगों के बीच भी है। उसने आनोचका से कहा कि वह उसे कार में शहर तक पहुंचा देगा और वह तुरंत उछलकर मर्सीडीज़ में बैठ गयी, जो जगह-जगह खरोंचें लगी होने के बावजूद अभी भी काफ़ी शानदार लग रही थी।

सामने से आती हवा गरम, मगर ताज़गी लानेवाली थी। पहले कभी अनुभव न किये हुए वेग से अभिभूत बैठी आनोचका कुछ नहीं बोल रही थी। सड़क पर पुराने गढ़ों के कारण कार का ज़ोर-ज़ोर से हिचकोले खाना उड़ान की इस अनुभूति को घटाने के बजाय तीव्रतर ही बना रहा था।

किरील कनखियों से उसका चेहरा देख रहा था। उसके हल्के से दबे हुए नासारंध्र कभी फैल रहे थे, तो कभी तन रहे थे। सिर साहसपूर्वक हवा का सामना कर रहा था। छरहरी गरदन अपनी कमनीय आकृति से उसके सुकुमार सौंदर्य को उभारती हुई और भी लंबी लगने लगी थी। वह उसे देखे जा रहा था और कानों में ये संगीतमय, निष्कपट शब्द गूंजे जा रहे थे: "सबसे प्रबल भावना! सबसे उत्कृष्ट! सबसे पूर्ण!"

एकाएक कोई गहरा गढ़ा आ जाने पर कार इतनी ज़ोर से उछली कि कार के कहीं अंदर के कल-पुर्ज़े तक झनझना उठे और आनोचका को ऐसा झटका लगा कि वह सीधे किरील के घुटनों पर जा गिरी। वह तुरंत संभलकर बैठ गयी, मगर किरील ने तब तक अपने घुटनों पर उसका हाथ दबा दिया था और नहीं छोड़ना

चाहता था। आनोचका ने मुंह दूसरी ओर मोड़कर हाथ झटके से छुड़ा लिया।

"तो ऐसी हैं आप!" किरील ने कहा।

आनोचका ने कोई जवाब नहीं दिया और पहले जैसे ही सिर चकरानेवाले वेग के अहसास में खोयी रही। सिर्फ़ जब सफ़र खत्म होने को आ गया, तभी मानो होश में आकर उसने जवाब दिया,

"आपको कहां से मालूम कि मैं कैसी हूं? आपने तो मेरे बारे में शायद एक बार भी नहीं सोचा होगा। लेकिन मैं आपके बारे में सब जानती हूं।"

"सब?" उसे विश्वास नहीं हुआ।

"हां, कैसे आप जेल में थे, फिर निर्वासन में रहे, फिर फ़ौज में चले गये..."

"यह तो सब नहीं है," किरील ने चिढ़ाया।

"और... और क्या जानती हूं? लीज़ा मेश्कोवा? उसके बारे में भी जानती हूं। यानी कि सब कुछ!"

वह पहली बार किरील की ओर मुड़ी और व्यंग्यपूर्ण जिज्ञासा से उसे देखने लगी। किरील ने अपनी आंखें फेर लीं।

आनोचका को उतरना था। कार एक सैकंड के लिए रुकी। इस एक सैकंड में ही किरील उसे अपने बारे में सब कुछ बता देना चाहता था, लेकिन एक भी उपयुक्त शब्द न सूझ सका।

"फिर मिलेंगे न?" किरील ने उसकी ओर हाथ बढ़ाते हुए कहा। धूप में चमकती सफ़ेद पोशाक और हवा से अस्त-व्यस्त बालोंवाली, दुबली, छरहरी आनोचका तब तक फुटपाथ पर पहुंच चुकी थी।

"मिलेंगे।"

"तो परसों मां के यहां आना। ठीक है?"

"ठीक है," आनोचका ने थोड़ा सा सिर झुकाकर कहा और मकान के कोने के पीछे गायब हो गयी।

अगले दो दिन किरील बड़े उत्साह से काम करता रहा, किंतु जितना ही ज़्यादा वह अपने को व्यस्त रखता, समय उतना ही धीरे-धीरे गुज़रता और फिर जब शाम आती, वह हैरान होकर अपने से पूछता : मुलाकात परसों के लिए क्यों तय की, आज या कल के लिए

क्यो नहीं?" "होशो-हवास खो बैठे हो, नौजवान, होशो-हवास," वह अपने को चिढ़ाता।

वह वक्त के यों बेइंतहा लंबे खिंचने से परिचित था। बहुत पहले एक ज़माने में, जिसकी अब धुंधली याद ही बाकी थी, मजबूरन थोपे गये निठल्लेपन का सारा समय वह खोयी हुई आशाओं के बारे में सोचने में बिताया करता था। ऐसा ओलोनेत्स में गुज़ारे हुए निर्वासन के वर्षों में भी हुआ था और बाद में सोरमोवो-वास के वर्षों में भी, जब उसे वफ़ादार नक्शानवीस लोमोव का नीरस मुखौटा लगाकर रहना पड़ा था। तब यह अनुभूति अपने को लीज़ा की याद के रूप में प्रकट किया करती थी।

इस समय भी वह बहुत-कुछ वैसा ही महसूस कर रहा था। लेकिन उसकी इस अनुभूति में अब कुछ और, नया, अधीरता का पुट लिये हुए भी था। साम्य और अंतर कुछ दूसरी बातों में भी थे। तब लीज़ा की याद आते ही वह त्स्वेतुख़िन के बारे में सोचने लग जाता था। अब भी आनोचका को याद किया नहीं कि त्स्वेतुखिन फिर बीच में टपक पड़ता है। लेकिन अतीत में त्स्वेतुख़िन के साथ उसका टकराव आशंका से उत्पन्न भ्रम था, जबकि अब वह सचमुच का खतरा लग रहा था, हालांकि क्यों, यह कहना मुश्किल था।

आनोचका से मुलाकात से पहले की रात किरील खुली खिड़की के सामने लेटा शांत और सितारों से जगमग आसमान को देख रहा था और अपने से पूछ रहा था कि यह विचित्र अनुभूति वास्तव में है क्या।

सबसे पहले तो वह इस नतीजे पर पहुंचा कि उसे आदमी के नाते त्स्वेतुख़िन से कोई वैर नहीं है। उल्टे, त्स्वेतुख़िन वही काम कर रहा है, जो क्रांति के ज़माने में किसी अभिनेता को करना चाहिए। बेशक, किरील खुद भी नहीं जानता था कि कला के क्षेत्र में इन दिनों क्या किया जाना चाहिए। लेकिन इतना उसे अवश्य मालूम था कि कला को क्रांति के साथ होना चाहिए – बैरीकेड के उसी ओर, जिस ओर कि क्रांति है। त्स्वेतुख़िन इस बात से सहमत है और इसका मतलब है कि वह महज मित्र है। यानी कि किरील तब सही था, जब उसने त्स्वेतुख़िन का समर्थन किया था।

लेकिन उसका समर्थन करके वह आनोचका की थियेटर की धुन को प्रोत्साहित कर रहा था। क्या यह गलत है? नहीं, बल्कि बहुत ही अच्छा! युवासुलभ उत्साह, युवासुलभ लगन... ओह, हा! किरील इज़्वेकोव क्या स्वार्थवश किसी सिद्धांततः सही पहल का विरोध करेगा? नहीं, यह खुद उसके नैतिक और बौद्धिक विश्वासों के विपरीत होगा। फिर भी यह स्वार्थ है क्या? किरील को कैसे सूझा कि यह स्वार्थ है? क्या उसके मन में आनोचका के लिए कोई खास भावना पैदा हो गयी है? अगर ऐसी बात है, अगर इस भावना ने हवा की तरह, तूफ़ान की तरह, चक्रवात की तरह उसे अभिभूत कर लिया है... फिर भी किरील दो सर्वथा भिन्न चीज़ों – सामाजिक और व्यक्तिगत – को कभी एक ही मापदंड से नहीं माप सकता। भगवान की कृपा से उसमें संकल्पशक्ति की कमी नहीं है!

फिर अभी यह भी तो नहीं मालूम कि आनोचका इस स्वार्थ को कैसे लेगी? वह विरोध कर सकती है, उसका अपना कोई और स्वार्थ हो सकता है। वह सीधे-सीधे पूछ भी सकती है: किरील को उसके जीवन में हस्तक्षेप करने का अधिकार किसने दिया है? अगर वह त्स्वेतुख़िन को चाहती है... हम्म, यही तो बात है! अगर वह त्स्वेतुख़िन को चाहती है, तो इसका मतलब होगा कि त्स्वेतुख़िन की मदद करके किरील उसके प्यार को प्रश्रय दे रहा है। यानी कि वह क्रांतिकारी कला को नहीं, बल्कि एक अधेड़ कलाकार के रोमांस को प्रोत्साहित कर रहा है – इससे कम या ज़्यादा कुछ नहीं!

किरील को उस बड़बोले, थियेटर की शौकीन औरतों के उस प्रीतिभाजन, उस कामदेव के अवतार से सदा ही नफ़रत रही थी। भाड़ में जाये वह और उसकी प्रतिभा! किरील उसके स्टूडियो से कोई वास्ता नहीं रखेगा। सचमुच, वह रखे भी क्यों? क्या इसलिए कि आनोचका उस घमंडी छैले की नयी सनकों की खातिर अपना जीवन बरबाद कर दे? जैसे कि एक और पतंगे की ही कमी थी! कितनी हैरानी की बात है कि दुनिया में हर चीज़ अपने को दोहराती है: पतंगों जैसे ये प्यारी-प्यारी, सुंदर, मनमोहक लड़कियां एक-एक करके अपने को आग की भेंट किये जा रही हैं!

आनोचका सचमुच कितनी आकर्षक है! वह हंसती है, तो कैसा

मगीत झरता है! उसका हल्के से, चट से गरदन मोड़कर सिर को झटका देना कितना चित्ताकर्षक है! और कैसे वह एकाएक नाराज़ हो जाती है, सोच में डूब जाती है, शरमा जाती है! या फिर जब वहम करने लगती है... जैसे कि लीज़ा से उसकी कोई तुलना हो सकती हो! सचमुच, कैसी थी लीज़ा? किरील को याद नहीं। लेकिन क्या कभी कोई लीज़ा थी भी? किरील नहीं जानता। लीज़ा के प्रति उसके प्रेम में खास बात क्या थी? क्या वह किरील को अपनी ओर ऐसे खींचती थी? क्या वह उसे उमस और घुटनभरी रात में वैसे लगातार और उत्कटतापूर्वक आकृष्ट करती थी, जैसे कि आनोचका करती है?

"ओह, यह कमबख्त घुटन कब खत्म होगी?" किरील बड़बड़ाया और खिड़की के पास चला गया।

पानी पी ले क्या? या नहा ले? लेकिन पानी भी तो वैसा ही गरम है, जैसा कि बिस्तर। खिड़की के बाहर भी कोई हलचल नहीं है! हवा निश्चल है, नींद में डूबी बस्ती निश्चल है, आकाश में तारे निश्चल हैं, सारा आकाश निश्चल है। उसकी गरम, अगाध गहराइयों में कितना भी झांक लो, कहीं कोई निशान, कोई परिवर्तन नहीं मिलेगा। सिवाय तारों के। सिर्फ़ तारे। शाश्वतता। भविष्य। सदा अपरिवर्तित।

"सदा!" किरील ने कहा और प्याले में बची हुई पानी की बूंदें खिड़की से बाहर फेंक दीं।

सदा उसकी राह में कोई और ज़रूर आयेगा। कोई पराया, अप्रिय और अवांछित। कोई त्स्वेतुखिन। सोचकर ही घिन लगती है कि तुम उसके प्रतिद्वंद्वी हो। और फिर "प्रतिद्वंद्वी"–इस शब्द का चाहे अकेले में ही उच्चारण करना भी कम घिनौना है! ग़नीमत है कि यह शब्द दिमाग में ज़्यादा देर नहीं टिका रहता और एक सुकुमार चाहत से भरपूर नाम–आनोचका–उसकी जगह ले लेता है, धीरे-धीरे और दृढ़ता से अन्य सभी भावनाओं को दबा डालता है। दबा डालता है, इच्छाओं की अतल गहराइयों में डुबो देता है, निद्रालोक में ले जाता है...

आखिरकार वह चिरप्रतीक्षित परसों आ ही गया। किरील घर

लौटा, तो आनोचका अभी पहुंची न थी। किरील ने [illegible] जाने की इजाज़त दे दी।

"तुम आज जल्दी लौट आये हो," वेरा निकान्द्रोव्ना [illegible]

उसे किरील कुछ बदला-बदला लगा, पर [illegible] नहीं जान सकी।

"मैं थोड़ा थक गया हूं। सोचा कुछ घूम लूं," किरील ने [illegible] दिया।

इसका मतलब था कि वह किसी सोच में [illegible] नहीं बोलना चाहता। कि वह पहले जैसे ही [illegible] छिपा रहा है। कि वेरा निकान्द्रोव्ना को कोई [illegible] और खुद जो अटकल लगा सकती है, [illegible]

एकाएक एक इतनी मामूली सी, लेकिन [illegible] बात हो गयी कि मां तो क्या, किसी बाहरी [illegible] तुरंत भांप जाती कि माजरा क्या है।

आनोचका आ गयी थी – हमेशा जैसी ही [illegible] हुई आनोचका। और हमेशा जैसे ही उसने वेरा [illegible] पर चूमा (हालांकि इस बार, जैसा कि वेरा [illegible] ध्यान दिया, और बार से थोड़ा सा ज्यादा जोर से) [illegible] ही जरूरी कामों के बारे में बातें करने लग गयी।

किंतु किरील ने उसे बातें खत्म करने का मौका [illegible] तुरंत एलान किया कि वह घूमने जा रहा है और [illegible] कि भाग्य ने उसे इतना प्रीतिकर साथी भेज दिया है।

"मेरे साथ तरबूज के खेतों तक चलोगी?" उसने पूछा।

भाग्य ने शायद कहीं किसी कोने से वेरा निकान्द्रोव्ना [illegible] इशारा कर दिया, क्योंकि उसके दिल पर [illegible] वह एकाएक हट गया और उसने मजाक करते [illegible]

"ज्यादा दूर न जाना। खेत के पास पागलखाना [illegible]

"तब तो और भी अच्छा है!" आनोचका हंस पड़ी। [illegible] निकोलायेविच सोचते हैं कि मेरे जैसे मसखरों [illegible] लिए वही एकमात्र जगह है। यह शायद सब [illegible] चाहते हैं!"

"कर लेना चाहते हैं, नहीं – कर लिया है!" किरील ने कहा और आनोचका को कमरे से बाहर ले गया।

"कर लिया है, हां, शायद कर लिया है," उन्हें छोड़ने सीढ़ी तक जाते हुए और असामान्य सी राहत महसूस करते हुए वेरा निकान्द्रोवना ने मन ही मन दोहराया।

वह अपने को न रोक पायी और खिड़की के पास खड़ी होकर उन्हें आपस में थोड़ा सा फ़ासला बनाये रखते हुए, ताकि गलती से कही एक दूसरे को छू न बैठें, सांध्यकालीन सड़क पर जाते और दूर एक मोड़ पर गायब होते देखती रही। वह अपने को मन ही मन उनका आगे भी पीछा करने से न रोक पायी: कैसे वे मकानों की बगल से, बिच्छू-बूटी और गोखरू की झाड़ियोंवाली लंबी, टूटी हुई चहारदीवारियों की बगल से, रेलवे पुल के नीचे से और आगे, और आगे धूलभरी सड़क से गुज़रे होंगे और खुले खेतों में पहुंचे होंगे, जहां हवा की राह में कोई रोक या बाधा नहीं है। वह अपने को ये अटकलें लगाने से भी न रोक पायी कि वहां खुले खेतों में, हल्के से हरे या काली धारियों-वाले गोल-गोल तरबूज़ों की लंबी-लंबी, आपस में उलझी हुई बेलों से ढकी अंतहीन पीली-भूरी लीकों के बीच वे क्या बातें कर रहे होंगे।

सचमुच किरील और आनोचका क्या बातें कर रहे थे? दोनों ही काफ़ी फुर्तीले थे और तेज़ चलना पसंद करते थे। लेकिन इस समय मानो दोनों का वज़न दोगुना हो गया था और दोनों इतने छोटे-छोटे डग भर रहे थे कि जैसे तेज़ चलना उन्हें अब अच्छा नहीं लगता। वे लोगों के आने-जाने से पगडंडी सी बनी एक संकरी मेंड़ पर चल रहे थे, जिसपर कहीं-कहीं बेलों की शाखायें फैल आयी थीं और उनके पैरों में उलझी जा रही थीं। उनके हाथों में बेद की टहनियां थीं, जिन्हें वे ऊपर मंडराते पतंगों को भगाने के लिए कभी-कभी घुमा देते। डूबते सूरज के उजाले की पृष्ठभूमि पर दूरवर्ती पहाड़ियां अंधकारग्रस्त होती जा रही थीं। उनके ढलानों के रंग शीतल पड़ गये थे, हालांकि ज़मीन अभी भी तप रही थी। खेतों की हरियाली ज़मीन की पीली दमक और आकाश की असीम चमक को जज़्ब किये जा रही थी। किरील और आनोचका हालांकि धीरे-धीरे चल रहे थे और पतंगों

को भगाने के लिए उन्हें काफ़ी कोशिश करनी पड़ रही थी, फिर भी दोनों को चलने में ख़ुशी हो रही थी और दोनों ही अपनी चुप्पी का मज़ा ले रहे थे।

दोनों झाड़ू जैसे सिरेवाले एक टूटे हुए बेद के पेड़ के नीचे रुक गये। पास ही एक पुराना, चरमचराता हुआ रहट था, जिसपर एक कुड़कुड़ी रोग के कारण सूजी हुई टांगोंवाला काना घोड़ा जुता हुआ था। रहट की डोलचियां नीचे कूएं के तल में जातीं और धीरे-धीरे ऊपर आतीं और उनके छेदों से पानी की सफ़ेद धारें बारिश की तरह तर-तर गिरने लगतीं। जिस नांद में पानी उंडेला जा रहा था और जिन लकड़ी की नालियों से पानी खेत में पहुंच रहा था, वे सभी बहुत ही जीर्ण-शीर्ण थे। उनसे पानी ज़मीन में रिसा जा रहा था, जिससे हवा में ताज़गीभरी नमी और सड़ी लकड़ी की महक समा गयी थी।

खेतों की रखवाली एक बूढ़ा कर रहा था। उसने अपनी झोंपड़ी में से दो मुट्ठियों जितना बड़ा एक तरबूज़ उठाया, उसे परखा, यानी कान के पास ले जाकर सुना कि वह दबाने पर आवाज़ करता है या नहीं, और हवा में उछालकर फिर से पकड़ते हुए आनोचका को थमा दिया।

"यह लो, बेटी, हमारी नयी फ़सल का तरबूज़ चखो।"

किरील ने एक छोटे चाकू से, जिसे बूढ़े ने पहले ज़मीन पर पड़े कोट पर पोंछ लिया था, तरबूज़ काटा। वह अंदर से खूब गूदेदार, हल्का गुलाबी और शहद जैसा मीठा निकला।

आनोचका कोट पर बैठ गयी और बीजों को थूकते और मीठे रस को सर्र-सर्र चूसते हुए तरबूज़ खाने लगी। किरील पास में खड़ा खुद भी खा रहा था और जब वह छिलका फेंक देती, तो उसे ताज़ी फांकें पकड़ा रहा था। बच्चों की तरह आनोचका ने अपने चेहरे पर "मूंछें" बना ली थीं। किरील उन्हें देखकर हंस दिया, पर कुछ बोला नहीं।

कुछ देर आराम कर लेने के बाद वे वापस चल पड़े। ऊपर आकाश, बायीं ओर पहाड़ियों और दायीं ओर वोल्गा के विस्तार का रंग लगातार बदलता जा रहा था। धीरे-धीरे धरती पर नीरवता छा गयी, जैसे कि वह एक हल्की सी झपकी लेने की तैयारियां कर रही हो।

"मुझे लगता है कि हम ज़रूरत से ज़्यादा चुप हैं," आनोचका बोली।

"इसका मतलब है कि कोई बोलना नहीं चाहता। और फिर भला बोलें भी क्यों? अपने बारे में आप कुछ बतायेंगी नहीं और मेरे बारे में आपको सब मालूम है ही।"

"आप मेरे यह कहने का बुरा मान गये थे कि मैं आपके बारे में सब कुछ जानती हूं?"

किरील ने जवाब नहीं दिया। आनोचका ने ऐसी औरत जैसी बढ़ती हुई जिज्ञासा से उसे देखा, जो अपने किसी प्रिय आदमी के दिल को परखना चाहती है।

"आपको याद है कि कभी मैं आपकी चिट्ठियां शुब्निकोवा को पहुंचाया करती थी?"

किरील ने हल्के से कंधे उचका दिये।

"आप जब से लौटे हैं, तबसे एक बार भी उससे नहीं मिले?"

"नहीं।"

"क्यों?"

"जब मिलना चाहता था, तब मुमकिन नहीं था और जब मुमकिन हुआ, इच्छा नहीं रही।"

"वह आपको बहुत चाहती थी।"

किरील फिर चुप हो गया।

"एक बार मैं आपकी मां से बातें कर रही थी, तो उन्होंने कहा कि लीज़ा ज़रूरत से ज़्यादा कमज़ोर है और किसी मजबूत आदमी को सुख नहीं दे सकती।"

"लेकिन यह भी तो हो सकता है कि मज़बूत आदमी उसे भी मज़बूत बना दे," किरील ने कहा।

आनोचका अपनी आदत के मुताबिक भौंहों पर बल डालते हुए सोचने लग गयी।

"यानी कि अगर उसने अपने को उसे समर्पित कर दिया होता, यही न?"

"नहीं, अगर उसने उसपर भरोसा किया होता। कमज़ोर को मजबूत पर भरोसा करना चाहिए।"

आनोचका को लगा कि किरील खुद अपने को चकित होकर सुन रहा है, जैसे कि उसके संसर्ग ने उसके सामने उसके अपने स्वभाव के एक नये और सुकोमल पक्ष को उद्घाटित कर दिया है, जिससे वह पहले शायद ही परिचित था। सहसा वह पूछ बैठी,

"आपको अच्छा लगता है कि लोग आपसे डरें?"

किरील संभ्रम में पड़ गया। उसने मुंह पर हाथ रखा और उसे वहां से हटाये विना ही धीमे से कहा,

"माफ़ करिये, लेकिन यह वेवकूफ़ीभरा सवाल है।"

आनोचका मुस्करायी और एक दृढ़ विश्वास के साथ बोली,

"नहीं, नहीं, आपको अच्छा लगता है। मैं जानती हूं। मेरा सवाल वेवकूफ़ीभरा नहीं था।"

सांझ घिर आयी थी। उजाला चीड़ के सूखे पत्तों जैसा गहरा भूरा हो गया था। चिर्र-चिर्र करते टिड्डों ने अपना सांध्य कंसर्ट शुरू कर दिया था। हवा में गरम मिट्टी और चरागाहों की गंध समायी हुई थी, जिनसे मवेशी अभी-अभी लौटे थे।

"ऐसी शाम में तो मौन रहकर भी वातचीत की जा सकती है," किरील बोला।

"मैं क्या बहुत वातूनी हूं?" आनोचका ने हंसते हुए पूछा।

"नहीं, नहीं, बोलिये, जी भर बोलिये। आपको सुनना मुझे अच्छा लगता है।"

लेकिन इसके वाद उन्होंने खेत भी पार कर लिया और बस्ती में भी पहुंच गये, फिर भी कोई कुछ नहीं बोला।

जैसे ही वे अपनी सड़क के मोड़ पर मुड़े, उन्हें स्कूल की इमारत के सामने कार की वत्तियों का जलना-वुझना दिखायी दिया। किरील एक सैकंड के लिए रुक गया और आकस्मिक विश्वास के साथ बोला,

"मुझे लेने आये हैं।"

किसी आशंका ने उन्हें एकाएक तेज़ चलने के लिए प्रेरित कर दिया।

ड्राइवर किरील को देखकर दौड़ा-दौड़ा उसके पास आया और टोपी के नीचे से एक लिफ़ाफ़ा निकालकर उसे दिया।

"बत्तियां जलाना तो।"

कार की वत्तियों के तेज़ उजाले में आनोचका को लगा कि किरील की अंगुलियां कुछ कांप रही हैं। चिट्ठी पढ़ना खत्म करते ही वह बोला,

"चलो!"

उसने कार में पैर रखा, लेकिन फिर एकाएक मुड़कर आनोचका का हाथ अपने हाथों में ले लिया और कहा,

"मैं सिर्फ़ आपको वता रहा हूं: त्सरीत्सिन पर सफ़ेद गार्डों का कब्ज़ा हो गया है।"

फिर वह कूदकर कार में वैठ गया और पीछे देखे बिना रवाना हो गया।

तव तक वेरा निकान्द्रोव्ना भी घर से बाहर आ चुकी थी। दबी आवाज़ में उसने पूछा कि क्या हुआ है।

"मालूम नहीं," आनोचका ने जवाव दिया। "उन्होंने मुझे कुछ नही वताया।"

शेष भाग २ में पढ़ें

पाठकों से

प्रगति प्रकाशन को इस पुस्तक के अनुवाद और डिज़ाइन के संबंध में आपकी राय जानकर और आपके अन्य सुझाव प्राप्त कर बड़ी प्रसन्नता होगी। अपने सुझाव हमें इस पते पर भेजें:

प्रगति प्रकाशन, १७,
१७, ज़ूबोव्स्की बुलवार,
मास्को, सोवियत संघ।